

स्तोत्रसङ्ग्रहः

Colophon

This document was typeset using X_ET_EX, and uses the Sanskrit 2003 font extensively. It also uses several L_AT_EX macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Itranslator 2003 and Ajit Krishnan's mudgala IME (<http://www.aupasana.com/>).

Acknowledgements

The initial encodings of some of these texts were obtained from <http://sanskritdocuments.org/> and/or <http://prapatti.com/>.

See also <http://stotrasamhita.github.io/about/>

स्तोत्रसङ्कहः is also available online (in PDF format) at:
<http://stotrasamhita.github.io/>

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका

Preface

xiii

१ लघु स्तोत्राणि

1

ध्यानम्

3

विघ्नेश्वर प्रार्थना	4
गुरुपरम्परा-स्तुतिः	5
स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम्	6
सरस्वती प्रार्थना	8
चिरञ्जीविस्तोत्रम्	9
पञ्चकन्यास्मरणम्	9
साम्बशिव-स्मरणम्	9
हरि-स्मरणम्	9
चक्षुरारोग्य-श्लोकः	9
भागवतस्मरणम्	10
गो-वन्दनम्	10
तुलसी-वन्दनम्	10
श्रीतुलसीषोडशकनामस्तोत्रम्	11
अर्जुन-नामानि (विराटपर्वान्तर्गतम्)	12
यमधर्मराजस्य १४ नामानि	12
परब्रह्म-प्रातः स्मरण-स्तोत्रम्	12
ध्यान-स्तोत्राणि	14

गणेशस्तोत्राणि

17

महागणेशापञ्चरत्नम्	18
गणाष्टकम्	19

गणपतिस्तवः	20
गणेशाभुजङ्गम्	22
महागणपति नवार्णवेदपाद स्तवः	24
वेङ्कटेशस्तोत्राणि	26
वेङ्कटेश सुप्रभातम्	26
वेङ्कटेश-स्तोत्रम्	31
वेङ्कटेश प्रपत्तिः	32
वेङ्कटेश मङ्गलाशासनम्	35
वेङ्कटेश करावलम्बस्तोत्रम्	37
वेङ्कटेश-अष्टकम्	39
वेङ्कटेशद्वादशनामस्तोत्रम्	41
श्रीनिवास गद्यम्	41
रामस्तोत्राणि	47
नामरामायणम्	47
रामरक्षास्तोत्रम्	50
अहल्याकृत-रामस्तोत्रम्	55
रामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्	58
रामस्तवराजस्तोत्रम्	63
शम्भुकृत-रामस्तवः	75
देवैः कृतं राम-स्तोत्रम्	79
ब्रह्मकृतरामस्तवः	81
आपदुद्वारण-स्तोत्रम्	85
हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्	86
रामद्वादशनामस्तोत्रम्	87
रामाष्टकम्	88
रामस्तोत्रम्	89

एकश्लोकि रामायणम्	91
गायत्री-रामायणम्	91
हनुमत्-स्तोत्राणि	100
हनुमान् चालीसा	100
आपदुद्धारक-द्वादशमुख-हनुमान्-स्तोत्रम्	102
सुन्दरहनुमान् महामन्त्रनामस्तोत्रम्	105
हनुमत् पञ्चरत्नम्	106
कृष्णस्तोत्राणि	108
कृष्णाष्टकम् १	108
कृष्णाष्टकम् २	109
कृष्णाष्टकम् ३	111
श्री-कृष्ण-जननम्	112
गोविन्दाष्टकम्	113
गीतगोविन्दम्	115
भज गोविन्दम्	117
अक्रूरकृत-दशावतारस्तुतिः	120
भीष्मस्तुतिः	120
ध्रुवस्तुतिः	122
श्री-स्कान्दपुराणान्तर्गत-मार्गशीर्ष-माहात्म्ये कृष्ण-नाम-माहात्म्यम् .	124
बालरक्षा	128
मधुराष्टकम्	130
अच्युताष्टकम्	131
बालमुकुन्दाष्टकम्	133
कृष्णद्वादशनामस्तोत्रम्	134
रङ्गनाथ गद्यम्	135
रङ्गनाथस्तोत्रम्	137

दामोदराष्टकम्	139
गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नम्	140
गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नम्	141
नारायण केशादिपादवर्णनम्	143
विष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्	145
विष्णु-विजयस्तोत्रम्	148
सङ्कष्टनाशन-स्तोत्रं	150
ब्रह्मपारस्तोत्रम्	151
लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रम्	153
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम्	156
धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्)	157
शिवस्तोत्राणि	160
शिवमानसपूजा	160
वैद्यनाथाष्टकम्	161
लिङ्गाष्टकम्	163
शिवमहिम्नः-स्तोत्रम्	164
श्रीकृष्णार्जुनकृत-रुद्रस्तोत्रम्	171
बिल्वाष्टकम्	172
शिवरक्षास्तोत्रम्	173
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	175
शिवापराधक्षमापन-स्तोत्रम्	176
शिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्	179
मार्गबन्धुस्तोत्रम्	180
सदाशिवाष्टकम्	180
चरणशृङ्खरहित-नटराज-स्तोत्रम्	182
शम्भुस्तुतिः	184
उमामहेश्वरस्तोत्रम्	186

अर्धनारीश्वर-अष्टकम्	189
शिवशिवास्तुति:	191
गुरुस्तोत्राणि	194
दक्षिणामूर्त्यष्टकम्	194
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्	196
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं वृषभदेवकृतम्	199
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् समरपुङ्गवदीक्षितकृतम्	201
गुर्वष्टकम्	202
तोटकाष्टकम्	204
शक्तिस्तोत्राणि	206
कामाक्षी सुप्रभातम्	206
कामाक्षी-माहात्म्यम्	213
कामाक्षी-स्तोत्रम्	214
मीनाक्षीपञ्चरत्नम्	216
ललितापञ्चरत्नम्	218
मूकसारः	219
गौरीदशकम्	226
कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्	228
श्यामलादण्डकम्	231
महिषासुरमर्दिनि-स्तोत्रम्	235
शीतलाष्टकम्	239
अन्नपूर्णास्तोत्रम्	241
षष्ठीदेवी-स्तोत्रम्	243
रुक्मिणीकृत गौरीस्तोत्रम्	245
कामाक्षी-माहात्म्यम्	245
दुर्गापञ्चरत्नम्	246

दुर्गास्तोत्रम्	247
दुर्गाचन्द्रकलास्तुतिः	250
दुर्गास्तोत्रम् (युधिष्ठिरकृतम्)	253
दुर्गा-स्तुतिः (अर्जुन-कृता)	257
परशुरामकृत-दुर्गास्तोत्रम्	260
गायत्रीस्तोत्रम्	267
लक्ष्मीस्तोत्राणि	271
कनकधारास्तवः	271
महालक्ष्म्यष्टकम्	275
लक्ष्मीस्तोत्रम् विष्णुपुराणान्तर्गतम्	276
महालक्ष्मीस्तुतिः (अगस्त्यकृता)	279
सरस्वतीस्तोत्राणि	282
सरस्वतीस्तोत्रम् अगस्त्यमुनि-प्रोक्तम्	282
सिद्धसरस्वतीस्तोत्रं श्रीमद्-ब्रह्मविरचितम्	284
शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकम्	287
शारदा प्रार्थना	289
वाणीस्तवनम्	290
सरस्वतीस्तोत्रं बृहस्पतिविरचितम्	293
सुब्रह्मण्यस्तोत्राणि	296
सुब्रह्मण्यभुजङ्गम्	296
श्री-परमशिवेन्द्र-कृतं सुब्रह्मण्य-भुजङ्गम्	302
गुहपञ्चरत्नम्	307
सुब्रह्मण्यपञ्चरत्नम्	308
प्रज्ञाविवर्धन-कार्त्तिकेय-स्तोत्रम्	309
सुब्रह्मण्यषोडशनामस्तोत्रम्	310

शास्तास्तोत्राणि	312
हरिहरात्मजाष्टकम्	312
शास्तादशकम्	313
नवग्रहस्तोत्राणि	315
नवग्रहस्तोत्रम्	315
नवग्रहमङ्गलाष्टकम्	316
नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्	318
सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम्	320
आदित्यहृदयम्	320
सूर्यकवचम्	324
सूर्यमण्डल-स्तोत्रम्	325
द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः	326
सूर्यार्यास्तोत्रम्	328
सूर्यस्तुतिः	329
सूर्यस्तवराजः	330
चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रम्	331
अङ्गारकस्तोत्रम्	332
बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्	333
बृहस्पतिस्तोत्रम्	333
शुक्रचतुर्विंशतिनामस्तोत्रम्	334
दशरथकृत शनैश्चराष्टकम्	335
राहुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्	336
केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्	337
नदीस्तोत्राणि	338
गङ्गाष्टकम्	338
गङ्गादशहरास्तोत्रम्	340

गङ्गाकर्षणाष्टकम्	343
यमुनाष्टकम्	344
नर्मदाष्टकम्	345
त्रिवेणीस्तोत्रम्	347
कावेरी प्रार्थना	348
कार्तवीर्यार्जुन-द्वादशनामस्तोत्रम्	350
यमभयनिवारणस्तोत्रम्	351
यमाष्टकम्	351
कलिदोषनिवारणस्तोत्रम्	353
अवैधव्यप्रार्थनास्तोत्रम्	353
वन्दे मातरम्	353
क्षमा प्रार्थना	355
२ शतनामस्तोत्राणि	357
गणेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	359
गणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	360
गणपति गकार अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	362
रामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	366
आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	368

कृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	370
लक्ष्मीनारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	374
नृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	375
हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	377
धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	379
विष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्	382
वेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	386
हरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	389
शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	392
शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	394
शिवाष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्	397
अर्धनारीश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	400
दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	404
अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	407
गौर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	409
शक्तयष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्	410

सीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	415
लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	417
गोदाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	420
तुलस्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	423
सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	425
सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	427
कार्त्तिकेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	429
हरिहरपुत्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	431
आदित्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	433
सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	435
व्यासाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	437
गङ्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	438
३ दीर्घ एवं सहस्रनामस्तोत्राणि	445
विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्	447
सङ्खेपरामायणम्	467
सन्तानगोपाल-स्तोत्रम्	483

गकारादि श्री-गणपति सहस्रनाम-स्तोत्रम्	493
वक्तुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम्	512
शिवसहस्रनामस्तोत्रम्	536
शिवसहस्रनामस्तोत्रम् (विष्णुकृतम्)	557
मातृभूतशतकम्	578
श्रीकाश्चीकामकोटिपीठजगद्गुरुपरम्परास्तवः	598
सूर्यसहस्रनामस्तोत्रम्	608
सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम्	623
ललितात्रिशतीस्तोत्रम्	640
सौन्दर्यलहरी	647

॥ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥
 ॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥
 ॥हरिः ॐ ॥

PREFACE

सदाशिवसमारूपां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
 अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

This book has been primarily inspired by two pieces of work — one, my *thāthā*'s beautiful hand-written composition of *ślokās*, for his grandchildren, and *mantrapushpam*, the excellent compilation of *vedamantrās* and *stotrās*, from Ramakrishna Mutt.

In this book, several wonderful stotras have been compiled. One of the aims of this book is to provide ready access to a number of *stotrās* in a compact form. I've often had to refer to a bundle of books for each *stotram*. This book, I hope, would prove to be really useful for people who would like to carry around these *stotrās* when they travel around, or would like a handy small book containing all these *stotrās*. The other important feature of this book is that all the *stotrās* are in *devanāgarī lipi*. I've often had access to a large number of *stotrās*, but in Tamil script. I find the *devanāgarī lipi* more conducive to correct pronunciation. There are several simple *shlokās* in this book, which I am sure children would be able to pick up easily. *Stotrās* such as *Nāma Rāmāyanam* should certainly be taught to children. Many of these stotras have been rendered wonderfully by *Śrīmati M. S. Subbulakshmi*; one just needs to listen to her for both *bhakti* and inspiration. While the foremost importance is to be given to *bhakti*, one must certainly give importance to accurate pronunciation as well, and MSS is exemplary in that regard.

One should make it a point to chant at least few of these every day, and most of these in a month. One should certainly recite the *Vishnu Sahasranāmam* everyday. Of course, it must be emphasised that one's *nityakarmā* takes precedence over all these (सन्ध्याहीनः अशुचिः नित्यमनर्हहः सर्व-कर्मसु) and one must make time for *sandhyāvandanādi nityakarmās* and such prayers everyday:

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या वेदाः शार्खा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्तो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव शार्खा न पत्रम्॥

In *Kaliyuga*, foremost importance is given to *nāmasankīrtanam*, and hence, stotras such as these should be recited with *bhakti*, regularly:

ध्यायन् कृते यजन् यज्ञैः त्रेतायां द्वार्पेरऽर्चयन्।
यदामोति तदामोति कलौ सङ्कीर्त्य केशवम्॥

There are several people whom I must thank for their contributions to this book. I cannot undermine the importance of the Sanskrit Documents Website¹, which happens to be the source for almost all of the texts contained in here. Many thanks to volunteers to build and present such a wonderful collection online. I must acknowledge the efforts of my friend *Prasād*, who has been instrumental (and almost wholly responsible) for the improved formatting in this book. I consulted him several times for help with \LaTeX . But for his \TeX macros, some of the alignments would have never happened! I must also thank the writers of the software *ITranslator*², which has been the hammer-and-nail for compiling this book. The other tool critical for this book was \LaTeX , and it was indeed the release of *MiK\TeX* 2.7 that led me to experiment with \Xe\TeX , which I think has been a success.

I take this opportunity to seek the blessings of my *Appā*, *Ammā*, my *Guru Shri S. Ananthakrishnan*, and my *Māmā*, who have inspired me and taught me all that I know. I must definitely thank *Sāketh* too, who has been inspirational in several ways.

I must specially thank my *ammā*, who has encouraged and inspired me a lot through the course of compiling this book. I also must thank her for proof-reading the text, and particularly helping with *Syāmalā dan-dakam*. Thanks are also due to my wife, for her support and encouragement throughout.

Although we have put in efforts to remove any typographical errors in this book, I must emphasise that the errors in this book are solely due

¹<http://sanskritdocuments.org/>

²<http://www.omkarananda-ashram.org/Sanskrit/Itranslt.html>

to my ignorance and I would be glad to rectify them. Please drop me a
gmail at *karthik.raman* to notify me of even the smallest of errors.

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोऽस्तु ते॥

This book is dedicated to Śrī Krishna.

यत्करोषि यदश्मासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

— श्रीमद्भगवद्गीता ९-२७
सर्वम् श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥

May 16, 2008

KARTHIK RAMAN

॥ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥
॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥
॥हरिः ॐ ॥

PREFACE (SECOND EDITION)

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

It is with great pleasure that I present the second edition of this book. The major changes have been the inclusion of some large stotrās such as the *Saundarya laharī*, *Sankshepa Rāmāyanam* and *Shiva sahasranāmam*, as well as numerous smaller stotrās. The stotrās have also now been segregated into two parts, with the longer stotrās occupying the second part of the book.

I thank all those who have made use of the previous edition of the book and have given me their feedback, which I hope has helped improve the content in the present edition. I thank my father-in-law, Shri. N. Venugopālan, for sending me the text of some rare stotrās. I also thank my wife Mādhuryā, for meticulously proof-reading *Saundarya laharī*. I also thank my Ammā, for suggesting the wonderful *Durgā pancharatnam*, composed by Mahaperival.

I welcome suggestions for improvements — please drop me a gmail at karthik.raman to notify me of any comments/suggestions and even the smallest of errors.

सर्वम् श्री-कृष्णापणमस्तु ॥

February 13, 2011

KARTHIK RAMAN

॥ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥
॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥
॥हरिः ॐ ॥

PREFACE (REVISED THIRD EDITION)

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

It is with great pleasure that I present the revised second edition of this book. Most of the changes in this version are minor, save for the inclusion of a few more stotrās, such as *Kāmākshī suprabhātam*, *Dakshināmūrti ashtakam*, *Santānagopāla stotram*, *Dāmodarāshtakam*, *Āpaduddhārana dvādaśa mukha hanumān stotram* and *Ranganātha gadyam*, to name a few. Many *śatanāma* stotras have been added too; since the number of *śatanāma* stotras has exceeded 25, I have now moved them to another part by itself. Several corrections have also been made to many of the stotras, from previous editions. Special thanks to *Sāketh* for proofreading *Gakārādi Ganapati Sahasranāma stotram* and for encoding many of the *ashtottara śatanāma* stotras.

सर्वम् श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥

November 15, 2025

KARTHIK RAMAN

विभागः १

लघु स्तोत्राणि

॥ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥

॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥हरिः ॐ ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्वोपशान्तये॥

अगजानानपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदन्तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुक्रतातं तपोनिधिम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

सदाशिवसमारभां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादशङ्करं लोकशङ्करम्॥



॥ विघ्नेश्वर प्रार्थना ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

अगजानानपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परे प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनायकाय ॥

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ-जम्बूफल-सार-भक्षितम्।
उमासुतं शोकविनाशकारणं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

मूषकवाहन मोदकहस्त चामरकर्णं विलम्बितसूत्र।
वामनरूप महेश्वरपुत्र विघ्नविनायक पाद नमस्ते ॥

सुमुखश्वैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः ॥

धूमकेतुर्गणाध्यक्षो फालचन्द्रो गजाननः।
वक्रतुण्डः शूर्पकर्णो हेरम्भः स्कन्दपूर्वजः ॥

षोडशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सञ्चामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

॥ गुरुपरम्परा-स्तुतिः ॥

॥ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥

॥ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥हरिः ॐ ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यं
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्बुरून् सन्ततमानतोऽस्मि ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादशङ्करं लोकशङ्करम् ॥

अपारकरुणासिन्धुं ज्ञानदं शान्तरूपिणम्।
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम् ॥

देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम्।
बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेन्द्रं नमाम्यहम् ॥

नमामः शङ्करान्वारव्य-विजयेन्द्रसरस्वतीम्।
श्रीगुरुं शिष्टमार्गानुनेतारं सन्मतिप्रदम् ॥

सत्यनारायणक्षेत्रात् सत्यव्रतमुपागतम्।
आश्रये कामकोटीशं सत्यश्रीचन्द्रशेखरम् ॥

सदाशिवसमारभ्मां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

ऐङ्कार-हीङ्कार-रहस्ययुक्त-
 श्रीङ्कार-गृदार्थ-महाविभूत्या ।
 ओङ्कार-मर्म-प्रतिपादिनीभ्यां
 नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
 समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥

॥ स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम् ॥

॥ ऊँ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्री-महात्रिपुरसुन्दरी-समेत-श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः ॥
 ॥ श्री-काञ्ची-कामकोटि-पीठाधिपति-जगद्गुरु-
 श्री-शङ्कराचार्य-श्री-चरणयोः प्रणामाः ॥

स्वस्ति श्रीमद्-अखिल-भूमण्डलालङ्कार-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-
 सेवित-श्री-कामाक्षी-देवी-सनाथ-श्रीमद्-एकाम्रनाथ-श्री-महादेवी-
 सनाथ-श्री-हस्तिगिरिनाथ-साक्षात्कार-परमाधिष्ठान-सत्यवत-
 नामाङ्कित-काञ्ची-दिव्य-क्षेत्रे, शारदामठ-सुस्थितानाम्,
 अतुलित-सुधारस-माधुर्य-कमलासन-कामिनी-धम्मिल्ल-सम्मुल्ल-
 मल्लिका-मालिका-निःष्टन्द-मकरन्द-झरी-सौवस्तिक-वाङ्गिगुम्फ-
 विजृम्भणानन्द-तुन्दिलित-मनीषि-मण्डलानाम्,
 अनवरताद्वैत-विद्या-विनोद-रसिकानां
 निरन्तरालङ्कृतीकृत-शान्ति-दान्ति-भूम्नाम्, सकल-भुवन-चक्र-
 प्रतिष्ठापक-श्रीचक्र-प्रतिष्ठा-विव्यात-यशोऽलङ्कृतानाम्,
 निखिल-पाषण्ड-षण्ड-कण्टकोत्पाटनेन

विशदीकृत-वेद-वेदान्त-मार्ग-षण्मत-प्रतिष्ठापकाचार्याणाम्,
परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादा-
चार्याणाम्, अधिष्ठाने

सिंहासनाभिषिक्त-श्रीमद्-जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्,
अन्ते-वासि-वर्य-श्रीमत्-शङ्कर-विजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां,
तदन्तेवासि-वर्य-श्रीमत्-सत्य-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां च
चरण-नलिनयोः स-प्रश्रयं साञ्जलि-बन्धं च नमस्कुर्मः ॥

॥ श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः ॥

॥ श्री-कामाक्षी देव्यै नमः ॥

॥ श्री-कामाक्षी चूर्णिका ॥

१. जय जय श्री-कामगिरीन्द्र-निलये।

२. जय जय श्री-कामकोटि-पीठस्थिते।

३. जय जय श्री-त्रिचत्वारिशत्कोण-श्रीचक्रान्तराल-बिन्दु-पीठोपरि-
लसत्पञ्च-ब्रह्ममय-मञ्चमध्यस्थ श्री-शिवकामेश-वामाङ्ग-निलये।

४. जय जय श्रीविधिहरिहर-सुरगण-वन्दित-चरणारविन्दयुगले।

५. जय जय

श्रीमद्रमा-वाणीन्द्राणी-प्रमुख-रमणी-करकमल-समर्पित
चरणकमले।

६. जय जय श्री-निखिल-निगमागम-सकल-संवेद्यमान-विविध-
वस्त्रालङ्घत-हेम-निर्मितानर्घभूषण-भूषित-दिव्य-मूर्ते।

७. जय जय श्री-अनवरताभिषेक धूपदीप नैवेद्यादि नानाविधोपचारैः परिशोभिते।
८. जय जय श्री-श्री-काञ्चीनगर्या द्वात्रिंशद् धर्मप्रतिपादनार्थं स्थापित हेमध्वजालङ्कृते।
९. जय जय श्री-सकल-मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रमय-पराबिलकाश स्वरूपे।
१०. जय जय श्री-काञ्ची नगर्या कामाक्षी इति प्रख्यात-नामाङ्किते।
११. जय जय श्री-महात्रिपुरसुन्दरी बहु पराक्।

॥ सरस्वती प्रार्थना ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

पद्मपत्रविशालाक्षी पद्मकेसरवर्णिनी।
नित्यं पद्मालया देवी सा मां पातु सरस्वती ॥

या कुन्देन्दु-तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥



॥ चिरञ्जीविस्तोत्रम् ॥

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः
 कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः ।
 सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमं
 जीवेद्वर्षशतं प्राज्ञ अपमृत्युविवर्जितः ॥

॥ पञ्चकन्यास्मरणम् ॥

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
 पञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥

॥ साम्बशिव-स्मरणम् ॥

शिवनामनि भावितेऽन्तरङ्गे
 महति ज्योतिषि मानिनीमयार्थै ।
 दुरितान्यपयान्ति दूरदूरे
 मुहुरायान्ति महान्ति मङ्गलानि ॥

॥ हरि-स्मरणम् ॥

स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते ।
 पुरुषस्तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥

॥ चक्षुरारोग्य-श्लोकः ॥

शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमधिनौ ।
 भुक्तमात्रे स्मरेद् यस्तु चक्षुस्तस्य न हीयते ॥

॥ भागवतस्मरणम् ॥

पाण्डवा ऊचुः

प्रह्लाद-नारद-पराशार-पुण्डरीक-
व्यासाम्बरीष-शुक-शौनक-भीष्म-दाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुन-वसिष्ठ-विभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान् समरामि ॥

॥ गो-वन्दनम् ॥

गां च दृष्ट्वा नमस्कृत्य कृत्वा चैव प्रदक्षिणम्।
प्रदक्षिणी कृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥
सर्वकामदुघे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनी।
पावने सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥



॥ तुलसी-वन्दनम् ॥

पापानि यानि रविसूनुपटस्थितानि
गो-ब्रह्म-बाल-पितृ-मातृ-वधादिकानि।
नश्यन्ति तानि तुलसीवनदर्शनेन
गोकोटिदानसदृशे फलमाशु च स्यात् ॥ १ ॥

(तुलसीवनगमने प्रोक्तव्यम्)

या दृष्टा निखिलाधसङ्घशमनी स्पृष्टा वपुः पावनी
रोगाणामभिवन्दिता निरसनी सिक्तान्तकत्रासिनी।
प्रत्यासन्ति विधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता
न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः ॥ २ ॥

(तुलसी-जल-प्रोक्षणम्)

ललाटे यस्य दृश्येत तुलसीमूलमृत्तिका।
यमस्तं नेक्षितुं शक्तः किमुदूता भयङ्कराः ॥ ३ ॥

(मृत्तिका-धारणम्)

तुलसीकाननं यत्र यत्र पद्मवनानि च।
वसन्ति वैष्णवा यत्र तत्र सन्निहितो हरिः ॥ ४ ॥

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
वासुदेवादयो देवा वसन्ति तुलसीवने ॥ ५ ॥

(प्रदक्षिणम्)

तुलसी श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥ ६ ॥

(नमस्कारः)

॥ श्रीतुलसीषोडशकनामस्तोत्रम् ॥

तुलसी श्रीमहालक्ष्मीर्विद्याऽविद्या यशस्विनी।
धर्म्या धर्मावनासक्ता पद्मिनी श्रीहरिप्रिया ॥

लक्ष्मीप्रियसखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला।
षोडशैतानि नामानि तुलस्याः कीर्तयेन्नरः।
लभते सुतरां भक्तिम् अन्ते विष्णुपदं लभेत् ॥



॥ अर्जुन-नामानि (विराटपर्वान्तर्गतम्) ॥

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।
बीमत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः॥



॥ यमधर्मराजस्य १४ नामानि ॥

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥

औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृक्कोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥



॥ परब्रह्म-प्रातः स्मरण-स्तोत्रम् ॥

प्रातः स्मरामि हृदि संस्कुरदात्मतत्वं
सच्चित् सुखं परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैति नित्यं
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसन्ध्यः॥ १ ॥

प्रातर्भजामि मनसा वचसामगम्यं
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यं नेति नेति वचनैर्निंगमा अवोचं
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्र्यम्॥ २ ॥

प्रातर्नमामि तमसः परम्कवर्ण
 पूर्णं सनातनपदं पुरुषोत्तमारब्धम्।
 यस्मिन्निदं जगदशेषमशेषमूर्तौ
 रज्वां भुजङ्गम इव प्रतिमासितं वै॥३॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम्।
 प्रातः काले पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम्॥४॥



॥ ध्यान-स्तोत्राणि ॥

॥ गणेश-ध्यानम् ॥

ओङ्कार-सन्निभीमिभाननमिन्दुभालम्
 मुक्तायविन्दुममलद्युतिमेकदन्तं ।
 लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवम्
 ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम्॥

॥ विष्णु-ध्यानम् ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
 विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
 लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृदध्यानगम्यं
 वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

॥ लक्ष्मी-ध्यानम् ॥

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीं
 दासीभूतसमस्तदेववनितां लोकैकदीपाङ्गुराम्।
 श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्ध्यविभवब्रह्मेन्द्रगज्ञाधरां
 त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्॥

॥ राम-ध्यानम् ॥

वैदेहीसहितं सुरदुमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वादिकोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

॥ सीता-ध्यानम् ॥

वामाङ्गे रघुनायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना
 या विप्राधिपयानरम्यनयना या विप्रपालानना।
 विद्युत्पुञ्जविराजमानवसना भक्तार्तिसङ्घणडना
 श्रीमद्राघवपादपद्मयुगलन्यस्तेक्षणा साऽवतु ॥

॥ हनुमत्-ध्यानम् ॥

उष्ट्रारूढ-सुवर्चलासहचरन् सुग्रीवमित्राञ्जना-
 सूनो वायुकुमार केसरितनूजाऽक्षादिदैत्यान्तक।
 सीतशोकहराप्निनन्दन सुमित्रासम्भवप्राणद
 श्रीभीमायज शम्भुपुत्र हनुमान् सूर्यास्य तुभ्यं नमः ॥
 खड्डं खेटक-भिण्डपाल-परशुं पाश-त्रिशूल-द्रुमान्
 चक्रं शङ्ख-गदा-फलाङ्कश-सुधाकुम्भान् हलं पर्वतम्।
 टङ्कं पर्वतकार्मुकाहिंडमरुनेतानि दिव्यायुधान्
 एवं विंशतिबाहुभिश्च दधतं ध्यायेष्ठनूमत्रभुम्॥

॥ सदाशिव-ध्यानम् ॥

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
 वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
 वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
 वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥

॥ सुब्रह्मण्य-ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिर्-
 दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौरव्यप्रदम्।
 अभ्मोजाभय-शक्ति-कुकुटधरं रक्ताङ्गरागोज्ज्वलं
 सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

षड्ब्रङ्गं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्घृतं
 वज्रं शक्तिमसि त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्ककम्।
 पाशं कुकुटमङ्घृशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा
 ध्यायेदीप्सित-सिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

॥ वल्ली-ध्यानम् ॥

श्यामां पङ्कजधारिणीं मणिलसत् ताटङ्ककण्ठज्ज्वलां
 दक्षे लम्बकरां किरीटमकुटां तुङ्गस्तनोत्कञ्चुकाम्।
 अन्योन्येक्षणसंयुगां शरवणोद्भूतस्य सव्ये स्थितां
 गुज्ञामाल्यधराम् प्रवालवसनां वल्लीश्वरीं भावये॥

॥ देवसेना-ध्यानम् ॥

पीतामुत्फलधारिणीं शशिसुतां पीताम्बरालङ्घृतां
 वामे लम्बकरां महेन्द्रतनयां मन्दारमालाधराम्।
 दैवार्चितपादपद्मयुगलां स्कन्दस्य वामे स्थितां
 सेनां दिव्यविभूषितां त्रिनयनां देवीं त्रिभङ्गीं भजे॥

॥ दण्डायुधपाणि-ध्यानम् ॥

कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणामं
 स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवक्रम्।
 कात्यायनीप्रियसुतं कटिबद्धवामं
 कौपीनदण्डधरदक्षिणहस्तमीडे ॥



॥ महागणेशपञ्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकं
 कलाधरावतंसंकं विलासिलोकरक्षकम्।
 अनायकैकनायकं विनाशितेभद्रैत्यकं
 नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ १ ॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
 नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
 सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
 महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ २ ॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
 दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम्।
 कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
 मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ ३ ॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
 पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
 प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
 कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ॥ ४ ॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम्
 अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्।
 हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
 तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम् ॥ ५ ॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
 प्रजल्पयति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
 अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
 समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य

श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-महागणेशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ गणाष्टकम् ॥

एकदन्तं महाकायं तसकाञ्चनसन्निभम्।
 लम्बोदरं विशालाक्षं वन्देऽहं गणनायकम्॥ १ ॥

मौञ्जीकृष्णाजिनधरं नागयज्ञोपवीतिनम्।
 बालेन्दुशकलं मौलौ वन्देऽहं गणनायकम्॥ २ ॥

चित्ररत्न-विचित्राङ्ग-चित्रमालाविभूषितम्।
 कामरूपधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ३ ॥

मूषकोत्तमम् आरुह्य देवासुरमहाहवे।
 योद्धुकामं महावीर्यं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ४ ॥

गजवक्रं सुरश्रेष्ठं कर्णचामरभूषितम्।
 पाशाङ्कुशधरं देवं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ५ ॥

यक्षकिन्नर-गन्धर्व-सिद्ध-विद्याधरैः सदा।
 स्तूयमानं महाबाहुं वन्देऽहं गणनायकम्॥ ६ ॥

अम्बिकाहृदयानन्दं मातृभिः परिवेष्टितम्।
भक्तप्रियं मदोन्मत्तं वन्देऽहं गणनायकम्॥७॥

सर्वविघ्नकरं देवं सर्वविघ्नविवर्जितम्।
सर्वसिद्धिप्रदातारं वन्देऽहं गणनायकम्॥८॥

गणाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् सततं नरः।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि विद्यावान् धनवान् भवेत्॥

॥ गणपतिस्तवः ॥

गर्ग ऋषिरुवाच

अजं निर्विकल्पं निराकारमेकं
निरानन्दमानन्दमद्वैतपूर्णम्।
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं
परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम॥१॥

गुणातीतमानं चिदानन्दरूपं
चिदाभासकं सर्वगं ज्ञानगम्यम्।
मुनिध्येयमाकाशरूपं परेशं
परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम॥२॥

जगत्कारणं कारणज्ञानरूपं
सुरादिं सुखादिं गुणेशं गणेशम्।
जगद्यापिनं विश्ववन्द्यं सुरेशं
परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम॥३॥

रजोयोगतो ब्रह्मरूपं श्रुतिज्ञं
 सदा कार्यसक्तं हृदाऽचिन्त्यरूपम्।
 जगत्कारणं सर्वविद्यानिदानं
 परब्रह्मरूपं गणेशं नताः स्मः ॥४॥
 सदा सत्ययोग्यं मुदा क्रीडमानः
 सुरारीन् हरन्तं जगत्पालयन्तम्।
 अनेकावतारं निजज्ञानहारं
 सदा विश्वरूपं गणेशं नमामः ॥५॥
 तमोयोगिनं रुद्ररूपं त्रिनेत्रं
 जगद्धारकं तारकं ज्ञानहेतुम्।
 अनेकागमैः स्वं जनं बोधयन्तं
 सदा सर्वरूपं गणेशं नमामः ॥६॥
 तमः स्तोमहारं जनाज्ञानहारं
 त्रयीवेदसारं परब्रह्मसारम्।
 मुनिज्ञानकारं विदूरे विकारं
 सदा ब्रह्मरूपं गणेशं नमामः ॥७॥
 निजैरोषधीस्तर्पयन्तं कराद्यैः
 सुरौघान्कलाभिः सुधास्वाविणीभिः।
 दिनेशांशुसन्तापहारं द्विजेशं
 शशाङ्कस्वरूपं गणेशं नमामः ॥८॥
 प्रकाशस्वरूपं नभो वायुरूपं
 विकारादिहेतुं कलाधाररूपम्।
 अनेकक्रियानेकशक्तिस्वरूपं
 सदा शक्तिरूपं गणेशं नमामः ॥९॥

प्रधानस्वरूपं महत्तत्त्वरूपं
 धराचारिरूपं दिगीशादिरूपम्।
 असत्सत्त्वरूपं जगद्घेतुरूपं
 सदा विश्वरूपं गणेशं नताः स्मः ॥ १० ॥

त्वदीये मनः स्थापयेदङ्गियुग्मे
 जनो विघ्नसङ्घातपीडां लभेत।
 लसत्सूर्यविम्बे विशाले स्थितोऽयं
 जनो ध्वान्तपीडां कथं वा लभेत ॥ ११ ॥

वयं भ्रामिताः सर्वथाऽज्ञानयोगा-
 दलव्यास्तवाङ्गिं बहून् वर्षपूर्णान्।
 इदानीमवाप्तास्तवैव प्रसादात्
 प्रपन्नान् सदा पाहि विश्वम्भराद्य ॥ १२ ॥

एवं स्तुतो गणेशस्तु सन्तुष्टोऽभून्महामुने।
 कृपया परयोपेतोऽभिधातुमुपचक्रमे॥
 ॥ इति श्रीमद्-गर्गत्रिष्ठिकृतो श्री-गणपतिस्तवः सम्पूर्णः ॥

॥ गणेशभुजङ्गम् ॥

रणत् क्षुद्रघणटानिनादाभिरामं
 चलत् ताण्डवोद्दण्डवत्पद्मतालम्।
 लसत् तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारं
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे ॥ १ ॥

धनिधंसवीणालयोल्लासिवक्रं
 स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम्।
 गलदृप्ससौगन्ध्यलोलालिमालं
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥२॥
 प्रकाशजपारक्तरन्तप्रसून-
 प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम्।
 प्रलम्बोदरं वक्रतुण्डैकदन्तं
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥३॥
 विचित्रस्फुरद्रुतमालाकिरीटं
 किरीटोल्लसच्चन्द्ररेखाविभूषम्।
 विभूषैकभूषं भवध्वंसहेतुं
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥४॥
 उदच्चद्धुजावल्लरीदृश्यमूलोच्-
 चलद्-भ्रूलता-विभ्रमभ्राजदक्षम्।
 मरुत् सुन्दरीचामरैः सेव्यमानं
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥५॥
 स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारं
 कृपाकोमलोदारलीलावतारम्।
 कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यैर्-
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥६॥
 यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पं
 गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम्।
 परं पारमोङ्कारमाम्नायगर्भं
 वदन्ति प्रगल्पं पुराणं तमीडे॥७॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यं
 नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्।
 नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे
 नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो॥८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या
 पठेद्यस्तु मत्यो लभेत्सर्वकामान्।
 गणेशप्रसादेन सिद्धन्ति वाचो
 गणेशो विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने॥९॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गणेशभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

॥ महागणपति नवार्णवेदपाद स्तवः ॥

श्रीकण्ठतनय श्रीश श्रीकर श्रीदलार्चित।
 श्रीविनायक सर्वेश श्रियं वासय मे कुले ॥ १ ॥

गजानन गणाधीश द्विजराज-विभूषित।
 भजे त्वां सच्चिदानन्द ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते ॥ २ ॥
 णषष्वाच्यनाशाय रोगाटविकुठारिणे।
 घृणापालितलोकाय वनानां पतये नमः ॥ ३ ॥

धियं प्रयच्छते तुभ्यम् ईप्सितार्थप्रदायिने।
 दीप्तभूषणभूषाय दिशां च पतये नमः ॥ ४ ॥
 पञ्चब्रह्मस्वरूपाय पञ्चपातकहारिणे।
 पञ्चतत्त्वात्मने तुभ्यं पशूनां पतये नमः ॥ ५ ॥

तटिकोटि-प्रतीकाशा-तनवे विश्वसाक्षिणे।
तपस्त्व-ध्यायिने तुभ्यं सेनानिभ्यश्च वो नमः ॥ ६ ॥

ये भजन्त्यक्षरं त्वां ते प्राप्नुवन्त्यक्षरात्मताम्।
नैकरूपाय महते मुष्णातां पतये नमः ॥ ७ ॥

नगजावरपुत्राय सुरराजार्चिताय च।
सगुणाय नमस्तुभ्यं सुमृडीकाय मीढुषे ॥ ८ ॥

महापातकसङ्खात महारणभयापह।
त्वदीय कृपया देव सर्वानव यजामहे ॥ ९ ॥

नवार्णरत्ननिगमपादसम्पुटितां स्तुतिम्।
भक्त्या पठन्ति ये तेषां तुष्टो भव गणाधिप ॥

॥ इति श्री-महागणपति नवार्णवेदपादस्तवः सम्पूर्णः ॥



॥ वेङ्कटेश सुप्रभातम् ॥

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाहिकम् ॥ १ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥ २ ॥

मातः समस्तजगतां मधुकैटभारेः
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यमूर्ते।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेङ्कटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरचिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥ ४ ॥

अत्र्यादिसप्तऋषयः समुपास्य सन्ध्याम्
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

पञ्चाननाङ्गभवषणमुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवन्ति।
भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

ईषत्प्रफुल्ल-सरसीरुह-नारिकेल-
 पूगद्रुमादि-सुमनोहरपालिकानाम्।
 आवाति मन्दमनिलः सह दिव्यगन्धैः
 शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥७॥

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
 पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
 भुत्तवा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
 शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥८॥

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्चा
 गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि।
 भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यं
 शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥९॥

भृजावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
 इङ्कारगीत निनदैः सह सेवनाय।
 निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
 शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥१०॥

योषागणेन वरदध्निविमथ्यमाने
 घोषालयेषु दधिमन्थनतीवघोषाः।
 रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः
 शोषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम्॥११॥

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या।
भेरीनिनादमिव विभ्रति तीव्रनादं
शेषाद्रिशोखरविभो तव सुप्रभातम्॥ १२॥

श्रीमन्नभीष्ठवरदाखिललोकबन्धो
श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो।
श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १३॥

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाऽऽप्लवनिर्मलाङ्गाः
श्रेयोऽर्थिनो हरविरिच्छसनन्दनाद्याः।
द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १४॥

श्रीशेषशौल-गरुडाचल-वेङ्कटाद्रि-
नारायणाद्रि-वृषभाद्रि-वृषाद्रि-मुख्याम्।
आख्यां त्वदीय वसतेरनिशं वदन्ति
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १५॥

सेवापराः शिव-सुरेश-कृशानु-धर्म-
रक्षोऽम्बुनाथ-पवमान-धनाधिनाथाः।
बद्धाङ्गलि-प्रविलसन्निजशीर्ष-देशाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १६॥

धाटीषु ते विहगराज-मृगाधिराज-
 नागाधिराज-गजराज-हयाधिराजाः ।
 स्वस्वाधिकार-महिमाऽधिकमर्थयन्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १७ ॥
 सूर्येन्दु-भौम-बुध-वाक्पति-काव्य-सौरि-
 स्वर्भानु-केतु-दिविषत्परिषत्प्रधानाः ।
 त्वदास-दास-चरमावधि-दासदासाः
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १८ ॥
 त्वत् पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
 स्वर्गापवर्गनिरपेक्ष-निजान्तरङ्गाः ।
 कल्पागमाऽऽकलनयाऽऽकुलतां लभन्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १९ ॥
 त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
 स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः ।
 मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २० ॥
 श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताव्ये
 देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते ।
 श्रीमन्ननन्त-गरुडादिभिरर्चिताङ्गे
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २१ ॥
 श्रीपद्मनाभं पुरुषोत्तमं वासुदेव
 वैकुण्ठं माघवं जनार्दनं चक्रपाणे ।
 श्रीवत्सचिह्नं शरणागत-पारिजात
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २२ ॥

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्ते
 कान्ताकुचाम्बुरुह-कुञ्जल-लोलदृष्टे।
 कल्याणनिर्मलगुणाकर दिव्यकीर्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २३॥

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंह वर्णिन्
 स्वामिन् परश्वथ तपोधन रामचन्द्र।
 शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २४॥

एला-लवज्ज-घनसार-सुगन्धि-तीर्थ
 दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम्।
 धृत्वाऽद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
 तिष्ठन्ति वेङ्कटपते तव सुप्रभातम्॥ २५॥

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
 सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः।
 श्रीवैष्णवाः सततमर्थित-मङ्गलास्ते
 धामाऽश्रयन्ति तव वेङ्कट सुप्रभातम्॥ २६॥

ब्रह्मादयः सुरवराः समर्घयस्ते
 सन्तः सनन्दन मुखास्तव योगिवर्याः।
 धामान्तिके तव हि मङ्गलवस्तुहस्ताः
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २७॥

लक्ष्मीनिवास निरवद्यगुणैकसिन्धो
 संसार-सागर-समुत्तरणैकसेतो ।
 वेदान्तवेद्य निजवैभव भक्तभोग्य
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२८॥

इत्थं वृषाचलपतेरिह सुप्रभातं
 ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
 तेषां प्रभातसमये स्मृतिरङ्गभाजां
 प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते ॥२९॥
 ॥ इति श्री-वेङ्कटेश सुप्रभातम् सम्पूर्णम् ॥

॥ वेङ्कटेश-स्तोत्रम् ॥

कमलाकुच-चूचुक-कुङ्कुमतो नियतारुणितातुल-नीलतनो ।
 कमलायतलोचन लोकपते विजयी भव वेङ्कटशैलपते ॥ १ ॥
 सचतुर्मुख-षण्मुख-पञ्चमुख-प्रमुखाखिलदैवतमौलिमणे ।
 शरणागतवत्सल सारनिधे परिपालय मां वृषशैलपते ॥ २ ॥

अतिवेलतया तव दुर्विषहैरनुवेलकृतैरपराधशतैः ।
 भरितं त्वरितं वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे ॥ ३ ॥

अधिवेङ्कटशैलमुदारमते जनताभिमताधिकदानरतात् ।
 परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न परं कलये ॥ ४ ॥

कलवेणुरवावशगोपवधू शतकोटिवृतात्स्मरकोटिसमात् ।
 प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदाद् वसुदेवसुतान्न परं कलये ॥ ५ ॥

अभिरामगुणाकर दाशरथे जगदेकधनुर्धर धीरमते।
 रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे॥६॥

अवनीतनया-कमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाम्बुरुहम्।
 रजनीचरराजतमोमिहिं महनीयमहं रघुराम मये॥७॥

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं स्वनुजं च सुखायममोघशरम्।
 अपहाय रघूद्वहमन्यमहं न कथञ्चन कञ्चन जातु भजे॥८॥

विना वेङ्कटेशं न नाथो न नाथः
 सदा वेङ्कटेशं स्मरामि स्मरामि।
 हरे वेङ्कटेश प्रसीद प्रसीद
 प्रियं वेङ्कटेश प्रयच्छ प्रयच्छ॥९॥

अहं दूरतस्ते पदाभ्मोजयुग्म
 प्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि।
 सकृत्सेवया नित्यसेवाफलं त्वं
 प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेङ्कटेश॥१०॥

अज्ञानिना मया दोषानशोषान् विहितान् हरे।
 क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शोषशैल-शिखामणे॥११॥

॥इति श्री-वेङ्कटेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥वेङ्कटेश प्रपत्तिः ॥

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीं
 तद्वक्षःस्थल-नित्य-वासरसिकां तत्क्षान्ति-संवर्धिनीम्।
 पद्मालङ्कृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं
 वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम्॥१॥

श्रीमन् कृपाजलनिधे कृतसर्वलोक
 सर्वज्ञं शक्तं न तवत्सलं सर्वशोषिण्।
 स्वामिन् सुशीलं सुलभाश्रितपारिजात
 श्रीवेङ्कटेशं चरणौ शरणं प्रपद्ये॥२॥

आनूपुरार्पितसुजातसुगन्धिपुष्प-
 सौरभ्यसौरभकरौ समसन्निवेशौ।
 सौम्यौ सदाऽनुभवनेऽपि नवानुभाव्यौ
 श्रीवेङ्कटेशं चरणौ शरणं प्रपद्ये॥३॥

सद्योविकासिसमुद्दित्वरसान्दराग-
 सौरभ्यनिर्भरसरोरुहसाम्यवार्ताम्।
 सम्यक्षु साहसपदेषु विलेखयन्तौ
 श्रीवेङ्कटेशं चरणौ शरणं प्रपद्ये॥४॥

रेखामयध्वजसुधाकलशातपत्र-
 वज्राङ्कशाम्बुरुहकल्पकशङ्खचक्रैः।
 भव्यैरलङ्कृततलौ परतत्त्वचिह्नैः
 श्रीवेङ्कटेशं चरणौ शरणं प्रपद्ये॥५॥

ताम्रोदरद्युतिपराजितपद्मरागौ
 बाह्यैर्महोभिरभिभूतमहेन्द्रनीलौ।
 उद्घन्नखांशुभिरुदस्तशशाङ्कभासौ
 श्रीवेङ्कटेशं चरणौ शरणं प्रपद्ये॥६॥

सप्रेमभीति कमलाकरपल्लवाभ्यां
 संवाहनेऽपि सपदि क्लममादधानौ।
 कान्ताववाङ्मन-सगोचर-सौकुमार्यौ
 श्रीवेङ्कटेशं चरणौ शरणं प्रपद्ये॥७॥

लक्ष्मीमहीतदनुरूपनिजानुभाव-
नीलादिदिव्यमहिषीकरपल्लवानाम्।
आरुण्यसङ्कमणतः किल सान्द्ररागौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥८॥

नित्यानमद्विधिशिवादिकिरीटकोटि-
प्रत्युप-दीप-नवरत्न-महःप्ररोहैः।
नीराजनाविधिमुदारमुपादानौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥९॥

विष्णोः पदे परम इत्युतिदप्रशंसौ
यौ मध्व उत्स इति भोग्यतयाऽप्युपात्तौ।
भूयस्तथेति तव पाणितलप्रदिष्टौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥१०॥

पार्थाय तत्सदृशा-सारथिना त्वयैव
यौ दर्शितौ स्वचरणौ शरणं ब्रजेति।
भूयोऽपि मह्यमिह तौ करदर्शितौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥११॥

मन्मूर्धि कालियफणे विकटाटवीषु
श्रीवेङ्कटाद्रिशिखरे शिरसि श्रुतीनाम्।
चित्तेऽप्यनन्यमनसां सममाहितौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥१२॥

अमूलानहृष्यदवनीतलकीर्णपुष्पौ
श्रीवेङ्कटाद्रि-शिखराभरणायमानौ।
आनन्दिताखिल-मनो-नयनौ तवैतौ
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥१३॥

प्रायः प्रपन्न-जनता-प्रथमावगाह्यौ
मातुः स्तनाविव शिशोरमृतायमानौ।
प्राप्तौ परस्परतुलामतुलान्तरौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥१४॥

सत्त्वोत्तरैः सतत-सेव्यपदाम्बुजेन
संसार-तारक-दयाद्व-दग्ध्वलेन।
सौम्यौ पयन्तृमुनिना मम दर्शितौ ते
श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये॥१५॥

श्रीश श्रिया घटिकया त्वदुपायभावे
प्राप्ये त्वयि स्वयमुपेयतया स्फुरन्त्या।
नित्याश्रिताय निरवद्यगुणाय तुभ्यं
स्यां किङ्करो वृषगिरीश न जातु मह्यम्॥१६॥
॥इति श्रीवेङ्कटेश प्रपत्तिः सम्पूर्णा॥

॥वेङ्कटेश मङ्गलाशासनम्॥

श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥१॥
लक्ष्मी-सविभ्रमालोक-सुभ्रू-विभ्रमचक्षुषे।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥२॥
श्रीवेङ्कटादि-शृङ्खाग्र-मङ्गलाभरणाद्वये ।
मङ्गलानां निवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥३॥
सर्वावयवसौन्दर्य-सम्पदा सर्वचेतसाम्।
सदा सम्मोहनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥४॥

नित्याय निरवद्याय सत्यानन्दचिदात्मने।
सर्वान्तरात्मने श्रीमद्-वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥५॥

स्वतस्सर्वविदे सर्वशक्तये सर्वशेषिणे।
सुलभाय सुशीलाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥६॥

परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने।
प्रयुज्ञे परतत्त्वाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥७॥

आकालतत्त्वमश्रान्तमात्मनामनुपश्यताम्।
अतृष्यमृतरूपाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥८॥

प्रायः स्वचरणौ पुंसां शरण्यत्वेन पाणिना।
कृपयाऽऽदिशते श्रीमद्-वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥९॥

दयामृत-तरञ्जिण्यास्त्तरञ्जैरिव शीतलैः।
अपाङ्गैः सिञ्चते विश्वं वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥१०॥

स्वगम्भूषाम्बरहेतीनां सुषमावहमूर्तये।
सर्वार्तिशमनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥११॥

श्रीवैकुण्ठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे।
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम्॥१२॥

श्रीमत् सुन्दरजामातृमुनिमानसवासिने।
सर्वलोकनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥१३॥

मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्य-पुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम्॥१४॥

॥ इति श्री-वेङ्कटेश-मङ्गलाशासनं सम्पूर्णम्॥

॥ वेङ्कटेश करावलम्बस्तोत्रम् ॥

श्रीशेषशैल-सुनिकेतन दिव्यमूर्ते
 नारायणाच्युत हरे नलिनायताक्ष।
 लीलाकटाक्ष-परिरक्षित-सर्वलोक
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मादिवन्दितपदाम्बुज शङ्खपाणे
 श्रीमत्सुदर्शन-सुशोभित-दिव्यहस्त।
 कारुण्यसागर शरण्य सुपुण्यमूर्ते
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

वेदान्त-वेद्य भवसागर-कर्णधार
 श्रीपद्मनाभ कमलार्चितपादपद्म।
 लोकैक-पावन परात्पर पापहारिन्
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

लक्ष्मीपते निगमलक्ष्य निजस्वरूप
 कामादिदोष-परिहारक बोधदायिन।
 दैत्यादिमर्दन जनार्दन वासुदेव
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

तापत्रयं हर विभो रभसा मुरारे
 संरक्ष मां करुणया सरसीरुहाक्ष।
 मच्छिष्य इत्यनुदिनं परिरक्ष विष्णो
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

श्री-जातरूपनवरत्न-लसत्किरीट
 कस्तूरिकातिलकशोभिललाटदेश ।
 राकेन्दुबिम्ब-वदनाम्बुज वारिजाक्ष
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

वन्दारुलोक-वरदान-वचोविलास
 रत्नाढ्यहार-परिशोभित-कम्बुकण्ठ ।
 केयूररत्न-सुविभासि-दिग्नन्तराल
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥

दिव्याङ्गदाश्चित-भुजद्वय मङ्गलात्मन्
 केयूरभूषण-सुशोभित-दीर्घबाहो ।
 नागेन्द्र-कङ्कण-करद्वय कामदायिन्
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ८ ॥

स्वामिन् जगद्वरणवारिधिमध्यमग्नं
 मामुद्धराद्य कृपया करुणापयोधे।
 लक्ष्मीं च देहि मम धर्म-समृद्धिहेतुं
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥

दिव्याङ्गरागपरिचर्चित-कोमलाङ्ग
 पीताम्बरावृततनो तरुणाक-दीसे।
 सत्काश्चनाभ-परिधान-सुपद्मबन्ध
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ १० ॥

रत्नाढ्यदाम-सुनिवद्ध-कटि-प्रदेश
 माणिक्यदर्पण-सुसन्निम-जानुदेश ।
 जङ्घाद्वयेन परिमोहित सर्वलोक
 श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम् ॥ ११ ॥

लोकैकपावन-सरित्परिशोभिताद्वे
त्वत्याददर्शन दिने च ममाघमीशा।
हार्दं तमश्च सकलं लयमाप भूमन्
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १२ ॥

कामादि-वैरि-निवहोऽच्युत मे प्रयातः
दारिद्र्यमप्यपगतं सकलं दयालो।
दीनं च मां समवलोक्य दयार्द्र-दृष्ट्या
श्रीवेङ्कटेश मम देहि करावलम्बम्॥ १३ ॥

श्रीवेङ्कटेश-पदपङ्कज-षष्ठदेन
श्रीमन्नसिंहयतिना रचितं जगत्याम्।
ये तत्पठन्ति मनुजाः पुरुषोत्तमस्य
ते प्राप्नुवन्ति परमां पदवीं मुरारेः॥ १४ ॥

॥ इति श्री-शङ्करि-जगद्गुरुणा श्री-नृसिंहभारती-स्वामिना रचितं
श्री-वेङ्कटेश-करावलम्बस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ वेङ्कटेश-अष्टकम् ॥

वेङ्कटेशो वासुदेवः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः।
सङ्कर्षणोऽनिरुद्धश्च शोषाद्रिपतिरेव च॥ १ ॥

जनार्दनः पद्मनाभो वेङ्कटाचलवासनः।
सृष्टिकर्ता जगन्नाथो माधवो भक्तवत्सलः॥ २ ॥

गोविन्दो गोपतिः कृष्णः केशवो गरुडध्वजः।
वराहो वामनश्चैव नारायण अधोक्षजः॥ ३ ॥

श्रीधरः पुण्डरीकाक्षः सर्वदेवस्तुतो हरिः।
श्रीनृसिंहो महासिंहः सूत्राकारः पुरातनः ॥ ४ ॥

रमानाथो महीभर्ता भूधरः पुरुषोत्तमः।
चोळपुत्रप्रियः शान्तो ब्रह्मादीनां वरप्रदः ॥ ५ ॥

श्रीनिधिः सर्वभूतानां भयकृद्धयनाशनः।
श्रीरामो रामभद्रश्च भववन्धैकमोचकः ॥ ६ ॥

भूतावासो गिरिवासः श्रीनिवासः श्रियः पतिः।
अच्युतानन्तं गोविन्दो विष्णुर्वेङ्कटनायकः ॥ ७ ॥

सर्वदेवैकशरणं सर्वदेवैकदैवतम्।
समस्तदेवकवचं सर्वदेवशिखामणिः ॥ ८ ॥

इतीदं कीर्तिं यस्य विष्णोरमिततेजसः।
त्रिकाले यः पठेन्नित्यं पापं तस्य न विद्यते ॥ ९ ॥

राजद्वारे पठेद्-घोरे सङ्घामे रिपुसङ्कटे।
भूतसर्पपिशाचादिभयं नास्ति कदाचन ॥ १० ॥

अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत्।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्वद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ ११ ॥

यद्यदिष्टतमं लोके तत्तत्प्राप्नोत्यसंशयः।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥ १२ ॥

विष्णोलोकैकसोपानं सर्वदुःखैकनाशनम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं नृणां सर्वमङ्गलकारकम् ॥ १३ ॥

मायावि परमानन्दं त्यक्तवा वैकुण्ठमुत्तमम्।
स्वामिपुष्करिणीतीरे रमया सह मोदते॥ १४॥

कल्याणाद्भुतगात्राय कामितार्थप्रदायिने।
श्रीमद्वेङ्कटनाथाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥ १५॥

॥ इति श्री-ब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे वेङ्कटगिरिमाहात्म्ये
श्री-वेङ्कटेश-अष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ वेङ्कटेशद्वादशनामस्तोत्रम्॥

वेङ्कटेशो वासुदेवो वारिजासनवन्दितः।
स्वामिपुष्करिणीवासः शङ्खचक्रगदाधरः॥ १॥

पीताम्बरधरो देवो गरुडारूढशोभितः।
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विजयो वेङ्कटेश्वरः॥ २॥

एतद्वादशनामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णोः सायुज्यमाप्नुयात्॥ ३॥

॥ इति श्री-वेङ्कटेशद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ श्रीनिवास गद्यम्॥

श्रीमद्रिविल-महीमण्डल-मण्डन-धरणिधर-मण्डलाखण्डलस्य'
निरिखिल-सुरासुर-वन्दित-वराहक्षेत्र-विभूषणस्य' शेषाचल-
गरुडाचल-वृषभाचल-नारायणाचलाञ्जनाचलादि
शिखरिमालाकुलस्य' नादमुख-बोधनिधि-वीधिगुण-साभरण-
सत्त्वनिधि-तत्त्वनिधि-भक्तिगुणपूर्ण-श्रीशैलपूर्ण-गुणवशंवद-

परमपुरुष-कृपापूर-विभ्रमदतुङ्श्वङ्ग-गलद्वगनगङ्गासमालिङ्गितस्य'
 सीमातिग गुण रामानुजमुनि नामाङ्कित बहु भूमाश्रय सुरधामालय
 वनरामायत वनसीमापरिवृत विशङ्कटतट निरन्तर विजृभित
 भक्तिरस निर्झरानन्तार्याहार्य प्रस्तवणधारापूर
 विभ्रमद-सलिलभरभरित महातटाक मण्डितस्य' कलिकर्दम
 मलमर्दन कलितोद्यम विलसद्यम नियमादिम मुनिगणनिषेव्यमाण
 प्रत्यक्षीभवन्निजसलिल मज्जन नमज्जन निखिलपापनाशन पापनाशन
 तीर्थाध्यासितस्य' मुरारिसेवक जरादिपीडित निरार्तिजीवन निराश
 भूसुर वरातिसुन्दर सुराङ्गनारति कराङ्गसौष्ठव कुमारताकृति
 कुमारतारक समापनोदय तनूनपातक महापदामय विहापनोदित
 सकलभुवन विदित कुमारधाराभिधान-तीर्थाधिष्ठितस्य' धरणितल
 गत सकल हृतकलिल शुभसलिल गतबहुल विविधमल हति चतुर
 रुचिरतर विलोकनमात्र विदलित विविधमहापातक स्वामिपुष्करिणी
 समेतस्य' बहुसङ्कट नरकावट पतदुत्कट कलिकङ्कट कलुषोऽद्वट
 जनपातक विनिपातक रुचिनाटक करहाटक कलशाहृत कमलारत
 शुभमज्जन जल सज्जन भरित निजदुरित हतिनिरत जनसतत
 निर्गलपेपीयमान सलिल सम्भृत विशङ्कट कटाहतीर्थ विभूषितस्य'
 एवमादिम भूरिमञ्जिम सर्वपातक गर्वहातक सिन्धुडम्बर हारिशम्बर
 विविधविपुल पुण्यतीर्थनिवहनिवासस्य' श्रीमतो वेङ्कटाचलस्य
 शिखरशेखर-महाकल्पशाखी' खर्वीभवदति गर्वीकृत
 गुरुमेर्वीशागिरि मुखोर्वीधर कुलदर्वीकर दयितोर्वीधर शिखरोर्वी'
 सतत सदर्वीकृति चरणघन गर्वचर्वण निपुण तनुकिरणमसृणित
 गिरिशिखरशेखरतरुनिकर तिमिरः' वाणीपतिशर्वाणी

दयितेन्द्राणीश्वर मुख नाणीयोरसवेणी निभशुभवाणी नुतमहिमाणी'
 यस्तर कोणी भवद्रिलभुवनभवनोदरः' वैमानिकगुरु भूमार्धिक गुण
 रामानुज कृतधामाकर करधामारि दरललामाच्छकनक दामायित
 निजरामालय' नवकिसलयमय तोरणमालायित वनमालाधरः'
 कालाम्बुद मालानिभ नीलालक जालावृत बालाङ्ग सलीलामल
 फालाङ्गसमूलामृत धाराद्वयावधीरण' धीरललिततर विशदतर घन
 घनसारमयोर्ध्वपुण्डरेखाद्वयरुचिरः' सुविकस्वर दलभास्वर
 कमलोदर गतमेदुर नवकेसर ततिभासुर परिपिञ्चर कनकाम्बर
 कलितादर ललितोदर तदालम्ब जम्भरिपु मणिस्तम्भ
 गम्भीरिमदम्भस्तम्भ समुज्जम्भमान पीवरोरुयुगल तदालम्ब पृथुल
 कदली मुकुल मदहरणजङ्गाल जङ्गायुगलः' नव्यदल भव्यगल
 पीतमल शोणिमल सन्मृदुल सत्किसलयाश्रुजल-कारि बल
 शोणतल पदकमल निजाश्रय बलबन्दीकृत शरदिन्दुमण्डली
 विभ्रमदादभ्र शुभ्र पुनर्भवाधिष्ठिताङ्गुलीगाढ निर्पीडित पद्मापनः'
 जानुतलावधि लम्बि विडम्बित वारण शुण्डादण्ड विजुम्बित
 नीलमणिमय कल्पकशाखा विभ्रमदायि मृणाललतायत
 समुज्ज्वलतर कनकवलय वेल्लितैकतर बाहुदण्डयुगलः' युगपदुदित
 कोटि खरकर हिमकर मण्डल जाज्वल्यमान सुदर्शन पाञ्चजन्य
 समुत्तुञ्जित शृङ्गापर बाहु युगलः' अभिनवशाण समुत्तोजित महामहा
 नीलखण्ड मतखण्डन निपुण नवीन परितस कार्तस्वर कवचित
 महनीय पृथुल सालग्राम परम्परा गुम्भित नाभिमण्डल पर्यन्त
 लम्बमान प्रालम्बदीसि समालम्बित विशाल वक्षःस्थलः' गङ्गाइर
 तुङ्गाकृति भङ्गावलि भङ्गावह सौधावलि बाधावह धारानिभ हारावलि

दूराहत गेहान्तर मोहावह महिम मसृणित महातिमिरः' पिङ्गाकृति
 भृङ्गारु निभाङ्गार दलाङ्गामल निष्कासित दुष्कार्यघ निष्कावलि
 दीपप्रभ नीपच्छवि तापप्रद कनकमालिका पिशाङ्गित सर्वाङ्गः'
 नवदलित दलवलित मृदुललित कमलतति मदविहति चतुरतर
 पृथुलतर सरसतर कनकसरमय रुचिकण्ठिका कमनीयकण्ठः'
 वाताशनाधिपति शयन कमन परिचरण रतिसमेताखिल फणधरतति
 मतिकरकनकमय नागभरण परिवीताखिलाङ्गावगमित शयन
 भूताहिराज जातातिशयः' रविकोटी परिपाटी धरकोटी रपताटी
 कितवाटी रसधाटी धर मणिगणकिरण विसरण सततविघुत
 तिमिरमोह गर्भगेहः' अपरिमित विविधभुवन भरिताखण्ड
 ब्रह्माण्डमण्डल पिचण्डिलः' आर्यधुर्यानन्तार्य पवित्र खनित्रपात
 पात्रीकृत निजचुबुक गतव्रणकिण विभूषणवहनसूचित
 श्रितजनवत्सलतातिशयः' मङ्गुडिण्डिम ढमरु झङ्गर काहली
 पटहावली मृदुमर्दलाशि मृदृग्न दुन्दुभि ढक्किकामुक हृद्य वाद्यक
 मधुरमङ्गल नादमेदुर विसृमर सरस गानरस रुचिर सन्तत
 सन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव संवत्सरोत्सवादि
 विविधोत्सव कृतानन्दः' श्रीमदानन्दनिलय विमानवासः' सतत
 पद्मालया पदपद्मरेणु सञ्चितवक्षःस्थल पटवासः' श्रीश्रीनिवासः'
 सुप्रसन्नो विजयताम्॥ १ ॥

नाटारभि भूपाल बिलहरि मायामालव गौला असावेरी' सावेरी
 शुद्धसावेरी देवगान्धारी' धन्यासी बेगड हिन्दुस्थानी कापी तोडी
 नाटकुरङ्गी' श्रीराग सहन अठाण सारङ्गी दर्बारु पन्तुवराली वराली'

कल्प्याणी पूर्वीकल्प्याणी यमुनाकल्प्याणी हुसेनी जञ्जोटी कौमारी'
 कन्नड खरहरप्रिया कलहंस नादनामक्रिया मुखारी' तोडी
 पुन्नागवराली काम्भोजी भैरवी' यदुकुलकाम्भोजी आनन्दभैरवी
 शङ्कराभरण मोहन रेगुसी सौराष्ट्री' नीलाम्बरी गुणक्रिया मेघगर्जनी'
 हंसध्वनि शोकवराली मध्यमावती जेञ्जुरुटी सुरटी' द्विजावन्ती
 मलयाम्बरी कापि परशुधनासरी देशिकतोडी' आहिरी वसन्तगौली
 सन्तु केदारगौला कनकाङ्गी रत्नाङ्गी गानमूर्ति' वनस्पति वाचस्पति
 दानवती मानरूपी सेनापति' हनुमतोडी धेनुका नाटकप्रिया
 कोकिलप्रिया रूपवती गायकप्रिया' वकुलाभरण चक्रवाक सूर्यकान्त
 हाटकाम्बरी इङ्ग्लारध्वनि' नटभैरवी गीर्वाणी हरिकाम्भोजी
 धीरशङ्कराभरण नागानन्दिनी यागप्रिया' विसृमर सरस
 गानरसेत्यादि सन्तत सन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव
 संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः' श्रीमदानन्दनिलयवासः'
 सतत पद्मालया पदपद्मरेणु सञ्चितवक्षःस्थल पटवासः'
 श्रीश्रीनिवासः' सुप्रसन्नो विजयताम्॥ २ ॥

श्री-अलर्मेलमङ्गासमेत श्रीश्रीनिवास स्वामी' सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो
 भूत्वा' पनस पाटली पालाश बिल्व पुन्नाग चूत कदली चन्दन
 चम्पक मञ्जुल मन्दार हिन्तुलादि तिलक मातुलुङ्ग नारिकेल
 क्रौञ्चाशोक माधूकामलक हिन्दुक नागकेतक पूर्णकुन्द पूर्ण गन्ध रस
 कन्द वन वञ्जुल खर्जूर साल कोविदार हिन्ताल पनस विकट
 वैकसवरुण तरुधमरण विचुलङ्गाश्वत्थ यक्ष वसुध वर्माध मन्त्रिणी'
 तिन्त्रिणी बोध न्यग्रोध घटपटल जम्बूमतल्ली वसति वासती जीवनी

पोषणी प्रमुख निखिल सन्दोह तमाल माला महित विराजमान
 चषक मयूर हंस भारद्वाज कोकिल चक्रवाक कपोत गरुड नारायण
 नानाविध पक्षिजाति समूह ब्रह्म-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र-नानाजात्युद्धव
 देवता निर्माण' माणिक्य-वज्र-वैङ्मय-गोमेधिक-पुष्पराग-पद्मरागेन्द्र
 प्रवालमौक्तिक-स्फटिक-हेम-रत्नखचित धगद्धगायमान रथगज
 तुरग पदादि सेवा समूह' भेरी-मदल-मुरवक-झल्लरी-शाह्व-काहल
 नृत्यगीत-तालवाद्य-कुम्भवाद्य-पञ्चमुखवाद्य अहमीमार्गन्नटीवाद्य
 किटिकुन्तलवाद्य सुरटीचौणडोवाद्य तिमिलकवितालवाद्य
 तक्कराघवाद्य घणटाताडन ब्रह्मताल समताल कोद्धरीताल ढक्करीताल
 ऐक्काल' धारावाद्य पटह कांस्यवाद्य भरतनाट्यालङ्कार किन्नर
 किम्पुरुष रुद्रवीणा मुखवीणा वायुवीणा' तुम्बुरुवीणा गान्धर्ववीणा
 नारदवीणा' स्वरमण्डल रावणहस्तवीणास्तक्रियालङ्कियालङ्कृतानेक-
 विधवाद्य वापीकूपतटाकादि गङ्गा यमुना रेवा वरुणा शोणनदी
 शोभनदी' सुवर्णमुखी वेगवती वेत्रवती क्षीरनदी बाहुनदी गरुडनदी
 कावेरी ताम्रपर्णी प्रमुखा महापुण्यनद्यः' सजलतीर्थः
 सहोभयकूलङ्गत सदाप्रवाह ऋग्यजुःसामार्थर्वण
 वेदशास्त्रेतिहासपुराण-सकलविद्याघोष भानुकोटिप्रकाश
 चन्द्रकोटिसमान नित्यकल्याण परम्परोत्तरोत्तराभिवृद्धिर्भूयादिति'
 भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु। ब्रह्मण्यो राजा धार्मिकोऽस्तु। देशोऽयं
 निरुपद्रवोऽस्तु। सर्वं साधुजनाः सुखिनो विलसन्तु।
 समस्तसन्मङ्गलानि सन्तु। उत्तरोत्तराभिवृद्धिरस्तु।
 सकलकल्याणसमृद्धिरस्तु॥ ३॥

॥ हरिः ॐ ॥

॥ इति श्री-श्रीशैलरङ्गाचार्यविरचितं श्री-श्रीनिवासगद्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ नामरामायणम् ॥

॥ बालकाण्डः ॥

शुद्धब्रह्मपरात्पर
 कालात्मकपरमेश्वर
 शेषतल्पसुखनिद्रित
 ब्रह्माद्यमरप्रार्थित
 चण्डकिरणकुलमण्डन
 श्रीमद्वशरथनन्दन
 कौसल्यासुखवर्धन
 विश्वामित्रप्रियधन
 घोरताटकाधातक
 मारीचादिनिपातक
 कौशिकमरवसंरक्षक
 श्रीमद्भृत्योद्धारक
 गौतममुनिसम्पूजित
 सुरमुनिवरगणसंस्तुत
 नाविकधावितमृदुपद
 मिथिलापुरजनमोहक
 विदेहमानसरञ्जक
 ऋम्बककार्मुखभञ्जक
 सीतार्पितवरमालिक
 कृतवैवाहिककौतुक
 भार्गवदर्पविनाशक
 श्रीमदयोध्यापालक

राम राम जय राजा राम।
राम राम जय सीता राम॥

॥ अयोध्याकाण्डः ॥

अगणितगुणगणभूषित	राम
अवनीतनयाकामित	राम
राकाचन्द्रसमानन	राम
पितृवाक्याश्रितकानन	राम
प्रियगुहविनिवेदितपद	राम
तत्क्षालितनिजमृदुपद	राम
भरद्वाजमुखानन्दक	राम
चित्रकूटाद्रिनिकेतन	राम
दशरथसन्ततचिन्तित	राम
कैकेयीतनयार्थित	राम
विरचितनिजपितृकर्मक	राम
भरतार्पितनिजपादुक	राम
राम राम जय राजा राम।	
राम राम जय सीता राम॥	

॥ अरण्यकाण्डः ॥

दण्डकावनजनपावन
दुष्टविराधविनाशन
शरभञ्जस्तीक्ष्णार्चित

अगस्त्यानुग्रहवर्धित
 गृध्राधिपसंसेवित
 पञ्चवटीतटसुस्थित
 शूर्पणखार्त्तिविद्यायक
 खरदूषणमुखसूदक
 सीताप्रियहरिणानुग
 मारीचार्तिकृताशुग
 विनष्टसीतान्वेषक
 गृध्राधिपगतिदायक
 कबन्धबाहुच्छेदन
 शबरीदत्तफलाशन
 राम राम जय राजा राम।
 राम राम जय सीता राम॥

॥ किञ्चिन्धाकाण्डः ॥

हनुमत्सेवितनिजपद
 नतसुग्रीवाभीष्ठ
 गर्वितवालिसंहारक
 वानरदूतप्रेषक
 हितकरलक्ष्मणसंयुत
 राम राम जय राजा राम।
 राम राम जय सीता राम॥

॥ सुन्दरकाण्डः ॥

कपिवरसन्ततसंस्मृत
 तद्विविघ्नध्वंसक
 सीताप्राणाधारक

राम	दुष्टदशाननदूषित	राम
राम	शिष्ठहनुमद्धूषित	राम
राम	सीतावेदितकाकावन	राम
राम	कृतचूडामणिदर्शन	राम
राम	कपिवरवचनाश्वासित	राम
	राम राम जय राजा राम।	
	राम राम जय सीता राम॥	

॥ युद्धकाण्डः ॥

रावणनिधनप्रस्थित	राम
वानरसैन्यसमावृत	राम
शोषितसरिदीशार्थित	राम
विभीषणाभयदायक	राम
पर्वतसेतुनिवन्धक	राम
कुम्भकर्णशिरश्छेदक	राम
राक्षससङ्खविर्मदक	राम
अहिमहिरावणचारण	राम
संहृतदशमुखरावण	राम
विधिभवमुखसुरसंस्तुत	राम
खःस्थितदशरथवीक्षित	राम
सीतादर्शनमोदित	राम
अभिषिक्तविभीषणनत	राम
पुष्पकयानारोहण	राम
भरद्वाजाभिनिषेवण	राम
भरतप्राणप्रियकर	राम
साकेतपुरीभूषण	राम
सकलस्वीयसमानत	राम
रत्नलसत्पीठास्थित	राम

पद्मभिषेकालङ्कृत	राम	स्वर्गतशम्बुकसंस्तुत	राम
पार्थिवकुलसम्मानित	राम	स्वतनयकुशलवनन्दित	राम
विभीषणार्पितरङ्गक	राम	अश्वमेघक्रतुदीक्षित	राम
कीशकुलानुग्रहकर	राम	कालावेदितसुरपद	राम
सकलजीवसंरक्षक	राम	आयोध्यकजनमुक्तिद	राम
समस्तलोकाधारक	राम	विधिमुखविबुधानन्दक	राम
राम राम जय राजा राम।		तेजोमयनिजरूपक	राम
राम राम जय सीता राम॥		संसृतिबन्धविमोचक	राम
॥उत्तरकाण्डः ॥		धर्मस्थापनतत्पर	राम
आगतमुनिगणसंस्तुत	राम	भक्तिपरायणमुक्तिद	राम
विश्रुतदशकण्ठोद्भव	राम	सर्वचराचरपालक	राम
सितालिङ्गननिर्वृत	राम	सर्वभवामयवारक	राम
नीतिसुरक्षितजनपद	राम	वैकुण्ठालयसंस्थित	राम
विपिनत्याजितजनकज	राम	नित्यानन्दपदस्थित	राम
कारितलवणासुरवध	राम	राम राम जय राजा राम।	
		राम राम जय सीता राम॥	

॥इति श्रीलक्ष्मणाचार्यविरचितं नामरामायणं सम्पूर्णम्॥



वैदेहीसहितं सुरुद्गमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाच्यति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाच्चादिकोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

॥ रामरक्षास्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्वस्य।
 बुधकौशिक ऋषिः। श्रीसीतारामचन्द्रो देवता।
 अनुष्टुप् छन्दः। सीता शक्तिः। श्रीमद्-हनुमान कीलकम्।
 श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
 पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
 वामाङ्गारूढ-सीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
 नानालङ्घारदीपं दधतमुरुजटामण्डनं रामचन्द्रम् ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
 एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनं
 जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्।
 सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तच्चरान्तकं
 स्वलीलया जगत्त्वातुम् आविर्भूतम् अजं विभुम् ॥
 रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापद्मीं सर्वकामदाम् ॥

॥ कवचम् ॥

शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः।
 कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ॥ १ ॥

ग्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः।
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः॥२॥

स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्॥३॥

मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः।
गुह्यं जितेन्द्रियः पातु पृष्ठः पातु रघूत्तमः॥४॥

वक्षः पातु कवन्धारिः स्तनौ गीर्वाणवन्दितः।
पाश्वौ कुलपतिः पातु कुक्षिमिक्ष्वाकुनन्दनः॥५॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सविथनी हनुमत्रभुः।
ऊरु रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥६॥

जानुनी सेतुकृत् पातु जडे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥७॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥८॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥९॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥१०॥

जगजैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥११॥

वज्रपञ्चरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताङ्गः सर्वत्र लभते जयमञ्जलम्॥ १२ ॥

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥ १३ ॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः॥ १४ ॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥ १५ ॥

फलमूलाशनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥ १६ ॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥ १७ ॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशौ अक्षयाशुगनिषञ्जसञ्जिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणौ अग्रतः पथि सदैव गच्छताम्॥ १८ ॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
यच्छन्मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः॥ १९ ॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः॥ २० ॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमान् अप्रमेयपराक्रमः॥ २१ ॥

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः॥२२॥

॥ इति श्री-पद्मपुराणे वेदव्यासकृतौ
भगवद्वसिष्ठ-श्री-बुधकौशिकप्रणीतं वज्रपञ्चरं नाम श्री-रामकवचं
सम्पूर्णम्॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरः॥१॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसन्ध्यं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्ति
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥२॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥३॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कशा राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥४॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृह्णामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥५॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
 स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
 सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः
 नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥६॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा।
 पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥७॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
 कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये॥८॥
 मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
 वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥९॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
 आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥१०॥

आपदाम् अपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
 लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥११॥

भर्जनं भवबीजानाम् अर्जनं सुखसम्पदाम्।
 तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम्॥१२॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
 रामेणाभिहता निशाचरचमूरामाय तस्मै नमः।
 रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
 रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥१३॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
 सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥१४॥

॥ श्री-सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥



मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाव्यये।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥

॥ अहल्याकृत-रामस्तोत्रम् ॥

अहल्योवाच

अहो कृतार्थाऽस्मि जगन्निवास ते
पादाभासंलभरजः कणादहम्।
स्पृशामि यत्पद्मजशङ्करादिभिः
विमृग्यते रन्धितमानसैः सदा ॥ १ ॥

अहो विचित्रं तव राम चेष्टिं
मनुष्यभावेन विमोहितं जगत्।
चलस्यजस्त्रं चरणादिवर्जितः
सम्पूर्ण आनन्दमयोऽतिमायिकः ॥ २ ॥

यत्पादपङ्कजपरागपवित्रगात्रा
भागीरथी भवविरिञ्चिमुखान् पुनाति।
साक्षात्स एव मम दृग्विषयो यदाऽस्ते
किं वर्ण्यते मम पुराकृतभागधेयम् ॥ ३ ॥

मत्यावतारे मनुजाकृतिं हरि
रामाभिधेयं रमणीयदेहिनम्।
धनुर्धरं पद्मविशाललोचनं
भजामि नित्यं न परान् भजिष्ये ॥ ४ ॥

यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यं
 यन्नाभिपङ्कजभवः कमलासनश्च।
 यन्नामसाररसिको भगवान्पुरारिः
 तं रामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ॥५॥

यस्यावतारचरितानि विरिञ्चिलोके
 गायन्ति नारदमुखा भवपद्मजाद्याः।
 आनन्दजाश्रुपरिष्ककुचाग्रसीमा
 वागीश्वरी च तमहं शरणं प्रपद्ये ॥६॥

सोऽयं परात्मा पुरुषः पुराणः
 एकः स्वयं ज्योतिरनन्त आद्यः।
 मायातनुं लोकविमोहनीयां
 धत्ते परानुग्रह एष रामः ॥७॥

अयं हि विश्वोद्भवसंयमानाम्
 एकः स्वमायागुणविभितो यः।
 विरिञ्चिविष्वीश्वरनामभेदान्
 धत्ते स्वतन्त्रः परिपूर्ण आत्मा ॥८॥

नमोऽस्तु ते राम तवाङ्गिपङ्कजं
 श्रिया धृतं वक्षसि लालितं प्रियात्।
 आक्रान्तमेकेन जगत्त्वयं पुरा
 ध्येयं मुनीन्द्रैरभिमानवर्जितैः ॥९॥

जगतामादिभूतस्त्वं जगत्त्वं जगदाश्रयः।
 सर्वभूतेष्वसंयुक्त एको भाति भवान् परः ॥१०॥

ओङ्कारवाच्यस्त्वं राम वाचामविषयः पुमान्।
वाच्यवाचकभेदेन भवानेव जगन्मयः ॥ ११ ॥

कार्यकारणकर्तृत्वफलसाधनभेदतः ।
एको विभासि राम त्वं मायया बहुरूपया ॥ १२ ॥

त्वन्मायामोहितधियस्त्वां न जानन्ति तत्त्वतः।
मानुषं त्वाऽभिमन्यन्ते मायिनं परमेश्वरम् ॥ १३ ॥

आकाशावत्त्वं सर्वत्र बहिरन्तर्गतोऽमलः।
असज्जो ह्यचलो नित्यः शुद्धो बुद्धः सदव्ययः ॥ १४ ॥

योषिन्मूढाऽहमज्ञा ते तत्त्वं जाने कथं विभो।
तस्मात्ते शतशो राम नमस्कुर्यामनन्यधीः ॥ १५ ॥

देव मे यत्रकुत्रापि स्थिताया अपि सर्वदा।
त्वत्पादकमले सक्ता भक्तिरेव सदाऽस्तु मे ॥ १६ ॥

नमस्ते पुरुषाध्यक्षं नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश नारायण नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥

भवभयहरमेकं भानुकोटिप्रकाशं
करधृतशरचापं कालमेघावभासम्।
कनकरुचिरवस्थं रत्नत्कुण्डलाढ्यं
कमलविशदनेत्रं सानुजं राममीडे ॥ १८ ॥

स्तुत्वैवं पुरुषं साक्षाद्राघवं पुरतः स्थितम्।
परिकम्य प्रणम्याऽशु सानुजाता ययौ पतिम् ॥ १९ ॥

अहल्या कृतं स्तोत्रं यः पठेद्दक्षिसंयुतः।
स मुच्यतेऽखिलैः पापैः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥ २० ॥

पुत्राद्यर्थे पठेद्भृत्या रामं हृदि निधाय च।
 संवत्सरेण लभते वन्ध्या अपि सुपुत्रकम्॥२१॥

सर्वान् कामानवाप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः॥२२॥

ब्रह्मग्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयी सुरापोऽपि वा
 मातृश्रातृविहिंसकोऽपि सततं भोगैकबद्धातुरः।
 नित्यं स्तोत्रमिदं जपन् रघुपतिं भक्त्या हृदिस्थं स्मरन्
 ध्यायन् मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः॥२३॥

॥ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे श्री-अहल्याविरचितं
 श्री-रामचन्द्रस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ रामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम् ॥

विशुद्धं परं सच्चिदानन्द-रूपं
 गुणाधारमाधार-हीनं वरेण्यम्।
 महान्तं विभान्तं गुहान्तं गुणान्तं
 सुखान्तं स्वयं धाम रामं प्रपद्ये॥१॥

शिवं नित्यमेकं विभुं तारकाख्यं
 सुखाकारमाकार-शून्यं सुमान्यम्।
 महेशं कलेशं सुरेशं परेशं
 नरेशं निरीशं महीशं प्रपद्ये॥२॥

यदाऽवर्णयत् कर्ण-मूलेऽन्त-काले
 शिवो राम रामेति रामेति काश्याम्।
 तदेकं परं तारक-ब्रह्म-रूपं
 भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहम्॥३॥

महारत्न-पीठे शुभे कल्प-मूले
 सुखासीनमादित्य-कोटि-प्रकाशम्।
 सदा जानकी-लक्ष्मणोपेतमेकं
 सदा रामचन्द्रं भजेऽहं भजेऽहम्॥४॥
 कण्ड्रत-मञ्जीर-पादारविन्दं
 लसन्मेखला-चारु-पीताम्बराढ्यम्।
 महारत्न-हारोह्लसत्-कौस्तुभाङ्गं
 नदच्चञ्चरी-मञ्जरी-लोल-मालम् ॥५॥
 लसच्चन्द्रिका-स्मेर-शोणाधरामं
 समुद्यत्-पतञ्जेन्दु-कोटि-प्रकाशम् ।
 नमद्-ब्रह्म-रुद्रादि-कोटीर-रत्न-
 स्फुरत्-कान्ति-नीराजना-स्त्रराधिताङ्गिम्॥६॥
 पुरः प्राञ्जलीनाञ्जनेयादि-भक्तान्
 स्व-चिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम्।
 भजेऽहं भजेऽहं सदा रामचन्द्रं
 त्वदन्यं न मन्ये न मन्ये न मन्ये॥७॥
 यदा मत्समीपं कृतान्तः समेत्य
 प्रचण्ड-प्रतापैर्-भट्टैर्-भीषयेन्माम्।
 तदाऽविष्करोषि त्वदीयं स्वरूपं
 तदापत्-प्रणाशं स-कोदण्ड-बाणम्॥८॥
 निजे मानसे मन्दिरे सन्निधेहि
 प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र।
 स-सौमित्रिणा कैकयी-नन्दनेन
 स्व-शक्त्याऽनुभक्त्या च संसेव्यमान ॥९॥

स्वभक्ताग्रगण्यैः कपीशैर्-महीशैर्-
 अनीकैरनेकैश्च राम प्रसीद।
 नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद
 प्रशाधि प्रशाधि प्रकाशं प्रभो माम्॥ १० ॥

त्वमेवासि दैवं परं मे यदेकं
 सुचैतन्यमेतत् त्वदन्यं न मन्ये।
 यतोऽभूदमेयं वियद्-वायु-तेजो-
 जलोर्व्यादि-कार्यं चरं चाचरं च॥ ११ ॥

नमः सच्चिदानन्द-रूपाय तस्मै
 नमो देव-देवाय रामाय तुभ्यम्।
 नमो जानकी-जीवितेशाय तुभ्यं
 नमः पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम्॥ १२ ॥

नमो भक्ति-युक्तानुरक्ताय तुभ्यं
 नमः पुण्य-पुञ्जैक-लभ्याय तुभ्यम्।
 नमो वेद-वेद्याय चाऽऽद्याय पुंसे
 नमः सुन्दरायेन्दिरा-वल्लभाय॥ १३ ॥

नमो विश्व-कर्त्रे नमो विश्व-हर्त्रे
 नमो विश्व-भोक्त्रे नमो विश्व-मात्रे।
 नमो विश्व-नेत्रे नमो विश्व-जेत्रे
 नमो विश्व-पित्रे नमो विश्व-मात्रे॥ १४ ॥

नमस्ते नमस्ते समस्त-प्रपञ्च-
 प्रभाग-प्रवीण प्रमाण-प्रवीण।
 मदीयं मनस्-त्वत्-पद-द्वन्द्व-सेवां
 विधातुं प्रवृत्तं सुचैतन्य-सिद्ध्यै॥ १५ ॥

शिलाऽपि त्वदद्वि-क्षमा-सञ्जि-रेणु-
प्रसादाद्वि चैतन्यमाऽधत्त राम।
नरस्-त्वत्पद-द्वन्द्व-सेवा-विधानात्
सुचैतन्यमेतीति किं चित्रमद्य ॥ १६ ॥

पवित्रं चरित्रं विचित्रं त्वदीयं
नरा ये स्मरन्त्यन्वहं रामचन्द्र।
भवन्तं भवान्तं भरन्तं भजन्तो
लभन्ते कृतान्तं न पश्यन्त्यतोऽन्ते ॥ १७ ॥

स पुण्यः स गण्यः शरण्यो ममायं
नरो वेद् यो देव-चूडामणिं त्वाम्।
सदाकारमेकं चिदानन्द-रूपं
मनो-वागगम्यं परं धाम राम ॥ १८ ॥

प्रचण्ड-प्रताप-प्रभावाभिभूत-
प्रभूतारि-वीर प्रभो रामचन्द्र।
बलं ते कथं वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये
यतोऽखण्ड चण्डीश-कोदण्ड-दण्डः ॥ १९ ॥

दशग्रीवमुग्रं सपुत्रं समित्रं
सरिदुर्ग-मध्यस्थ-रक्षो-गणेशाम् ।
भवन्तं विना राम वीरो नरो वा-
ऽसुरो वाऽमरो वा जयेत् कस्त्रिलोक्याम् ॥ २० ॥
सदा राम रामेति रामामृतं ते
सदाराममानन्द-निष्ठन्द-कन्दम्।
पिबन्तं नमन्तं सुदन्तं हसन्तं
हनूमन्तमन्तर्भजे तं नितान्तम् ॥ २१ ॥

सदा राम रामेति रामामृतं ते
 सदाराममानन्द-निष्ठन्द-कन्दम्।
 पिबन्नन्वहं नन्वहं नैव मृत्योर्-
 विभेमि प्रसादादसादात् तवैव॥ २२॥
 असीता-समेतैरकोदण्ड-भूषैर्-
 असौमित्रि-वन्द्यैरचण्ड-प्रतापैः।
 अलङ्केश-कालैरसुग्रीव-मित्रैर्-
 अरामाभिधेयैरलं दैवतैर्नः॥ २३॥
 अवीरासन-स्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यैर्-
 अभक्ताञ्जनेयादि-तत्त्व-प्रकाशैः।
 अमन्दार-मूलैरमन्दार-मालैर्-
 अरामाभिधेयैरलं दैवतैर्नः॥ २४॥
 असिन्धु-प्रकोपैरवन्ध-प्रतापैर्-
 अबन्धु-प्रयाणैरमन्द-स्मिताढ्यैः।
 अदण्ड-प्रवासैरखण्ड-प्रबोधैर्-
 अरामाभिधेयैरलं दैवतैर्नः॥ २५॥
 हरे राम सीतापते रावणारे
 खरारे मुरारेऽसुरारे परेति।
 लपन्तं नयन्तं सदा-कालमेवं
 समालोकयाऽलोकयाऽशेष-बन्धो॥ २६॥
 नमस्ते सुमित्रा-सुपुत्राभिवन्ध
 नमस्ते सदा कैकयी-नन्दनेड्य।
 नमस्ते सदा वानराधीश-वन्ध
 नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र॥ २७॥

प्रसीद प्रसीद प्रचण्ड-प्रताप
 प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारि-काल।
 प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकम्पिन्
 प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र॥२८॥

भुजङ्ग-प्रयातं परं वेद-सारं
 मुदा रामचन्द्रस्य भत्त्या च नित्यम्।
 पठन् सन्ततं चिन्तयन् स्वान्तरङ्गे
 स एव स्वयं रामचन्द्रः स धन्यः॥२९॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-रामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ रामस्तवराजस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रमन्त्रस्य सनत्कुमारत्रैषिः।
 श्रीरामो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। सीता बीजम्। हनुमान् शक्तिः।
 श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

सूत उवाच

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञां व्यासं सत्यवतीसुतम्।
 धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीधरम्॥ १ ॥

युधिष्ठिर उवाच

भगवन् योगिनां श्रेष्ठं सर्वशास्त्रविशारदं।
किं तत्त्वं किं परं जाप्यं किं ध्यानं मुक्तिसाधनम्॥२॥

श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे मुनिसत्तम्।

वेदव्यास उवाच

धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः॥३॥

यत्परं यद्गुणातीतं यज्योतिरमलं शिवम्।
तदेव परमं तत्त्वं कैवल्यपदकारणम्॥४॥

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम्।
ब्रह्महत्यादिपापन्नमिति वेदविदो विदुः॥५॥

श्रीराम रामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः॥६॥

स्तवराजं पुरा प्रोक्तं नारदेन च धीमता।
तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरम्॥७॥

तापत्रयाभ्निशमनं सर्वाघौघनिकृन्तनम्।
दारिद्र्यदुःखशमनं सर्वसम्पत्करं शिवम्॥८॥

विज्ञानफलदं दिव्यं मोक्षैकफलसाधनम्।
नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि रामं कृष्णं जगन्मयम्॥९॥

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यगे।
स्मरेत्कल्पतरोमूले रत्नसिंहासनं शुभम्॥१०॥

तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं नानारत्नैश्च वेष्टितम्।
स्मरेन्मध्ये दाशरथिं सहस्रादित्यतेजसम्॥ ११॥

पितुरङ्गगतं राममिन्दनीलमणिप्रभम्।
कोमलाङ्गं विशालाक्षं विद्युद्वर्णम्बरावृतम्॥ १२॥

भानुकोटिप्रतीकाशकिरीटेन विराजितम्।
रत्नग्रैवेयकेयूररत्नकुण्डलमणिडतम् ॥ १३॥

रत्नकङ्गणमञ्जीरकटिसूत्रैरलङ्घृतम् ।
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम्॥ १४॥

दिव्यरत्नसमायुक्तमुद्रिकाभिरलङ्घृतम् ।
राघवं द्विभुजं बालं राममीषत्सिमताननम्॥ १५॥

तुलसीकुन्दमन्दारपुष्पमाल्यैरलङ्घृतम्।
कर्पूरागरुकस्तूरीदिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १६॥

योगशास्त्रेष्वभिरतं योगेशं योगदायकम्।
सदा भरतसौमित्रशत्रुघ्नैरुपशोभितम्॥ १७॥

विद्याधरसुराधीशसिद्धगन्धर्वकिन्नरैः ।
योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानमहर्निशम्॥ १८॥

विश्वामित्रवसिष्ठादिमुनिभिः परिसेवितम्।
सनकादिमुनिश्चैष्योगिवृन्दैश्च सेवितम्॥ १९॥

रामं रघुवरं वीरं धनुर्वेदविशारदम्।
मङ्गलायतनं देवं रामं राजीवलोचनम्॥ २०॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमानन्दकरसुन्दरम् ।
कौसल्यानन्दनं रामं धनुर्बाणधरं हरिम्॥ २१ ॥

एवं सञ्चिन्तयन् विष्णुं यज्ज्योतिरमलं विभुम्।
प्रहृष्टमानसो भूत्वा मुनिवर्यः स नारदः॥ २२ ॥

सर्वलोकहितार्थाय तुष्टव रघुनन्दनम्।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा चिन्तयन्नद्वुतं हरिम्॥ २३ ॥

यदेकं यत्परं नित्यं यदनन्तं चिदात्मकम्।
यदेकं व्यापकं लोके तदूपं चिन्तयाम्यहम्॥ २४ ॥

विज्ञानहेतुं विमलायताक्षम्
प्रज्ञानरूपं स्वसुखैकहेतुं।
श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवम्
परात्परं राममहं भजामि॥ २५ ॥

कविं पुराणं पुरुषं पुरस्तात्
सनातनं योगिनमीशितारम्।
अणोरणीयांसमनन्तवीर्यम्
प्राणेश्वरं राममसौ ददर्श॥ २६ ॥

नारद उवाच

नारायणं जगन्नाथमभिरामं जगत्पतिम्।
कविं पुराणं वागीशं रामं दशरथात्मजम्॥ २७ ॥

राजराजं रघुवरं कौसल्यानन्दवर्धनम्।
भर्गं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम्॥ २८ ॥

सत्यं सत्यप्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं विभुम्।
सौमित्रिपूर्वजं शान्तं कामदं कमलेक्षणम्॥२९॥

आदित्यं रविमीशानं घृणिं सूर्यमनामयम्।
आनन्दरूपिणं सौम्यं राघवं करुणामयम्॥३०॥

जामदश्यं तपोमूर्ति रामं परशुधारिणम्।
वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाहनम्॥३१॥

श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानन्दविग्रहम्।
हलधृग्विष्णुमीशानं बलरामं कृपानिधिम्॥३२॥

श्रीवल्लभं कृपानाथं जगन्मोहनमच्युतम्।
मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम्॥३३॥

वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम्।
गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम्॥३४॥

गोगोपालपरीवारं गोपकन्यासमावृतम्।
विद्युत्पुञ्जप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम्॥३५॥

गोगोपिकासमाकीर्णं वेणुवादनतत्परम्।
कामरूपं कलावन्तं कामिनीकामदं विभुम्॥३६॥

मन्मथं मथुरानाथं माघवं मकरध्वजम्।
श्रीघरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासं परात्परम्॥३७॥

भूतेशं भूपतिं भद्रं विभूतिं भूमिभूषणम्।
सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानववैरिणम्॥३८॥

श्रीनृसिंहं महाबाहुं महान्तं दीपतेजसम्।
चिदानन्दमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपिणम्॥ ३९॥

आदित्यमण्डलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम्।
भक्तिप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम्॥ ४०॥

कौसल्येयं कलामूर्ति काकुत्स्थं कमलाप्रियम्।
सिंहासने समासीनं नित्यब्रतमकल्मषम्॥ ४१॥

विश्वामित्रप्रियं दान्तं स्वदारनियतव्रतम्।
यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम्॥ ४२॥

सत्यसन्धं जितक्रोधं शारणागतवत्सलम्।
सर्वक्षेशापहरणं विभीषणवरप्रदम्॥ ४३॥

दशग्रीवहरं रौद्रं केशवं केशिमर्दनम्।
वालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम्॥ ४४॥

नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुमत्रियम्।
शुद्धं सूक्ष्मं परं शान्तं तारकं ब्रह्मरूपिणम्॥ ४५॥

सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सनातनम्।
सर्वकारणकर्तारं निदानं प्रकृतेः परम्॥ ४६॥

निरामयं निराभासं निरवध्यं निरञ्जनम्।
नित्यानन्दं निराकारमद्वैतं तमसः परम्॥ ४७॥

परात्परतरं तत्त्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम्।
मनसा शिरसा नित्यं प्रणमामि रघूत्तमम्॥ ४८॥

सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम्।
 नमामि पुण्डरीकाक्षममेयं गुरुतत्परम्॥ ४९॥
 नमोऽस्तु वासुदेवाय ज्योतिषां पतये नमः।
 नमोऽस्तु रामदेवाय जगदानन्दरूपिणे॥ ५०॥
 नमो वेदान्तनिष्ठाय योगिने ब्रह्मवादिने।
 मायामयनिरासाय प्रपञ्चनसेविने॥ ५१॥
 वन्दामहे महेशानचण्डकोदण्डखण्डनम्।
 जानकीहृदयानन्दवर्धनं रघुनन्दनम्॥ ५२॥
 उत्कुलामलकोमलोत्पलदलश्यामाय रामाय ते
 कामाय प्रमदामनोहरणुणग्रामाय रामात्मने।
 योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसाय संसारवि-
 ध्वंसाय स्फुरदोजसे रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः॥ ५३॥
 भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठम्।
 आदित्यचन्द्रानलसुप्रभावम्।
 सर्वात्मकं सर्वगतस्वरूपं
 नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ५४॥
 निरञ्जनं निष्ठतिमं निरीहं
 निराश्रयं निष्कलमप्रपञ्चम्।
 नित्यं ध्रुवं निर्विषयस्वरूपं
 निरन्तरं राममहं भजामि॥ ५५॥
 भवाव्यिपोतं भरताग्रजं तं
 भक्तिप्रियं भानुकुलप्रदीपम्।
 भूतत्रिनाथं भुवनाधिपं तं
 भजामि रामं भवरोगवैद्यम्॥ ५६॥

सर्वाधिपत्यं समराङ्गधीरं
 सत्यं चिदानन्दमयस्वरूपम्।
 सत्यं शिवं शान्तिमयं शरण्यं
 सनातनं राममहं भजामि ॥ ५७ ॥
 कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं
 कविं पुराणं कमलायताक्षम्।
 कुमारवेद्यं करुणामयं तं
 कल्पद्रुमं राममहं भजामि ॥ ५८ ॥
 त्रैलोक्यनाथं सरसीरुहाक्षं
 दयानिधिं द्वन्द्वविनाशहेतुम्।
 महाबलं वेदनिधिं सुरेशं
 सनातनं राममहं भजामि ॥ ५९ ॥
 वेदान्तवेद्यं कविमीशितारम्
 अनादिमध्यान्तमचिन्त्यमाद्यम्।
 अगोचरं निर्मलमेकरूपं
 नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥ ६० ॥
 अशोषवेदात्मकमादिसंज्ञम्
 अजं हरिं विष्णुमनन्तमाद्यम्।
 अपारसंवित्सुखमेकरूपं
 परात्परं राममहं भजामि ॥ ६१ ॥
 तत्त्वस्वरूपं पुरुषं पुराणं
 स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम्।
 राजाधिराजं रविमण्डलस्थं
 विश्वेश्वरं राममहं भजामि ॥ ६२ ॥

लोकाभिरामं रघुवंशनाथं
हरि चिदानन्दमयं मुकुन्दम्।
अशेषविद्याधिपतिं कवीन्द्रं
नमामि रामं तमसः परस्तात्॥ ६३॥

योगीन्द्रसङ्घैश्च सुसेव्यमानं
नारायणं निर्मलमादिदेवम्।
नतोऽस्मि नित्यं जगदेकनाथम्
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥ ६४॥

विभूतिदं विश्वसृजं विरामं
राजेन्द्रमीशं रघुवंशनाथम्।
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमूर्ति
ज्योतिर्मयं राममहं भजामि॥ ६५॥

अशेषसंसारविहारहीनम्
आदित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात्
नारायणं विष्णुमहं भजामि॥ ६६॥

मुनीन्द्रगुह्यं परिपूर्णकामं
कलानिधिं कल्पनाशहेतुम्।
परात्परं यत्परमं पवित्रं
नमामि रामं महतो महान्तम्॥ ६७॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो देवतास्तथा।
आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन॥ ६८॥

तापसा कृषयः सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा।
विप्रा वेदास्तथा यज्ञाः पुराणं धर्मसंहिताः ॥ ६९ ॥

वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च।
यक्षराक्षसगन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजादयः ॥ ७० ॥

सनकादिमुनिश्रेष्ठास्त्वमेव रघुपुङ्गव।
वसवोऽष्टौ त्रयः काला रुद्रा एकादशा स्मृताः ॥ ७१ ॥

तारका दश दिक् चैव त्वमेव रघुनन्दन।
सप्तद्वीपाः समुद्राश्च नगा नद्यस्तथा द्रुमाः ॥ ७२ ॥

स्थावरा जज्ञमाश्वैव त्वमेव रघुनायक।
देवतिर्यज्ञनुष्याणां दानवानां तथैव च ॥ ७३ ॥

माता पिता तथा भ्राता त्वमेव रघुवल्लभ।
सर्वेषां त्वं परं ब्रह्म त्वन्मयं सर्वमेव हि ॥ ७४ ॥

त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव पुरुषोत्तम।
त्वमेव तारकं ब्रह्म त्वत्तोऽन्यं नैव किञ्चन ॥ ७५ ॥

शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं परं ब्रह्म सनातनम्।
राजीवलोचनं रामं प्रणमामि जगत्पतिम् ॥ ७६ ॥

व्यास उवाच

ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच मुनिपुङ्गवम्।
तुष्टोऽस्मि मुनिशार्दूल वृणीष्व वरमुत्तमम् ॥ ७७ ॥

नारद उवाच

यदि तुष्टोऽसि सर्वज्ञ श्रीराम करुणानिधे।
त्वन्मूर्तिदर्शनेनैव कृतार्थोऽहं च सर्वदा ॥ ७८ ॥

धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं पुण्योऽहं पुरुषोत्तम।
 अद्य मे सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे।
 अद्य मे सफलं ज्ञानमय मे सफलं तपः ॥७९॥
 अद्य मे सफलं कर्म त्वत्पादाम्भोजदर्शनात्।
 अद्य मे सफलं सर्वं त्वन्नामस्मरणं तथा ॥८०॥
 त्वत्पादाम्भोरुहृद्धन्द्धसद्भक्तिं देहि राघव।
 ततः परमसम्प्रीतः स रामः प्राह नारदम् ॥८१॥

श्रीराम उवाच

मुनिवर्य महाभाग मुने त्विष्ट ददामि ते।
 यत्त्वया चेप्सितं सर्वं मनसा तद्भविष्यति ॥८२॥

नारद उवाच

परं न याचे रघुनाथ युष्मत्
 पादाङ्गभक्तिः सततं ममास्तु।
 इदं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे
 पुनः पुनस्त्वामिदमेव याचे ॥८३॥

व्यास उवाच

इत्येवमीडितो रामः प्रादात् तस्मै वरान्तरम्।
 वीरो रामो महातेजाः सच्चिदानन्दविग्रहः ॥८४॥

अद्वैतममलं ज्ञानं स्वनामस्मरणं तथा।
 अन्तर्दर्घौ जगन्नाथः पुरतस्तस्य राघवः ॥८५॥
 इति श्रीरघुनाथस्य स्तवराजमनुत्तमम्।
 सर्वसौभाग्यसम्पत्तिदायकं मुक्तिदं शुभम् ॥८६॥

कथितं ब्रह्मपुत्रेण वेदानां सारमुत्तमम्।
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं तव स्नेहात्पकीर्तितम्॥८७॥

यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।
ब्रह्महत्यादिपापानि तत्समानि बहूनि च॥८८॥

स्वर्णस्तेयं सुरापानं गुरुतल्पगतिस्तथा।
गोवधाद्युपपापानि अनृतात्सम्भवानि च॥८९॥

सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः।
मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्॥९०॥

श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम्।
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते॥९१॥

रामं सत्यं परं ब्रह्म रामात् किञ्चिन्न विद्यते।
तस्मादामस्वरूपं हि सत्यं सत्यमिदं जगत्॥९२॥

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्कव राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि॥९३॥

वैदेहीसहितं सुरद्गमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥९४॥

रामं रत्नकिरीटकुण्डलयुतं केयूरहारान्वितं
 सीतालङ्घन्तवामभागममलं सिंहासनस्थं विभुम्।
 सुग्रीवादिहरीश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानं सदा
 विश्वामित्रपराशरादिमुनिभिः संस्तूयमानं प्रभुम्॥१५॥
 सकलगुणनिधानं योगिभिः स्तूयमानं
 भुजविजितसमानं राक्षसेन्द्रादिमानम्।
 महितनृपभयानं सीतया शोभमानं
 स्मर हृदयविमानं ब्रह्म रामाभिधानम्॥१६॥
 रघुवर तव मूर्तिर्मामके मानसाङ्गे
 नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखे मे।
 अनिशमतुलभक्त्या मस्तकं त्वत्पदाङ्गे
 भवजलनिधिमन्नं रक्ष मामार्तबन्धो॥१७॥
 रामरत्नमहं वन्दे चित्रकूटपतिं हरिम्।
 कौसल्याभक्तिसम्भूतं जानकीकण्ठभूषणम्॥१८॥
 ॥ इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्रीरामस्तवराजस्तोत्रं
 सम्पूर्णम्॥

॥ शम्भुकृत-रामस्तवः ॥

महादेव उवाच

नमो मूलप्रकृतये नित्याय परमात्मने।
 सच्चिदानन्दरूपाय विश्वरूपाय वेघसे॥२४॥
 नमो निरन्तरानन्द कन्दमूलाय विष्णवे।
 जगत्त्वयकृतानन्द मूर्तये दिव्यमूर्तये॥२५॥

नमो ब्रह्मेन्द्रपूज्याय शङ्कराभयदाय च।
नमो विष्णुस्वरूपाय सर्वरूप नमो नमः ॥ २६ ॥

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणे त्रिगुणात्मने।
नमोऽस्तु निर्गतोपाधिस्वरूपाय महात्मने ॥ २७ ॥

अनया विद्यया देव्या सीतयोपाधिकारिणे।
नमः पुम्प्रकृतिभ्यां च युवाभ्यां जगतां कृते ॥ २८ ॥

जगन्मातापितृभ्यां च जनन्यै राघवाय च।
नमः प्रपञ्चरूपिण्यै निष्ठपञ्चस्वरूपिणे ॥ २९ ॥

नमो ध्यानस्वरूपिण्यै योगिध्येयात्ममूर्तये।
परिणामापरीणामरिक्ताभ्यां च नमो नमः ॥ ३० ॥

कूटस्थबीजरूपिण्यै सीतायै राघवाय च।
सीता लक्ष्मीर्भवान् विष्णुः सीता गौरी भवान् शिवः ॥ ३१ ॥

सीता स्वयं हि सावित्री भवान् ब्रह्मा चतुर्मुखः।
सीता शची भवान् शक्रः सीता स्वाहाऽनलो भवान् ॥ ३२ ॥

सीता संहारिणी देवी यमरूपधरो भवान्।
सीता हि सर्वसम्पत्तिः कुबेरस्त्वं रघूतम ॥ ३३ ॥

सीता देवी च रुद्राणी भवान्त्रुद्रो महाबलः।
सीता तु रोहिणी देवी चन्द्रस्त्वं लोकसौख्यदः ॥ ३४ ॥

सीता संज्ञा भवान्त्सूर्यः सीता रात्रिर्दिवा भवान्।
सीता देवी महाकाली महाकालो भवान्त्सदा ॥ ३५ ॥

स्त्रीलिङ्गेषु त्रिलोकेषु यत्तत्सर्वं हि जानकी।
पुन्नाम लाज्जितं यत्तु तत्सर्वं हि भवान्प्रभो ॥ ३६ ॥

सर्वत्र सर्वदेवेश सीता सर्वत्र धारिणी।
तदा त्वमपि च त्रातुं तच्छक्तिर्विश्वधारिणी ॥ ३७ ॥

तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं युवाभ्यां परिचिह्नितम्।
चिह्नितं शिवशक्तिभ्यां चरितं तव शान्तिदम् ॥ ३८ ॥

आवां राम जगत्पूज्यौ मम पूज्यौ सदा युवाम्।
त्वन्नामजापिनी गौरी त्वन्मन्त्रजपवानहम् ॥ ३९ ॥

मुमूर्षोर्मणिकण्या तु अर्धोदकनिवासिनः।
अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकं ब्रह्मदायकम् ॥ ४० ॥

अतस्त्वं जानकीनाथ परब्रह्मासि निश्चितम्।
त्वन्मायामोहिताः सर्वे न त्वां जानन्ति तत्वतः ॥ ४१ ॥

ईश्वर उवाच

इत्युक्तः शम्भुना रामः प्रसादप्रवणोऽभवत्।
दिव्यरूपधरः श्रीमान्द्वृताद्वृतदर्शनः ॥ ४२ ॥

तथा तं रूपमालोक्य नरवानरदेवताः।
न द्रष्टुमपिशक्तास्ते तेजसं महदद्वृतम् ॥ ४३ ॥

भयाद्वै त्रिदशश्रेष्ठाः प्रणेमुश्चातिभक्तिः।
भीता विज्ञाय रामोऽपि नरवानरदेवताः।
मायामानुषतां प्राप्य स देवानब्रवीत्युनः ॥ ४४ ॥

रामचन्द्र उवाच

शृणुध्वं देवता यो मां प्रत्यहं संस्तुविष्यति।
स्तवेन शाम्भुनोक्तेन देवतुल्यो भवेन्नरः ॥ ४५ ॥

विमुक्तः सर्वपापेभ्यो मत्स्वरूपं समश्चुते।
रणे जयमवाप्नोति न क्वचित्प्रतिहन्यते ॥ ४६ ॥

भूतवेतालकृत्याभिर्ग्रहैश्चापि न बाध्यते।
अपुत्रो लभते पुत्रं पर्ति विन्दति कन्यका ॥ ४७ ॥

दरिद्रः श्रियमाप्नोति सत्ववाज्ञीलवान्भवेत्।
आत्मतुल्यबलः श्रीमाङ्गायते नात्र संशयः ॥ ४८ ॥

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु सर्वारम्भेषु वै नृणाम्।
यं यं कामयते मर्त्यः सुदुर्लभमनोरथम् ॥ ४९ ॥

षण्मासात्सद्विमाप्नोति स्तवस्यास्य प्रसादतः।
यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञोषु यत्कलम्।
तत्कलं कोटिगुणितं स्तवेनानेन लभ्यते ॥ ५० ॥

ईश्वर उवाच

इत्युक्त्वा रामचन्द्रोऽसौ विसर्ज महेश्वरम्।
ब्रह्मादि त्रिदशान्सर्वान् विसर्ज समागतान् ॥ ५१ ॥

अर्चिता मानवाः सर्वे नरवानरदेवताः।
विसृष्टा रामचन्द्रेण प्रीत्या परमया युताः ॥ ५२ ॥

इत्थं विसृष्टाः खलु ते च सर्वे
 सुखं तदा जग्मुरतीवहृष्टाः।
 परं पठन्तः स्तवमीश्वरोक्तं
 रामं स्मरन्तो वरविश्वरूपम्॥५३॥

॥ इति श्रीपाद्मे महापुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्र्यां संहितायामुत्तरखण्डे
 उमामहेश्वरसंवादे विश्वदर्शनं नाम
 त्रिचत्वारिशादधिकद्विशततमोऽध्याये श्री-शम्भुकृत-रामस्तवः
 सम्पूर्णः ॥

॥ देवैः कृतं राम-स्तोत्रम्॥

शेष उवाच

अथाभिषिक्तं रामं तु तुष्टुवुः प्रणताः सुराः।
 रावणाभिधैत्येन्द्र वधहर्षितमानसाः ॥ १ ॥

देवा ऊचुः

जय दाशरथे सुरार्तिहञ्जय जय दानववंशदाहक।
 जय देववराङ्गनागणग्रहणव्यग्रकरारिदारक ॥ २ ॥

तवयद्दनुजेन्द्रनाशनं कवयो वर्णयितुं समुत्सुकाः।
 प्रलये जगतान्ततीः पुनर्ग्रससे त्वं भुवनेशलीलया ॥ ३ ॥

जय जन्मजरादिदुःखकैः परिमुक्तप्रबलोद्धरोद्धर।
 जय धर्मकरान्वयाम्बुधौ कृतजन्मन्नजरामराच्युत ॥ ४ ॥

तव देववरस्य नामभिर्बहुपापा अपि ते पवित्रिताः।
 किमु साधुद्विजवर्यपूर्वकाः सुतनुं मानुषतामुपागताः ॥ ५ ॥

हरविरिच्छिनुतं तव पादयोर्युगलमीप्सितकामसमृद्धिदम्।
हृदि पवित्रयवादिकचिह्नितैः सुरचितं मनसा स्पृहयामहे ॥ ६ ॥

यदि भवान्न दधात्यभयं भुवो मदनमूर्ति तिरस्करकान्तिभृत्।
सुरगणा हि कथं सुखिनः पुनर्ननु भवन्ति घृणामय पावन ॥ ७ ॥

यदा यदास्मान्दनुजाहि दुःखदास्तदा तदा त्वं भुवि जन्मभागभवेः।
अजोऽव्ययोऽपीशवरोऽपि सन्विभो स्वभावमास्थाय निजं निजार्चितः ॥ ८ ॥

मृतसुधासदृशैरधनाशनैः सुचरितैरवकीर्य महीतलम्।
अमनुजैर्गुणशंसिभिरीडितः प्रविश चाशु पुनर्हि स्वकं पदम् ॥ ९ ॥

अनादिराद्योजररूपधारी हारी किरीटी मकरध्वजाभः।
जयं करोतु प्रसभं हतारिः स्मरारि संसेवितपादपद्मः ॥ १० ॥

इत्युक्त्वा ते सुराः सर्वे ब्रह्मेन्द्रप्रमुखा मुहुः।
प्रणेमुररिनाशेन प्रीणिता रघुनायकम् ॥ ११ ॥

इति स्तुत्यातिसंहष्टो रघुनाथो महायशाः।
प्रोवाच तान्सुरान्वीक्ष्य प्रणतान्नतकन्धरान् ॥ १२ ॥

श्रीराम उवाच

सुरा वृणुत मे यूयं वरं किञ्चित्सुदुर्लभम्।
यं कोऽपि देवो दनुजो न यक्षः प्राप सादरः ॥ १३ ॥

सुरा ऊचुः

स्वामिन्भगवतः सर्वं प्राप्तमस्माभिरुत्तमम्।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं तु दशाननः ॥ १४ ॥

यदा यदाऽसुरोऽस्माकं बाधां परिदधाति भोः।
तदा तदेति कर्तव्यमेतावद्वैरिनाशनम्॥ १५॥

तथेत्युत्तवा पुनर्वीरः प्रोवाच रघुनन्दनः।

श्रीराम उवाच

सुराः शृणुत मद्वाक्यमादरेण समन्विताः॥ १६॥

भवत्कृतं मदीयैर्वैगुण्ड्यथितमद्भुतम्।
स्तोत्रं पठिष्यति मुहुः प्रातर्निशि सकृन्नरः॥ १७॥

तस्य वैरि पराभूतिर्न भविष्यति दारुणा।
न च दारिद्र्यसंयोगो न च व्याधिपराभवौ॥ १८॥

मदीयचरणद्वन्द्वे भक्तिस्तेषां तु भूयसी।
भविष्यति मुदायुक्ते स्वान्ते पुंसां तु पाठतः॥ १९॥

इत्युत्तवा सोऽभवत्तूष्णीं नरदेवशिरोमणिः।
सुराः सर्वे प्रहृष्टस्ते ययुर्लोकं स्वकं स्वकम्॥ २०॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे पातालखण्डे शेषवात्स्यायनसंवादे रामाश्वमेधे
अगस्त्यसमागमोनाम पञ्चमोऽध्यायान्तर्गतं देवैः कृतं
श्री-राम-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ ब्रह्मकृतरामस्तवः ॥

ततो हि दुर्मना रामः श्रुत्वैवं वदतां गिरः।
दध्यौ मुहूर्तं धर्मात्मा बाष्पव्याकुललोचनः॥ १॥

ततो वैश्रवणो राजा यमश्च पितृभिः सह।
सहस्राक्षश्च देवेशो वरुणश्च जलेश्वरः ॥ २ ॥

षट्धर्घनयनः श्रीमान्महादेवो वृषध्वजः।
कर्ता सर्वस्य लोकस्य ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥ ३ ॥

एते सर्वे समागम्य विमानैः सूर्यसन्निभैः।
आगम्य नगरीं लङ्काम् अभिजग्मुश्च राघवम् ॥ ४ ॥

ततः सहस्ताभरणान् प्रगृह्ण विपुलान् भुजान्।
अब्रुवंस्त्रिदशश्रेष्ठाः प्राञ्जलिं राघवं स्थितम् ॥ ५ ॥

कर्ता सर्वस्य लोकस्य श्रेष्ठो ज्ञानविदां विभुः।
उपेक्षसे कथं सीतां पतन्तीं हव्यवाहने ॥ ६ ॥

कथं देवगणश्रेष्ठम् आत्मानं नावबुध्यसे।
ऋतधामा वसुः पूर्वं वसूनां त्वं प्रजापतिः ॥ ७ ॥

त्रयाणां त्वं हि लोकानाम् आदिकर्ता स्वयम्प्रभुः।
रुद्राणामष्टमो रुद्रः साध्यानामसि पञ्चमः ॥ ८ ॥

अश्विनौ चापि ते कण्ठौ चन्द्रसूर्यौ च चक्षुषी।
अन्ते चादौ च लोकानाम् दृश्यसे त्वं परन्तप ॥ ९ ॥

उपेक्षसे च वैदेहीं मानुषः प्राकृतो यथा।
इत्युक्तो लोकपालैस्तैः स्वामी लोकस्य राघवः ॥ १० ॥

अब्रवीत् त्रिदशश्रेष्ठान् रामो धर्मभृतां वरः।
आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ॥ ११ ॥

योऽहं यस्य यतश्चाहं भगवांस्तद् ब्रवीतु मे।
इति ब्रुवन्तं काकुत्स्थं ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥ १२ ॥

अब्रवीच्छृणु मे राम सत्यं सत्यपराक्रम।
भवान् नारायणो देवः श्रीमांश्चक्रायुधः प्रभुः ॥ १३ ॥

एकशृङ्गो वराहस्त्वं भूतभव्यसपत्नजित्।
अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्ये चान्ते च राघव ॥ १४ ॥

लोकानां त्वं परो धर्मो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः।
शार्ङ्गधन्वा हृषीकेशः पुरुषः पुरुषोत्तमः ॥ १५ ॥

अजितः खड्गधृद् विष्णुः कृष्णश्चैव सनातनः।
सेनानीर्गामणीश्च त्वं बुद्धिः सत्त्वं क्षमा दमः ॥ १६ ॥

प्रभवश्चाप्ययश्च त्वम् उपेन्द्रो मधुसूदनः।
इन्द्रकर्मा महेन्द्रस्त्वं पद्मनाभो रणान्तकृत् ॥ १७ ॥

शारण्यं शारणं च त्वाम् आहुर्दिव्या महर्षयः।
सहस्रशृङ्गो वेदात्मा शतशीर्षो महर्षभः ॥ १८ ॥

त्वं त्रयाणां हि लोकानाम् आदिकर्ता स्वयम्प्रभुः।
सिद्धानामपि साध्यानाम् आश्रयश्चासि पूर्वजः ॥ १९ ॥

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारः परात्परः।
प्रभवं निधनं वा ते नो विदुः को भवानिति ॥ २० ॥

दृश्यसे सर्वभूतेषु ब्राह्मणेषु च गोषु च।
दिक्षु सर्वासु गगने पर्वतेषु वनेषु च ॥ २१ ॥

सहस्रचरणः श्रीमान् शतशीर्षः सहस्रदृक् ।
त्वं धारयसि भूतानि पृथिवीं च सपर्वताम् ॥ २२ ॥

अन्ते पृथिव्याः सलिले दृश्यसे त्वं महोरगः ।
त्रीन् लोकान् धारयन् राम देवगन्धर्वदानवान् ॥ २३ ॥

अहं ते हृदयं राम जिह्वा देवी सरस्वती ।
देवा गात्रेषु रोमाणि ब्रह्मणा निर्मिताः प्रभो ॥ २४ ॥

निमेषस्ते भवेद् रात्रिरुन्मेषस्ते भवेद् दिवा ।
संस्कारास्तेऽभवन् वेदा न तदस्ति त्वया विना ॥ २५ ॥

जगत् सर्वं शरीरं ते स्थैर्यं ते वसुधातलम् ।
अग्निः कोपः प्रसादस्ते सोमः श्रीवत्सलक्षणः ॥ २६ ॥

त्वया लोकाख्ययः क्रान्ताः पुरा स्वैर्विक्रमैख्यिभिः ।
महेन्द्रश्च कृतो राजा बलिं बद्धा महासुरम् ॥ २७ ॥

सीता लक्ष्मीर्भवान् विष्णुः देवः कृष्णः प्रजापतिः ।
वधार्थं रावणस्येह प्रविष्टो मानुषीं तनुम् ॥ २८ ॥

तदिदं नः कृतं कार्यं त्वया धर्मभृतां वर ।
निहतो रावणो राम प्रहृष्टो दिवमाक्रम ॥ २९ ॥

अमोघं बलवीर्यं ते अमोघस्ते पराक्रमः ।
अमोघं दर्शनं राम अमोघस्तव संस्तवः ॥ ३० ॥

अमोघास्ते भविष्यन्ति भक्तिमन्तो नरा भुवि ।
ये त्वां देवं ध्रुवं भक्ताः पुराणं पुरुषोत्तमम् ॥ ३१ ॥

प्राप्नुवन्ति सदा कामान् इह लोके परत्र च।
 इममार्षं स्त्वं नित्यम् इतिहासं पुरातनम्।
 ये नराः कीर्तयिष्यन्ति तेषां नास्ति पराभवः ॥ ३२ ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
 चतुर्विंशतिसहस्रिकायां संहितायां युद्धकाण्डे ब्रह्मकृतरामस्तवो नाम
 विंशत्यधिकशततमः सर्गः ॥

॥ आपदुद्धारण-स्तोत्रम् ॥

ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
 लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ १ ॥

आर्तानामार्तिहन्तारं भीतानां भीतिनाशनम्।
 द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम् ॥ २ ॥

नमः कोदण्डहस्ताय सन्धीकृतशराय च।
 खण्डिताखिलदैत्याय रामायाऽपन्निवारिणे ॥ ३ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेघसे।
 रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ४ ॥

अग्रतः पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्च महाबलौ।
 आकर्णपूर्णधन्वानौ रक्षेतां रामलक्ष्मणौ ॥ ५ ॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
 गच्छन् ममाग्रतो नित्यं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ ६ ॥

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारणभेषजात्।
 नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ७ ॥

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्घृत्य भुजमुच्यते।
वेदाच्छास्त्रं परं नास्ति न देवं केशवात्परम्॥८॥

शरीरे जर्जरीभूते व्याधिग्रस्ते कलेवरे।
औषधं जाहवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः॥९॥

आलोङ्घ्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणो हरिः॥१०॥

॥हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्॥

अयोध्या-पुर-नेतारं मिथिला-पुर-नायिकाम्।
इक्ष्वाकूणाम् अलङ्कारं वैदेहानाम् अलङ्कियाम्॥१॥

रघूणां कुल-दीपं च निमीनां कुल-दीपिकाम्।
सूर्य-वंश-समुद्धूतं सोम-वंश-समुद्धवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनक-भूपतेः।
वसिष्ठ-अनुमताचारं शतानन्द-मतानुगाम्॥३॥

कौसल्या-गर्भ-सम्भूतं वेदि-गर्भोदितां स्वयम्।
पुण्डरीक-विशालाक्षं स्फुरद्-इन्दीवरेक्षणाम्॥४॥

चन्द्र-कान्त-आननाम्भोजं चन्द्रबिम्ब-उपमाननाम्।
मत्त-मातङ्ग-गमनं मत्त-सारस-गामिनीम्॥५॥

चन्द्रनार्द्द-भुजा-मध्यं कुङ्कुमाक्त-कुच-स्थलीम्।
चापालङ्कृत-हस्ताङ्गं पद्मालङ्कृत-पाणिकाम्॥६॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्।
ताली-दल-श्यामलाङ्गं तस-चामीकर-प्रभाम्॥७॥

दिव्य-सिंहासनारूढं दिव्य-स्वग्-वस्त्र-भूषणाम्।
अनुक्षणं कटाक्षाभ्याम् अन्योन्य-ईक्षण-काङ्क्षिणौ ॥ ८ ॥

अन्योन्य-सदृशाकारारौ त्रैलोक्य-गृह-दम्पती।
इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम् ॥ ९ ॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तिः।
तस्य तौ तनुतां प्रीतौ सम्पदः सकला अपि ॥ १० ॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः।
कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्यो विमुक्ति-दम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ ११ ॥
॥ इति श्री-हनूमत्कृतं श्री-सीतारामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ रामद्वादशनामस्तोत्रम् ॥

प्रथमं श्रीधरं विद्याद्वितीयं रघुनायकम्।
तृतीयं रामचन्द्रं च चतुर्थं रावणान्तकम् ॥ १ ॥

पञ्चमं लोकपूज्यं च षष्ठमं जानकीपतिम्।
सप्तमं वासुदेवं च श्रीरामं चाष्टमं तथा ॥ २ ॥

नवमं जलदश्यामं दशमं लक्ष्मणाग्रजम्।
एकादशं च गोविन्दं द्वादशं सेतुबन्धनम् ॥ ३ ॥

द्वादशैतानि नामानि यः पठेछ्छ्यान्वितः।
अर्धरात्रे तु द्वादश्यां कुष्ठदारिद्यनाशनम् ॥ ४ ॥
अरण्ये चैव सङ्घामे अग्नौ भयनिवारणम्।
ब्रह्महत्या सुरापानं गोहत्यादि निवारणम् ॥ ५ ॥

सप्तवारं पठेन्नित्यं सर्वारिष्टनिवारणम्।
ग्रहणे च जले स्थित्वा नदीतीरे विशेषतः।
अश्वमेधशतं पुण्यं ब्रह्मलोकं गमिष्यति॥६॥

॥इति श्री-स्कान्दपुराणे उत्तरखण्डे श्री-उमामहेश्वरसंवादे
श्री-रामद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम्॥१॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।
स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥२॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।
समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥३॥

सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम्॥४॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्।
चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम्॥५॥

भवाभ्यिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम्॥६॥

महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।
परं ब्रह्मसद्यापकं भजे ह राममद्वयम्॥७॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।
 विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम्॥८॥

रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यं
 व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः।
 विद्यां श्रियं विपुलसौरव्यमनन्तकीर्ति
 सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥९॥

॥इति श्री-व्यासविरचितं श्री-रामाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥रामस्तोत्रम्॥

मुनय ऊचुः

नमस्ते रामचन्द्राय लोकानुग्रहकारिणे।
 अरावणं जगत्कर्तुमवतीर्णाय भूतले॥६३॥

ताटिकादेहसंहर्त्रे गाधिजाध्वररक्षिणे।
 नमस्ते जितमारीच सुबाहुप्राणहारिणे॥६४॥

अहल्यामुक्तिसन्दायिपादपङ्कजरेणवे ।
 नमस्ते हरकोदण्डलीलाभञ्जनकारिणे॥६५॥

नमस्ते मैथिलीपाणिग्रहणोत्सवशालिने।
 नमस्ते रेणुकापुत्रपराजयविद्यायिने॥६६॥

सहलक्ष्मणसीताभ्यां कैकेय्यास्तु वरद्वयात्।
 सत्यं पितृवचः कर्तुं नमो वनमुपेयुषे॥६७॥

भरतप्रार्थनादत्तपादुकायुगुलाय ते।
 नमस्ते शरभञ्जस्य स्वर्गप्राप्त्यैकहेतवे॥६८॥

नमो विराधसंहर्त्रे गृग्रराजसखाय ते।
मायामृगमहाकूरमारीचाङ्गविदारिणे ॥ ६९ ॥

सीतापहारिलोकेशयुद्धत्यक्तकलेवरम्।
जटायुषं तु सन्दृश्य तत्कैवल्यप्रदायिने ॥ ७० ॥

नमः कबन्धसंहर्त्रे शबरीपूजिताङ्ग्रये।
प्राप्तसुग्रीवसख्याय कृतवालिवधाय ते ॥ ७१ ॥

नमः कृतवते सेतुं समुद्रे वरुणालये।
सर्वराक्षससंहर्त्रे रावणप्राणहारिणे ॥ ७२ ॥

संसाराम्बुधिसन्तारपोतपादाम्बुजाय ते।
नमो भक्तार्तिसंहर्त्रे सच्चिदानन्दरूपिणे ॥ ७३ ॥

नमस्ते रामभद्राय जगतामृद्धिहेतवे।
रामादिपुण्यनामानि जपतां पापहारिणे ॥ ७४ ॥

नमस्ते सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे।
नमस्ते करुणामूर्ते भक्तरक्षणदीक्षित ॥ ७५ ॥

ससीताय नमस्तुभ्यं विभीषणसुखप्रद।
लङ्केश्वरवधाद्राम पालितं हि जगत्त्वया ॥ ७६ ॥

रक्ष रक्ष जगन्नाथ पाह्वास्माङ्गानकीपते।
स्तुत्वैवं मुनयः सर्वे तूष्णीं तस्थुर्द्विजोत्तमाः ॥ ७७ ॥

श्रीसूत उवाच

य इदं रामचन्द्रस्य स्तोत्रं मुनिभिरीरितम्।
त्रिसन्ध्यं पठते भक्त्या भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ ७८ ॥

प्रयाणकाले पठतो न भीतिरुपजायते।
एतत्स्तोत्रस्य पठनाद् भूतवेतालकादयः ॥ ७९ ॥

नश्यन्ति रोगा नश्यन्ति नश्यते पापसञ्चयः।
पुत्रकामो लभेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ॥ ८० ॥

मोक्षकामो लभेन्मोक्षं धनकामो धनं लभेत्।
सर्वान्कामानवाप्नोति पठन्भक्त्या त्विमं स्तवम् ॥ ८१ ॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां तृतीये
ब्रह्मखण्डे सेतुमाहात्म्ये रामनाथलिङ्गप्रतिष्ठाविधिवर्णनं नाम
चतुश्चत्वारिशोऽध्यायतः मुनिभिः कृतं रामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ एकश्लोकि रामायणम् ॥

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्घापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्विरामायणम् ॥

॥ गायत्री-रामायणम् ॥

शुक्ळाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्वोपशान्तये ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

॥ श्री-गुरु-प्रार्थना ॥

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः ॥

सदाशिवसमारभ्मां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्यासं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः ॥

॥ श्री-सरस्वती-प्रार्थना ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥

॥ श्री-वाल्मीकि-नमस्क्रिया ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ १ ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
शृणवन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥ २ ॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
अतृप्रस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्पषम् ॥ ३ ॥

॥ श्री-हनुमन्नमस्त्रिया ॥

गोष्यदीकृत-वाराशिं मशकीकृत-राक्षसम्।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥ १ ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्घाभयङ्घरम्॥ २ ॥

उल्लङ्घ सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवहिं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्घां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ ३ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम्।
पारिजात-तरुमूल-वासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम्॥ ४ ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥ ५ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥ ६ ॥

॥ श्री-रामायण-प्रार्थना ॥

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादरात्
वाल्मीकिर्वदनारविन्दगलितं रामायणारव्यं मधु।
जन्म-व्याधि-जरा-विपत्ति-मरणैरत्यन्त-सोपद्रवं
संसारं स विहाय गच्छति पुमान् विष्णोः पदं शाश्वतम्॥ १ ॥

तदुपगत-समास-सन्धियोगं सममधुरोपनतार्थ-वाक्यबद्धम्।
रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम्॥ २ ॥

वाल्मीकि-गिरिसम्भूता रामसागरगामिनी।
पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी ॥ ३ ॥

शोकसारजलाकीर्णं सर्गक्लोलसङ्कूलम्।
काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम् ॥ ४ ॥

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥ ५ ॥

॥ श्री-राम-ध्यानम् ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ १ ॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाच्यादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम् ॥ २ ॥

रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं वायुसूनं च प्रणमामि पुनः पुनः ॥ ३ ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्धणेभ्यः ॥ ४ ॥
अँ श्री-गुरुभ्यो नमः।

॥ गायत्री रामयाणम् ॥

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।

नारदं परिप्रच्छ वाल्मीकिमुनिपुङ्कवम्॥ १ ॥ १-१-१

स हत्वा राक्षसान् सर्वान् यज्ञान्नान् रघुनन्दनः।

ऋषिभिः पूजितः सम्यक् यथेन्द्रो विजये पुरा ॥ २ ॥ १-३०-२३

विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनकभाषितम्।

वत्स राम धनुः पश्य इति राघवमब्रवीत्॥ ३ ॥ १-६७-१२

तुष्टावास्य तदा वंशं प्रविश्य च विशाम्पतेः।

शयनीयं नरेन्द्रस्य तदासाद्य व्यतिष्ठत ॥ ४ ॥ २-१५-२०

वनवासं हि सञ्चाय वासांस्याभरणानि च।

भर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै श्वशुरो ददौ॥ ५ ॥ २-४०-१५

राजा सत्यं च धर्मं च राजा कुलवतां कुलम्।

राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नृणाम्॥ ६ ॥ २-६७-३४

निरीक्ष्य स मुहूर्तं तु ददर्श भरतो गुरुम्।

उटजे राममासीनं जटामण्डलधारिणम्॥ ७ ॥ २-९९-२५

यदि बुद्धिः कृता द्रष्टुम् अगस्त्यं तं महामुनिम्।

अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व महायशाः॥ ८ ॥ ३-११-४४

भरतस्यार्यपुत्रस्य शश्रूणां मम च प्रभो।

मृगरूपमिदं व्यक्तं विस्मयं जनयिष्यति॥ ९ ॥ ३-४३-१७

गच्छ शीघ्रमितो राम सुग्रीवं तं महाबलम्।

वयस्यं तं कुरु क्षिप्रमितो गत्वाऽद्य राघव॥ १० ॥ ३-७२-१७

देशकालौ प्रतीक्षस्व क्षममाणः प्रियाप्रिये।
सुखदुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव ॥ ११ ॥ ४-२२-२०

वन्द्यास्ते तु तपः सिद्धास्तपसा वीतकल्मषाः ।
प्रष्टव्याश्चापि सीतायाः प्रवृत्तिं विनयान्वितैः ॥ १२ ॥ ४-४३-३४

स निर्जित्य पुरीं श्रेष्ठां लङ्घां तां कामरूपिणीम्।
विक्रमेण महातेजा हनूमान्मारुतात्मजः ॥ १३ ॥ ५-४-१

धन्या देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः।
मम पश्यन्ति ये नाथं रामं राजीवलोचनम् ॥ १४ ॥ ५-२६-४१

मङ्गलाभिमुखी तस्य सा तदासीन्महाकपेः।
उपतस्थे विशालाक्षी प्रयता हव्यवाहनम् ॥ १५ ॥ ५-५३-२६

हितं महार्थं मृदुं हेतुसंहितम्
व्यतीतकालायतिसम्प्रतिक्षमम्।
निशम्य तद्वाक्यमुपस्थितज्वरः
प्रसङ्गवानुत्तरमेतदब्रवीत् ॥ १६ ॥ ६-१०-२७

धर्मात्मा रक्षसां श्रेष्ठः सम्प्राप्तोऽयं विभीषणः।
लङ्घैश्वर्यं ध्रुवं श्रीमानयं प्राप्नोत्यकण्टकम् ॥ १७ ॥ ६-४१-६८

यो वज्रपाताशनिसन्निपातान्
न चुक्षुभे नापि चचाल राजा।
स रामबाणाभिहतो भृशार्तः
चचाल चापं च मुमोच वीरः ॥ १८ ॥ ६-५९-१४०

यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनं गताः।
तं मन्ये राघवं वीरं नारायणमनामयम् ॥ १९ ॥ ६-७२-११

न ते ददर्शि रामं दहन्तमरिवाहिनीम्।
मोहिताः परमास्त्रेण गान्धर्वेण महात्मना ॥ २० ॥ ६-९४-२६

प्रणम्य देवताभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यश्च मैथिली।
बद्धाञ्जलिपुटा चेदमुवाचान्निसमीपतः ॥ २१ ॥ ६-११९-२३

चलनात्पर्वतेन्द्रस्य गणा देवाश्च कम्पिताः।
चचाल पार्वती चापि तदाऽश्लिष्टा महेश्वरम् ॥ २२ ॥ ६-१६-२६

दाराः पुत्राः पुरं राष्ट्रं भोगाच्छादनभोजनम्।
सर्वमेवाविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर ॥ २३ ॥ ७-३४-४१

यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशालां समाविशत्।
तामेव रात्रिं सीताऽपि प्रसूता दारकद्वयम् ॥ २४ ॥ ७-६६-१

इदं रामायणं कृत्स्नं गायत्रीबीजसंयुतम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
॥ इति श्री-गायत्री रामायणं सम्पूर्णम् ॥

॥ मङ्गलश्लोकाः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षेभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ २ ॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥३॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥४॥

शृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा।
स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा॥५॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥६॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते।
वृत्रनाशे समभवत् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥७॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत् पुरा।
अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम्॥८॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्रातो वज्रघरस्य यत्।
अदितिर्मङ्गलं प्रादात् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥९॥

त्रीन् विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरामिततेजसः।
यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम्॥१०॥

ऋषयः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते।
मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा॥११॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाव्यये।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥१२॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥



॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुर सुधार।
बरनऊँ रघुवर विमल यश
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि
हरहु कलेस विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १॥

राम दूत अतुलित बल धामा।
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी।
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३॥

कञ्चन बरन विराज सुवेसा।
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ ७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लङ्घ जरावा॥ ९॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १०॥

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२॥

सहस वदन तुम्हरो यश गावै।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै॥ १३॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरो मन्त्र विमीषण माना।
लङ्घेश्वर भये सब जग जाना॥ १७॥

युग सहस्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि सुख माहीं।
जलधि लौधि गये अचरज नाहीं॥ १९॥

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २०॥

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिन पैसारे॥ २१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२॥

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३॥

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै॥ २४॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

नाशै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥ २५॥

सङ्कट से हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥ २६॥

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७॥

और मनोरथ जो कोई लावै।
दासु अमित जीवन फल पावै॥ २८॥

चारों युग प्रताप तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥ २९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकन्दन राम दुलारे॥ ३०॥

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥ ३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥ ३३॥

अन्त काल रघुपति पुर जाई।
जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई॥ ३४॥

और देवता चित्त न धर्दा।
हनुमत सई सर्व सुख कर्दा॥ ३५॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥ ३६॥

जै जै जै हनुमान गोसाई।
कृपा करहु गुरु देव की नाई॥ ३७॥

यह शत पार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ३८॥

यो यह पढै हनुमान् चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा॥ ४०॥

राम लक्ष्मण जानकी।
जय बोलो हनुमान् की॥

॥ आपदुद्धारक-द्वादशमुख-हनुमान्-स्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री-आपदुद्धारक-द्वादशमुख-हनुमान् स्तोत्र-महामन्त्रस्य
विभीषण ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः ।

श्री-द्वादशमुख-प्रचण्ड-हनुमान् देवता ।
मारुतात्मज इति बीजम् । अञ्जनासूतुरिति शक्तिः ।
वायुपुत्रेति कीलकम् । श्रीहनुमत्प्रसादसिद्धिद्वारा सर्वापन्निवारणार्थे
जपे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

उष्ट्रारूढ-सुवर्चलासहचरन् सुग्रीवमित्राञ्जना-
सूनो वायुकुमार केसरितनूजाक्षादित्यान्तक ।
सीतशोकहराग्निनन्दन सुमित्रासम्भवप्राणद
श्रीभीमाग्रज शम्भुपुत्र हनुमान् सूर्यास्य तुभ्यं नमः ॥

खड्ढं खेटक-भिन्दिपाल-परशुं पाश-त्रिशूल-द्रुमान्
चक्रं शङ्ख-गदा-फलाङ्कश-सुधाकुम्भान् हलं पर्वतम् ।
टड्ढं पर्वतकार्मुकाहिंडमरूनेतानि दिव्यायुधान्
एवं विंशतिबाहुभिश्च दधतं ध्यायेद्धनूमत्प्रभुम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ नमो भगवते तुभ्यं नमो मारुतसूनवे ।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामास्याय च ते नमः ॥ १ ॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसर्व्यकारिणे ।
लङ्घाविदाहकायाथ हेलासागरतारिणे ॥ २ ॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च।
 रावणस्य कुलच्छेदकारिणे ते नमो नमः ॥ ३ ॥
 मेघनादमखध्वंसकारिणे ते नमो नमः ।
 अशोकवनविध्वंसकारिणे भयहारिणे ॥ ४ ॥
 वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने।
 वनपालशिरश्छेत्रे लङ्घाप्रासादभज्जिने ॥ ५ ॥
 ज्वलत्कनकवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे।
 सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥ ६ ॥
 अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मशक्तिनिवारिणे।
 लक्ष्मणाङ्गमहाशक्ति-घात-क्षत-विनाशिने ॥ ७ ॥
 रक्षोम्बाय रिपुम्बाय भूतम्बाय च ते नमः ।
 ऋक्षवानरवीरौघ-प्राणदायक ते नमः ॥ ८ ॥
 परसैन्यबलम्बाय शस्त्रास्त्रविघ्नाय च।
 विषम्बाय द्विषम्बाय ज्वरम्बाय च ते नमः ॥ ९ ॥
 महाभयरिपुम्बाय भक्तत्राणैककारिणे।
 परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥ १० ॥
 पयः-पाषाण-तरण-कारणाय नमो नमः ।
 बालार्कमण्डलग्रासकारिणे भवतारिणे ॥ ११ ॥
 नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च।
 रिपुमायाविनाशाय रामाङ्गालोकरक्षिणे ॥ १२ ॥
 प्रतिग्रामस्थितायाथ रक्षोभूतवधार्थिने।
 करालशैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः ॥ १३ ॥

बालैकब्रह्मचर्याय रुद्रमूर्तिधराय च।

विहङ्गमाय शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥ १४ ॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च।

दक्षिणाशाभास्कराय शतचन्द्रोदयात्मने ॥ १५ ॥

कृत्या-क्षत-व्यथग्नाय सर्वक्षेशहराय च।

स्वाम्याज्ञा-पार्थसङ्ग्राम-सङ्घे सञ्जयधारिणे ॥ १६ ॥

भक्तानां दिव्यवादेषु सङ्ग्रामे जयदायिने।

किलकिल्याबूबुरोच्चघोरशब्दकराय च ॥ १७ ॥

सर्पाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे वनचारिणे।

सदा वनफलाहार-सत्तृप्ताय विशेषतः।

महार्णव-शिला-बद्ध-सेतवे ते नमो नमः ॥ १८ ॥

वादे विवादे सङ्ग्रामे भये घोरे महावने।

सिंहव्याघ्रादि चौरेभ्यः स्तोत्रपाठाद्युयं न हि ॥ १९ ॥

दिव्ये भूतभये व्याधौ गृहे स्थावरजङ्गमे।

राजशस्त्रभये चोग्रबाधा ग्रहभयेषु च ॥ २० ॥

जले सर्वे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राणसम्मुद्रे।

पठेत् स्तोत्रं प्रमुच्येत भयेभ्यः सर्वतो नरः।

तस्य कापि भयं नास्ति हनुमत् स्तवपाठतः ॥ २१ ॥

सर्वथा वै त्रिकालं च पठनीयमिमं स्तवम्।

सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ २२ ॥

विनतायाः स्वमातुश्च दासीत्वस्य निवृत्तये।

सुधार्ण यातुकामाय महापौरुषशालिने ॥ २३ ॥

विभीषणकृतं स्तोत्रं ताक्ष्येण समुदीरितम्।

ये पठन्ति सदा भक्त्या सिद्धयस्तत्करे स्थिताः ॥ २४ ॥

॥ इति श्री-सुदर्शनसंहितायां श्री-विभीषणगरुडसंवादे
श्री-विभीषणकृतम् आपदुद्धारक श्री-द्वादशमुख-हनुमान् स्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥

॥ सुन्दरहनुमान् महामन्त्रनामस्तोत्रम् ॥

हनुमान् अञ्जनासूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।

कपीन्द्रः पिङ्गलाक्षश्च लङ्घाद्वीपभयङ्गरः ॥ १ ॥

प्रभञ्जनसुतो वीरः सीताशोकविनाशकः ।

अक्षहन्ता रामसरखो रामकार्यधुरन्धरः ॥ २ ॥

महौषधगिरेर्धारी वानरप्राणदायकः ।

वारीशतारकश्चैव मैनाकगिरिभञ्जनः ॥ ३ ॥

निरञ्जनो जितकोघः कदलीवनसंवृतः ।

ऊर्ध्वरेता महासत्त्वः सर्वमन्त्रप्रवर्तकः ॥ ४ ॥

महालिङ्गप्रतिष्ठाता बाष्पकृजपतान्तरः ।

शिवध्यानपरो नित्यं शिवपूजापरायणः ॥ ५ ॥

॥ इति श्री-पराशरसंहितान्तर्गतं श्री-सुन्दरहनुमान्
महामन्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ हनुमत् पञ्चरत्नम् ॥

वीताखिल-विषयेच्छं जातानन्दाश्रु-पुलकमत्यच्छम्।
सीतापति-दूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृदयम् ॥ १ ॥

तरुणारुण-मुख-कमलं करुणा-रसपूर-पूरितापाङ्गम्।
सञ्जीवनमाशासे मञ्जुल-महिमानमञ्जना-भाग्यम् ॥ २ ॥

शम्बरवैरि-शरातिगमम्बुजदल-विपुल-लोचनोदारम्।
कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्ब-ज्वलितोषमेकमवलम्बे ॥ ३ ॥

दूरीकृत-सीतार्तिः प्रकटीकृत-रामवैभव-स्फूर्तिः ।
दारित-दशमुख-कीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः ॥ ४ ॥

वानर-निकराध्यक्षं दानव-कुल-कुमुद-रविकर-सदृशम्।
दीन-जनावन-दीक्षं पवनतपः पाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥

एतत् पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम्।
चिरमिह निखिलान् भोगान् भुत्त्वा श्रीराम-भक्तिभाग् भवति ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-हनुमत्-पञ्चरत्नं सम्पूर्णम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृत-मस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्ण-लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

उल्लङ्घ सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवहिं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्घां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वम् अरोगता।
अजाङ्गयं वाक्पटुत्वं च हनुमत्स्मरणाद्ववेत्॥

असाध्यसाधक स्वामिन् असाध्यं तव किं वद।
रामदूत कृपसिन्धो मत्कार्यं साधय प्रभो॥



॥ कृष्णाष्टकम् १ ॥

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरगुरुर्वेदविषयो
 धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताभ्नयनः।
 गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ १ ॥

यतः सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदं
 स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा।
 लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ २ ॥

असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणैः
 निरुद्ध्येदं चित्तं हृदि विलयमानीय सकलम्।
 यमीङ्गं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ३ ॥

पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
 यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम्।
 नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ४ ॥

महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
 न कस्य स्वातन्त्र्यं कन्चिदपि कृतौ यत्कृतिमृते।
 बलारातेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ५ ॥

विना यस्य ध्यानं ब्रजति पशुतां सूकरमुखां
 विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता।
 विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ६ ॥

नरातङ्कोद्दङ्कः शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
 घनश्यामो वामो ब्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसखः ।
 स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखदः
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ७ ॥

यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
 तदा लोकस्वामी प्रकटितवपुः सेतुधृगजः ।
 सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो ब्रजपतिः
 शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ कृष्णाष्टकम् २ ॥

नित्यानन्दैकरसं सञ्चिन्मात्रं स्वयं ज्योतिः ।
 पुरुषोत्तममजमीशं वन्दे श्रीयादवाधीशम् ॥
 भजे ब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
 स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् ।
 सुपिच्छुगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकम्
 अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥ १ ॥

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
 विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
 करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
 महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम्॥ २ ॥
 कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
 ब्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
 यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
 युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम्॥ ३ ॥
 सदैव पादपङ्कजं मदीय मानसे निजं
 दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
 समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
 समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥ ४ ॥
 भुवो भरावतारकं भवाभ्यिकर्णधारकं
 यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
 दृगन्तकान्तभञ्जिनं सदा सदालिसञ्जिनं
 दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्॥ ५ ॥
 गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
 सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।
 नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
 नमामि मेघसुन्दरं तडित्रभालसत्पटम्॥ ६ ॥
 समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
 नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
 निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
 रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम्॥ ७ ॥

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं
 नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवहिपायिनम्।
 किशोरकान्तिरञ्जितं दृगञ्जनं सुशोभितं
 गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्॥८॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
 मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
 प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्
 भवेत् स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्॥
 ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ कृष्णाष्टकम् ३ ॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
 देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ १ ॥

अतसीपुष्पसङ्काशं हारनपुरशोभितम्।
 रत्नकङ्कणकेयूरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ २ ॥

कुटिलालकसंयुक्तं पूर्णचन्द्रनिभाननम्।
 विलसत् कुण्डलधरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ३ ॥

मन्दारगन्धसंयुक्तं चारुहासं चतुर्भुजम्।
 बर्हिपिञ्छावचूडाङ्गं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ४ ॥

उत्कुल्पद्मपत्राक्षं नीलजीमूतसन्निभम्।
यादवानां शिरोरत्नं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥५॥

रुक्मिणीकेलिसंयुक्तं पीताम्बरसुशोभितम्।
अवास्तुलसीगन्धं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥६॥

गोपिकानां कुचद्वन्द्वं कुङ्कमाङ्कितवक्षसम्।
श्रीनिकेतं महेष्वासं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥७॥

श्रीवत्साङ्कं महोरस्कं वनमालाविराजितम्।
शङ्खचक्रधरं देवं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥८॥

कृष्णाष्टकमिदं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥
॥इति श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री-कृष्ण-जननम्॥

निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने।
देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशायः।
आविरासीयथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः॥८॥

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणम्
चतुर्भुजं शङ्खगदाद्युदायुधं।
श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभम्
पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम्॥९॥

महार्ह-वैद्यर्य-किरीट-कुण्डल-
त्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम्।
उदाम-काञ्चञ्जन्द-कञ्जणादिभिर्-
विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत ॥ १० ॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
पूर्वार्थे तृतीयेऽध्याये श्री-कृष्ण-जन्मानुवर्णनम् ॥

॥ गोविन्दाष्टकम् ॥

सत्यं ज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठप्राङ्गणरिष्ट्वणलोलमनायासं परमायासम्।
मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारं
क्षमामा नाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ १ ॥

मृत्खामत्सीहेति यशोदाताडनशैशव-सन्नासं
व्यादितवक्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम्।
लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालोकमनालोकं
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ २ ॥

त्रैविष्टपरिपुवीरभ्रं क्षितिभारभ्रं भवरोगभ्रं
कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम्।
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभासं
शैवं केवलशान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ३ ॥

गोपालं प्रभुलीलाविग्रहगोपालं कुलगोपालं
गोपीखेलनगोवर्धनधृतलीलालालितगोपालम्।
गोभिर्निर्गदित-गोविन्दस्फुटनामानं बहुनामानं
गोधीगोचरदूरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ४ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेदं भेदावस्थमभेदाभं
 शशद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसैभाग्यम् ।
 श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्यं चिन्तितसद्ग्रावं
 चिन्तामणिमहिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥५॥
 स्तानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढं
 व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्त्रा दातुमुपाकर्षन्तं ताः।
 निर्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरन्तःस्थं
 सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥६॥
 कान्तं कारणकारणमादिमनादिं कालघनाभासं
 कालिन्दीगतकालियशिरसि सुनृत्यन्तं मुहुरत्यन्तम्।
 कालं कालकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नं
 कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥७॥
 वृन्दावनभुवि वृन्दारकगण वृन्दाराधित वन्द्येऽहं
 कुन्दाभामलमन्दस्मेरसुधानन्दं सुहृदानन्दम्।
 वन्द्याशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वन्द्वं
 वन्द्याशेषगुणाब्धिं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम्॥८॥
 गोविन्दाष्टकमेतदधीते गोविन्दार्पितचेता यः
 गोविन्दं अच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णोति।
 गोविन्दाष्टक-सरोजध्यान-सुधाजलधौत-समस्ताघः
 गोविन्दं परमानन्दामृतम् अन्तःस्थं स तमभ्येति॥
 ॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ गीतगोविन्दम् ॥

॥ श्री-जयदेव ध्यानम् ॥

श्रीगोपालविलासिनी वलयसद्रत्तादिमुण्डाकृति
 श्रीराधापतिपादपद्मभजनानन्दाद्विमग्नोऽनिशम्।
 लोके सत्कविराजराज इति यः ख्यातो दयाभोनिधिः
 तं वन्दे जयदेवसद्गुरुमहं पद्मावतीवल्लभम्॥
 प्रलयपयोधिजले केशव धृतवानसि वेदम्।
 विहितवहित्रचरित्रमखेदम्॥
 केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥ १ ॥
 क्षितिरतिविपुलतरे केशव तव तिष्ठति पृष्ठे।
 धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ॥
 केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥ २ ॥
 वसति दशनशिखरे केशव धरणी तव लग्ना।
 शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना ॥
 केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥
 तव करकमलवरे केशव नखमद्गुतश्चञ्जम्।
 दलितहिरण्यकशिपुतनुभृञ्जम्॥
 केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥
 छलयसि विक्रमणे केशव बलिमद्गुतवामन।
 पदनखनीरजनितजनपावन ॥

केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये केशव जगदपगतपापम् ।

स्त्रपयसि पयसि शमितभवतापम् ॥

केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥

वितरसि दिक्षु रणे केशव दिक्पतिकमनीयम् ।

दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ॥

केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥

वहसि वपुषि विशदे केशव वसनं जलदाभम् ।

हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥

केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेः केशव अहह श्रुतिजातम् ।

सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥

केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

मूर्च्छनिवहनिधने केशव कलयसि करवालम् ।

धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥

केशव धृतकल्पकशरीर जय जगदीश हरे ॥ १० ॥

श्रीजयदेवकवेः केशव इदमुदितमुदारम् ।

शृणु शुभदं सुखदं भवसारम् ॥

केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥

वेदानुष्ठरते जगन्निवहते भूगोलमुद्धिभ्रते
 दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
 पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
 मुच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥
 ॥ इति श्री-जयदेवविरचितं दशावतार-गीतगोविन्दं सम्पूर्णम् ॥

॥ भज गोविन्दम् ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं
 गोविन्दं भज मूढमते।
 सम्मासे सन्निहिते काले
 न हि न हि रक्षति डुकृज् करणे ॥ १ ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णां
 कुरु सद्गुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।
 यह्यभसे निजकर्मोपात्तं
 वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २ ॥

नारीस्तनभरनाभीदेशं
 दृष्टा मा गा मोहावेशम्।
 एतन्मांसावसादि विकारं
 मनसि विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३ ॥

नलिनीदलगतजलमतिरलं
 तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्।
 विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं
 लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४ ॥

यावद्वित्तोपार्जन-सक्तः
 तावन्निज-परिवारो रक्तः।
 पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे
 वार्ता कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥ ५ ॥

यावत् पवनो निवसति देहे
 तावत् पृच्छति कुशलं गेहे।
 गतवति वायौ देहापाये
 भार्या विभ्यति तस्मिन् काये ॥ ६ ॥

बालस्तावक्तीडासक्तः
 तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः ।
 वृद्धस्तावचिन्तासक्तः
 परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः ॥ ७ ॥

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः
 संसारोऽयमतीव विचित्रः।
 कस्य त्वं कः कुत आयातः
 तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः ॥ ८ ॥

सत्पञ्चत्वे निःसञ्चत्वं
 निःसञ्चत्वे निर्माहत्वम्।
 निर्माहत्वे निश्चलितत्त्वं
 निश्चलितत्त्वे जीवन-मुक्तिः ॥ ९ ॥

वयसि गते कः कामविकारः
 शुष्के नीरे कः कासारः।
 क्षीणे वित्ते कः परिवारः
 ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥ १० ॥

मा कुरु धनजनयौवनगर्व
हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हृत्वा
ब्रह्मपदं त्वं प्रविशा विदित्वा ॥ ११ ॥

दिनयामिन्यौ सायं प्रातः
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः
तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥ १२ ॥

द्वादशमञ्जरिकाभिरशेषः
कथितो वैयाकरणस्यैषः।
उपदेशो भूद्विद्यानिपुणैः
श्रीमच्छङ्करभगवच्छरणैः ॥

का ते कान्ता धनगतचिन्ता
वातुल किं तव नास्ति नियन्ता।
त्रिजगति सज्जनसज्जतिरेका
भवति भवाणवतरणे नौका ॥ १३ ॥

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः
काषायाम्बरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि चन पश्यति मूढः
उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥ १४ ॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं
दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं
तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥ १५ ॥

अग्रे वहिः पृष्ठे भानुः
रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षस्तरुतलवासः
तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ॥ १६ ॥

कुरुते गङ्गासागरगमनं
ब्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन
मुक्तिं न भजति जन्मशतेन ॥ १७ ॥

सुरमन्दिर-तरुमूल-निवासः
शश्या भूतलमजिनं वासः।
सर्व-परिग्रह भोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः ॥ १८ ॥

योगरतो वा भोगरतो वा
सङ्गरतो वा सङ्गविहीनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं
नन्दति नन्दति नन्दत्येव ॥ १९ ॥

भगवद्वीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजललव-कणिका पीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा
क्रियते तस्य यमेन न चर्चा ॥ २० ॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरपि जननी-जठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥ २१ ॥

रथ्या-चर्पट-विरचित-कन्थः
पुण्यापुण्य-विवर्जित-पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तो
रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ २२ ॥

कस्त्वं कोऽहं कृत आयातः
का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं
विश्वं त्यक्त्वा स्वप्रविचारम् ॥ २३ ॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः
व्यर्थं कुप्यसि मच्यसहिष्णुः।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं
सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्॥ २४॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्ध्यौ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्॥ २५॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं
त्यज्ज्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम्।
आत्मज्ञानविहीना मृढाः
ते पच्यन्ते नरकनिगृहाः॥ २६॥

गेयं गीता नामसहस्रं
ध्येयं श्रीपति-रूपमजस्म्।
नेयं सज्जन-सङ्घे चित्तं
देयं दीनजनाय च वित्तम्॥ २७॥

सुखतः क्रियते रामाभोगः
पश्याद्वन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं
तदपि न मुच्चति पापाचरणम्॥ २८॥

अर्थमनर्थं भावय नित्यं
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः॥ २९॥

प्राणायामं प्रत्याहारं
नित्यानित्य-विवेकविचारम्।
जाप्यसमेत-समाधिविधानं
कुर्ववधानं महदवधानम्॥ ३०॥

गुरुचरणाम्बुज-निर्भर-भक्तः
संसारादचिराद्व भुक्तः।
सेन्द्रियमानस-नियमादेवं
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम्॥ ३१॥

मूढः कश्चन वैयाकरणो
डुकृञ्जकरणाध्ययन-धुरिणः ।
श्रीमच्छङ्कर-भगवच्छिष्यैः
बोधित आसिच्छोधितकरणः॥ ३२॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं
गोविन्दं भज मूढमते।
नामस्मरणादन्यमुपायं
न हि पश्यामो भवतरणे॥ ३३॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ भज गोविन्दं सम्पूर्णम्॥

॥ अक्रूरकृत-दशावतारस्तुतिः ॥

नमः कारणमत्स्याय प्रलयाद्विचराय च।
हयशीर्षो नमस्तुभ्यं मधुकैटभमृत्यवे ॥ १ ॥

अकूपाराय बृहते नमो मन्दरघारिणे।
क्षित्युद्घारविहाराय नमः शूकरमूर्तये ॥ २ ॥

नमस्तेऽद्भुतसिंहाय साधुलोकभयापह।
वामनाय नमस्तुभ्यं क्रान्तित्रिभुवनाय च ॥ ३ ॥

नमो भृगूणां पतये दृष्टक्षत्रवनच्छिदे।
नमस्ते रघुवर्याय रावणान्तकराय च ॥ ४ ॥

नमस्ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः ॥ ५ ॥

नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्यदानवमोहिने।
मुच्छप्रायक्षत्रहन्त्रे नमस्ते कल्किरूपिणे ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे चत्वारिंशोऽध्याये
श्री-अक्रूरकृत दशावतारस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ भीष्मस्तुतिः ॥

श्री-भीष्म उवाच

इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा भगवति सात्वतपुञ्जवे विभूम्नि।
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं प्रकृतिमुपेयुषि यद्वप्रवाहः ॥ १ ॥

त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं रविकरगौरवराम्बरं दधाने।
वपुरलक्कुलावृताननाङ्गं विजयसखे रतिरस्तु मेऽनवद्या ॥ २ ॥

युधि तुरगरजोविधूम्रविष्वक्चलुलितश्रमवार्यलङ्कृतास्ये।
मम निशितशरैर्विभिद्यमान त्वचि विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा ॥ ३ ॥

सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य।
स्थितवति परसैनिकायुरक्षणा हृतवति पार्थसखे रतिर्ममास्तु ॥ ४ ॥

व्यवहितपृतनामुखं निरीक्ष्य स्वजनवधाद्विमुखस्य दोषबुद्ध्या।
कुमतिमहरदात्मविद्यया यश्वरणरतिः परमस्य तस्य मेऽस्तु ॥ ५ ॥

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्तुमवप्नुतो रथस्थः।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलदुर्हरिरिव हन्तुमिमं गतोत्तरीयः ॥ ६ ॥

शितविशिखहतो विशीर्णदंशः क्षतजपरिप्लुत आततायिनो मे।
प्रसभमभिससार मद्वधार्थं स भवतु मे भगवान्नातिर्मुकुन्दः ॥ ७ ॥

विजयरथकुटुम्ब आत्तोत्रे धृतहयरशिमनि तच्छ्रयेक्षणीये।
भगवति रतिरस्तु मे मुमूर्षोर्यमिह निरीक्ष्य हता गताः स्वरूपम् ॥ ८ ॥

ललितगतिविलासवल्पुहास प्रणयनिरीक्षणकल्पितोरुमानाः।
कृतमनुकृतवत्य उन्मदान्व्याः प्रकृतिमगान्किल यस्य गोपवध्वः ॥ ९ ॥

मुनिगणनृपवर्यसङ्कलेऽन्तः सदसि युधिष्ठिरराजसूय एषाम्।
अर्हणमुपपेद ईक्षणीयो मम दृशिगोचर एष आविरात्मा ॥ १० ॥

तमिममहमजं शरीरभाजां हृदि हृदि धिष्ठितमात्मकलिप्तानाम्।
प्रतिदृशमिव नैकधार्कमेकं समधिगतोऽस्मि विधूतभेदमोहः ॥ ११ ॥

सूत उवाच

कृष्ण एवं भगवति मनोवाग्दृष्टिवृत्तिभिः।
आत्मन्यात्मानमावेश्य सोऽन्तःश्वास उपारमत्॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमे स्कन्धे
नवमेऽध्याये श्री-भीष्मस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

ध्रुव उवाच

योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां
सञ्जीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना।
अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन्
प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम्॥ १ ॥

एकस्त्वमेव भगवन्निदमात्मशक्तया
मायारव्ययोरुगुणया महदाद्यशेषम्।
सृष्टाऽनुविश्य पुरुषस्तदसद्गुणेषु
नानेव दारुषु विभावसुवद्विभासि ॥ २ ॥

त्वदत्तया वयुनयेदमचष्ट विश्वं
सुप्रबुद्ध इव नाथ भवत्प्रपन्नः।
तस्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं
विस्मर्यते कृतविदा कथमार्तबन्धो ॥ ३ ॥

नूनं विमुष्टमतयस्त्व मायया ते
 ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतोः।
 अर्चन्ति कल्पकतरुं कुणपोपभोग्यम्
 इच्छन्ति यत्स्पर्शजं निरयेऽपि नृणाम्॥४॥

या निर्वृतिस्तनुभृतां तव पादपद्म
 ध्यानाद्वज्जनकथाश्रवणेन वा स्यात्।
 सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ मा भूत्
 किं त्वन्तकासिलुलितात्पततां विमानात्॥५॥

भक्तिं मुहुः प्रवहतां त्वयि मे प्रसङ्गो
 भूयादनन्त महाताममलाशयानाम्।
 येनाञ्जसोल्बणमुरुव्यसनं भवाव्यं
 नेष्ये भवद्गुणकथामृतपानमत्तः॥६॥

ते न स्मरन्त्यतितरां प्रियमीश मर्त्यं
 ये चान्वदः सुतसुहृदृहवित्तदाराः।
 ये त्वज्जनाभ भवदीयपदारविन्द
 सौगन्ध्यलुब्धहृदयेषु कृतप्रसङ्गाः॥७॥

तिर्यङ्गगद्विजसरीसृपदेवदैत्य-
 मर्त्यादिभिः परिचितं सदसद्विशेषम्।
 रूपं स्थविष्टमज ते महदायनेकं
 नातः परं परम वेद्मि न यत्र वादः॥८॥

कल्पान्त एतदखिलं जठरेण गृह्णन्
 शेते पुमान्स्वदृग्नन्तसखस्तदङ्के।
 यन्नाभिसिन्धुरुहकाञ्चनलोकपद्म
 गर्भं द्युमान्मगवते प्रणतोऽस्मि तस्मै ॥९॥

त्वं नित्यमुक्तपरिशुद्धविबुद्ध आत्मा
 कूटस्थ आदिपुरुषो भगवांस्यधीशः।
 यद्दुद्ध्ववस्थितिमखण्डितया स्वदृष्ट्या
 द्रष्टा स्थितावधिमखो व्यतिरिक्त आस्ते ॥१०॥
 यस्मिन्विरुद्धगतयो ह्यनिशं पतन्ति
 विद्यादयो विविधशक्तय आनुपूर्व्यात्।
 तद्वह्नि विश्वभवमेकमनन्तमाद्यम्
 आनन्दमात्रमविकारमहं प्रपद्ये ॥११॥

सत्याशिषो हि भगवंस्तव पादपद्मम्
 आशीस्तथानुभजतः पुरुषार्थमूर्तेः।
 अप्येवमर्य भगवान्परिपाति दीनान्
 वाश्रेव वत्सकमनुग्रहकातरोऽस्मान् ॥१२॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां चतुर्थे स्कन्धे
 नवमेऽध्याये श्री-ध्रुवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ श्री-स्कान्दपुराणान्तर्गत-मार्गशीर्ष-माहात्म्ये
 कृष्ण-नाम-माहात्म्यम् ॥

वक्तव्यमेव यत्प्रोक्तं तच्छृणुष्व समाहितः।
 कथयिष्ये तव प्रीत्या अपि गुह्यतरं मम ॥३२॥

मम नाम प्रवक्तव्यं सहे चैव विशेषतः।
कृष्णकृष्णोति वक्तव्यं मम प्रीतिकरं परम्॥३३॥

प्रतिज्ञैषा च मे पुत्र न जानन्ति सुरासुराः।
मनसा कर्मणा वाचा यो मे शरणमागतः॥३४॥

स हि सर्वामवाप्नोति कामनामिह लौकिकीम्।
सर्वोत्कृष्टं च वैकुण्ठं मत्प्रियां कमलामपि॥३५॥

कृष्णकृष्णोति कृष्णोति यो मां स्मरति नित्यशः।
जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम्॥३६॥

विनोदेनापि दम्भेन मौद्याल्लोभाच्छलादपि।
यो मां भजत्यसौ वत्स मद्भक्तो नावसीदति॥३७॥

ये वै पठन्ति कृष्णोति मरणे पर्युपस्थिते।
यदि पापयुताः पुत्र न पश्यन्ति यमं कच्चित्॥३८॥

पूर्वं वयसि पापानि कृतान्यपि च कृत्स्नशः।
अन्तकाले च कृष्णोति स्मृत्वा मामेत्यसंशयम्॥३९॥

नमः कृष्णाय महते विवशोऽपि वदेयदि।
ध्रुवं पदमवाप्नोति मरणे पर्युपस्थिते॥४०॥

श्रीकृष्णोति कृतोच्चारैः प्राणैर्यदि वियुज्यते।
दूरस्थः पश्यति च तं स्वर्गं प्रेतनायकः॥४१॥

इमशाने यदि रथ्यायां कृष्णकृष्णोति जल्पति।
म्रियते यदि चेत्पुत्र मामेवैति न संशयः॥४२॥

दर्शनान्मम भक्तानां मृत्युमाप्नोति यः क्वचित्।
विना मत्स्मरणात्पुत्र मुक्तिमेति स मानवः ॥ ४३ ॥

पापानलस्य दीप्तस्य भयं मा कुरु पुत्रक।
श्रीकृष्णानाममेघोत्थैः सिन्ध्यते नीरबिन्दुभिः ॥ ४४ ॥

कलिकालभुजङ्गस्य तीक्ष्णदृश्य किं भयम्।
श्रीकृष्णानामदारूत्थवहिदग्धः स नश्यति ॥ ४५ ॥

पापपावकदग्धानां कर्मचेष्टावियोगिनाम्।
भेषजं नास्ति मर्त्यानां श्रीकृष्णस्मरणं विना ॥ ४६ ॥

प्रयागे वै यथा गङ्गा शुक्लतीर्थे च नर्मदा।
सरस्वती कुरुक्षेत्रे तद्वच्छ्रीकृष्णकीर्तनम् ॥ ४७ ॥

भवाम्भोधिनिमग्नानां महापापोर्मिपातिनाम्।
न गतिर्मानवानां च श्रीकृष्णस्मरणं विना ॥ ४८ ॥

मृत्युकालेऽपि मर्त्यानां पापिनां तदनिच्छताम्।
गच्छतां नास्ति पाथेयं श्रीकृष्णस्मरणं विना ॥ ४९ ॥

तत्र पुत्र गया काशी पुष्करं कुरुजाङ्गलम्।
प्रत्यहं मन्दिरे यस्य कृष्णकृष्णोति कीर्तनम् ॥ ५० ॥

जीवितं जन्मसाफल्यं सुखं तस्यैव सार्थकम्।
सततं रसना यस्य कृष्णकृष्णोति जल्पति ॥ ५१ ॥

सकृदुच्चरितं येन हरिरित्यक्षरद्वयम्।
बद्धः परिकरस्तेन मोक्षाय गमनं प्रति ॥ ५२ ॥

नाम्नोऽस्य यावती शक्तिः पापनिर्दहने मम।
तावत्कर्तुं न शक्तोति पातकं पातकी जनः ॥ ५३ ॥

नापविद्धं भवेत् तस्य शरीरं नैव मानसम्।
न पापं न च वैक्षव्यं कृष्णकृष्णोति कीर्तनात् ॥ ५४ ॥

श्रीकृष्णोति वचः पथ्यं न त्यजेद् यः कलौ नरः।
पापामयो वै न भवेत्कलौ तस्यैव मानसे ॥ ५५ ॥

श्रीकृष्णोति प्रजल्पन्तं दक्षिणाशापतिर्नरम्।
श्रुत्वा मार्जयते पापं तस्य जन्मशतार्जितम् ॥ ५६ ॥

चान्द्रायणशतैः पापं पराकाणां सहस्रैः।
यन्नापयाति तद्याति कृष्णकृष्णोति कीर्तनात् ॥ ५७ ॥

नान्याभिर्नामकोटीभिस्तोषो मम भवेत् क्वचित्।
श्रीकृष्णोति कृतोच्चारे प्रीतिरेवाधिकाधिका ॥ ५८ ॥

चन्द्रसूर्योपरागैस्तु कोटीभिर्यत्कलं स्मृतम्।
तत्कलं समवाप्नोति कृष्णकृष्णोति कीर्तनात् ॥ ५९ ॥

गुरुदाराभिगमनं हेमस्तेयादि पातकम्।
श्रीकृष्णकीर्तनाद् याति घर्मतस्मि हिमं यथा ॥ ६० ॥

युक्तो यदि महापापैरगम्यागमनादिभिः।
मुच्यते चान्तकालेऽपि सकृच्छ्रीकृष्णकीर्तनात् ॥ ६१ ॥

अविशुद्धमना यस्तु विनाऽप्याचारवर्तनात्।
प्रेतत्वं सोऽपि नाऽप्नोति अन्ते श्रीकृष्णकीर्तनात् ॥ ६२ ॥

मुखे भवतु मा जिह्वाऽसती यातु रसातलम्।
न सा चेत् कलिकाले या श्रीकृष्णगुणवादिनी ॥ ६३ ॥

स्ववक्रे परवक्रे च वन्द्या जिह्वा प्रयत्नतः।
कुरुते या कलौ पुत्र श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् ॥ ६४ ॥

पापवल्ली मुखे तस्य जिह्वारूपेण कीर्त्यते।
या न वक्ति दिवारात्रौ श्रीकृष्णगुणकीर्तनम् ॥ ६५ ॥

पततां शतखण्डा तु सा जिह्वा रोगरूपिणी।
श्रीकृष्णकृष्णकृष्णोति श्रीकृष्णोति न जल्पति ॥ ६६ ॥

श्रीकृष्णनाममाहात्म्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्याऽहं श्रेयसां दाता भवाम्येव न संशयः ॥ ६७ ॥

श्रीकृष्णनाममाहात्म्यं त्रिसन्ध्यं हि पठेत् तु यः।
सर्वान्कामानवाप्नोति स मृतः परमां गतिम् ॥ ६८ ॥

॥ इति श्रीस्कन्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये
वैष्णवखण्डे ब्रह्मविष्णुसंवादे मार्गशीर्षमासमाहात्म्ये
श्रीकृष्णनाममाहात्म्यवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥

॥ बालरक्षा ॥

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारतैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥

अस्ति स्वस्त्रुणीकराग्रविगलत् कल्पप्रसूनाप्नुतं
 वस्तुप्रस्तुतवेणुनादलहरी निर्वाणनिर्व्यकुलम्।
 स्वस्त्रस्तनिबद्धनीविविलसत् गोपीसहस्रावृतं
 हस्तन्यस्तनतापवर्गमखिलोदारं किशोराकृति ॥

गोप्य ऊचुः

अव्यादजोऽद्विं मणिमांस्तव जान्वथोरू
 यज्ञोऽच्युतः कटिटटं जठरं हयास्यः।
 हृत्केशवस्त्वदुर ईशा इनस्तु कण्ठं
 विष्णुर्भुजं मुखमुरुक्रम ईश्वरः कम् ॥ १ ॥

चक्रयग्रतः सहगदो हरिरस्तु पश्चात्
 त्वत्पार्थ्योर्धनुरसी मधुहाऽजनश्च।
 कोणेषु शङ्खं उरुगाय उपर्युपेन्द्रः
 ताक्ष्यः क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात् ॥ २ ॥

इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान्नारायणोऽवतु।
 श्वेतद्वीपपतिश्चित्तं मनो योगेश्वरोऽवतु ॥ ३ ॥

पृश्निगर्भस्तु ते बुद्धिमात्मानं भगवान्परः।
 क्रीडन्तं पातु गोविन्दः शयानं पातु माधवः ॥ ४ ॥

ब्रजन्तमव्याद्वैकुण्ठ आसीनं त्वां श्रियः पतिः।
 भुज्ञानं यज्ञभुक्पातु सर्वग्रहभयङ्करः ॥ ५ ॥

डाकिन्यो यातुधान्यश्च कूष्माण्डा येऽर्भक्यहाः।
 भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षोविनायकाः ॥ ६ ॥

कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृकादयः।
उन्मादा ये ह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रियद्वुहः॥७॥

स्वप्रहृष्टा महोत्पाता वृद्धबालग्रहाश्च ये।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्नामग्रहणभीरवः॥८॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
षष्ठमेऽध्याये गोपीकृतबालरक्षा सम्पूर्णा ॥

॥ मधुराष्टकम् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सरव्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुसं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सालिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥

॥ इति श्रीमद्भूलभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ अच्युताष्टकम्॥

अच्युतं केशवं राम-नारायणं
कृष्ण-दामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे॥१॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्द्रिया मन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नन्दनं सन्दघे॥२॥

विष्णवे जिष्णवे शश्विने चक्रिणे
रुक्मिणी-रागिने जानकी-जानये।
वल्लभी-वल्लभायाऽर्चितायात्मने
कंस-विघ्वंसिने वंशिने ते नमः॥३॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवार्जित-श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारका-नायक द्रौपदी-रक्षक॥४॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
 दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः ।
 लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
 उगस्त्सम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥५॥

 धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्-द्वेषिणां
 केशिहा कंसहृद्-वंशिकावादकः ।
 पूतनाकोपकः सूरजा-खेलनो
 बाल-गोपालकः पातु मां सर्वदा ॥६॥

 विद्युदाद्योतवान् प्रस्फुरद्वाससं
 प्रावृद्भोदवत् प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
 वन्यया मालया शोभितोरस्थलं
 लोहिताङ्गिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥७॥

 कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजिमानाननं
 रत्नमौलिं लसत् कुण्डलं गण्डयोः ।
 हारकेयूरकं कङ्कण-प्रोज्जवलं
 किञ्चिणी-मञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥८॥

 अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टं
 प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
 वृत्ततः सुन्दरं वेद्यविश्वम्बरं
 तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥

 ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-अच्युताष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ बालमुकुन्दाष्टकम् ॥

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ १ ॥

संहृत्य लोकान् वटपत्रमध्ये शयानमाद्यन्तविहीनरूपम्।
सर्वेश्वरं सर्वहितावतारं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ २ ॥

इन्दीवरश्यामलकोमलाङ्गम् इन्द्रादिदेवार्चितपादपद्मम्।
सन्तानकल्पद्रुममाश्रितानां बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ३ ॥

लम्बालकं लम्बितहारयष्टि शङ्खारलीलाङ्कितदन्तपङ्किम्।
बिम्बाधरं चारुविशालनेत्रं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ४ ॥

शिक्ये निधायाद्यपयोदधीनि बहिर्गतायां ब्रजनायिकायाम्।
भुत्त्वा यथेष्टं कपटेन सुसं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ५ ॥

कलिन्दजान्तरिथितकालियस्य फणाग्ररङ्गे नटनप्रियन्तम्।
तत्पुच्छहस्तं शरदिन्दुवक्रं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ६ ॥

उलूखले बद्धमुदारशौर्यम् उत्तुङ्गयुगमार्जुन-भङ्गलीलम्।
उत्कुल्पपद्मायत-चारुनेत्रं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ७ ॥

आलोक्य मातुर्मुखमादरेण स्तन्यं पिबन्तं सरसीरुहाक्षम्।
सच्चिन्मयं देवमनन्तरूपं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ ८ ॥

॥ इति श्री-बालमुकुन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

आकुञ्चितं जानु करं च वामं न्यस्य क्षितौ दक्षिणहस्तपद्मे।
आलोकयन्तं नवनीतखण्डं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥

॥ कृष्णद्वादशनामस्तोत्रम् ॥

शृणु ध्वं मुनयः सर्वे गोपालस्य महात्मनः ।
अनन्तस्याप्रमेयस्य नामद्वाशकं स्तवम् ॥

अर्जुनाय पुरा गीतं गोपालेन महात्मना ।
द्वारकायां प्रार्थयते यशोदायाश्च सन्निधौ ॥

॥ ध्यानम् ॥

जानुभ्यामपि धावन्तं बाहुभ्यामतिसुन्दरम् ।
सकुण्डलालकं बालं गोपालं चिन्तयेदुषः ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

प्रथमं तु हरि विद्याद्वितीयं केशवं तथा ।
तृतीयं पद्मनाभं तु चतुर्थं वामनं तथा ॥ १ ॥

पञ्चमं वेदगर्भं च षष्ठं तु मधुसूदनं ।
सप्तमं वासुदेवं च वराहं चाष्टमं तथा ॥ २ ॥

नवमं पुण्डरीकाक्षं दशमं तु जनार्दनम् ।
कृष्णमेकादशं प्रोक्तं द्वादशं श्रीधरं तथा ॥ ३ ॥

एतद्वादशनामानि मया प्रोक्तानि फाल्नुन ।
कालत्रये पठेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ४ ॥

चान्द्रायणसहस्रस्य कन्यादानशतस्य च ।
अश्वमेघसहस्रस्य फलमाप्नोति मानवः ॥ ५ ॥

॥ इति श्री-कृष्णद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ रङ्गनाथ गद्यम् ॥

स्वाधीन-त्रिविध-चेतनाचेतन-स्वरूप-स्थिति-प्रवृत्ति-भेदम्
 क्लेश-कर्माद्यशेष-दोषासंस्पृष्टं स्वाभाविकानवधिकातिशय-
 ज्ञान-बलैश्वर्य-वीर्य-शक्ति-तेजः सौशील्य-वात्सल्य-
 मार्दवार्जव-सौहार्द-साम्य-कारुण्य-माधुर्य-गाम्भीर्यादार्य-
 चातुर्य-स्थैर्य-धैर्य-शौर्य-पराक्रम-सत्यकाम-सत्यसङ्कल्प-
 कृतित्व-कृतज्ञाताद्यसङ्घेय-कल्याण-गुणगणौघ-महार्णवम्
 परब्रह्मभूतं पुरुषोत्तमं श्रीरङ्गशायिनम् अस्मत्स्वामिनं प्रबुद्धं
 नित्य-नियाम्य नित्य-दास्यैकरसात्मस्वभावोऽहम् तदेकानुभवः
 तदेकप्रियः परिपूर्ण भगवन्तं विशदतमानुभवेन निरन्तरमनुभूय
 तदनुभव-जनितानवधिकातिशय-प्रीतिकारिता-ऽशेषावस्थोचित-
 अशेषशेषतैकरतिरूप नित्य-किङ्करो भवानि ॥ १ ॥

स्वात्म-नित्य-नियाम्य नित्यदास्यैकरसात्म-स्वभावानुसन्धान-
 पूर्वक भगवदनवधिकातिशय-स्वाम्याद्यखिल-गुणगणानुभवजनित-
 अनवधिकातिशय-प्रीतिकारिता-ऽशेषावस्थोचिता-
 अशेषशेषतैकरतिरूप नित्य-कैङ्गर्य-प्राप्त्युपाय-भूतभक्ति
 तदुपाय-सम्यग्ज्ञान तदुपाय-समीचीनक्रिया
 तदनुगुण-सात्त्विकतास्तिक्यादि समस्तात्म-गुणविहीनः
 दुरुत्तरानन्त तद्विपर्यय-ज्ञानक्रियानुगुण-अनादिपाप-
 वासना-महार्णवान्तर्निमग्नः तिलतैलवत् दारुवहिवत्
 दुर्विवेच-त्रिगुणक्षणक्षरण-स्वभावाचेतन-प्रकृति-व्याप्तिरूप-
 दुरत्यय भगवन्माया-तिरोहित-स्वप्रकाशः

अनाद्यविद्या-सञ्चिता-ऽनन्ता-ऽशक्य-विस्त्रंसन्-कर्मपाश-प्रग्रथितः'

अनागता-ऽनन्तकाल-समीक्षयाऽपि' अदृष्ट-सन्तारोपायः'

निखिल-जन्तु-जात-शरण्य! श्रीमन्! नारायण! तव

चरणारविन्द्युगलं शरणमहं प्रपद्ये ॥ २ ॥

एवमवस्थितस्याऽपि' अर्थित्वमात्रेण' परमकारुणिको भगवान्'

स्वानुभव-प्रीत्या' उपनीतैकान्तिका-ऽत्यन्तिक-

नित्य-कैङ्कर्यैकरतिरूप-नित्य-दास्यं' दास्यतीति'

विश्वासपूर्वकं भगवन्तं नित्य-किङ्करतां प्रार्थये ॥ ३ ॥

तवानुभूति-सम्भूत-प्रीतिकारित-दासताम्।

देहि मे कृपया नाथ! न जाने गतिमन्यथा ॥ ४ ॥

सर्वावस्थोचिता-ऽशेषशेषतैकरतिस्तव।

भवेयं पुण्डरीकाक्ष! त्वमेवैवं कुरुष्व माम् ॥ ५ ॥

एवम्भूत-तत्त्वयाथात्म्यावबोध-तदिच्छारहितस्याऽपि'

एतदुच्चारण-मात्रावलम्बनेन उच्यमानार्थ-परमार्थ-निष्ठम्'

मे मनः त्वमेव अद्यैव कारय ॥ ६ ॥

अपार-करुणाम्बुद्धे! अनालोचित-विशेषाशेष-लोक-शरण्य!

प्रणतार्तिहर! आश्रित-वात्सल्यैक-महोदद्धे!

अनवरत-विदित-निखिल-भूत-जात-याथात्म्य! सत्यकाम!

सत्यसङ्कल्प! आपत्सख! काकुत्स्थ! श्रीमन्! नारायण! पुरुषोत्तम!

श्रीरङ्गनाथ! मम नाथ! नमोऽस्तु ते ॥

॥ इति श्रीमद्रामानुजविरचितं श्री-रङ्गनाथ-गद्यं सम्पूर्णम् ॥

॥ रङ्गनाथस्तोत्रम् ॥

सप्तप्राकारमध्ये सरसिजमुकुलोद्घासमाने विमाने
 कावेरीमध्यदेशे फणिपतिशयने शेषपर्यङ्गभागो।
 निद्रामुद्राभिरामं कटिनिकटशिरः पार्श्वविन्यस्तहस्तं
 पद्माधात्रीकराभ्यां परिचितचरणं रङ्गराजं भजेऽहम् ॥

आनन्दरूपे निजबोधरूपे
 ब्रह्मस्वरूपे श्रुतिमूर्तिरूपे।
 शशाङ्करूपे रमणीयरूपे
 श्रीरङ्गरूपे रमतां मनो मे ॥ १ ॥

कावेरितीरे करुणाविलोले
 मन्दारमूले धृतचारुचेले।
 देत्यान्तकालेऽखिललोकलीले
 श्रीरङ्गलीले रमतां मनो मे ॥ २ ॥

लक्ष्मीनिवासे जगतां निवासे
 हृत्पद्मवासे रविविम्बवासे।
 कृपानिवासे गुणबृन्दवासे
 श्रीरङ्गवासे रमतां मनो मे ॥ ३ ॥

ब्रह्मादिवन्द्ये जगदेकवन्द्ये
 मुकुन्दवन्द्ये सुरनाथवन्द्ये।
 व्यासादिवन्द्ये सनकादिवन्द्ये
 श्रीरङ्गवन्द्ये रमतां मनो मे ॥ ४ ॥

ब्रह्माधिराजे गरुडाधिराजे
 वैकुण्ठराजे सुरराजराजे।
 त्रैलोक्यराजेऽखिललोकराजे
 श्रीरङ्गराजे रमतां मनो मे ॥५॥

अमोघमुद्रे परिपूर्णनिद्रे
 श्रीयोगनिद्रे सप्तमुद्रनिद्रे।
 श्रितैकभद्रे जगदेकनिद्रे
 श्रीरङ्गभद्रे रमतां मनो मे ॥६॥

स चित्रशायी भुजगेन्द्रशायी
 नन्दाङ्कशायी कमलाङ्कशायी।
 क्षीराविश्वशायी वटपत्रशायी
 श्रीरङ्गशायी रमतां मनो मे ॥७॥

इदं हि रङ्गं त्यजतामिहाङ्गं
 पुनर्नचाङ्गं यदि चाङ्गमेति।
 पाणौ रथाङ्गं चरणेम्बु गाङ्गं
 याने विहङ्गं शयने भुजङ्गम् ॥८॥

रङ्गनाथाष्टकं पुण्यं
 प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
 सर्वान् कामानवाप्नोति
 रङ्गिसायुज्यमाप्नुयात् ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्गरभगवतः कृतौ
 श्री-रङ्गनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ दामोदराष्टकम् ॥

नमामीश्वरं सच्चिदानन्दरूपं
 लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम्।
 यशोदाभियोल्लखलाद्-धावमानं
 परामृष्टमत्यन्ततो द्रुत्य गोप्या ॥ १ ॥

रुदन्तं मुहुर्नैत्रयुगमं मृजन्तं
 कराम्भोजयुग्मेन सातङ्कनेत्रम्।
 मुहुः श्वासकम्पत्रिरेखाङ्ककण्ठ-
 स्थितग्रैव-दामोदरं भक्तिबद्धम् ॥ २ ॥

इतीटक् स्वलीलाभिरानन्दकुण्डे
 स्वघोषं निमज्जन्तमारव्यापयन्तम्।
 तदीयेषिताङ्गेषु भक्तैर्जितत्वं
 पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे ॥ ३ ॥

वरं देव मोक्षं न मोक्षावधिं वा
 न चान्यं वृणेऽहं वरेषादपीह।
 इदं ते वपुर्नाथ गोपालबालं
 सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥ ४ ॥

इदं ते मुखाम्भोजमत्यन्तनीलैर्-
 वृतं कुन्तलैः स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या।
 मुहुश्वुम्बितं विम्बरक्ताधरं मे
 मनस्याविरास्ताम् अलं लक्षलाभैः ॥ ५ ॥

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो
 प्रसीद् प्रभो दुःखजालाभ्यमग्नम्।
 कृपादृष्टिवृद्धातिदीनं बतानु
 गृहाणेश माम् अज्ञमेध्यक्षिदश्यः ॥ ६ ॥

कुवेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्
 त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च।
 तथा प्रेमभक्तिं स्वकं मे प्रयच्छ
 न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥ ७ ॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्तिधाम्ने
 त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
 नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै
 नमोऽनन्तलीलाय देवाय तुभ्यम् ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमद्भापुराणे श्री-दामोदराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नम् ॥

कल्याणरूपाय कलौ जनानां कल्याणदात्रे करुणासुधाव्ये।
 कम्ब्बादिदिव्यायुधसत्कराय वातालयाधीश नमो नमस्ते ॥ १ ॥

नारायणेत्यादि जपद्विरुच्चैः भक्तैः सदापूर्णमहालयाय।
 स्वतीर्थगाङ्गोपम-वारिमग्न निवर्तिताशेषरुजे नमस्ते ॥ २ ॥

ब्राह्मे मुहूर्ते परिधः स्वभक्तैः सन्दृष्टसर्वोत्तमविश्वरूप।
 स्वतैलसंसेवकरोगहर्त्रे वातालयाधीश नमो नमस्ते ॥ ३ ॥

बालान् स्वकीयान् तवसन्निधाने दिव्यान्नदानात्परिपालयद्विः।
 सदा पठद्विश्व पुराणरत्नं संसेवितायास्तु नमो हरे ते ॥ ४ ॥

नित्यान्नदात्रे च महीसुरेभ्यः नित्यं दिविस्थैर्निशि पूजिताय।
मात्रा च पित्रा च तथोद्धवेन सम्पूजितायास्तु नमो नमस्ते ॥५॥

अनन्तरामाख्य-मखिप्रणीतं स्तोत्रं पठेद्यस्तु नरस्त्रिकालम्।
वातालयेशस्य कृपाफलेन लभेत सर्वाणि च मङ्गलानि॥
गुरुवातपुरीशपञ्चकाख्यं स्तुतिरत्नं पठतां सुमङ्गलं स्यात्।
हृदि चापि विशेष्ठरिः स्वयं तु रतिनाथायुततुल्यदेहकान्तिः ॥

॥ इति श्री-अनन्तराम-दीक्षितेन विरचितं
श्री-गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम् ॥



कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥
अस्ति स्वस्तरुणीकराग्रविगलत् कल्पप्रसूनाप्नुतं
वस्तुप्रस्तुतवेणुनादलहरी निर्वाणनिर्वाकुलम्।
स्वस्तस्वस्तनिबद्धनीविविलसत् गोपीसहस्रावृतं
हस्तन्यस्तनतापवर्गमखिलोदारं किशोराकृति ॥

॥ गुरुवातपुरीशपञ्चरत्नम् ॥

कुन्दसुमवृन्दसममन्दहसितास्यं
नन्दकुलनन्दभरतुन्दलनकन्दम्।
पूतनिजगीतलवधूतदुरितं तं
वातपुरनाथमिममातनु हृदजे ॥ १ ॥

नीलतरजालधरभालहरिरम्यं
 लोलतरशीलयुतबालजनलीलम्।
 जालनतिशीलमपि पालयितुकामं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदज्ञे ॥ २ ॥
 कंसरणहिंसमिह संसरणजात-
 ह्लान्तिभरशान्तिकरकान्तिझरवीतम्।
 वातमुखधातुजनिपातभयधातं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदज्ञे ॥ ३ ॥
 जातुधुरिपातुकमिहातुरजनं द्राक्
 शोकभरमूकमपि तोकमिव पान्तम्।
 भृङ्गरुचिसङ्गरकृदङ्गलतिकं तं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदज्ञे ॥ ४ ॥
 पापभवतापभरकोपशमनार्था-
 श्वासकरभासमृदुहासरुचिरास्यम्।
 रोगचयभोगभयवेगहरमेकं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदज्ञे ॥ ५ ॥
 घोषकुलदोषहरवेषमुपयान्तं
 पूषशतदूषकविभूषणगणाढ्यम्।
 भुक्तिमपिमुक्तिमतिभक्तिषु ददानं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदज्ञे ॥ ६ ॥
 पापकदुरापमतितापहरशोभ-
 स्वापघनमामतदुमापतिसमेतम्।
 दूनतरदीनसुखदानकृतदीक्षं
 वातपुरनाथमिममातनु हृदज्ञे ॥ ७ ॥

पादपतदादरणमोदपरिपूर्ण
जीवमुखदेवजनसेवनफलाञ्चिम्।
रूक्षभवमोक्षकृतदीक्षनिजवीक्षं
वातपुरनाथमिममातनु हृदजे॥८॥

भृत्यगणपत्युदितनुत्युचितमोदं
स्पष्टमिदमष्टकमदुष्टकरणार्हम्।
आदधतमादरदमादिलयशून्यं
वातपुरनाथमिममातनु हृदजे॥

॥ इति महामहोपाध्याय-ब्रह्मश्री-पैङ्गानाडु-गणपतीशास्त्रिभिः
विरचितं श्रीवातपुरनाथाष्टकम् सम्पूर्णम्॥

॥ नारायण केशादिपादवर्णनम्॥

अग्रे पश्यामि तेजो निबिडतरकलायावलीलोभनीयं
पीयूषाष्टावितोऽहं तदनु तदुदरे दिव्यकैशोरवेषम्।
तारुण्यारम्भरम्यं परमसुखरसास्वादरोमाञ्चिताङ्गै-
रावीतं नारदार्थार्विलसदुपनिषत्सुन्दरीमण्डलैश्व॥ १॥

नीलाभं कुञ्चिताग्रं घनममलतरं संयतं चारुभङ्गा
रत्नोत्तंसाभिरामं वलयितमुदयच्चन्द्रकैः पिञ्छजालैः।
मन्दारस्त्रञ्जिवीतं तव पृथुकबरीभारमालोकयेऽहं
स्त्रिघश्चेतोर्धर्वपुण्ड्रामपि च सुललितां फालबालेन्दुवीथीम्॥ २॥

हृदयं पूर्णानुकम्पार्णवमृदुलहरीचञ्चलभ्रूविलासै-
 रानीलस्त्रिघपक्षमावलिपरिलसितं नेत्रयुग्मं विभो ते।
 सान्द्रच्छायं विशालारुणकमलदलाकारमामुग्धतारं
 कारुण्यालोकलीलाशिशिरितभुवनं क्षिप्यतां मत्यनाथे ॥ ३ ॥

उत्तुज्ञोल्लासिनासं हरिमणिमुकुरप्रोल्लसद्गडपाली-
 व्यालोलत्कर्णपाशाच्चितमकरमणीकुण्डलद्वन्द्वदीप्रम्।
 उन्मीलदन्तपाङ्गस्फुरदरुणतरच्छायबिम्बाधरान्तः
 प्रीतिप्रस्यन्दिमन्दस्मितमधुरतरं वक्रमुद्भासतां मे ॥ ४ ॥

बाहुद्वन्द्वेन रत्नोज्ज्वलवलयभृता शोणपाणिप्रवाले-
 नोपात्तां वेणुनालीं प्रसृतनखमयूखाङ्गुलीसङ्गशाराम्।
 कृत्वा वक्रारविन्दे सुमधुरविकसद्रागमुद्भाव्यमानैः
 शब्दब्रह्मामृतैस्त्वं शिशिरितभुवनैस्सञ्च मे कर्णवीथीम् ॥ ५ ॥

उत्सर्पत्कौस्तुभश्रीततिभिररुणितं कोमलं कण्ठदेशं
 वक्षः श्रीवत्सरम्यं तरलतरसमुद्दीप्रहारप्रतानम्।
 नानावर्णप्रसूनावलिकिसलयिनीं वन्यमालां विलोल-
 लोलम्बां लम्बमानामुरसि तव तथा भावये रत्नमालाम् ॥ ६ ॥

अङ्गे पञ्चाङ्गरागैरतिशयविकसत्सौरभाकृष्टलोकं
 लीनानेकत्रिलोकीविततिमपि कृशां बिभ्रतं मध्यवलीम्।
 शक्राश्मन्यस्ततसोज्वलकनकनिभं पीतचेलं दधानं
 ध्यायामो दीप्तरशिमस्फुटमणिरशनाकिङ्गिणीमणिडतं त्वाम् ॥ ७ ॥

ऊरू चारू तवोरू घनमसृणरुचौ चित्तचोरौ रमायाः
 विश्वक्षोभं विशङ्ग्य ध्रुवमनिशमुभौ पीतचेलावृताङ्गौ।
 आनन्दाणां पुरस्तान्ध्रसनधृतसमस्तार्थपालीसमुद्र-
 च्छायां जानुद्वयं च क्रमपृथुलमनोज्ञे च जड्जे निषेवे॥८॥

मञ्जीरं मञ्जुनादैरिव पदभजनं श्रेय इत्यालपन्तं
 पादाय्रं भ्रान्तिमज्जत्प्रणतजनमनोमन्दरोद्धारकूर्मम्।
 उत्तुञ्जाताम्रराजन्नखरहिमकरज्योत्स्नया चाऽश्रितानां
 सन्तापध्वान्तहन्त्रीं ततिमनुकलये मञ्जलामञ्जुलीनाम्॥९॥

योगीन्द्राणां त्वदञ्जेष्वधिकसुमधुरं मुक्तिभाजां निवासो
 भक्तानां कामवर्षद्युतरुकिसलयं नाथ ते पादमूलम्।
 नित्यं चित्तस्थितं मे पवनपुरपते कृष्ण कारुण्यसिन्धो
 हृत्वा निःशेषतापान्म्रादिशतु परमानन्दसन्दोहलक्ष्मीम्॥१०॥

अज्ञात्वा ते महत्त्वं यदिह निगदितं विश्वनाथ क्षमेथाः
 स्तोत्रं चैतत्सहस्रोत्तरमधिकतरं त्वत्प्रसादाय भूयात्।
 द्वेष्ठा नारायणीयं श्रुतिषु च जनुषा स्तुत्यतावर्णनेन
 स्फीतं लीलावतारैरिदमिह कुरुतामायुरारोग्यसौख्यम्॥११॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये शततम्-दशकं सम्पूर्णम्॥

॥ विष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्॥

चिदंशं विभुं निर्मलं निर्विकल्पं
 निरीहं निराकारमोङ्कारगम्यम्।
 गुणातीतमव्यक्तमेकं तुरीयं
 परं ब्रह्म यं वेद तस्मै नमस्ते॥१॥

विशुद्धं शिवं शान्तमाद्यन्तशून्यं
 जगजीवनं ज्योतिरानन्दरूपम्।
 अदिग्देशकालव्यवच्छेदनीयं
 त्रयी वक्ति यं वेद तस्मै नमस्ते ॥२॥
 महायोगपीठे परिभ्राजमाने
 धरण्यादितत्त्वात्मके शक्तियुक्ते।
 गुणाहस्करे वहिबिम्बार्घमध्ये
 समासीनमोङ्गर्णिकेऽष्टाक्षराङ्गे ॥३॥
 समानोदितानेकसूर्यन्दुकोटि-
 प्रभापूरतुल्यद्युतिं दुर्निरीक्षम्।
 न शीतं न चोष्णं सुवर्णावदात-
 प्रसन्नं सदानन्दसंवित्स्वरूपम् ॥४॥
 सुनासापुटं सुन्दरभूललाटं
 किरीटोचिताकुञ्चितस्त्रिंश्चकेशम्।
 स्फुरत् पुण्डरीकाभिरामायताक्षं
 समुत्कुष्ठरत्प्रसूनावतंसम् ॥५॥
 लसत् कुण्डलमृष्टगण्डस्थलान्तं
 जपारागचोराधरं चारुहासम्।
 अलिव्याकुलामोलिमन्दारमालं
 महोरस्फुरत्कौस्तुभोदारहारम् ॥६॥
 सुरत्नाङ्गदैरन्वितं बाहुदण्डैः
 चतुर्भिर्श्वलत्कङ्गणालङ्कृतायैः।
 उदारोदरालङ्कृतं पीतवस्त्रं
 पदद्वन्द्वनिर्धूतपद्माभिरामम् ॥७॥

स्वभक्तेषु सन्दर्शिताकारमेवं
 सदा भावयन् सन्निरुद्धेन्द्रियाश्वः।
 दुरापं नरो याति संसारपारं
 परस्मै परेभ्योऽपि तस्मै नमस्ते॥८॥
 श्रिया शातकुम्भद्युतिस्त्रिंघकान्त्या
 धरण्या च दूर्वादलश्यामलाङ्घा।
 कलत्रद्वयेनामुना तोषिताय
 त्रिलोकीगृहस्थाय विष्णो नमस्ते॥९॥
 शरीरं कलत्रं सुतं बन्धुवर्गं
 वयस्यं धनं सद्भ मृत्यं भुवं च।
 समस्तं परित्यज्य हा कष्टमेको
 गमिष्यामि दुःखेन दूरं किलाहम्॥१०॥
 जरेयं पिशाचीव हा जीवतो मे
 वसामक्ति रक्तं च मांसं बलं च।
 अहो देव सीदामि दीनानुकम्पिन्
 किमद्यापि हन्त त्वयोदासितव्यम्॥११॥
 कफव्याहतोष्णोल्बणश्वासवेग-
 व्यथाविस्फुरत्सर्वमर्मास्थिबन्धाम्।
 विचिन्त्याहमन्त्यामसङ्घामवस्थां
 बिभेमि प्रभो किं करोमि प्रसीद॥१२॥
 लपन्नच्युतानन्त गोविन्द विष्णो
 मुरारे हरे नाथ नारायणेति।
 यथाऽनुस्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तं
 तथा मे दयाशील देव प्रसीद॥१३॥

भुजङ्गप्रयातं पठेद्यस्तु भक्त्या
 समाधाय चित्ते भवन्तं मुरारे।
 स मोहं विहायाऽशु युष्मत्प्रसादात्
 समाश्रित्य योगं ब्रजत्यच्युतं त्वाम्॥१४॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-विष्णुभुजङ्गप्रयातस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥विष्णु-विजयस्तोत्रम्॥

देवा ऊचुः

नताः स्म विष्णुं जगदादिभूतं
 सुरासुरेन्द्रं जगतां प्रपालकम्।
 यन्नाभिपद्मात् किल पद्मयोनिर्-
 बभूव तं वै शरणं गताः स्मः॥८९॥

नमो नमो मत्स्यवपुर्द्वराय
 नमोऽस्तु ते कच्छपरूपधारिणे।
 नमः प्रकुर्मश्च नृसिंहरूपिणे
 तथा पुनर्वामनरूपिणे नमः॥९०॥

नमोऽस्तु ते क्षत्रविनाशनाय
 रामाय रामाय दशास्यनाशिने।
 प्रलम्बहन्त्रे शितिवाससे नमो
 नमोऽस्तु बुद्धाय च दैत्यमोहिने॥९१॥

स्लेच्छान्तकायापि च कल्किनाम्ने
 नमः पुनः क्रोडवपुर्धराय।
 जगद्वितीर्थं च युगे युगे भवान्
 बिभर्ति रूपं त्वसुराभवाय ॥९२॥

निषूदितोऽयं ह्यधुना किल त्वया
 दैत्यो हिरण्याक्ष इति प्रगल्भः।
 यश्वेन्द्रमुख्यान् किललोकपालान्
 संहेलया चैव तिरश्वकार ॥९३॥

स वै त्वया देवहितार्थमेव
 निपातितो देववर प्रसीद।
 त्वमस्य विश्वस्य विसर्गकर्ता
 ब्राह्मणे रूपेण च देवदेव ॥९४॥

पाता त्वमेवास्य युगेयुगे च
 रूपाणि धत्से सुमनोहराणि।
 त्वमेव कालाग्निहरश्च भूत्वा
 विश्वं क्षयं नेष्यसि चान्तकाले ॥९५॥

अतो भवानेव च विश्वकारणं
 न ते परं जीवमजीवमीश।
 यत् किं च भूतं च भविष्यरूपं
 प्रवर्त्तमानं च तथैव रूपम् ॥९६॥

सर्वं त्वमेवासि चराचराख्यं
 न भाति विश्वं त्वद्वते च किञ्चित्।
 अस्तीति नास्तीति च भेदनिष्ठं
 त्वय्येव भातं सदसत्स्वरूपम् ॥९७॥

ततो भवन्तं कतमोऽपि देव
 न ज्ञातुर्महत्यविपक्षबुद्धिः ।
 ऋते भवत्पादपरायणं जनं
 तेनागता स्मः शरणं शरण्यम् ॥९८॥

व्यास उवाच

ततो विष्णुः प्रसन्नात्मा उवाच त्रिदिवौकसः ।
 तुष्टोऽस्मि देवा भद्रं वो युष्मत्स्तोत्रेण साम्प्रतम् ॥९९॥

य इदं प्रपठेद् भक्त्या विजयस्तोत्रमादरात् ।
 न तस्य दुर्लभं देवास्त्रिषु लोकेषु किञ्चन ॥ १०० ॥

गवां शतसहस्रस्य सम्यग् दत्तस्य यत्फलम् ।
 तत्फलं समवाप्नोति कीर्तनाच्छवणान्नरः ॥ १०१ ॥

सर्वकामप्रदं नित्यं देवदेवस्य कीर्तनम् ।
 अतः परं महाज्ञानं न भूतं न भविष्यति ॥ १०२ ॥

॥ इति श्रीपाद्यपुराणे प्रथमे सृष्टिखण्डे देवासुरसङ्गामसमाप्तौ
 विजयस्तोत्रं नाम पञ्चसप्ततिमोऽध्यायः ॥

॥ सङ्कषिणाशन-स्तोत्रं ॥

[देवा ऊचुः]

नमो मत्स्यकूर्मादिनानास्वरूपैः
 सदाभक्तकार्योद्यतायार्तिहन्त्रे ।
 विघात्रादिसर्गस्थितिध्वंसकर्त्रे
 गदाशङ्कपद्मारिहस्ताय तेऽस्तु ॥ १ ॥

रमा वल्लभायासुराणां निहन्ते
 भुजङ्गरियानाय पीताम्बराय।
 मखादिक्रियापाककर्त्रं विकर्त्रं
 शरण्याय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः ॥ २ ॥

नमो दैत्यसन्तापितामर्त्यदुःखा-
 चलध्वंसदम्भोलये विष्णवे ते।
 भुजङ्गेशतल्पेशयायार्कचन्द्र-
 द्विनेत्राय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः ॥ ३ ॥

नारद उवाच

सङ्कष्टनाशनं नाम स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः।
 स कदाचिन्न सङ्कषेपैः पीड्यते कृपया हरेः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां द्वितीये
 वैष्णवरखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये जलन्धरसभायां नारदागमनं नाम
 षोडशोऽध्याये सङ्कष्टनाशन-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ ब्रह्मपारस्तोत्रम् ॥

प्रचेतस ऊचुः

ब्रह्मपारं मुने श्रोतुमिच्छामः परमं स्तवम्।
 जपता कण्ठुना देवो येनाऽराध्यत केशवः ॥ ५४ ॥

सोम उवाच

पारं परं विष्णुरपारपारः
परः परेभ्यः परमार्थरूपी।
स ब्रह्मपारः परपारभूतः
परः पराणामपि पारपारः ॥ ५५ ॥

स कारणं कारणतस्ततोऽपि
तस्यापि हेतुः परहेतुहेतुः।
कार्येषु चैव सह कर्मकर्तृ-
रूपैरशेषैरवतीह सर्वम् ॥ ५६ ॥

ब्रह्म प्रभुर्ब्रह्म स सर्वभूतो
ब्रह्म प्रजानां पतिरच्युतोऽसौ।
ब्रह्माव्ययं नित्यमजं स विष्णुः
अपक्षयाद्यैरखिलैरसङ्गिः ॥ ५७ ॥

ब्रह्माक्षरमजं नित्यं यथा॒ऽसौ पुरुषोत्तमः।
तथा रागादयो दोषाः प्रयान्तु प्रशमं मम ॥ ५८ ॥

एतद्ब्रह्मपराव्यं वै संस्तवं परमं जपन्।
अवाप परमां सिद्धिं समाराध्य स केशवम् ॥ ५९ ॥

इमं स्तवं यः पठति शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः।
स कामदोषैरखिलैर्मुक्तः प्राप्नोति वाञ्छितम्॥

॥ इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमेऽशे पञ्चदशोऽध्याये ब्रह्मपारस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥

॥ लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रम् ॥

श्रीमत्-पयोनिधि-निकेतन चक्रपाणे
 भोगीन्द्र-भोग-मणि-राजित-पुण्य-मूर्तैः।
 योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि-पोत
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मरुदर्क-किरीट-कोटि-
 सङ्घटिताङ्गि-कमलामल-कान्ति-कान्त ।
 लक्ष्मी-लसत्-कुच-सरोरुह-राजहंस
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

संसार-दाव-दहनाकर-भी-करोरु-
 ज्वालावलीभिरतिदण्ड-तनूरुहस्य ।
 त्वत्-पाद-पद्म-सरसी-शरणागतस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

संसार-जाल-पतितस्य जगन्निवास
 सर्वेन्द्रियार्थ-बडिशाग्र-झषोपमस्य ।
 प्रोत्कम्पित-प्रचुर-तालुक-मस्तकस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

संसार-कूपमतिघोरमगाध-मूलं
 सम्प्राप्य दुःख-शत-सर्प-समाकुलस्य।
 दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

संसार-भीकर-करीन्द्र-कराभिघात-
 निष्ठीज्यमान-वपुषः सकलार्ति-नाश।
 प्राण-प्रयाण-भव-भीति-समाकुलस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥६॥

संसार-सर्प-विष-दिग्ध-महोग्र-तीव्र-
 दंष्ट्राग्र-कोटि-परिदृष्ट-विनष्ट-मूर्ते: ।
 नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौरै
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥७॥

संसार-वृक्षमघ-बीजमनन्त-कर्म-
 शाखा-युतं करण-पत्रमनङ्ग-पुष्पम्।
 आरुह्य दुःख-फलितं पततं दयालो
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥८॥

संसार-सागर-विशाल-कराल-काल-
 नक्र-ग्रह-ग्रसित-निग्रह-विग्रहस्य ।
 व्यग्रस्य राग-निचयोर्मि-निपीडितस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥९॥

संसार-सागर-निमज्जनमुह्यमानं
 दीनं विलोकय विभो करुणा-निधे माम्।
 प्रह्लाद-खेद-परिहार-परावतार
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१०॥

संसार-घोर-गहने चरतो मुरारे
 मारोग्र-भीकर-मृग-प्रचुरार्दितस्य ।
 आर्तस्य मत्सर-निदाघ-सुदुःखितस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥११॥

बद्ध्वा गले यम-भटा बहु तर्जयन्तः
 कर्षन्ति यत्र भव-पाश-शतैर्युतं माम्।
 एकाकिनं परवशं चकितं दयालो
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १२ ॥
 लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
 यज्ञोश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप।
 ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १३ ॥
 एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्खम्
 अन्येन सिन्धु-तनयाम् अवलम्ब्य तिष्ठन्।
 वामेतरेण वरदाभय-पद्म-चिह्नं
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १४ ॥
 अन्धस्य मे हृत-विवेक-महाधनस्य
 चोरैर्-महाबलिभिरन्द्रिय-नामधेयैः ।
 मोहान्धकार-कुहरे विनिपातितस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १५ ॥
 प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-
 व्यासादि-भागवत-पुञ्जव-हन्त्रिवास ।
 भक्तानुरक्त-परिपालन-पारिजात
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥ १६ ॥
 लक्ष्मी-नृसिंह-चरणाङ्ग-मधुव्रतेन
 स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्खरेण।
 ये तत् पठन्ति मनुजा हरि-भक्ति-युक्ताः
 ते यान्ति तत्-पद-सरोजमखण्ड-रूपम्॥ १७ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम् ॥

त्वत्-प्रभु-जीव-प्रियमिच्छसि चेन्नरहरि-पूजां कुरु सततं
 प्रतिबिम्बालङ्कृति-धृति-कुशलो बिम्बालङ्कृतिमातनुते।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम् ॥ १ ॥

शुक्तौ रजत-प्रतिभा जाता कटकाद्यर्थ-समर्था चेद्
 दुःखमयी ते संसृतिरेषा निर्वृति-दाने निपुणा स्यात्।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम् ॥ २ ॥

आकृति-साम्याच्छाल्मलि-कुसुमे स्थल-नलिनत्व-भ्रममकरोः
 गन्ध-रसाविह किमु विद्येते विफलं भ्राम्यसि भृशा-विरसेऽस्मिन्।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम् ॥ ३ ॥

स्ख-चन्दन-वनितादीन् विषयान् सुखदान् मत्वा तत्र विहरसे
 गन्ध-फली-सदृशा ननु तेऽमी भोगानन्तर-दुःख-कृतः स्युः।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम् ॥ ४ ॥

तव हितमेकं वचनं वक्ष्ये शृणु सुख-कामो यदि सततं
 स्वप्ने दृष्टं सकलं हि मृषा जाग्रति च स्मर तद्वदिति।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥५॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य

श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ धन्वन्तरि-स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) ॥

क्षीरोदमथनोद्भूतं दिव्य-गन्धानुलेपनम्।
 सुधा-कलश-हस्तं तं वन्दे धन्वन्तरि हरिम्॥

देव-दानवा ऊचुः

नमो लोक-त्र्याघ्यक्ष तेजसा जित-भास्कर।
 नमो विष्णो नमो जिष्णो नमस्ते कैटभार्दन॥१॥

नमः सर्ग-क्रिया-कर्त्रे जगत् पालयते नमः।
 नमः स्मृतार्ति-नाशाय नमः पुष्कर मालिने॥२॥

दिव्यौषधि-स्वरूपाय सुधा-कलश-पाणये।
 शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणे वनमालिने॥३॥

देवेन्द्रादि-सुरेञ्चाय नमः क्षीराब्धि-जन्मने।
 निर्गुणाय विशेषाय हरये ब्रह्म-रूपिणे॥४॥

जगत् प्रतिष्ठितं यत्र जगतां यो न दृश्यते।
 नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय तस्मै देवाय शङ्खिने॥५॥

यं न पश्यन्ति पश्यन्तं जगदप्यखिलं नराः।
अपश्यद्धिर्जगद् यश्च दृश्यते हृषि संस्थितः ॥ ६ ॥

यस्मिन् वनानि पर्वता नद्यश्वैवाखिलं जगत्।
तस्मै नमोऽस्तु जगताम् आधाराय नमो नमः ॥ ७ ॥

आद्य-प्रजापतिर्यश्च यः पितृणां परः पतिः।
पतिः सुराणां यस्तस्मै नमः कृष्णाय वेघसे ॥ ८ ॥

यः प्रवृत्तौ निवृत्तौ च इज्यते कर्मभिः स्वकैः।
स्वर्गापवर्ग-फल-दो नमस्तस्मै गदा-भृते ॥ ९ ॥

यश्चिन्त्यमानो मनसा सद्यः पापं व्यपोहति।
नमस्तस्मै विशुद्धाय पराय हरि-मेघसे ॥ १० ॥

यं बुद्धा सर्वभूतानि देव-देवेशमव्ययम्।
न पुनर्जन्म-मरणे प्राप्नुवन्ति नमामि तम् ॥ ११ ॥

यो यज्ञे यज्ञ-परमैरिज्यते यज्ञ-संज्ञितः।
तं यज्ञ-पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम् ॥ १२ ॥

गीयते सर्व-वेदेषु वेद-विद्धिर्विदां गतिः।
यस्तस्मै वेद-वेद्याय विष्णवे जिष्णवे नमः ॥ १३ ॥

यो विश्वं समुत्पन्नं यस्मिंश्च लयमेष्यति।
विश्वोद्भव-प्रतिष्ठाय नमस्तस्मै महात्मने ॥ १४ ॥

ब्रह्मादि-स्तम्ब-पर्यन्तं येन विश्वमिदं ततम्।
माया जालं समुत्तर्त्तं तमुपेन्द्रं नमाम्यहम् ॥ १५ ॥

विषाद-तोष-रोषाद्यैर्यौऽजस्रं सुख-दुःखजम्।
नृत्यत्यरिल-भूत-स्थस्तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥ १६ ॥

यमाराध्य विशुद्धेन कर्मणा मनसा गिरा।
तरन्त्यविद्याम् अखिलाम् आदि-वैद्यं नमाम्यहम्॥ १७ ॥

यः स्थितो विश्व-रूपेण बिभर्ति ह्यरिलौषधीः।
तं रत्न-कलशोद्भासि-हस्तं धन्वन्तरि नुमः॥ १८ ॥

विश्वं विश्व-पतिं विष्णुं तं नमामि प्रजापतिम्।
मूर्त्या चासुरमच्या तु तद्विधान् विनिहन्ति यः॥ १९ ॥

रात्रि-रूपं सूर्य-रूपं भजेत्तं सान्ध्य-रूपिणम्।
हन्ति विद्या-प्रदानेन यो वा अज्ञान-जं तमः॥ २० ॥

यस्तु भेषज-रूपेण जगदाप्याययेत् सदा।
यस्याक्षिणी चन्द्र-सूर्यौ सर्व-लोक-शुभङ्करः।
पश्यतः कर्म सततं तं च धन्वन्तरि नुमः॥ २१ ॥

यस्मिन् सर्वेश्वरे वश्यं जगत् स्थावर-जञ्जमम्।
आभाति तमजं विष्णुं नमामि प्रभुमव्ययम्॥ २२ ॥

॥ इति मत्स्य-पुराणान्तर्गतं धन्वन्तरि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ शिवमानसपूजा ॥

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
 नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
 जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
 दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्णताम्॥ १ ॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
 भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
 शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
 ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
 वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
 साषाङ्गं प्रणतिः स्तुर्तिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
 सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
 पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
 सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
 यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाऽराधनम्॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्यायजं कर्मजं वा
 श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
 विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
 जय जय करुणाव्ये श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-शिवमानसपूजा सम्पूर्णा ॥

॥ वैद्यनाथाष्टकम् ॥

श्रीराम-सौमित्रि-जटायु-वेद-षडाननादित्य-कुजार्चिताय।
 श्रीनीलकण्ठाय दयामयाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ १ ॥

गङ्गाप्रवाहेन्दुजटाधराय त्रिलोचनाय स्मरकालहन्त्रे।
 समस्तदेवरभिपूजिताय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ २ ॥

भक्तः प्रियाय त्रिपुरान्तकाय पिनाकिने दुष्टहराय नित्यम्।
 प्रत्यक्षलीलाय मनुष्यलोके श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

प्रभूतवातादि-समस्तरोगप्रनाशकर्त्रे मुनिवन्दिताय।
 प्रभाकरेन्द्रभिविलोचनाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

वाकश्रोत्रनेत्राङ्गि-विहीनजन्तोर्वाकश्रोत्रनेत्राङ्गि-सुखप्रदाय।
 कुषादिसर्वोन्नतरोगहन्त्रे श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

वेदान्तवेद्याय जगन्मयाय योगीश्वरध्येयपदाम्बुजाय।
 त्रिमूर्तिरूपाय सहस्रनामे श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ६ ॥

स्वतीर्थमृद्दस्मभृताङ्गभाजां पिशाचदुःखार्तिभयापहाय।
 आत्मस्वरूपाय शरीरभाजां श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ७ ॥

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय स्वगन्धभस्माद्यभिशोभिताय।
 सुपुत्रदारादिसुभाग्यदाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ८ ॥

बालाम्बिकेश वैद्येशा भवरोगहरेति च।
जपेन्नामत्रयं नित्यं महारोगनिवारणम्॥

महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव।
महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव॥

॥ लिङ्गाष्टकम् ॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ १ ॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ २ ॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ३ ॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ४ ॥

कुङ्कमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ५ ॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ६ ॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ७ ॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ ८ ॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ शिवमहिम्नः-स्तोत्रम् ॥

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
 स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तद्वसन्नास्त्वयि गिरः ।
 अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
 ममाष्येष स्तोत्रे हरं निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाञ्छनसयोः
 अतद्-व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
 स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
 पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतः
 तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
 मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
 पुनामीत्यर्थाऽस्मिन् पुरमथनं बुद्धिव्यवसिता ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
 त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
 अभव्यानामस्मिन् वरदं रमणीयामरमणीं
 विहन्तुं व्याक्रोशीं विद्धत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
 किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
 अतकर्यैश्वर्यै त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
 कुतकोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगताम्
 अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
 अनीशो वा कुर्याद्गुवनजनने कः परिकरो
 यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशोरत इमे ॥ ६ ॥
 त्रयी साङ्घं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
 प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
 रुचीनां वैचित्र्याद्गुकुटिल नानापथजुषां
 नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥
 महोक्षः खद्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः
 कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
 सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भूप्रणिहितां
 न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥
 ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिं
 परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
 समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
 स्तुवन् जिह्वेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥
 तवैश्वर्यं यत्नाद्-यदुपरि विरिञ्चिरिरिधः
 परिच्छेतुं यातावनिलमनलस्कन्धवपुषः।
 ततो भक्तिश्रद्धा-भरगुरु-गृणञ्चां गिरिशा यत्
 स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥
 अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
 दशास्यो यद्वाहूनभृत-रणकण्डू-परवशान्।
 शिरःपद्मश्रेणी-रचितचरणाभ्मोरुहबलैः
 स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवा-समधिगतसारं भुजवनं
 बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
 अलभ्यापातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
 प्रतिष्ठा त्वथ्यासीद्-ध्रुवमुपाचितो मुहूर्ति खलः ॥ १२ ॥
 यद्द्विं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
 अधश्वके बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
 न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोः
 न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वथ्यवनतिः ॥ १३ ॥
 अकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षयचक्षित-देवासुरकृपा
 विधेयस्याऽसीद्-यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
 स कल्माशः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
 विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवन-भयभङ्ग-व्यसनिनः ॥ १४ ॥
 असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
 निर्वर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
 स पश्यन्नीशा त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
 स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिष्ठु पथ्यः परिभवः ॥ १५ ॥
 मही पादाघाताद्-ब्रजति सहसा संशयपदं
 पदं विष्णोञ्चाम्यद्गुज-परिघ-रुण-ग्रहगणम्।
 मुहुर्द्यौदौस्थ्यं यात्यनिभृत-जटा-ताङ्गित-तटा
 जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥
 वियद्रव्यापी तारागण-गुणित-फेनोद्गम-रुचिः
 प्रवाहो वारां यः पृष्ठतलघुदृष्टः शिरसि ते।
 जगद्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमिति
 अनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
 रथाङ्गे चन्द्राकौ रथ-चरण-पाणिः शर इति।
 दिघक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बर-विधिः
 विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥
 हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोः
 यदेकोने तस्मिन् निजमुद्हरन्नेत्रकमलम्।
 गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
 त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ १९ ॥
 क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
 क कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
 अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान-प्रतिभुवं
 श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥
 क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्
 ऋषीणामार्त्तिर्ज्यं शरणद् सदस्याः सुरगणाः।
 क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफल-विधान-व्यसनिनः
 ध्रुवं कर्तुं श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥
 प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
 गतं रोहिद्भूतां रिमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
 धनुष्याणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
 त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २२ ॥
 स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमहाय तृणवत्
 पुरः प्लुषं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
 यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत-देहार्ध-घटनात्
 अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २३ ॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाच्चाः सहचराः
 चिता-भस्मालेपः स्वगपि नृकरोटी-परिकरः।
 अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
 तथाऽपि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि॥२४॥

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमविधायात्त-मरुतः
 प्रहृष्टद्रोमाणः प्रमद-सलिलोत्सङ्गति-दृशः।
 यदालोक्याऽहादं हृद इव निमज्यामृतमये
 दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यामिनस्तत् किल भवान्॥२५॥
 त्वर्मकस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः
 त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
 परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिन्नति गिरं
 न विद्वस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि॥२६॥
 त्रयीं तिस्रो वृत्तिस्थिभुवनमथो त्रीनपि सुरान्
 अकारार्द्यर्वर्णौस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।
 तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
 समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥२७॥
 भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहान्
 तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
 अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
 प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहित-नमस्योऽस्मि भवते॥२८॥
 नमो नेदिष्टाय प्रियदव दविष्टाय च नमः
 नमः क्षोदिष्टाय स्मरहर महिष्टाय च नमः।
 नमो वर्षिष्टाय त्रिनयन यविष्टाय च नमः
 नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिसर्वाय च नमः॥२९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
 प्रबलतमसे तत् संहारे हराय नमो नमः।
 जनसुखकृते सत्त्वोदिक्तौ मृडाय नमो नमः
 प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥

कृश-परिणति-चेतः क्लेशवश्यं क्र चेदं
 क्र च तव गुण-सीमोल्लङ्घिनी शश्वद्धिः।
 इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्-
 वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
 सुरतरुवर-शारवा लेखनी पत्रमुर्वी।
 लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
 तदपि तव गुणानामीशा पारं न याति ॥ ३२ ॥

असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेः
 ग्रथित-गुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
 सकल-गण-वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानः
 रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटैः स्तोत्रमेतत्
 पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
 स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
 प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्य ॥ ३४ ॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
 अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ३६ ॥

कुसुमदशन-नामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवर-मौलेद्वदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्-दिव्य-दिव्यं महिम्नः ॥ ३७ ॥

सुरगुरुमभिपूज्य स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिनान्यचेताः ।
ब्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ३८ ॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि सर्वमीश्वरवर्णनम् ॥ ३९ ॥

इत्येषा वाञ्छयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥ ४० ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥ ४१ ॥
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ ४२ ॥

श्री-पुष्पदन्त-मुखपङ्कज-निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४३ ॥

॥ इति श्री-पुष्पदन्तविरचितं श्री-शिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीकृष्णार्जुनकृत-रुद्रस्तोत्रम् ॥

कृष्णार्जुनावूचतुः

नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च।
पशूनां पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने ॥ ५५ ॥

महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय च शान्तये।
ईशानाय मखम्भाय नमोऽस्त्वन्धकघातिने ॥ ५६ ॥

कुमारगुरवे तुभ्यं नीलग्रीवाय वेघसे।
पिनाकिने हविष्याय सत्याय विभवे सदा ॥ ५७ ॥

विलोहिताय धूम्राय व्याधायानपराजिते।
नित्यं नीलशिखण्डाय शूलिने दिव्यचक्षुषे ॥ ५८ ॥

होत्रे पोत्रे त्रिनेत्राय व्याधाय वसुरेतसे।
अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रै सर्वदेवस्तुताय च ॥ ५९ ॥

वृषध्वजाय मुण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणे।
तप्यमानाय सलिले ब्रह्मण्यायाजिताय च ॥ ६० ॥

विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते।
नमो नमस्ते सेव्याय भूतानां प्रभवे सदा ॥ ६१ ॥

ब्रह्मवक्राय सर्वाय शङ्कराय शिवाय च।
नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानां पतये नमः ॥ ६२ ॥

अभिगम्याय काम्याय स्तुत्यायार्याय सर्वदा।
नमोऽस्तु देवदेवाय महाभूतधराय च।
नमो विश्वस्य पतये पत्तीनां पतये नमः ॥ ६३ ॥

नमो विश्वस्य पतये महतां पतये नमः ।
 नमः सहस्रशिरसे सहस्रभुजमृत्यवे ।
 सहस्रनेत्रपादाय नमोऽसङ्ख्येयकर्मणे ॥ ६४ ॥

नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च ।
 भक्तानुकम्पिने नित्यं सिध्यतां नो वरः प्रभो ॥ ६५ ॥

सङ्ख्य उवाच

एवं स्तुत्वा महादेवं वासुदेवः सहार्जुनः ।
 प्रसादयामास भवं तदा ह्यस्त्रोपलब्ध्ये ॥ ६६ ॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते द्रोणपर्वणि प्रतिज्ञापर्वणि अशीतितमोऽध्याये
 श्रीकृष्णार्जुनकृतं रुद्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बिल्वाष्टकम् ॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम् ।
 त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥ १ ॥

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
 शिवपूजां करिष्यामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥ २ ॥

अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे ।
 शुद्ध्यन्ति सर्वपापेभ्यो ह्येकबिल्वं शिवार्पणम् ॥ ३ ॥

शालिग्राम-शिलामेकां विप्राणां जातु चार्पयेत् ।
 सोमयज्ञ-महापुण्यं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥ ४ ॥

दन्तिकोटि-सहस्राणि वाजपेय-शतानि च ।
 कोटिकन्या-महादानं एकबिल्वं शिवार्पणम् ॥ ५ ॥

लक्ष्म्यास्तनुत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥६॥

दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥७॥

काशीक्षेत्रनिवासं च कालभैरवदर्शनम्।
प्रयागमाधवं दृष्ट्वा ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥८॥

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय ह्येकबिल्वं शिवार्पणम्॥९॥

बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्न्यात्॥
॥इति बिल्वाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ शिवरक्षास्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीशिवरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः।
श्रीसदाशिवो देवता। अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थे शिवरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः॥

चरितं देवदेवस्य महादेवस्य पावनम्।
अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम्॥

गौरीविनायकोपेतं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रकम्।
शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिवरक्षां पठेन्नरः॥

॥ कवचम् ॥

गङ्गाधरः शिरः पातु फालमर्घ्नदुशेखरः।
नयने मदनध्वंसी कण्णौ सर्पविभूषणः ॥ १ ॥

ग्राणं पातु पुरारातिमुखं पातु जगत्पतिः।
जिह्वां वागीश्वरः पातु कन्धरं शितिकन्धरः ॥ २ ॥

श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः।
भुजौ भूभारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक् ॥ ३ ॥

हृदयं शङ्करः पातु जठरं गिरिजापतिः।
नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कटी व्याघ्राजिनाम्बरः ॥ ४ ॥

सविथनी पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः।
ऊरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः ॥ ५ ॥

जघ्ने पातु जगत्कर्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः।
चरणौ करुणासिन्धुः सर्वाङ्गानि सदाशिवः ॥ ६ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

एतां शिवबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स भुत्तवा सकलान् कामान् शिवसायुज्यमाप्नुयात्॥

ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये।
दूरादाशु पलायन्ते शिवनामाभिरक्षणाम्॥

अभयङ्करनामेदं कवचं पार्वतीपतेः।
भक्त्या विभर्ति यः कण्ठे तस्य वशं जगत्त्वयम्॥

इमां नारायणः स्वप्ने शिवरक्षां यथाऽदिशत्।
 प्रातरूप्तथाय योगीन्द्रो याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत्॥
 ॥ इति श्रीमद्याज्ञवल्क्यमुनिप्रोक्तं शिवरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
 भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
 नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
 तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥ १ ॥

मन्दाकिनी-सलिलचन्दन-चर्चिताय
 नन्दीश्वर-प्रमथनाथ-महेश्वराय।
 मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय
 तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥ २ ॥

शिवाय गौरीवदनाङ्ग-वृन्द-
 सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
 श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
 तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

वसिष्ठ-कुम्भोद्धव-गौतमार्य-
 मुनीन्द्र-देवार्चितशेखराय ।
 चन्द्राक-वैश्वानरलोचनाय
 तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
 पिनाकहस्ताय सनातनाय।
 दिव्याय देवाय दिग्म्बराय
 तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
 शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शिवापराधक्षमापन-स्तोत्रम् ॥

आदौ कर्मप्रसङ्गात्कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
 विष्मूत्रामेघमध्ये कथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
 यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वकुं
 क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्मो ॥ १ ॥

बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
 नो शक्तश्चेन्द्रियभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
 नानारोगादिदुःखादुदनपरवशः शङ्करं न स्मरामि
 क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्मो ॥ २ ॥

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्ध्यौ
 दष्टो नष्टोऽविवेकः सुतधनयुवतिस्वादुसौरव्ये निषण्णः।
 शौरीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
 क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्मो ॥ ३ ॥

वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः

पापै रोगौर्वियोगौस्त्वनवसितवपुः प्रौढहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्ब्रह्मति मम मनो धूर्जटध्यानशून्यं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ ४ ॥
नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलारब्यं

श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्मार्गैऽसुसारे।
ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ ५ ॥
स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं

पूजार्थं वा कदाचिद्द्वहुतरगहनात्वण्डविल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धधूपैस्त्वदर्थं

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ ६ ॥
दुग्धैर्मध्वाज्युतैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं

नो लितं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ ७ ॥
ध्यात्वा चित्ते शिवारब्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो

हव्यं ते लक्षसङ्घैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमञ्चैः।
नो तसं गङ्गातीरे ब्रतजननियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ ८ ॥
स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुम्भके सूक्ष्ममार्गे

शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपेऽपराख्ये।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि

क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ ९ ॥

नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्त्तमोहान्धकारो
 नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
 उन्मन्याऽवस्थया त्वां विगतकलिमलं शङ्करं न स्मरामि
 क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री-महादेव शम्भो ॥ १० ॥
 चन्द्रोद्धासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे
 सर्पैभूषितकण्ठकर्णयुगले नेत्रोत्थवैश्वानरे।
 दन्तित्वकृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
 मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥ ११ ॥
 किं वाऽनेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
 किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्दैहन गेहेन किम्।
 ज्ञात्वैतत्क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
 स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज मन श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥ १२ ॥
 आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
 प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्धक्षकः।
 लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं
 तस्मात्त्वां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना ॥ १३ ॥
 वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
 वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
 वन्दे सूर्यशशाङ्कवहिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
 वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १४ ॥
 गात्रं भस्मसितं च हसितं हस्ते कपालं सितं
 खद्वाङ्मं च सितं सितश्च वृषभः कर्णे सिते कुण्डले।
 गङ्गाफेनसिता जटा पशुपतेश्वन्दः सितो मूर्धनि
 सोऽयं सर्वसितो ददातु विभवं पापक्षयं सर्वदा ॥ १५ ॥

करचरणकृतं वाक्षायजं कर्मजं वा
 श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
 विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
 जय जय करुणाब्दे श्री-महादेव शम्भो ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिब्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-शिवापराधक्षमापणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
 गङ्गाधरं वृषभवाहनमाम्बिकेशम्।
 खद्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
 संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्घदेहं
 सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम्।
 विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं
 संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
 वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
 नामादिभेदरहितं षड्वावशून्यं
 संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ ३ ॥

॥ इति श्री-शिवप्रातःस्मरणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ मार्गबन्धुस्तोत्रम् ॥

शम्भो महादेव देव।
शिव शम्भो महादेव देवेश शम्भो।
शम्भो महादेव देव॥

फालावनम्रत्किरीटं फालनेत्रार्चिषा-दग्ध-पञ्चेषुकीटम्।
शूलाहतारातिकूटं शुद्धमर्घेन्दुचूडं भजे मार्गबन्धुम्॥ १॥
अङ्गे विराज-द्वुजङ्गम् अभ्र-गङ्गा-तरङ्गाभि-रामोत्तमाङ्गम्।
ओङ्कारवाटी-कुरङ्गं सिद्धसंसेविताङ्गिं भजे मार्गबन्धुम्॥ २॥
नित्यं चिदानन्दरूपं निहृताशेष-लोकेश-वैरिप्रतापम्।
कार्तस्वरागेन्द्र-चापं कृत्तिवासं भजे दिव्यसन्मार्गबन्धुम्॥ ३॥
कन्दर्प-दर्पध्ममीशं कालकणं महेशं महाव्योमकेशम्।
कुन्दाभदन्तं सुरेशं कोटिसूर्यप्रकाशं भजे मार्गबन्धुम्॥ ४॥
मन्दारभूतेरुदारं मन्दरागेन्द्रसारं महागौर्यदूरम्।
सिन्धूर-दूर-प्रचारं सिन्धुराजातिधीरं भजे मार्गबन्धुम्॥ ५॥
अप्पय्ययज्वेन्द्रगीतं स्तोत्रराजं पठेद्यस्तु भक्त्या प्रयाणे।
तस्यार्थसिद्धिं विधत्ते मार्गमध्येऽभयं चाऽऽशुतोषो महेशः॥

॥ सदाशिवाष्टकम् ॥

पतञ्जलिरुवाच

सुवर्णपद्मिनी-तटान्त-दिव्यहर्म्य-वासिने
सुपर्णवाहन-प्रियाय सूर्यकोटि-तेजसे।
अपर्णया विहारिणे फणाधरेन्द्र-धारिणे
सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे॥ १॥

सतुङ्ग-भङ्ग-जहुजा-सुधांशु-खण्ड-मौलये
 पतङ्ग-पङ्कजासुहृत्-कृपीटयोनि-चक्षुषे ।
 भुजङ्गराज-मण्डलाय पुण्यशालि-बन्धवे
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ २ ॥

चतुर्मुखाननारविन्द-वेदगीत-भूतये
 चतुर्भुजानुजा-शरीर-शोभमान-मूर्तये ।
 चतुर्विधार्थ-दान-शौण्ड-ताण्डव-स्वरूपिणे
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ३ ॥

शरन्निशाकर-प्रकाश-मन्दहास-मञ्जुला-
 धरप्रवाल-भासमान-वक्रमण्डल-श्रिये ।
 करस्फुरत्-कपालमुक्तरक्त-विष्णुपालिने
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ४ ॥

सहस्र-पुण्डरीक-पूजनैक-शून्यदर्शनात्
 सहस्रनेत्र-कल्पितार्चनाऽच्युताय भक्तिः ।
 सहस्रभानुमण्डल-प्रकाश-चक्रदायिने
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ५ ॥

रसारथाय रम्यपत्र-भृद्रथाङ्गपाणये
 रसाधरेन्द्र-चापशिञ्जिनी-कृतानिलाशिने ।
 स्वसारथी-कृताजनुन्न-वेदरूपवाजिने
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ६ ॥

अति-प्रगल्भ-वीरभद्र-सिंहनाद-गर्जित-
 श्रुतिप्रभीत-दक्षयाग-भोगिनाक-सद्मनाम् ।
 गतिप्रदाय गर्जिताखिल-प्रपञ्चसाक्षिणे
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥ ७ ॥

मृकण्डुसूनु-रक्षणावधूतदण्ड-पाणये
 सुगन्ध्यमण्डल-स्फुरत्-प्रभाजितामृतांशवे।
 अखण्डभोग-सम्पदर्थलोक-भावितात्मने
 सदा नमः शिवाय ते सदाशिवाय शम्भवे ॥८॥

मधुरिपु-विधि-शक्र-मुख्य-देवैरपि नियमार्चित-पादपङ्कजाय।
 कनकगिरि-शरासनाय तुभ्यं रजत-सभापतये नमः शिवाय ॥९॥

हालास्यनाथाय महेश्वराय
 हालाहलालङ्कृत-कन्धराय ।
 मीनेक्षणायाः पतयै शिवाय
 नमो नमः सुन्दर-ताण्डवाय ॥१०॥

॥ इति श्री-हालास्यमाहात्म्ये
 पतञ्जलिकृतं श्री-सदाशिवाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ चरणशङ्करहित-नटराज-स्तोत्रम् ॥

सदश्चित-मुदश्चित-निकुश्चित-पदं झलझलश्चलित-मञ्जु-कटकं
 पतञ्जलि-दगञ्जन-मनञ्जन-मचञ्चलपदं जनन-भञ्जन-करम्।
 कदम्बरुचिमम्बरवसं परममम्बुद-कदम्बक-विडम्बक-गलं
 चिदम्बुधि-मणिं बुध-हृदम्बुज-रवि-पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥१॥

हरं त्रिपुर-भञ्जनम् अनन्तकृतकङ्कणम् अखण्डदय-मन्तरहितं
 विरिञ्चिसुरसंहतिपुरन्धर-विचिन्तितपदं तरुणचन्द्रमकुटम्।
 परं पद-विखण्डितयमं भसित-मणिततनुं मदनवञ्चन-परं
 चिरन्तनममुं प्रणवसश्चितनिधिं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥२॥

अनन्तमखिलं जगदभङ्ग-गुणतुङ्गममतं धृतविधुं सुरसरित्
तरङ्ग-निकुरम्ब-धृति-लम्पट-जटं शमनदम्बसुहरं भवहरम्।
शिवं दशादिगन्तर-विजृम्भितकरं करलसन्मृगशिशुं पशुपतिं
हरं शशिधनञ्जयपतञ्जनयनं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥ ३ ॥

अनन्तनवरत्विलसत्कटककिङ्गिणिङ्गलं झलझलं झलरवं
मुकुन्दविधि-हस्तगतमद्वल-लयध्वनिधिमिष्ठिमित-नर्तन-पदम्।
शकुन्तरथ-बर्हिरथ-नन्दिमुख-शृङ्गिरिटि-भृङ्गिगण-सङ्घनिकटं
सनन्दसनक-प्रमुख-वन्दित-पदं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥ ४ ॥

अनन्तमहसं त्रिदशवन्ध्य-चरणं मुनि-हृदन्तर-वसन्तममलं
कबन्ध-वियादिन्द्रवनि-गन्धवह-वाहिमख-बन्धुरविमञ्जु-वपुषम्।

अनन्तविभवं त्रिजगदन्तर-मणिं त्रिनयनं त्रिपुर-खण्डन-परं
सनन्द-मुनि-वन्दित-पदं सकरुणं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥ ५ ॥

अचिन्त्यमलिवृन्द-रुचि-बन्धुरगलं कुरित-कुन्द-निकुरम्ब-धवलं
मुकुन्द-सुरवृन्द-बलहन्तृ-कृतवन्दन-लसन्तम्-अहिकुण्डल-धरम्।
अकम्पमनुकम्पित-रतिं सुजन-मङ्गलनिधिं गजहरं पशुपतिं
धनञ्जयनुतं प्रणत-रञ्जनपरं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥ ६ ॥

परं सुरवरं पुरहरं पशुपतिं जनित-दन्तिमुख-षणमुखममुं
मृडं कनक-पिङ्गल-जटं सनकपङ्गज-रविं सुमनसं हिमरुचिम्।

असङ्घमनसं जलधि-जन्मकरलं कवलयन्त-मतुलं गुणनिधिं
सनन्द-वरदं शामितमिन्दु-वदनं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥ ७ ॥

अजं क्षितिरथं भुजगपुङ्गवगुणं कनक-शृङ्ग-धनुषं करलसत्
कुरङ्ग-पृथु-टङ्ग-परशुं रुचिर-कुङ्गम-रुचिं डमरुकं च दधतम्।
मुकुन्द-विशिरवं नमदवन्ध्य-फलदं निगम-वृन्द-तुरगं निरुपमं
सच्चण्डिकममुं झटिति संहतपुरं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज ॥ ८ ॥

अनङ्गपरिपन्थिनमजं क्षिति-धुरन्धरमलं करुणयन्तमखिलं
 ज्वलन्तमनलं दधतमन्तकरिपुं सततमिन्द्रमुख-वन्दितपदम्।
 उदञ्चदरविन्दकुल-बन्धुशत-बिम्बरुचि-संहति-सुगन्धि-वपुषं
 पतञ्जलिनुतं प्रणवपञ्जर-शुकं पर-चिदम्बर-नटं हृदि भज॥९॥

इति स्तवममुं भुजगपुङ्गव-कृतं प्रतिदिनं पठति यः कृतमुखः
 सदः प्रभुपद-द्वितयदर्शनपदं सुललितं चरण-शङ्ख-रहितम्।
 सरःप्रभव-सम्भव-हरित्पति-हरिप्रमुख-दिव्यनुत-शङ्करपदं
 स गच्छति परं न तु जनुर्जलनिधिं परमदुःखजनकं दुरितदम्॥१०॥

॥ इति श्रीपतञ्जलिमुनिप्रणीतं चरणशङ्खरहित-नटराजस्तोत्रं
 सम्पूर्णम्॥

॥ शाम्भुस्तुतिः ॥

नमामि शम्भुं पुरुषं पुराणं
 नमामि सर्वज्ञमपारभावम्।
 नमामि रुद्रं प्रभुमक्षयं तं
 नमामि शर्वं शिरसा नमामि ॥ १ ॥
 नमामि देवं परमव्ययं तम्
 उमापतिं लोकगुरुं नमामि।
 नमामि दारिद्र्यविदारणं तं
 नमामि रोगापहरं नमामि ॥ २ ॥
 नमामि कल्याणमचिन्त्यरूपं
 नमामि विश्वोद्भवबीजरूपम्।
 नमामि विश्वस्थितिकारणं तं
 नमामि संहारकरं नमामि ॥ ३ ॥

नमामि गौरीप्रियमव्ययं तं
 नमामि नित्यं क्षरमक्षरं तम्।
 नमामि चिद्रूपममेयभावं
 त्रिलोचनं तं शिरसा नमामि ॥४॥
 नमामि कारुण्यकरं भवस्य
 भयङ्करं वाऽपि सदा नमामि।
 नमामि दातारमभीप्सितानां
 नमामि सोमेशमुमेशमादौ ॥५॥
 नमामि वेदत्रयलोचनं तं
 नमामि मूर्तित्रयवर्जितं तम्।
 नमामि पुण्यं सदसद्यतीतं
 नमामि तं पापहरं नमामि ॥६॥
 नमामि विश्वस्य हिते रतं तं
 नमामि रूपाणि बहूनि धत्ते।
 यो विश्वगोपा सदसत्प्रणेता
 नमामि तं विश्वपतिं नमामि ॥७॥
 यज्ञेश्वरं सम्प्रति हव्यकव्यं
 तथागतिं लोकसदाशिवो यः।
 आराधितो यश्च ददाति सर्वं
 नमामि दानप्रियमिष्टदेवम् ॥८॥
 नमामि सोमेश्वरमस्वतन्त्रम्
 उमापतिं तं विजयं नमामि।
 नमामि विघ्नेश्वरनन्दिनाथं
 पुत्रप्रियं तं शिरसा नमामि ॥९॥

नमामि देवं भवदुःखशोक-
 विनाशनं चन्द्रधरं नमामि।
 नमामि गङ्गाधरमीशमीज्यम्
 उमाधवं देववरं नमामि॥१०॥

नमाम्यजादीशपुरन्दरादि-
 सुरासुरैरचितपादपद्मम् ।
 नमामि देवीमुखवादनानाम्
 ईक्षार्थमक्षित्रितयं य ऐच्छत्॥११॥

पञ्चामृतैर्गन्धसुधूपदीपैर्-
 विचित्रपुष्पैर्विविधैश्च मन्त्रैः।
 अन्नप्रकारैः सकलोपचारैः
 सम्पूजितं सोममहं नमामि॥१२॥

॥ इति श्रीब्रह्ममहापुराणे त्रयोविंशाधिकशततमाध्यायान्तर्गता
 श्रीरामकृता शम्भुस्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ उमामहेश्वरस्तोत्रम् ॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां
 परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।
 नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥१॥

नमः शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्यां
 नमस्कृताभीष्टवरप्रदाभ्याम् ।
 नारायणेनार्चितपादुकाभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥२॥

नमः शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्यां
 विरिञ्चिविष्णवन्द्रसुपूजिताभ्याम्।
 विभूतिपाटीरविलेपनाभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥३॥

नमः शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्यां
 जगत्पतिभ्यां जयविग्रहाभ्याम्।
 जम्भारिमुख्यैरभिवन्दिताभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥४॥

नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्यां
 पञ्चाक्षरी-पञ्चररञ्जिताभ्याम् ।
 प्रपञ्च-सृष्टि-स्थिति-संहृताभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥५॥

नमः शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्याम्
 अत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम्।
 अशेषलोकैकहितङ्कराभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥६॥

नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्यां
 कङ्कालकल्याणवपुर्धराभ्याम्।
 कैलासशैलस्थितदेवताभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥७॥

नमः शिवाभ्यामशुभापहाभ्याम्
 अशेषलोकैकविशेषिताभ्याम्।
 अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसम्भृताभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥८॥

नमः शिवाभ्यां रथवाहनाभ्यां
 रवीन्दुवैश्वानरलोचनाभ्याम् ।
 राका-शशाङ्काभ-मुखाम्बुजाभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ९ ॥

नमः शिवाभ्यां जटिलन्धराभ्यां
 जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम् ।
 जनार्दनाङ्गोद्धवपूजिताभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १० ॥

नमः शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्यां
 बिल्वच्छदामल्लिकदामभृत्याम् ।
 शोभावती-शान्तवतीश्वराभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ११ ॥

नमः शिवाभ्यां पशुपालकाभ्यां
 जगत्त्वयीरक्षण-बद्धहृत्याम् ।
 समस्तदेवासुरपूजिताभ्यां
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १२ ॥

स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं शिवपार्वतीभ्यां
 भक्त्या पठेद्-द्वादशकं नरो यः ।
 स सर्वसौभाग्य-फलानि भुङ्गे
 शतायुरन्ते शिवलोकमेति ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-उमामहेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अर्धनारीश्वर-अष्टकम् ॥

चाम्पेयगौरार्घ-शरीरकायै
 कर्पूरगौरार्घ-शरीरकाय ।
 धम्मिल्लकायै च जटाधराय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ १ ॥

कस्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै
 चितारजः पुञ्जविचर्चिताय ।
 कृतस्मरायै विकृतस्मराय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ २ ॥

झणत्कणत्कङ्कण-नूपुरायै
 पादाभराजत्-फणिनूपुराय ।
 हेमाङ्गदायै च भुजङ्गदाय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ३ ॥

विशालनीलोत्पललोचनायै
 विकासिपङ्क्षेरुहलोचनाय ।
 समेक्षणायै विषमेक्षणाय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ४ ॥

मन्दारमालाकलितालकायै
 कपालमालाङ्कितकन्थराय ।
 दिव्याम्बरायै च दिग्म्बराय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ५ ॥

अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै
 तटित्रभाताम्रजटाधराय ।
 निरीश्वरायै निखिलेश्वराय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ६ ॥

प्रपञ्चसृष्टुन्मुखलास्यकायै
 समस्तसंहारकताण्डवाय ।
 जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ७ ॥

प्रदीप्तरत्नोज्वलकुण्डलायै
 स्फुरन्महापन्नगमूषणाय ।
 शिवान्वितायै च शिवान्विताय
 नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ८ ॥

एतत्पठेदैकमिष्टदं यो
 भक्त्या स मान्यो भुवि दीर्घजीवी।
 प्राप्नोति सौभाग्यमनन्तकालं
 भूयात् सदा तस्य समस्तसिद्धिः ॥
 ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-अर्धनारीश्वर अष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ शिवशिवास्तुतिः ॥

नमो नमस्ते गिरिशाय तुभ्यं
 नमो नमस्ते गिरिकन्यकायै।
 नमो नमस्ते वृषभध्वजाय
 सिंहध्वजायै च नमो नमस्ते ॥ १ ॥

नमो नमो भूतिविभूषणाय
 नमो नमश्चन्दनरूपितायै।
 नमो नमः फालविलोचनाय
 नमो नमः पद्मविलोचनायै ॥ २ ॥

त्रिशूलहस्ताय नमो नमस्ते
 नमो नमः पद्मलसत्करायै।
 नमो नमो दिग्वसनाय तुभ्यं
 चित्राम्बरायै च नमो नमस्ते ॥ ३ ॥

चन्द्रावतंसाय नमो नमस्ते
 नमोऽस्तु चन्द्राभरणाञ्चितायै।
 नमः सुवर्णाङ्कितकुण्डलाय
 नमोऽस्तु रत्नोज्ज्वलकुण्डलायै ॥ ४ ॥

नमोऽस्तु ताराग्रहमालिकाय
 नमोऽस्तु हारान्वितकन्यरायै।
 सुवर्णवर्णाय नमो नमस्ते
 नमः सुवर्णाधिकसुन्दरायै ॥ ५ ॥

नमो नमस्ते त्रिपुरान्तकाय
 नमो नमस्ते मधुनाशनायै।
 नमो नमस्त्वन्धकसूदनाय
 नमो नमः कैटभसूदनायै॥६॥
 नमो नमो ज्ञानमयाय नित्यं
 नमश्चिदानन्दघनप्रदायै ।
 नमो जटाजूटविराजिताय
 नमोऽस्तु वेणीफणिमण्डितायै॥७॥
 नमोऽस्तु कर्पूरसाकराय
 नमो लसत्कुञ्जममण्डितायै।
 नमोऽस्तु बिल्वाम्रफलार्चिताय
 नमोऽस्तु कुन्दप्रसवार्चितायै॥८॥
 नमो जगन्मण्डलमण्डनाय
 नमो मणिभ्राजितमण्डनायै।
 नमोऽस्तु वेदान्तगणस्तुताय
 नमोऽस्तु विश्वेश्वरसंस्तुतायै॥९॥
 नमोऽस्तु सर्वामरपूजिताय
 नमोऽस्तु पद्मार्चितपादुकायै।
 नमः शिवालिङ्गितविग्रहाय
 नमः शिवालिङ्गितविग्रहायै॥१०॥
 नमो नमस्ते जनकाय नित्यं
 नमो नमस्ते गिरिजे जनन्यै।
 नमो नमोऽनङ्गहराय नित्यं
 नमो नमोऽनङ्गविवर्धनायै॥११॥

नमो नमस्तेऽस्तु विषाशनाय
 नमो नमस्तेऽस्तु सुधाशनायै।
 नमो नमस्तेऽस्तु महेश्वराय
 श्रीचन्द्रने देवि नमो नमस्ते ॥ १२ ॥

॥ इति श्री-कार्त्तिकेयविरचिता श्री-शिवशिवास्तुतिः सम्पूर्णा ॥



॥ दक्षिणामूर्त्यष्टकम् ॥

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
 पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यदा निद्रया।
 यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ १ ॥

बीजस्थान्तरिवाङ्कुरो जगदिदं प्राङ्गनिर्विकल्पं पुनः
 मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्यचित्रीकृतम्।
 मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ २ ॥

यस्यैव स्फुरणं सदाऽऽत्मकमसत्कल्पार्थकं भासते
 साक्षात् तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्।
 यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ३ ॥

नानाञ्चिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं
 ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते।
 जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्तं जगत्
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ४ ॥

देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
 स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशां वादिनः।
 मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ५ ॥

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात्
 सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत्सुषुप्तः पुमान्।
 प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥६॥

बाल्यादिष्वपि जागृदृढिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
 व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा।
 स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥७॥

विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः
 शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः।
 स्वप्ने जागृति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामितः
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥८॥

भूरभ्मांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमान्
 इत्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।
 नान्यत् किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभोः
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये॥

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन् स्तवे
 तेनास्य श्रवणात्तदर्थमननाञ्चानाच्च सङ्कीर्तनात्।
 सर्वात्मत्वमहाविभूतिसाहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
 सिद्ध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिभ्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-दक्षिणामूर्त्यष्टकं सम्पूर्णम्॥



वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषणं
सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात्।
त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवं
जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

उपासकानां यदुपासनीयम्
उपात्तवासं वटशाखिमूले।
तद्वाम दाक्षिण्यजुषा स्वमूर्त्या
जागर्तु चित्ते मम बोधरूपम्॥ १ ॥

अद्राक्षमक्षीणदयानिधानम्
आचार्यमाद्यं वटमूलभागे।
मौनेन मन्दस्मितभूषितेन
महर्षिं लोकस्य तमो नुदन्तम्॥ २ ॥

विद्राविताशेष-तमोगुणेन
मुद्राविशेषेण मुहुर्मुनीनाम्।
निरस्य मायां दयया विधत्ते
देवो महांस्तत्त्वमसीति बोधम्॥ ३ ॥

अपारकारुण्यसुधातरङ्गैः
अपाङ्गपातैरवलोकयन्तम् ।
कठोरसंसारनिदाघतसान्
मुनीनहं नौमि गुरुं गुरुणाम्॥ ४ ॥

ममाद्यदेवो वटमूलवासी
 कृपाविशेषात्कृतसन्निधानः।
 ओङ्काररूपामुपदिश्य विद्याम्
 आविद्यकध्वान्तमपाकरोतु ॥ ५ ॥
 कलाभिरिन्दोरिव कल्पिताङ्गं
 मुक्ताकलापैरिव बद्धमूर्तिम्।
 आलोकये देशिकमप्रमेयम्
 अनाद्यविद्यातिमिरप्रभातम् ॥ ६ ॥
 स्वदक्षजानुस्थितवामपादं
 पादोदरालङ्कृतयोगपट्टम् ।
 अपस्मृतेराहितपादमङ्गे
 प्रणौमि देवं प्रणिधानवन्तम् ॥ ७ ॥
 तत्त्वार्थमन्तेवसतामृषीणां
 युवाऽपि यः सञ्चुपदेष्टुमीषे।
 प्रणौमि तं प्राक्तनपुण्यजालैः
 आचार्यमाश्वर्यगुणाधिवासम् ॥ ८ ॥
 एकेन मुद्रां परशुं करेण
 करेण चान्येन मृगं दधानः।
 स्वजानुविन्यस्तकरः पुरस्तात्
 आचार्यचूडामणिराविरस्तु ॥ ९ ॥
 आलेपवन्तं मदनाङ्गभूत्या
 शार्दूलकृत्या परिधानवन्तम्।
 आलोकये कञ्चनदेशिकेन्द्रम्
 अज्ञानवाराकरबाडवाग्निम् ॥ १० ॥

चारुस्मितं सोमकलावतंसं
 वीणाधरं व्यक्तजटाकलापम्।
 उपासते केचन योगिनस्त्वाम्
 उपात्तनादानुभवप्रमोदम् ॥ ११ ॥

उपासते यं मुनयः शुकाद्याः
 निराशिषो निर्ममताधिवासाः।
 तं दक्षिणामूर्तितनुं महेशम्
 उपास्महे मोहमहार्तिशान्त्यै ॥ १२ ॥

कान्त्या निन्दितकुन्दकन्दलवपुर्न्यग्रोधमूले वसन्
 कारुण्यामृतवारिभिर्मुनिजनं सम्भावयन् वीक्षितैः।
 मोहध्वान्तविभेदनं विरचयन् बोधेन तत्तादशा
 देवस्तत्त्वमसीति बोधयतु मां मुद्रावता पाणिना ॥ १३ ॥

अगौरगात्रैरल्लाटनेत्रैः
 अशान्तवेषैरभुजङ्गभूषैः।
 अबोधमुद्रैरनपास्तनिद्रैः
 अपूर्णकामैरमरैरलं नः ॥ १४ ॥

दैवतानि कर्ति सन्ति चावनौ
 नैव तानि मनसो मतानि मे।
 दीक्षितं जडधियामनुग्रहे
 दक्षिणाभिमुखमेव दैवतम् ॥ १५ ॥

मुदिताय मुग्धशशिनावतंसिने
 भसितावलेपरमणीयमूर्तये ।
 जगदीन्द्रजालरचनापटीयसे
 महसे नमोऽस्तु वटमूलवासिने ॥ १६ ॥

व्यालम्बिनीभिः परितो जटाभिः
कलावशेषेण कलाधरेण।
पश्यल्लाटेन मुखेन्दुना च
प्रकाशसे चेतासि निर्मलानाम्॥ १७॥

उपासकानां त्वमुमासहायः
पूर्णन्दुभावं प्रकटीकरोषि।
यद्य ते दर्शनमात्रतो मे
द्रवत्यहो मानसचन्द्रकान्तः॥ १८॥

यस्ते प्रसन्नामनुसन्दधानो
मूर्ति मुदा मुग्धशशाङ्कमौलेः।
ऐश्वर्यमायुर्लभते च विद्याम्
अन्ते च वेदान्तमहारहस्यम्॥ १९॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं वृषभदेवकृतम्॥

अगणितगुणमप्रमेयमाद्यं
सकलजगतिस्थितिसंयमादिहेतुम्।
उपरतमनोयोगिहन्मन्दिरन्त
सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे॥ १॥

निरवधिसुखमिष्टदातारमीड्यं
 नतजनमनस्तापभेदैकदक्षम्।
 भवविपिनदवाग्निनामधेयं
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ २ ॥

त्रिभुवनगुरुमागमैकप्रमाणं
 त्रिजगत्कारणसूत्रयोगमायम्।
 रविशतभास्वरमीहितप्रदानं
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ३ ॥

अविरतभवभावनाऽतिदूरं
 पदपद्मद्वयभाविनामदूरम् ।
 भवजलधिसुतारणाङ्गिपोतं
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ४ ॥

कृतनिलयमनिशं वटाकमूले
 निगमशिखवात्रातबोधितैकरूपम्।
 धृतमुद्राङ्गुलिगम्यचारुबोधं
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ५ ॥

द्वुहिणसुतपूजिताङ्गिपद्मं
 पदपद्मानतमोक्षदानदक्षम्।
 कृतगुरुकुलवासयोगिमित्रं
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ६ ॥

यतिवरहृदयेसदाविभान्तं
 रतिपतिशतकोटिसुन्दराङ्गमायम्।
 परहितनिरतात्मनां सुसेव्यं
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ ७ ॥

स्मितधवलविकासिताननाभं
 श्रुतिसुलभं वृषभाधिरूढगात्रम्।
 सितजलजसुशोभदेहकान्ति
 सततमहं दक्षिणामूर्तिमीडे॥८॥

वृषभकृतमिदमिष्टसिद्धिदं
 गुरुवरदेवसन्निधौ पठेद्यः।
 सकलदुरितदुःखवर्गहानिं
 ब्रजति चिरं ज्ञानवान् शम्भुलोकम्॥९॥

॥ इति श्रीमद्वृषभदेवकृतं दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् समरपुञ्जवदीक्षितकृतम् ॥

आधिकथम् अस्माज्जगतोऽधिगन्तुं विश्वाधिकोक्तेर्विषयं प्रपद्ये।
 कालग्रहग्राहभयापनुत्त्यै कृतान्तशिक्षाकृतिनं प्रपद्ये ॥ १ ॥

शङ्खारभूजम्भणवारणाय प्रसूनकोदण्डरिपुं प्रपद्ये।
 विनेतुम् आर्ति विषयाद्वजन्यां वटद्रुमाधोवसतिं प्रपद्ये ॥ २ ॥

मोहातिरेकस्मयमोषणाय पादार्दितापस्मरणं प्रपद्ये।
 कर्माटवीपाटनकौतुकेन पाणौ विराजत्परशुं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

विशुद्धविज्ञानविकासहेतोः प्रबोधमुद्राभरितं प्रपद्ये।
 तापत्रयाटोपसमापनाय प्रालेयधामाभरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

वैमल्यसम्पादनवाञ्छयाऽहं मन्दाकिनीमाल्यधरं प्रपद्ये।
 प्रसादलाभं परम् ईहमानो मुग्धस्मितोळ्ळासिमुखं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

व्यथाम् अशेषाम् अपनेतुकामो नाम्ना मृडं नाथम् अहं प्रपद्ये।
अनाद्यविद्याशमनं प्रपद्ये नाम्ना महिम्नाऽपि च शङ्करं त्वाम्^१ ॥ ६ ॥

सर्वज्ञतासारभृतं प्रपद्ये निस्सीमसौहित्यनिधिं प्रपद्ये।
अनादिबोधायतनं प्रपद्ये स्वतन्त्रतायाः सदनं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

हरं प्रपद्येऽहम् अलुप्तशक्तिम् अमेयसामर्थ्यम् अहं प्रपद्ये।
शिवं प्रपद्ये जनकं विधातुः ईशं हृषीकेशगुरुं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

एवं प्रपत्तिम् ईशाने तन्वते तत्त्वदर्शिनः।
तत्क्रतुन्यायरसिकाः तत्तादृशफलासये ॥ ९ ॥

^१एतत् श्लोकार्थं श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीशीपादैः पूरितम् इति मद्रपुरीवास्तव्यैः प्राघ्यापकवील्लिनाथमहाभागैः निवेदितम्।

॥ इति श्री-समरपुञ्जवदीक्षितकृतयात्राप्रबन्धग्रन्थे विद्यमानं
श्री-दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ गुर्वष्टकम् ॥

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं
यशश्वारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्गिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ १ ॥

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादिसर्वं
गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्गिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ २ ॥

षडज्ञादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
 कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
 मनश्चेन्न लग्नं गुरोराङ्गिपद्मे
 ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥३॥
 विदेशोषु मान्यः स्वदेशोषु धन्यः
 सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
 मनश्चेन्न लग्नं गुरोराङ्गिपद्मे
 ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥४॥
 क्षमामण्डले भूपभूपालबृन्दैः
 सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
 मनश्चेन्न लग्नं गुरोराङ्गिपद्मे
 ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥५॥
 यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्
 जगद्वस्तुसर्वं करे यत्प्रसादात्।
 मनश्चेन्न लग्नं गुरोराङ्गिपद्मे
 ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥६॥
 न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
 न कन्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
 मनश्चेन्न लग्नं गुरोराङ्गिपद्मे
 ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥७॥
 अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
 न देहे मनो वर्तते मे त्वनध्यै।
 मनश्चेन्न लग्नं गुरोराङ्गिपद्मे
 ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥८॥

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्यदेही
 यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही।
 लभेद्वाज्ञितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञं
 गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य

श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गुर्वष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ तोटकाष्टकम् ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम्।
 सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
 व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
 श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यं
 तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मदुरुस्त्रिमि ॥

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलघे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे।
 हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥ १ ॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्।
 रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥ २ ॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते।
 कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥ ३ ॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतसि कौतुकिता।
मम वारय मोह-महा-जलधिं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता।
अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महा-महसश्छलतः।
अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुञ्जव पुञ्जव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः।
शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो।
द्रूतमेव विधेहि कृपां सहजां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥

॥इति श्री-तोटकाचार्यविरचितं श्री-तोटकाष्टकं सम्पूर्णम्॥



॥ कामाक्षी सुप्रभातम् ॥

जगद्वन विधौ त्वं जागरूका भवानि
 तव तु जननि निद्रामात्मवत्कल्पयित्वा।
 प्रतिदिवसमहं त्वां बोधयामि प्रभाते
 त्वयि कृतमपराधं सर्वमेतं क्षमस्व ॥

यदि प्रभातं तव सुप्रभातं
 तदा प्रभातं मम सुप्रभातम्।
 तस्मात् प्रभाते तव सुप्रभातं
 वक्ष्यामि मातः कुरु सुप्रभातम् ॥

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

यस्याङ्गिपद्म-मकरन्दनिषेवणात् त्वं
 जिह्वां गताऽसि वरदे मम मन्दवद्धः।
 यस्याम्ब नित्यमनघे हृदये विभासि
 तं चन्द्रशेखरगुरुं प्रणमामि नित्यम् ॥

जये जयेन्द्रो गुरुणा ग्रहीतो
 मठाधिपत्ये शशिशेखरेण।
 यथा गुरुः सर्वगुणोपपन्नो
 जयत्यसौ मङ्गलमातनोतु ॥

शुभं दिशतु नो देवी कामाक्षी सर्वमङ्गला
 शुभं दिशतु नो देवी कामकोटी-मठेशः।
 शुभं दिशतु तच्छिष्य-सद्गुरुर्नौ जयेन्द्रो
 सर्वं मङ्गलमेवास्तु मङ्गलानि भवन्तु नः ॥

॥ सुप्रभातम् ॥

कामाक्षि देव्यम्ब तवाऽऽद्रद्दृष्ट्या
 मूकः स्वयं मूककर्विर्यथाऽसीत्।
 तथा कुरु त्वं परमेशजाये
 त्वत्पादमूले प्रणतं दयार्द्दे ॥ १ ॥
 उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरदे उत्तिष्ठ जगदीश्वरि।
 उत्तिष्ठ जगदाधारे त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥ २ ॥
 शृणोषि कच्चिद्-ध्वनिरुत्थितोऽयं
 मृदङ्गभेरीपटहानकानाम् ।
 वेदध्वनिं शिक्षितभूसुराणां
 शृणोषि भद्रे कुरु सुप्रभातम् ॥ ३ ॥
 शृणोषि भद्रे ननु शङ्खघोषं
 वैतालिकानां मधुरं च गानम्।
 शृणोषि मातः पिककुकुटानां
 ध्वनिं प्रभाते कुरु सुप्रभातम् ॥ ४ ॥
 मातर्निरीक्ष्य वदनं भगवान् शशाङ्को
 लज्जान्वितः स्वयमहो निलयं प्रविष्टः।
 द्रष्टुं त्वदीय वदनं भगवान् दिनेशो
 ह्यायाति देवि सदनं कुरु सुप्रभातम् ॥ ५ ॥
 पश्याम्ब केच्चिद्-धृतपूर्णकुम्भाः
 केच्चिद्-दयार्द्दे धृतपुष्पमालाः।
 काचित् शुभाङ्गो ननुवाद्यहस्ताः
 तिष्ठन्ति तेषां कुरु सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

भेरीमृदङ्गपणवानकवाद्यहस्ताः
 स्तोतुं महेशदयिते स्तुतिपाठकास्त्वाम्।
 तिष्ठन्ति देवि समयं तव काङ्क्षमाणाः
 ह्युत्तिष्ठ दिव्यशयनात् कुरु सुप्रभातम्॥७॥
 मातर्नीरीक्ष्य वदनं भगवान् त्वदीयं
 नैवोत्थितः शशिधिया शयितस्तवाङ्गे।
 सम्बोधयाऽशु गिरिजे विमलं प्रभातं
 जातं महेशदयिते कुरु सुप्रभातम्॥८॥
 अन्तश्चरन्त्यास्तव भूषणानां
 झलझलध्वनिं नूपुरकङ्कणानाम्।
 श्रुत्वा प्रभाते तव दर्शनार्थी
 द्वारि स्थितोऽहं कुरु सुप्रभातम्॥९॥
 वाणी पुस्तकमम्बिके गिरिसुते पद्मानि पद्मासना
 रम्भा त्वम्बरडम्बरं गिरिसुता गङ्गा च गङ्गाजलम्।
 काली तालयुगं मृदङ्गयुगलं बृन्दा च नन्दा तथा
 नीला निर्मलदर्पण-धृतवती तासां प्रभातं शुभम्॥१०॥
 उत्थाय देवि शयनाद्वगवान् पुरारिः
 स्त्रातुं प्रयाति गिरिजे सुरलोकनद्याम्।
 नैको हि गन्तुमनघे रमते दयार्द्दे
 ह्युत्तिष्ठ देवि शयनात् कुरु सुप्रभातम्॥११॥
 पश्याम्ब केचित्कलपुष्पहस्ताः
 केचित् पुराणानि पठन्ति मातः।
 पठन्ति वेदान् बहवस्तवाऽरे
 तेषां जनानां कुरु सुप्रभातम्॥१२॥

लावण्यशेवधिमवेक्ष्य चिरं त्वदीयं
 कन्दर्पदर्पदलनोऽपि वशं गतस्ते।
 कामारि-चुम्बित-कपोलयुगं त्वदीयं
 द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १३॥

गाङ्गेयतोयममवाह्य मुनीश्वरास्त्वां
 गङ्गाजलैः स्नपयितुं बहवो घटांश्च।
 धृत्वा शिरःसु भवतीमभिकाङ्गमाणाः
 द्वारि स्थिता हि वरदे कुरु सुप्रभातम्॥ १४॥

मन्दार-कुन्द-कुसुमैरपि जातिपुष्पैः
 मालाकृता विरचितानि मनोहराणि।
 माल्यानि दिव्यपदयोरपि दातुमम्ब
 तिष्ठन्ति देवि मुनयः कुरु सुप्रभातम्॥ १५॥

काञ्ची-कलाप-परिरम्भनितम्बविम्बं
 काश्मीर-चन्दन-विलेपित-कण्ठदेशम्।
 कामेशा-चुम्बित-कपोलमुदारनासां
 द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १६॥

मन्दस्मितं विमलचारुविशालनेत्रं
 कण्ठस्थलं कमलकोमलगर्भगौरम्।
 चक्राङ्गितं च युगलं पदयोर्मृगाक्षि
 द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १७॥

मन्दस्मितं त्रिपुरनाशकरं पुरारेः
 कामेश्वरप्रणयकोपहरं स्मितं ते।
 मन्दस्मितं विपुलहासमवेक्षितुं ते
 मातः स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ १८॥
 माता शिशूनां परिरक्षणार्थं
 न चैव निद्रावशमेति लोके।
 माता त्रयाणां जगतां गतिस्त्वं
 सदा विनिद्रा कुरु सुप्रभातम्॥ १९॥
 मातर्मुरारिकमलासनवन्दिताङ्गाः
 हृद्यानि दिव्यमधुराणि मनोहराणि।
 श्रोतुं तवाम्ब वचनानि शुभप्रदानि
 द्वारि स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ २०॥
 दिगम्बरो ब्रह्मकपालपाणिः
 विकीर्णकेशः फणिवेष्टिताङ्गः।
 तथाऽपि मातस्तव देविसज्जात्
 महेश्वरोऽभूत् कुरु सुप्रभातम्॥ २१॥
 अयि तु जननि दत्तस्तन्यपानेन देवि
 द्रविडशिशुरभूद्वै ज्ञानसम्पन्नमूर्तिः।
 द्रविडतनयभुक्तक्षीरशेषं भवानि
 वितरसि यदि मातः सुप्रभातं भवेन्मे॥ २२॥
 जननि तव कुमारः स्तन्यपानप्रभावात्
 शिशुरपि तव भर्तुः कर्णमूले भवानि।
 प्रणवपदविशेषं बोधयामास देवि
 यदि मयि च कृपा ते सुप्रभातं भवेन्मे॥ २३॥

त्वं विश्वनाथस्य विशालनेत्रा
हालास्यनाथस्य नु मीननेत्रा।
एकाम्रनाथस्य नु कामनेत्रा
कामेशजाये कुरु सुप्रभातम्॥ २४॥

श्रीचन्द्रशेखरगुरुर्भगवान् शरण्ये
त्वत्पादभक्तिभरितः फलपुष्पपाणिः।
एकाम्रनाथदयिते तव दर्शनार्थी
तिष्ठत्ययं यतिवरो मम सुप्रभातम्॥ २५॥

एकाम्रनाथदयिते ननु कामपीठे
सम्पूजिताऽसि वरदे गुरुशङ्करेण।
श्रीशङ्करादिगुरुवर्य-समर्चिताऽङ्गिं
द्रष्टुं स्थिता वयमये कुरु सुप्रभातम्॥ २६॥

दुरितशमनदक्षौ मृत्युसन्तासदक्षौ
चरणमुपगतानां मुक्तिदौ ज्ञानदौ तौ।
अभयवरदहस्तौ द्रष्टुमम्ब स्थितोऽहं
त्रिपुरदलनजाये सुप्रभातं ममाऽर्ये॥ २७॥

मातस्त्वदीयचरणं हरिपद्मजाद्यैः
वन्द्यं रथाङ्ग-सरसीरुह-शङ्खचिह्नम्।
द्रष्टुं च योगिजनमानसराजहंसं
द्वारि स्थितोऽस्मि वरदे कुरु सुप्रभातम्॥ २८॥

पश्यन्तु केचिद्वदनं त्वदीयं
 स्तुवन्तु कल्याणगुणांस्त्वान्ये।
 नमन्तु पादाभ्युगं त्वदीयाः
 द्वारि स्थितानां कुरु सुप्रभातम्॥२९॥

केचित् सुमेरोः शिखरेऽतितुङ्गे
 केचिन्मणिद्वीपवरे विशाले।
 पश्यन्तु केचित् त्वमृताब्धिमध्ये
 पश्याम्यहं त्वामिह सुप्रभातम्॥३०॥

शम्भोर्वामाङ्गसंस्थां शशिनिभवदनां नीलपद्मायताक्षीं
 श्यामाङ्गां चारुहासां निबिडतरकुचां पक्वबिम्बाधरोष्ठीम्।
 कामाक्षीं कामदात्रीं कुटिलकचभरां भूषणैर्मूषिताङ्गीं
 पश्यामः सुप्रभाते प्रणतजनिमतामद्य नः सुप्रभातम्॥३१॥

कामप्रदाकल्पतरुर्विभासि
 नान्या गतिर्मै ननु चातकोऽहम्।
 वर्षस्यमोघः कनकाम्बुधाराः
 काश्चित्तु धारा मयि कल्पयाऽऽशु॥३२॥

त्रिलोचनप्रियां वन्दे वन्दे त्रिपुरसुन्दरीम्।
 त्रिलोकनायिकां वन्दे सुप्रभातं ममाम्बिके॥३३॥

कामाक्षि देव्यम्ब तवाऽद्रद्दृष्ट्या
 कृतं मयेदं खलु सुप्रभातम्।
 सद्यः फलं मे सुखमम्ब लब्धं
 तथा च मे दुःखदशा गता हि॥३४॥

ये वा प्रभाते पुरतस्तवाऽऽयै

पठन्ति भक्त्या ननु सुप्रभातम्।

शृणवन्ति ये वा त्वयि बद्धचित्ताः

तेषां प्रभातं कुरु सुप्रभातम्॥३५॥

॥ इति श्री-लक्ष्मीकान्त-शर्मा-विरचितं श्री-कामाक्षीसुप्रभातं
सम्पूर्णम्॥

॥ कामाक्षी-माहात्म्यम् ॥

स्वामिपुष्करिणीतीर्थं पूर्वसिन्धुः पिनाकिनी।

शिलाहृदश्तुर्मध्यं यावत् तुण्डीरमण्डलम्॥ १ ॥

मध्ये तुण्डीरभूवृत्तं कम्पा-वेगवती-द्वयोः।

तयोर्मध्यं कामकोष्ठं कामाक्षी तत्र वर्तते॥ २ ॥

स एव विग्रहो देव्या मूलभूतोऽद्विराङ्गुवः।

नान्योऽस्ति विग्रहो देव्याः काञ्च्यां तन्मूलविग्रहः॥ ३ ॥

जगत्कामकलाकारं नाभिस्थानं भुवः परम्।

पदपद्मस्य कामाक्ष्याः महापीठमुपास्महे॥ ४ ॥

कामकोटिः स्मृतः सोऽयं कारणादेव चिन्नभः।

यत्र कामकृतो धर्मो जन्तुना येन केन वा।

सकृद्वाऽपि सुधर्माणां फलं फलति कोटिशः॥ ५ ॥

यो जपेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् मन्त्रमिष्टार्थैवतम्।

कोटिवर्णफलेनैव मुक्तिलोकं स गच्छति॥ ६ ॥

यो वसेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् क्षणार्धं वा तदर्धकम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः साक्षादेवी नराकृतिः ॥७॥

गायत्रीमण्डपाधारं भूनाभिस्थानमुत्तमम्।
पुरुषार्थप्रदं शम्भोर्बिलाभ्रं तं नमाम्यहम् ॥८॥

यः कुर्यात् कामकोष्ठस्य बिलाभ्रस्य प्रदक्षिणम्।
पदसङ्घाक्रमेणैव गोगर्भजननं लभेत् ॥९॥

विश्वकारणनेत्राद्यां श्रीमत्तिपुरसुन्दरीम्।
बन्धकासुरसंहन्त्रीं कामाक्षीं तामहं भजे ॥१०॥

पराजन्मदिने काञ्चां महाभ्यन्तरमार्गतः।
योऽर्चयेत् तत्र कामाक्षीं कोटिपूजाफलं लभेत्।
तत्फलोत्पन्नकैवल्यं सकृत् कामाक्षिसेवया ॥११॥

त्रिस्थाननिलयं देवं त्रिविधाकारमन्युतम्।
प्रतिलिङ्गाग्रसंयुक्तं भूतवन्यं तमाश्रये ॥१२॥

य इदं प्रातरुत्थाय स्थानकाले पठेन्नरः।
द्वादशश्लोकमात्रेण श्लोकोक्तफलमाप्नुयात् ॥

॥ इति श्री-कामाक्षी-विलासे त्रयोविंशोऽध्याये श्री-कामाक्षी-माहात्म्यं
सम्पूर्णम् ॥

॥ कामाक्षी-स्तोत्रम् ॥

कल्पानोकह-पुष्प-जाल-विलसन्-नीलालकां मातृकां
कान्तां कञ्ज-दलेक्षणां कलि-मल-प्रधर्वसिनीं कालिकाम्।
काञ्ची-नूपुर-हार-दाम-सुभगां काञ्ची-पुरी-नायिकां
कामाक्षीं करि-कुम्भ-सन्निभ-कुचां वन्दे महेशप्रियाम् ॥ १ ॥

काशाभांशुक-भासुरां प्रविलसत्-कोशातकी-सन्निभां
 चन्द्रार्कानल-लोचनां सुरुचिरालङ्कार-भूषोज्ज्वलाम्।
 ब्रह्म-श्रीपति-वासवादि-मुनिभिः संसेविताङ्गि-द्वयां
 कामाक्षीं गज-राज-मन्द-गमनां वन्दे महेशप्रियाम्॥२॥
 ऐं क्लीं सौर-इति यां वदन्ति मुनयस्तत्त्वार्थ-रूपां परां
 वाचाम् आदिम-कारणं हृदि सदा ध्यायन्ति यां योगिनः।
 बालां फाल-विलोचनां नव-जपा-वर्णां सुषुम्नाश्रितां
 कामाक्षीं कलितावतंस-सुभगां वन्दे महेशप्रियाम्॥३॥
 यत्पादाम्बुज-रेणु-लेशम् अनिशं लब्ध्वा विधत्ते विधिर्-
 विश्वं तत् परिपाति विष्णुरखिलं यस्याः प्रसादाच्चिरम्।
 रुद्रः संहरति क्षणात् तदखिलं यन्मायया मोहितः
 कामाक्षीम् अति-चित्र-चारु-चरितां वन्दे महेशप्रियाम्॥४॥
 सूक्ष्मात् सूक्ष्म-तरां सुलक्षित-तनुं क्षान्ताक्षरैर्लक्षितां
 वीक्षा-शिक्षित-राक्षसां त्रिभुवन-क्षेमङ्करीम् अक्षयाम्।
 साक्षाल्क्षण-लक्षिताक्षर-मर्यां दाक्षायणीं साक्षिणीं
 कामाक्षीं शुभलक्षणैः सुललितां वन्दे महेशप्रियाम्॥५॥
 ओङ्काराङ्गण-दीपिकाम् उपनिषत्-प्रासाद-पारावतीम्
 आम्नायाम्बुधि-चन्द्रिकाम् अघ-तमः-प्रधंस-हंस-प्रभाम्।
 काञ्ची-पट्टण-पञ्चरात्तर-शुक्रीं कारुण्य-कल्पोलिनीं
 कामाक्षीं शिव-कामराज-महिषीं वन्दे महेशप्रियाम्॥६॥
 हीङ्कारात्मक-वर्ण-मात्र-पठनादैन्द्रीं श्रियं तन्वतीं
 चिन्मात्रां भुवनेश्वरीम् अनुदिनं भिक्षा-प्रदान-क्षमाम्।
 विश्वाघौघ-निवारिणीं विमलिनीं विश्वम्भरां मातृकां
 कामाक्षीं परिपूर्ण-चन्द्र-वदनां वन्दे महेशप्रियाम्॥७॥

वाग्-देवीति च यां वदन्ति मुनयः क्षीराब्धि-कन्येति च
 क्षोणी-भृत्-तनयेति च श्रुति-गिरो याम् आमनन्ति स्फुटम्।
 एकानेक-फल-प्रदां बहु-विधाऽऽकारास्तनूस्तन्वतीं
 कामाक्षीं सकलार्ति-भञ्जन-परां वन्दे महेशप्रियाम्॥८॥

मायाम् आदिम-कारणं त्रिजगताम् आराधिताङ्गि-द्वयाम्
 आनन्दामृत-वारि-राशि-निलयां विद्यां विपश्चिद्वियाम्।
 माया-मानुष-रूपिणीं मणि-लसन्मध्यां महामातृकां
 कामाक्षीं करिराज-मन्दगमनां वन्दे महेशप्रियाम्॥९॥

कान्ता काम-दुधा करीन्द्र-गमना कामारि-वामाङ्ग-गा
 कल्याणी कलितावतार-सुभगा कस्तूरिका-चर्चिता।
 कम्पा-तीर-रसाल-मूल-निलया कारुण्य-कल्लोलिनी
 कल्याणानि करोतु मे भगवती काञ्ची-पुरी-देवता॥१०॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-कामाक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ मीनाक्षीपञ्चरत्नम्॥

उद्घानु-सहस्रकोटिसदृशां केयूरहारोज्ज्वलां
 विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्गिरुचिरां पीताम्बरालङ्कृताम्।
 विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवां
 मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥१॥

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्रप्रभां
शिङ्गन्मूपुरकिङ्गणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेवितां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥२॥

श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां हीङ्गारमन्त्रोज्ज्वलां
श्रीचक्राङ्गित-बिन्दुमध्यवसर्तीं श्रीमत्सभानायकीम्।
श्रीमत्पण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥३॥

श्रीमत्सुन्दरनायकीं भयहरां ज्ञानप्रदां निर्मलां
श्यामाभां कमलासनार्चितपदां नारायणस्यानुजाम्।
वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिकां नानाविधाडाम्बिकां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥४॥

नानायोगिमुनीन्द्रहन्त्रिवसर्तीं नानार्थसिद्धिप्रदां
नानापुष्पविराजिताङ्गियुगलां नारायणेनार्चिताम्।
नादब्रह्ममयीं परात्परतरां नानार्थतत्त्वात्मिकां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारान्निधिम्॥५॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्गरभगवतः कृतौ
श्री-मीनाक्षीपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ ललितापञ्चरत्नम् ॥

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
 बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
 आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
 मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ॥ १ ॥

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
 रत्नाङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम्।
 माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
 पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥ २ ॥

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
 भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
 पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
 पद्माङ्गुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ॥ ३ ॥

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
 त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
 विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
 विश्वेश्वरीं निगमवाञ्चनसातिदूराम् ॥ ४ ॥

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
 कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
 श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
 वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥ ५ ॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विमलसौरव्यमनन्तकीर्तिम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य

श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-ललितापञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ मूकसारः ॥

॥ १-आर्याशतके ॥

[कारण-पर-चिद्रूपा काञ्चीपुर-सीम्भि कामपीठगता।
काचन विहरति करुणा काश्मीर-स्तबक-कोमलाङ्गलता] ॥ १ ॥ १-१

कुण्डलि कुमारि कुटिले चण्ड चराचर-सवित्रि चामुण्डे।
गुणिनि गुहारिणि गुह्ये गुरुमूर्ते त्वां नमामि कामाक्षि॥ २ ॥ १-४६

अभिदाकृतिर्भिदाकृतिरचिदाकृतिरपि चिदाकृतिर्मातः।
अनहन्ता त्वमहन्ता भ्रमयसि कामाक्षि शाश्वती विश्वम्॥ ३ ॥ १-४७

काम-परिपन्थि-कामिनि कामेश्वरि काम-पीठ-मध्य-गते।
काम-दुघा भव कमले काम-कले कामकोटि कामाक्षि॥ ४ ॥ १-४८

लीये पुर-हर-जाये माये तव तरुण-पल्लव-च्छाये।
चरणे चन्द्रा-भरणे काञ्ची-शरणे नतार्ति-संहरणे॥ ५ ॥ १-४९

स्मर-मथन-वरण-लोला मन्मथ-हेला-विलास-मणि-शाला।
कनक-रुचि-चौर्य-शीला त्वमम्ब बाला कराजा-धृत-माला॥ ६ ॥ १-५०

अन्तरपि बहिरपि त्वं जन्तुतेरन्तकान्तकृदहन्ते।
चिन्तितसन्तानवतां सन्ततमपि तन्तनीषि महिमानम्॥७॥ १-९८

[जय जय जगदम्ब शिवे
जय जय कामाक्षि जय जयाद्रिसुते।
जय जय महेशदयिते
जय जय चिद्रगनकौमुदीधारे]॥८॥ १-१००

॥ २-पादारविन्दशतके ॥

जपालक्ष्मीशोणो जनितपरमज्ञाननलिनी-
विकासव्यासझो विफलितजगजाड्यगरिमा।
मनः पूर्वाद्रिं मे तिलकयतु कामाक्षि तरसा
तमस्काण्डद्रोही तव चरणपाथोजरमणः॥९॥ २-१७

गिरां दूरौ चोरौ जडिमतिमिराणां कृतजगत्
परित्राणौ शोणौ मुनिहृदयलीलैकनिपुणौ।
नखैः स्मेरौ सारौ निगमवच्चसां खण्डतभव-
ग्रहोन्मादौ पादौ तव जननि कामाक्षि कलये॥१०॥ २-४४

भवाम्भोधौ नौकां जडिमविपिने पावकशिखाम्
अमर्येन्द्रादीनामधिमुकुटमुत्तंसकलिकाम् ।

जगत्तापे ज्योत्त्वामकृतकवचः पञ्चरपुटे
शुकर्णी कामाक्ष्या मनसि कलये पादयुगलीम्॥११॥ २-४९

कवित्वश्रीमिश्रीकरणनिपुणौ रक्षणचणौ
विपन्नानां श्रीमन्नलिनमसृणौ शोणकिरणौ।

मुनीन्द्राणामन्तःकरणशारणौ मन्दसरणौ
मनोज्ञौ कामाक्ष्या दुरितहरणौ नौमि चरणौ॥१२॥ २-७३

परस्मात्सर्वस्मादपि च परयोर्मुक्तिकरयोः
 नखश्रीभिज्योत्साकलिततुलयोस्ताम्रतलयोः।
 निलीये कामाक्ष्या निगमनुतयोर्नाकिनतयोः
 निरस्तप्रोन्मीलन्नलिनमदयोरेव पदयोः ॥ १३ ॥ २-७४

रणन्मञ्जीराभ्यां ललितगमनाभ्यां सुकृतिनाम्
 मनोवास्तव्याभ्यां मथिततिमिराभ्यां नखरुचा।
 निधेयाभ्यां पत्या निजशिरसि कामाक्षि सततम्
 नमस्ते पादाभ्यां नलिनमृदुलाभ्यां गिरिसुते ॥ १४ ॥ २-९६

यशः सूते मातर्मधुरकवितां पक्ष्मलयते
 श्रियं दत्ते चित्ते कमपि परिपाकं प्रथयते।
 सतां पाशग्रन्थिं शिथिलयति किं किं न कुरुते
 प्रपन्ने कामाक्ष्याः प्रणतिपरिपाटी चरणयोः ॥ १५ ॥ २-९९

मनीषां माहेन्द्रीं ककुभमिव ते कामपि दशाम्
 प्रधत्ते कामाक्ष्याश्वरणतरुणादित्यकिरणः।
 यदीये सम्पर्कं धृतरसमरन्दा कवयताम्
 परीपाकं धत्ते परिमलवती सूक्तिनलिनी ॥ १६ ॥ २-१००

॥ ३-स्तुतिशतके ॥

राकाचन्द्रसमानकान्तिवदना नाकाधिराजस्तुता
 मूकानामपि कुर्वती सुरधुनीनीकाशवाग्वैभवम्।
 श्रीकाश्वीनगरीविहाररसिका शोकापहन्त्री सताम्
 एका पुण्यपरम्परा पशुपतेराकारिणी राजते ॥ १७ ॥ ३-११

जाता शीतल-शैलतः सुकृतिनां दृश्या परं देहिनां
 लोकानां क्षण-मात्र-संस्मरणतः सन्ताप-विच्छेदिनी ।
 आश्वर्यं बहु खेलनं वितनुते नैश्वल्य-माविभ्रती
 कम्पायास्तट-सीम्नि काऽपि तटिनी कारुण्य-पाथोमयी ॥ १८ ॥ ३-१२
 वरीवर्तु स्थेमा त्वयि मम गिरां देवि मनसो
 नरीनर्तु प्रौढा वदनकमले वाक्यलहरी ।
 चरीचर्तु प्रज्ञाजननि जडिमानः परजने
 सरीसर्तु स्वैरं जननि मयि कामाक्षि करुणा ॥ १९ ॥ ३-४८
 परा विद्या हृद्याश्रितमदनविद्या मरकत-
 प्रभानीला लीलापरवशितशूलायुधमनाः ।
 तमःपूरं दूरं चरणनतपौरन्दरपुरी-
 मृगाक्षी कामाक्षी कमलतरलाक्षी नयतु मे ॥ २० ॥ ३-५६
 यस्या वाटी हृदयकमलं कौसुमी योगभाजाम्
 यस्याः पीठी सततशिशिरा शीकरैर्माकरन्दैः ।
 यस्याः पेटी श्रुतिपरिचलन्मौलिरत्नस्य काञ्ची
 सा मे सोमाभरणमहिषी साधयेत्काङ्क्षितानि ॥ २१ ॥ ३-७७
 परामृतझरीषुता जयति नित्यमन्तश्शरी
 भुवामपि बहिश्शरी परमसंविदेकात्मिका ।
 महद्विरपरोक्षिता सततमेव काञ्चीपुरे
 ममान्वहमहमतिर्मनसि भातु माहेश्शरी ॥ २२ ॥ ३-९०
 चराचरजगन्मयीं सकलहृन्मयीं चिन्मयीम्
 गुणत्रयमयीं जगत्त्रयमयीं त्रिधामामयीम् ।
 परापरमयीं सदा दशदिशां निशाहर्मयीम्
 परां सततसन्मयीं मनसि चिन्मयीं शीलये ॥ २३ ॥ ३-९७

भुवनजननि भूषाभूतचन्द्रे नमस्ते
 कलुषशमनि कम्पातीरगेहे नमस्ते।
 निखिलनिगमवेदे नित्यरूपे नमस्ते
 परशिवमयि पाशच्छेदहस्ते नमस्ते॥ २४॥ ३-१९

समरविजयकोटी साधकानन्दधाटी
 मृदुगुणपरिपेटी मुख्यकादम्बवाटी।
 मुनिनुतपरिपाटी मोहिताजाणडकोटी
 परमशिववधूटी पातु मां कामकोटी॥ २५॥ ३-१०१

॥ ४-कटाक्षशतके ॥

मातर्जयन्ति ममता-ग्रह-मोक्षणानि
 माहेन्द्र-नील-रुचि-शिक्षण-दक्षिणानि।
 कामाक्षि कल्पित-जगत्त्रय-रक्षणानि
 त्वद्वीक्षणानि वरदान-विचक्षणानि॥ २६॥ ४-२

नीलोऽपि रागमधिकं जनयन्पुरारेः
 लोलोऽपि भक्तिमधिकां दृढयन्नराणाम्।
 वक्रोऽपि देवि नमतां समतां वितन्वन्
 कामाक्षि नृत्यतु मयि त्वदपाङ्गपातः॥ २७॥ ४-१६

अत्यन्त-शीतलमतन्द्रयतु क्षणार्धम्
 अस्तोक-विभ्रममनङ्गविलासकन्दम्।
 अल्प-स्मिताद्यतमपारकृपाप्रवाहम्
 अक्षि-प्ररोहमन्निरान्मयि कामकोटि॥ २८॥ ४-२४

मातः क्षणं स्नपय मां तव वीक्षितेन
 मन्दाक्षितेन सुजनैरपरोक्षितेन।
 कामाक्षि कर्म-तिमिरोत्कर-भास्करेण
 श्रेयस्करेण मधुप-द्युति-तस्करेण ॥ २९ ॥ ४-४५

कैवल्यदाय करुणारसकिङ्कराय
 कामाक्षि कन्दलितविभ्रमशङ्कराय।
 आलोकनाय तव भक्तशिवङ्कराय
 मातर्नमोऽस्तु परतन्त्रितशङ्कराय ॥ ३० ॥ ४-४६

संसारधर्मपरितापजुषां नराणाम्
 कामाक्षि शीतलतराणि तवेक्षितानि।
 चन्द्रातपन्ति घनचन्द्रनकर्दमन्ति
 मुक्तागुणन्ति हिमवारिनिषेचनन्ति ॥ ३१ ॥ ४-७७

बाणेन पुष्पधनुषः परिकल्प्यमान-
 त्राणेन भक्तमनसां करुणाकरेण।
 कोणेन कोमलदृशस्तव कामकोटि
 शोणेन शोषय शिवे मम शोकसिन्धुम् ॥ ३२ ॥ ४-७४

अज्ञातभक्तिरसमप्रसरद्विवेकम्
 अत्यन्तगर्वमनधीतसमस्तशास्त्रम् ।
 अप्राप्तसत्यमसमीपगतं च मुक्तेः
 कामाक्षि मामवतु ते करुणाकटाक्षः ॥ ३३ ॥ ४-१००

॥ ५-मन्दस्मितशतके ॥

कपौरमृतैर्जग्जननि ते कामाक्षि चन्द्रातपैः
मुक्ताहारगुणैर्मृणालवलयैर्मुग्धस्मितश्रीरियम् ।

श्रीकाश्चीपुरनायिके समतया संस्तूयते सज्जनैः

तत्ताद्वच्चम तापशान्तिविधये किं देवि मन्दायते ॥ ३४ ॥ ५-२४

चेतः शीतलयन्तु नः पशुपतेरानन्दजीवातवो
नम्राणां नयनाध्वसीमसु शरचन्द्रातपोपक्रमाः ।

संसाराख्यसरोरुहाकरखलीकारे तुषारोत्करा:

कामाक्षि स्मरकीर्तिवीजनिकरास्त्वन्मन्दहासाङ्कुराः ॥ ३५ ॥ ५-२५

सूतिः श्वेतिमकन्दलस्य वसतिः शृङ्गरसारश्रियः
पूर्तिः सूक्तिद्वारीरसस्य लहरी कारुण्यपाथोनिधेः ।

वाटी काचन कौसुमी मधुरिमस्वाराज्यलक्ष्म्यास्त्व

श्रीकामाक्षि ममास्तु मङ्गलकरी हासप्रभाचातुरी ॥ ३६ ॥ ५-२५

इन्धाने भववीतिहोत्रनिवहे कर्माघच्छण्डानिल-
प्रौढिन्ना बहुलीकृते निपतितं सन्तापचिन्ताकुलम् ।

मातर्मा परिषिञ्च किञ्चिद्मलैः पीयूषवर्षैरिव

श्रीकामाक्षि तव स्मितद्युतिकणैः शौशिर्यलीलाकरैः ॥ ३७ ॥ ५-२६

क्रीडालोलकृपासरोरुहमुखीसौधाङ्गेभ्यः कवि-

श्रेणीवाक्परिपाटिकामृतद्वारीसूतीगृहेभ्यः शिवे ।

निर्वाणाङ्कुरसार्वभौमपदवीसिंहासनेभ्यस्त्व

श्रीकामाक्षि मनोज्ञमन्दहसितज्योतिष्ठणेभ्यो नमः ॥ ३८ ॥ ५-२००

आर्यमेव विभावयन् मनसि यः पादारविन्दं पुरः
 पश्यन्नारभते स्तुतिं स नियतं लब्ध्वा कटाक्ष-च्छविम्।
 कामाक्ष्या मृदुल-स्मितांशु-लहरी-ज्योत्स्ना-वयस्यान्विताम्
 आरोहत्यपवर्ग-सौध-वलभीमानन्द-वीची-मयीम् ॥ ३९ ॥ ५-१०१

॥ इति श्री-काञ्चीजगद्गुरु-श्री-चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती-श्रीचरणैः
 श्री-मूकमहाकविप्रणीतायाः मूकपञ्चशत्याः सङ्घ्रहीतः मूकसारः
 सम्पूर्णः ॥



॥ गौरीदशकम् ॥

लीलारब्धस्थापितलुमाखिललोकां
 लोकातीतैर्योगिभिरन्तश्चिरमृग्याम्।
 बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ १ ॥

प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां
 नित्यं चित्ते निर्वृतिकाष्ठां कलयन्तीम्।
 सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तनुरूपां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ २ ॥

चन्द्रापीडानन्दितमन्दस्मितवक्रां
 चन्द्रापीडालङ्कृतनीलालकभाराम्।
 इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ३ ॥

आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं
 भूते भूते भूतकदम्बप्रसवित्रीम्।
 शब्दब्रह्मानन्दमयीं तां तडिदाभां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ४ ॥

मूलाधारादुत्थितवीथ्या विघ्रन्त्रं
 सौरं चान्द्रं व्याप्य विहारज्वलिताङ्गीम्।
 येयं सूक्ष्मात् सूक्ष्मतनुस्तां सुखरूपां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ५ ॥

नित्यः शुद्धो निष्कल एको जगदीशः
 साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च।
 विश्वत्राणक्रीडनलोलां शिवपतीं
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ६ ॥

यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं
 भूयो भूयः प्रादुरभूत्यितमेव।
 पत्या सार्धं तां रजतादौ विहरन्तीं
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ७ ॥

यस्यामोतं प्रोतमशेषं मणिमाला
 सूत्रे यद्वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
 तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ८ ॥

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्मुवनानि
 व्याप्य स्वैरं क्रीडति येयं स्वयमेका।
 कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ ९ ॥

आशापाशक्लेशविनाशं विदधानं
 पादाभ्मोजध्यानपराणां पुरुषाणाम्।
 ईशामीशार्धाङ्गहरां तामभिरामां
 गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥ १० ॥

प्रातःकाले भावविशुद्धः प्रणिधानाद्
 भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
 वाचां सिद्धिं सम्पदमग्र्यां शिवभक्तिं
 तस्यावश्यं पर्वतपुत्री विदधाति॥
 ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गौरीदशकं सम्पूर्णम्॥

॥ कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्॥

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्-
 लक्ष्मीस्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
 सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
 नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम्॥ १ ॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
 त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे।
 सान्निध्यमुद्यदरुणायुतसोदरस्य
 त्वद्विग्रहस्य परया सुधया प्रुतस्य॥ २ ॥

ईशित्वभावकलुषाः कति नाम सन्ति
 ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः।
 एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
 यः पादयोस्त्व च सकृत्प्रणति करोति ॥ ३ ॥

लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
 कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम्।
 कन्दर्पकोटिसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
 सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु ॥ ४ ॥

हीङ्गारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
 मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
 त्वत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय
 दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥ ५ ॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः
 क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः।
 आश्वासनाय किल मातरिदं तवार्घं
 देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥ ६ ॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
 देवि त्वदञ्जिसरसीरुहयोः प्रणामः।
 किं च स्फुरन्मकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
 द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति ॥ ७ ॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
 कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः ।
 आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
 त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम् ॥८॥
 हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
 भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु ।
 त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि
 त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव ॥९॥
 लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानाम्
 आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित् ।
 नूनं मयाऽपि सदृशं करुणैकपात्रं
 जातो जनिष्यति जनो न च जायते च ॥१०॥
 हीं हीमिति प्रतिदिनं जपतां जनानां
 किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे ।
 मालाकिरीटमद्वारणमाननीयान्स्-
 तान्सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥११॥
 सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
 साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि ।
 त्वद्वन्दनानि दुरितौघरोद्यतानि
 मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१२॥
 कल्पोपसंहरण-कल्पित-ताण्डवस्य
 देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य ।
 पाशाङ्कशैक्षव-शरासन-पुष्पबाणा
 सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरैका ॥१३॥

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं
 तेजः परं बहुल-कुञ्जम्-पञ्च-शोणम्।
 भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं
 मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्दम्॥ १४॥

हीङ्गारमेव तव नाम तदेव रूपं
 तवन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
 त्वत्तेजसा परिणतं वियदादि भूतं
 सौरव्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः॥ १५॥

हीङ्गारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितं
 स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्।
 तस्य क्षोणिमुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्वरस्थायिनी
 वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः॥ १६॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-कल्याणवृष्टिस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ श्यामलादण्डकम्॥

॥ ध्यानम्॥

माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं
 मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम्।
 माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गीं
 मातञ्जकन्यां मनसा स्मरामि॥ १॥

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥ २ ॥

॥ विनियोगः ॥

माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी।
कुर्यात् कटाक्षं कल्याणी कदम्बवनवासिनी ॥

॥ स्तुतिः ॥

जय मातङ्गतनये जय नीलोत्पलद्युते।
जय सङ्गीतरसिके जय लीलाशुकप्रिये ॥

॥ दण्डकम् ॥

जय जननि सुधासमुद्रान्-तरुद्यन्-मणिदीप-संरूढ-बिल्वाटवी-
मध्य-कल्प-द्रुमाकल्प-कादम्ब-कान्तार-वासप्रिये कृत्तिवासप्रिये
सर्वलोकप्रिये' सादरारब्ध-सङ्गीत-सम्भावना-सम्भ्रमालोल-
नीपस्त्रगावद्ध-चूलीसनाथत्रिके सानुमत्पुत्रिके' शेरवरीभूत-
शीतांशुरेखा-मयूरेखावली-बद्ध-सुखिग्ध-नीलालकश्रेणि-शृङ्गारिते
लोकसम्भाविते' कामलीला-धनुः सन्निभ-भ्रूलता-पुष्प-सन्दोह-
सन्देह-कृल्लोचने वाक्सुधासेचने' चारुगोरोचनापङ्क-केलीलला-
माभिरामे सुरामे रमे' प्रोल्लुसद्-वालिका-मौक्तिकश्रेणिका-चन्द्रिका-
मण्डलोद्घासि-गण्डस्थलन्यस्त-कस्तूरिका-पत्ररेखा-समुद्धूत-
सौरभ्य-सम्भ्रान्त-भृङ्गाङ्गनागीत-सान्दीभवन्-मन्द्रतन्त्रीस्वरे सुस्वरे
भास्वरे' वल्लकी-वादन-प्रक्रिया-लोल-तालीदलाबद्ध-ताटङ्क-
भूषाविशेषान्विते सिद्ध-सम्मानिते' दिव्यहालाम-दोद्वेलहेलाल-
सच्चक्षुरान्दोलन-श्रीसमाधिस-कण्ठैक-नीलोत्पले श्यामले

पूरिताशेष-लोकाभि-वाञ्छाफले श्रीफले' स्वेद-बिन्दूल्लसद्-
 भाल-लावण्य-निष्पन्द-सन्दोह-सन्देह-कृन्नासिका-मौक्तिके
 सर्वमन्त्रात्मिके कालिके' मुग्ध-मन्दस्मितो-दारवक्षस्फुरत्-
 पूर्ण-कर्पूर-ताम्बूल-खण्डोत्करे ज्ञानमुद्राकरे सर्वसम्पत्करे
 पद्मभास्वत्करे श्रीकरे' कुन्द-पुष्पद्युतिस्त्रिग्ध-दन्तावली-
 निर्मलालोल-कल्पोल-सम्मेल-नस्मेरशोणाधरे चारुवीणाधरे
 पक्वविम्बाधरे' सुललित-नवयौवनारम्भ-चन्द्रोदयोद्वेल-लावण्य-
 दुग्धार्णवाविर्भवत्कम्बु-विम्बोक-भृत्यन्थरे सत्कला-मन्दिरे मन्थरे'
 दिव्य-रत्नप्रभा-बन्धुरच्छन्न-हारादि-भूषा-समुद्योतमाना-नवद्याङ्गशोभे
 शुभे' रत्न-केयूर-रश्मिच्छटा-पल्लव-प्रोल्लसद्-दोलता-राजिते
 योगिभिः पूजिते' विश्व-दिष्ठ्यन्डलव्यास-माणिक्य-तेजः स्फुरत्-
 कङ्कणालङ्कृते विभ्रमालङ्कृते साधुभिः सत्कृते' वासरारम्भ-
 वेला-समुज्जृम्भ-माणारविन्द-प्रतिद्वन्द्व-पाणिद्वये सन्ततोद्यद्वये
 अद्वये' दिव्य-रत्नोर्मिका-दीधिति-स्तोम-सन्ध्यायमा-नाङ्गुली-
 पल्लवोद्यन्न-खेन्दु-प्रभा-मण्डले सञ्चुताखण्डले चित्रभामण्डले
 प्रोल्लसत्कुण्डले' तारकाराजि-नीकाशा-हारावलिस्मेर-चारुस्तना-
 भोगभारानमन्मध्य-वल्लीवलिच्छेद-वीची-समुद्यत-समुल्लास-
 सन्दर्शिताकार-सौन्दर्य-रत्नाकरे वल्लकी-भृत्यरे किङ्कर-श्रीकरे'
 हेम-कुमोप-मोत्तुङ्ग-वक्षोजभारावनम्रे त्रिलोकावनम्रे' लसद्वृत्त-
 गम्भीर-नाभी-सरस्तीर-शैवाल-शङ्काकर-श्यामरोमावली-भूषणे
 मञ्जुसम्भाषणे' चारुशिश्चत्कटीसूत्र-निर्भत्सितानङ्ग-लीला-
 धनुशिश्चनी-डम्बरे दिव्यरत्नाम्बरे' पद्मरागोल्लसन्-मेरवला-
 भास्वर-श्रोणि-शोभाजित-स्वर्ण-भूमृत्तले चन्द्रिका-शीतले'

विकसित-नवकिंशुकाताम्र-दिव्यांशु-कच्छन्न-चारूरु-शोभा-पराभूत-
 सिन्दूर-शोणाय-मानेन्द्र-मातङ्ग-हस्तार्गले वैभवानर्गले श्यामले'
 कोमलस्त्रिग्ध-नीलोत्पलोत्-पादितानङ्ग-तूणीर-शङ्काकरोदाम-
 जङ्घालते चारुलीलागते' नम्र-दिक्पाल-सीमन्तिनि कुन्तलस्त्रिग्ध-
 नीलप्रभा-पुञ्चसञ्जात-दूर्वाङ्कु-राशङ्क-सारङ्ग-संयोग-रिङ्गन्न-खेन्दूज्ज्वले
 प्रोज्ज्वले निर्मले' प्रहृदेवेश-लक्ष्मीश-भूतेश-तोयेश-वागीश-
 कीनाश-दैत्येश-यक्षेश-वाच्यग्नि-माणिक्य-संहष्ट-कोटीर-बाला-
 तपोदामलाक्षा-रसारुण्य-तारुण्य-लक्ष्मी-गृहीताङ्गि-पद्मे सुपद्मे
 उमे' सुरुचिर-नवरत्न-पीठस्थिते सुरिथिते रत्नपद्मासने रत्नसिंहासने
 शङ्खपद्मद्वयोपाश्रिते विश्रिते तत्र विभ्रेश-दुर्गावटु-क्षेत्रपालैर्युते
 मत्तमातङ्ग-कन्या-समूहान्विते' मञ्जुलामेनकाद्यङ्गनामानिते
 भैरवैरष्टभिर्वैष्टिते देवि वामादिभिः शक्तिभिः सेविते धात्रि-लक्ष्म्यादि-
 शक्तयष्टकैः संयुते मातृकामण्डलैर्मण्डिते' यक्ष-गन्धर्व-सिद्धाङ्गना-
 मण्डलैरचिते पञ्चबाणात्मिके पञ्चबाणेन रत्या च सम्भाविते
 प्रीतिभाजा वसन्तेन चानन्दिते' भक्तिभाजां परं श्रेयसे कल्पसे'
 योगिनां मानसे द्योतसे' छन्दसामोजसा भ्राजसे' गीत-विद्या-
 विनोदादि तृष्णोन कृष्णोन सम्पूज्यसे भक्तिमचेतसा वेधसा स्तूयसे
 विश्वहृद्येन वाद्येन विद्याधरैर्गीर्यसे' श्रवणहरदक्षिणकाणया वीणया
 किञ्चरैर्गीर्यसे यक्षगन्धर्व-सिद्धाङ्गना-मण्डलैरच्यसे' सर्वसौभाग्य-
 वाञ्छावतीभिर्वधूभिः सुराणां समाराध्यसे सर्वविद्याविशेषात्मकं
 चाटुगाथा-समुच्चारणं कण्ठ-मूलोळु-सद्वर्णराजित्रयं कोमलश्यामले-
 दारपक्षद्वयं तुण्डशोभाति-धूरीभवत् किंशुकाभं तं शुकं लालयन्ती
 परिक्रीडसे' पाणिपद्मद्वयेना-क्षमालामपि स्फाटिकीं ज्ञानसारात्मकं

पुस्तकं चापरेणाङ्कशं पाशमाविभ्रति येन सञ्चिन्त्यसे चेतसा तस्य
वक्रान्तरात् गद्यपद्यात्मिका भारती निःसरेत् येन वा यावका
भाकृतिर्भाव्यसे तस्य वश्या भवन्ति स्त्रियः पूरुषाः' येन वा
शातकुभद्युतिर्भाव्यसे' सोऽपि लक्ष्मीसहस्रैः परिक्रीडते' किं न
सिद्ध्येद्वपुः श्यामलं कोमलं चन्द्र-चूडान्वितं तावकं ध्यायतः'
तस्य लीला सरोवारिधिः' तस्य केलीवनं नन्दनं' तस्य भद्रासनं
भूतलं' तस्य गीर्देवता किङ्करी' तस्य चाऽऽज्ञाकरी श्री-स्वयम्'
सर्वतीर्थात्मिके सर्वमन्त्रात्मिके सर्वतन्त्रात्मिके सर्वयन्त्रात्मिके'
सर्वपीठात्मिके सर्वसत्त्वात्मिके सर्वशत्त्वात्मिके' सर्वविद्यात्मिके
सर्वयोगात्मिके सर्वरागात्मिके' सर्वशब्दात्मिके सर्ववर्णात्मिके
सर्वविश्वात्मिके सर्वगे' हे जगन्मातृके' पाहि मां पाहि मां पाहि मां'
देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः ॥

॥ इति महाकवि-कालिदासविरचितं श्री-श्यामलादण्डकं सम्पूर्णम् ॥

॥ महिषासुरमर्दिनि-स्तोत्रम् ॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १ ॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
 त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
 दनुज-निरोषिणि दितिसुत-रोषिणि दुर्मद-शोषिणि सिन्धुसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२॥
 अयि जगदम्ब-मदम्ब-कदम्ब-वनप्रिय-वासिनि हासरते
 शिखरि शिरोमणि तुङ्ग-हिमालय-शङ्क-निजालय-मध्यगते।
 मधु-मधुरे मधु-कैटभ-गञ्जिनि कैटभ-भञ्जिनि रासरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥३॥
 अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
 रिपु-गज-गण्ड-विदारण-चण्ड-पराक्रम-शुण्ड-मृगाधिपते।
 निज-भुज-दण्ड-निपातित-खण्ड-विपातित-मुण्ड-भटाधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥४॥
 अयि रण-दुर्मद-शत्रु-वधोदित-दुर्धर-निर्जर-शक्तिभृते
 चतुर-विचार-धुरीण-महाशिव-दूतकृत-प्रमथाधिपते।
 दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-कृतान्तमते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥५॥
 अयि शरणागत-वैरि-वधूवर-वीर-वराभय-दायकरे
 त्रिभुवन-मस्तक-शूल-विरोधि शिरोधि कृतामल-शूलकरे।
 दुमिदुमि-तामर-दुन्दुभिनाद-महो-मुखरीकृत-तिग्मकरे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥६॥
 अयि निज-हुङ्कृति मात्र-निराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
 समर-विशोषित-शोणित-बीज-समुद्धव-शोणित-बीजलते।
 शिव-शिव-शुभ्म-निशुभ्म-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥७॥

धनुरनु-सङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुर-दङ्ग-नटत्कटके
 कनक-पिशङ्ग-पृष्ठत्क-निषङ्ग-रसद्धट-श्वङ्ग-हतावटुके।
 कृत-चतुरङ्ग-बलक्षिति-रङ्ग-घटद्वहुरङ्ग-रटद्वटुके
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ८ ॥

जय जय जप्य-जयेजय-शब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
 भण-भण-भिञ्जिमि-भिङ्कृत-नूपुर-सिञ्जित-मोहित-भूतपते।
 नटित-नटार्ध-नटीनट-नायक-नाटित-नाट्य-सुगानरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर-कान्तियुते
 श्रित-रजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्रवृते।
 सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १० ॥

सहित-महाहव-मल्लम-तल्लिक-मल्लित-रल्लक-मल्लरते
 विरचित-वल्लिक-पल्लिक-मल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
 सितकृत-फुल्लसमुल्ल-सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ११ ॥

अविरल-गण्ड-गलन्मद-मेदुर-मत्त-मतङ्गज-राजपते
 त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधि रूप-पयोनिधि राजसुते।

अयि सुद-तीजन-लालसमानस-मोहन-मन्मथ-राजसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १२ ॥

कमल-दलामल-कोमल-कान्ति कलाकलितामल-भाललते
 सकल-विलास-कलानिलयक्रम-केलि-चलत्कल-हंसकुले।
 अलिकुल-सङ्कुल-कुवलय-मण्डल-मौलिमिल-द्वकुलालि-कुले
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १३ ॥

करमुरली-रव-वीजित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
 मिलित-पुलिन्द-मनोहर-गुजित-रज्जितशैल-निकुञ्जगते।
 निजगुणभूत-महाशबरीगण-सदुण-सम्भृत-केलितले
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १४ ॥
 कटितट-पीत-दुकूल-विचित्र-मयूख-तिरस्कृत-चन्द्ररुचे
 प्रणत-सुरासुर-मौलिमणिस्फुर-दंशुल-सन्नख-चन्द्ररुचे।
 जित-कनकाचल-मौलिपदोर्जित-निर्भर-कुञ्जर-कुम्भकुचे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १५ ॥
 विजित-सहस्रकरैक-सहस्रकरैक-सहस्रकरैकनुते
 कृतसुरतारक-सङ्खरतारक-सङ्खरतारक-सूनुसुते ।
 सुरथ-समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १६ ॥
 पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
 अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
 तव पदमेव परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १७ ॥
 कनकलसत्कल-सिन्धुजलैरनुसिञ्चिनुते गुण-रङ्गभुवं
 भजति स किं न शचीकुच-कुम्भ-तटी-परिरम्भ-सुखानुभवम्।
 तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८ ॥
 तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
 किमु पुरुहूत-पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखी क्रियते।
 मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १९ ॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
 अयि जगतो जननी कृपयाऽसि यथाऽसि तथाऽनुमितासिरते।
 यदुचितमत्र भवत्युरारि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ २० ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-महिषासुरमर्दिनि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ शीतलाष्टकम् ॥

अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेव ऋषिः।
 अनुष्टुप् छन्दः। शीतला देवता। लक्ष्मीर्बीजम्।
 भवानी शक्तिः। सर्वविस्फोटकनिवृत्यर्थं जपे विनियोगः॥

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासमभस्थां दिगम्बराम्।
 मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम्॥ १ ॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम्।
 यामासाद्य निवर्त्तत विस्फोटकभयं महत्॥ २ ॥

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्वाहपीडितः।
 विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति॥ ३ ॥

यस्त्वामुदकमध्ये तु ध्यात्वा सम्पूजयेन्नरः।
 विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते॥ ४ ॥

शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च।
 प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीविनौषधम्॥५॥

शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्त्यजान्।
 विस्फोटकविदीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षीणी॥६॥

गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम्।
 त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति सङ्घयम्॥७॥

न मन्त्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते।
 त्वामेकां शीतले धात्रीं नान्यां पश्यामि देवताम्॥८॥

मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम्।
 यस्त्वां सञ्चिन्तयेदेवि तस्य मृत्युर्न जायते॥९॥

अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा।
 विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते॥१०॥

श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः।
 उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत्॥११॥

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता।
 शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः॥१२॥

रासभो गर्दभश्वैव खरो वैशाखनन्दनः।
 शीतलावाहनश्वैव दूर्वाकन्दनिकृन्तनः॥१३॥

एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत्।
 तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुडः न जायते॥१४॥

शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्यकस्यचित्।
 दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै॥१५॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-शीतलाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ अन्नपूर्णास्तोत्रम् ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
 निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
 प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
 मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्-वक्षोजकुम्भान्तरी।
 काश्मीरागरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मकनिष्ठाकरी
 चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
 सर्वेश्वर्यकरी तपःफलकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्द्ररालयकरी गौरी उमा शङ्करी
 कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी।
 मोक्षद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
 लीलानाटकसूत्रखेलनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी।
 श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ५ ॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
 काश्मीरा त्रिपुरेश्वरी त्रिनयनी विश्वेश्वरी शर्वरी।
 स्वर्गद्वारकवाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ६ ॥

उर्वी सर्वजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी
 वेणीनीलसमानकुन्तलधरी नित्यान्नदानेश्वरी।
 साक्षान्मोक्षकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्रतरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
 वामे स्वादुपयोधरा प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
 भक्ताभीष्टकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ८ ॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी
 चन्द्रार्कान्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।
 मालापुस्तकपाशसाङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ ९ ॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
 सर्वानन्दकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
 दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
 भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥ १० ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
 ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिब्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ षष्ठीदेवी-स्तोत्रम्॥

प्रियब्रत उवाच

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धध्यै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ १॥

वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ २॥

शक्तेः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ३॥

पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
सारायै सारदायै च पारायै सर्वकर्मणाम्॥ ४॥

बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याणयै फलदायै च कर्मणाम्।
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ५॥

पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥ ६॥

शुद्धसत्त्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा।
हिंसाक्रोधैर्वर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ७ ॥

धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि।
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ८ ॥

भूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते।
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ९ ॥

इति देवीं च संस्तूय लेखे पुत्रं प्रियव्रतः।
यशस्विनं च राजेन्द्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १० ॥

षष्ठीस्तोत्रमिदं ब्रह्मण् यः शृणोति च वत्सरम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीवनम् ॥ ११ ॥

वर्षमेकं च या भक्त्या संयतेदं शृणोति च।
सर्वपापाद्विनिर्मुक्ता महावन्ध्या प्रसूयते ॥ १२ ॥

वीरपुत्रं च गुणिनं विद्यावन्तं यशस्विनम्।
सुचिरायुष्मन्तमेव षष्ठीमातृप्रसादतः ॥ १३ ॥

काकवन्ध्या च या नारी मृतापत्या च या भवेत्।
वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १४ ॥

रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति च।
मासं च मुच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १५ ॥

॥ इति श्री-ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे
श्री-नारद-नारायण-संवादे षष्ठ्युपारब्याने श्री-प्रियव्रतविरचितं
श्री-षष्ठीदेवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ रुक्मिणीकृत गौरीस्तोत्रम् ॥

नमस्ये त्वामम्बिकेऽभीक्षणं स्वसन्तानयुतां शिवाम्।
भूयात्पतिर्मे भगवान् कृष्णस्तदनुमोदताम्॥

॥ कामाक्षी-माहात्म्यम् ॥

स्वामिपुष्करिणीतीर्थं पूर्वसिन्धुः पिनाकिनी।
शिलाहृदश्चतुर्मध्यं यावत् तुण्डीरमण्डलम्॥ १ ॥

मध्ये तुण्डीरभूवृत्तं कम्पा-वेगवती-द्वयोः।
तयोर्मध्यं कामकोष्ठं कामाक्षी तत्र वर्तते॥ २ ॥

स एव विग्रहो देव्या मूलभूतोऽद्विराङ्गुवः।
नान्योऽस्ति विग्रहो देव्याः काञ्छां तन्मूलविग्रहः॥ ३ ॥

जगत्कामकलाकारं नाभिस्थानं भुवः परम्।
पदपद्मस्य कामाक्ष्याः महापीठमुपास्महे॥ ४ ॥

कामकोटिः स्मृतः सोऽयं कारणादेव चिन्नमः।
यत्र कामकृतो धर्मो जन्तुना येन केन वा।
सकृद्वाऽपि सुधर्माणां फलं फलति कोटिशः॥ ५ ॥

यो जपेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् मन्त्रमिष्टार्थैवतम्।
कोटिर्वर्णफलेनैव मुक्तिलोकं स गच्छति॥ ६ ॥

यो वसेत् कामकोष्ठेऽस्मिन् क्षणार्धं वा तदर्धकम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः साक्षादेवी नराकृतिः॥ ७ ॥

गायत्रीमण्डपाधारं भूनाभिस्थानमुत्तमम्।
पुरुषार्थप्रदं शम्भोर्बिलाङ्रं तं नमाम्यहम्॥ ८ ॥

यः कुर्यात् कामकोषस्य विलाभ्रस्य प्रदक्षिणम्।
 पदसङ्ख्याक्रमेणैव गोगर्भजनं लभेत्॥९॥

विश्वकारणनेत्राद्वयां श्रीमत्तिपुरसुन्दरीम्।
 बन्धकासुरसंहन्त्रीं कामाक्षीं तामहं भजे॥१०॥

पराजन्मदिने काञ्छां महाभ्यन्तरमार्गतः।
 योऽर्चयेत् तत्र कामाक्षीं कोटिपूजाफलं लभेत्।
 तत्फलोत्पन्नकैवल्यं सकृत् कामाक्षिसेवया॥११॥

त्रिस्थाननिलयं देवं त्रिविधाकारमच्युतम्।
 प्रतिलिङ्गाग्रसंयुक्तं भूतबन्धं तमाश्रये॥१२॥

य इदं प्रातरुत्थाय स्नानकाले पठेन्नरः।
 द्वादशश्लोकमात्रेण श्लोकोक्तफलमाप्नुयात्॥

॥ इति श्री-कामाक्षी-विलासे त्रयोविंशेऽध्याये श्री-कामाक्षी-माहात्म्यं
 सम्पूर्णम्॥

॥दुर्गापञ्चरत्नम्॥

ते ध्यान-योगानुगता अपश्यन्
 त्वामेव देवीं स्वगुणैर्निर्गूढाम्।
 त्वमेव शक्तिः परमेश्वरस्य
 मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥१॥

देवात्मशक्तिः श्रुतिवाक्यगीता
 महर्षि लोकस्य पुरः प्रसन्ना।
 गुहा परं व्योम सतः प्रतिष्ठा
 मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि॥२॥

परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयसे
श्वेताश्व-वाक्योदित-देवि दुर्गे।
स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया ते
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ ३ ॥

देवात्मशब्देन शिवात्मभूता
यत्कूर्मवायव्यवचो विवृत्या।
त्वं पाशविन्छेदकरी प्रसिद्धा
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ ४ ॥

त्वं ब्रह्मपुच्छा विविधा मयूरी
ब्रह्म-प्रतिष्ठाऽस्युपदिष्ट-गीता।
ज्ञानस्वरूपात्मतयाऽखिलानां
मां पाहि सर्वेश्वरि मोक्षदात्रि ॥ ५ ॥

॥ इति श्री-काश्चीजगद्गुरु-श्री-चन्द्रशोखरेन्द्रसरस्वती-श्रीचरणैः
विरचितं श्री-दुर्गापञ्चरत्नं सम्पूर्णम् ॥

॥ दुर्गास्तोत्रम् ॥

श्री-नारायण उवाच

स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन् सर्वविघ्नविनाशकम्।
सुखदं मोक्षदं सारं भवसन्तारकारणम् ॥

श्रीकृष्ण उवाच

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीधरी।
त्वमेवाऽद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥ १ ॥

कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी ॥ २ ॥

तेजःस्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा।
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा ॥ ३ ॥

सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमङ्गलमङ्गला ॥ ४ ॥

सर्वबुद्धिस्वरूपा च सर्वशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी ॥ ५ ॥

त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्वदाने च सर्वशक्तिस्वरूपिणी ॥ ६ ॥

निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चाऽऽत्मनः प्रिया।
क्षुत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च कान्तिस्तुष्टिश्च शाश्वती ॥ ७ ॥

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा प्रभा तथा।
सतां सम्पत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह ॥ ८ ॥

प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहाङ्कुरा।
शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥ ९ ॥

देवेभ्यः स्वपदो दात्री धातुर्धात्री कृपामयी।
हिताय सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ॥ १० ॥

योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम्।
सिद्धिस्वरूपा सिद्धानां सिद्धिदा सिद्धियोगिनी ॥ ११ ॥

माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी।
भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयङ्करी ॥ १२ ॥

ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे गृहे।
सतां कीर्तिः प्रतिष्ठा च निन्दा त्वमसतां सदा ॥ १३ ॥

महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी।
रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी ॥ १४ ॥

वन्धा पूज्या स्तुता त्वं च ब्रह्मादीनां च सर्वदा।
ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् ॥ १५ ॥

विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिबुद्धिमतां सताम्।
मेधा स्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् ॥ १६ ॥

राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वाणिज्यरूपिणी।
सृष्टौ सृष्टिस्वरूपा त्वं रक्षारूपा च पालने ॥ १७ ॥

तथाऽन्ते त्वं महामारी विश्वे विश्वैश्च पूजिते।
कालरात्रिमहारात्रिमहारात्रिश्च मोहिनी ॥ १८ ॥

दुरत्यया मे माया त्वं यया सम्मोहितं जगत्।
यया मुग्धो हि विद्वांश्च मोक्षमार्गं न पश्यति ॥ १९ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं दुर्गाया दुर्गनाशनम्।
पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ॥ २० ॥

वन्ध्या च काकवन्ध्या च मृतवत्सा च दुर्भगा।
श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ २१ ॥

कारागरे महाघोरे यो बद्धो दृढबन्धने।
श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ॥ २२ ॥

यक्षमग्रस्तो गलत्कृष्टी महाशूली महाज्वरी।
श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात् प्रमुच्यते ॥ २३ ॥

पुत्रभेदे प्रजाभेदे पत्नीभेदे च दुर्गतः।
श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं लभते नात्र संशयः ॥ २४ ॥

राजद्वारे इमशाने च महारण्ये रणस्थले।
हिंस्वजन्तुसमीपे च श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥ २५ ॥

गृहदाहे च दावामौ दस्युसैन्यसमन्विते।
स्तोत्रश्रवणमात्रेण लभते नात्र संशयः ॥ २६ ॥

महादरिद्रो मूर्खश्च वर्ष स्तोत्रं पठेत्तु यः।
विद्यावान् धनवांश्चैव स भवेन्नात्र संशयः ॥ २७ ॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैर्वर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे षष्ठितमेऽध्याये
श्री-नारद-नारायण-संवादे दुर्गोपाख्याने श्री-कृष्णविरचितं
श्री-दुर्गास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ दुर्गाचन्द्रकलास्तुतिः ॥

वेघोहरीश्वरस्तुत्यां विहर्त्रीं विन्ध्यभूधरे।
हरप्राणेश्वरीं वन्दे हन्त्रीं विबुधविद्विषाम् ॥ १ ॥

अभ्यर्थनेन सरसीरुहसम्भवस्य
त्यत्त्वोदिता भगवदक्षिपिधानलीलाम्।
विश्वेश्वरी विपदपाकरणे पुरस्तात्
माता ममास्तु मधुकैटभयोर्निर्हन्त्री ॥ २ ॥

प्राङ्गिरेषु निहितैर्निजशक्तिलेशौः
 एकीभवद्विरुदिताऽखिललोकगुप्त्यै ।
 सम्पन्नशस्त्रनिकरा च तदायुधस्थैः
 माता ममास्तु महिषान्तकरी पुरस्तात् ॥ ३ ॥
 प्रालेयशैलतनयातनुकान्तिसम्पत्-
 कोशोदिता कुवलयच्छविचारुदेहा ।
 नारायणी नमदभीप्सितकल्पवल्ली
 सुप्रीतिमावहतु शुभ्मनिशुभ्महन्त्री ॥ ४ ॥
 विश्वेश्वरीति महिषान्तकरीति यस्याः
 नारायणीत्यपि च नामभिरङ्गितानि ।
 सूक्तानि पङ्कजभुवा च सुर्धिभिश्च
 दृष्टानि पावकमुखैश्च शिवां भजे ताम् ॥ ५ ॥
 उत्पत्तिदैत्यहननस्तवनात्मकानि
 संरक्षकाण्यखिलभूतहिताय यस्याः ।
 सूक्तान्यशेषनिगमान्तविदः पठन्ति
 तां विश्वमातरमजस्त्रमभिष्ठवीमि ॥ ६ ॥
 ये वैप्रचित्तपुनरुत्थितशुभ्ममुख्यैः
 दुर्भिक्षघोरसमयेन च कारितासु ।
 आविष्कृताख्तिजगदार्तिषु रूपभेदाः
 तैरम्बिका समभिरक्षतु मां विपन्न्यः ॥ ७ ॥
 सूक्तं यदीयमरविन्दभवादिदृष्टम्
 आवर्त्य देव्यनुपदं सुरथः समाधिः ।
 द्वावप्यवापतुरभीष्टमनन्यलभ्यं
 तामादिदेवतरुणीं प्रणमामि मूर्धा ॥ ८ ॥

माहिष्मतीतनुभवं च रुं च हन्तुम्
 आविष्कृतैर्निजरसादवतारभेदैः ।
 अष्टादशाहतनवाहतकोटिसङ्घैः
 अम्बा सदा समभिरक्षतु मां विपद्यः ॥९॥

एतच्चरित्रमखिलं लिखितं हि यस्याः
 सम्पूजितं सदन एव निवेशितं वा।
 दुर्गं च तारयति दुस्तरमप्यशेषं
 श्रेयः प्रयच्छति च सर्वमुमां भजे ताम् ॥१०॥

यत्पूजनस्तुतिनमस्कृतिभिर्भवन्ति
 प्रीताः पितामहरमेशाहरास्त्रयोऽपि।
 तेषामपि स्वकगुणैर्ददती वपूषि
 तामीश्वरस्य तरुणीं शरणं प्रपद्ये ॥११॥
 कान्तारमध्यदृढलग्नतयाऽवसन्नाः
 मग्नाश्च वारिधिजले रिपुभिश्च रुद्धाः।

यस्याः प्रपद्य चरणौ विपदस्तरन्ति
 सा मे सदाऽस्तु हृदि सर्वजगत्सवित्री ॥१२॥

बन्धे वधे महति मृत्युभये प्रसक्ते
 वित्तक्षये च विविधे य महोपतापे।

यत्पादपूजनमिह प्रतिकारमाहुः
 सा मे समस्तजननी शरणं भवानी ॥१३॥

बाणासुरप्रहितपन्नगबन्धमोक्षः
 तद्वाहुदर्पदलनादुषया च योगः।
 प्राद्युम्निना द्रुतमलभ्यत यत्प्रसादात्
 सा मे शिवा सकलमप्यशुभं क्षिणोतु ॥१४॥

पापः पुलस्त्यतनयः पुनरुत्थितो माम्
 अद्यापि हर्तुमयमागत इत्युदीतम्।
 यत्सेवनेन भयमिन्द्रयाऽवधूतं
 तामादिदेवतरुणीं शरणं गतोऽस्मि ॥ १५ ॥

यद् ध्यानजं सुखमवाप्यमनन्तपुण्यैः
 साक्षात्तमच्युतपरिग्रहमाश्ववापुः ।
 गोपाङ्गनाः किल यदर्चनपुण्यमात्राः
 सा मे सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥ १६ ॥

रात्रिं प्रपद्य इति मन्त्रविदः प्रपन्नान्
 उद्घोष्य मृत्यवधिमन्यफलैः प्रलोभ्य।
 बुद्धा च तद्विमुखतां प्रतनं नयन्तीम्
 आकाशमादिजननीं जगतां भजे ताम् ॥ १७ ॥

देशकालेषु दुष्टेषु दुर्गाच्चन्द्रकलास्तुतिः।
 सन्ध्ययोरनुसन्ध्येया सर्वापद्विनिवृत्तये ॥ १८ ॥
 ॥ इति श्रीदुर्गाच्चन्द्रकलास्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ दुर्गास्तोत्रम् (युधिष्ठिरकृतम्) ॥

वैशम्पायन उवाच

विराटनगरं रम्यं गच्छमानो युधिष्ठिरः।
 अस्तुवन्मनसा देवीं दुर्गां त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ १ ॥

यशोदागर्भसम्भूतां नारायणवरप्रियाम्।
 नन्दगोपकुले जातां मङ्गल्यां कुलवर्धनीम् ॥ २ ॥

कंसविद्रावणकरीमसुराणां क्षयङ्करीम्।
शिलातटविनिक्षिप्तामाकाशं प्रति गामिनीम्॥ ३॥

वासुदेवस्य भगिनीं दिव्यमाल्यविभूषिताम्।
दिव्याम्बरधरां देवीं खड्गखेटकधारिणीम्॥ ४॥

भारावतरणे पुण्ये ये स्मरन्ति सदा शिवाम्।
तान् वै तारयसे पापात्पञ्चे गामिव दुर्बलाम्॥ ५॥

स्तोतुं प्रचक्रमे भूयो विविधैः स्तोत्रसम्भवैः।
आमन्त्र्य दर्शनाकाङ्क्षी राजा देवीं सहानुजः॥ ६॥

नमोऽस्तु वरदे कृष्णे कुमारि ब्रह्मचारिणि।
बालार्कसदृशाकारे पूर्णचन्द्रनिभानने॥ ७॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रे पीनश्रोणिपयोधरे।
मयूरपिच्छवलये केयूराङ्गदधारिणि॥ ८॥

भासि देवि यथा पद्मा नारायणपरिग्रहः।
स्वरूपं ब्रह्मचर्यं च विशदं तव खेचरि॥ ९॥

कृष्णच्छविसमा कृष्णा सङ्कर्षणसमानना।
बिन्नती विपुलौ बाहू शक्वजसमुच्छयौ॥ १०॥

पात्री च पङ्कजी घण्टी स्त्री विशुद्धा च या भुवि।
पाशं धनुर्महाचक्रं विविधान्यायुधानि च॥ ११॥

कुण्डलाभ्यां सुपूर्णाभ्यां कर्णाभ्यां च विभूषिता।
चन्द्रविस्पर्धिना देवि मुखेन त्वं विराजसे॥ १२॥

मुकुटेन विचित्रेण केशबन्धेन शोभिना।
भुजङ्गभोगवासेन श्रोणिसूत्रेण राजता ॥ १३ ॥

विभ्राजसे चाबद्धेन भोगेनेवेह मन्दरः।
ध्वजेन शिखिपिन्छानामुच्छितेन विराजसे ॥ १४ ॥

कौमारं व्रतमास्थाय त्रिदिवं पावितं त्वया।
तेन त्वं स्तूयसे देवि त्रिदशैः पूज्यसेऽपि च ॥ १५ ॥

त्रैलोक्यरक्षणार्थाय महिषासुरनाशिनि।
प्रसन्ना मे सुरश्रेष्ठे दयां कुरु शिवा भव ॥ १६ ॥

जया त्वं विजया चैव सङ्घामे च जयप्रदा।
ममापि विजयं देहि वरदा त्वं च साम्रतम् ॥ १७ ॥

विन्ध्ये चैव नगश्रेष्ठे तव स्थानं हि शाश्वतम्।
कालि कालि महाकालि शीघ्रुमांसपशुप्रिये ॥ १८ ॥

कृतानुयात्रा भूतैस्त्वं वरदा कामचारिणी।
भारावतारे ये च त्वां संस्मरिष्यन्ति मानवाः ॥ १९ ॥

प्रणमन्ति च ये त्वां हि प्रभाते तु नरा भुवि।
न तेषां दुर्लभं किञ्चित्पुत्रतो धनतोऽपि वा ॥ २० ॥

दुर्गात्तारयसे दुर्गे तत् त्वं दुर्गा स्मृता जनैः।
कान्तारेष्वसन्नानां ममानां च महार्णवे।
दस्युभिर्वा निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम् ॥ २१ ॥

जलप्रतरणे चैव कान्तारेष्वटवीषु च।
ये स्मरन्ति महादेवि न च सीदन्ति ते नराः ॥ २२ ॥

त्वं कीर्तिः श्रीर्धृतिः सिद्धिर्हीर्विद्या सन्ततिर्मतिः।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा निद्रा ज्योत्स्ना कान्तिः क्षमा दया ॥ २३ ॥

नृणां च बन्धनं मोहं पुत्रनाशं धनक्षयम्।
व्याधिं मृत्युं भयं चैव पूजिता नाशयिष्यसि ॥ २४ ॥

सोऽहं राज्यात्परिभ्रष्टः शरणं त्वां प्रपञ्चवान्।
प्रणतश्च यथा मूर्धा तव देवि सुरेश्वरि ॥ २५ ॥

त्राहि मां पद्मपत्राक्षि सत्ये सत्या भवस्व नः।
शरणं भव मे दुर्गे शरण्ये भक्तवत्सले ॥ २६ ॥

एवं स्तुता हि सा देवी दर्शयामास पाण्डवम्।
उपगम्य तु राजानमिदं वचनमब्रवीत् ॥ २७ ॥

देव्युवाच

शृणु राजन्महाबाहो मदीयं वचनं प्रभो।
भविष्यत्यचिरादेव सङ्ग्रामे विजयस्तव ॥ २८ ॥

मम प्रसादान्निर्जित्य हृत्वा कौरववाहिनीम्।
राज्यं निष्कण्टकं कृत्वा भोक्ष्यसे मेदिनीं पुनः ॥ २९ ॥

भ्रातृभिः सहितो राजन्मीतिं प्राप्त्यसि पुष्कलाम्।
मत्प्रसादाच्च ते सौरव्यमारोग्यं च भविष्यति ॥ ३० ॥

ये च सङ्कीर्तयिष्यन्ति लोके विगतकल्मषाः।
तेषां तुष्टा प्रदास्यामि राज्यमायुर्वपुः सुतम् ॥ ३१ ॥

प्रवासे नगरे वाऽपि सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे।
अटव्यां दुर्गकान्तारे सागरे गहने गिरौ ॥ ३२ ॥

ये स्मरिष्यन्ति मां राजन् यथाऽहं भवता स्मृता।
न तेषां दुर्लभं किञ्चिदस्मिन् लोके भविष्यति॥ ३३॥

इदं स्तोत्रवरं भत्त्या शृणुयाद्वा पठेत वा।
तस्य सर्वाणि कार्याणि सिद्धिं यास्यन्ति पाण्डवाः॥ ३४॥

मत्प्रसादाच्च वः सर्वान्विराटनगरे स्थितान्।
न प्रज्ञास्यन्ति कुरुवो नरा वा तन्निवासिनः॥ ३५॥

इत्युक्त्वा वरदा देवी युधिष्ठिरमरिन्दमम्।
रक्षां कृत्वा च पाण्डूनां तत्रैवान्तरधीयत॥ ३६॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते विराटपर्वणि पाण्डवप्रवेशपर्वणि
अष्टमोऽध्यायः॥

॥दुर्गा-स्तुतिः (अर्जुन-कृता) ॥

सञ्जय उवाच

धार्तराष्ट्रबलं द्वा युद्धाय समुपस्थितम्।
अर्जुनस्य हितार्थाय कृष्णो वचनमब्रवीत्॥ १॥

श्रीभगवानुवाच

शुचिर्भूत्वा महावाहो सञ्जामाभिमुखे स्थितः।
पराजयाय शत्रूणां दुर्गास्तोत्रमुदीरय॥ २॥

सञ्जय उवाच

एवमुक्तोऽर्जुनः सञ्ज्ञे वासुदेवेन धीमता।
अवतीर्य रथात्पार्थः स्तोत्रमाह कृताञ्जलिः॥ ३॥

अर्जुन उवाच

नमस्ते सिद्धसेनानि आर्ये मन्द्रवासिनि।
कुमारि कालि कापालि कपिले कृष्णपिङ्गले॥४॥

भद्रकालि नमस्तुभ्यं महाकालि नमोऽस्तु ते।
चण्डि चण्डे नमस्तुभ्यं तारिणि वरवर्णिनि॥५॥

कात्यायनि महाभागे करालि विजये जये।
शिखिपिच्छध्वजधरे नानाभरणभूषिते॥६॥

अदृशूलप्रहरणे खड्गखेटकधारिणि।
गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे नन्दगोपकुलोद्धवे॥७॥

महिषासृक्षिप्रये नित्यं कौशिकि पीतवासिनि।
अदृहासे कोकमुखे नमस्तेऽस्तु रणप्रिये॥८॥

उमे शाकम्भरि श्वेते कृष्णे कैटभनाशिनि।
हिरण्याक्षि विरूपाक्षि सुधूम्राक्षि नमोऽस्तु ते॥९॥

वेदश्रुति महापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि।
जम्बूकटकचैत्येषु नित्यं सन्निहितालये॥१०॥

त्वं ब्रह्मविद्या विद्यानां महानिद्रा च देहिनाम्।
स्कन्दमातर्भगवति दुर्गे कान्तारवासिनि॥११॥

स्वाहाकारः स्वधा चैव कला काष्ठा सरस्वती।
सावित्री वेदमाता च तथा वेदान्त उच्यते॥१२॥

स्तुताऽसि त्वं महादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना।
जयो भवतु मे नित्यं त्वत्प्रसादाद्रणाजिरे॥१३॥

कान्तारभयदुर्गेषु भक्तानां चाऽऽलयेषु च।
नित्यं वससि पाताले युद्धे जयसि दानवान्॥ १४॥

तं जम्भनी मोहिनी च माया ह्रीः श्रीस्तथैव च।
सन्ध्या प्रभावती चैव सावित्री जननी तथा॥ १५॥

तुष्टिः पुष्टिर्धृतिर्दीप्तिश्वन्दादित्यविवर्धिनी।
भूतिर्भूतिमतां सङ्ख्ये वीक्ष्यसे सिद्धचारणैः॥ १६॥

सञ्जय उवाच

ततः पार्थस्य विज्ञाय भक्तिं मानववत्सला।
अन्तरिक्षगतोवाच गोविन्दस्याग्रतः स्थिता॥ १७॥

देव्युवाच

स्वल्पेनैव तु कालेन शत्रूञ्जेष्यसि पाण्डव।
नरस्त्वमसि दुर्धर्ष नारायणसहायवान्॥ १८॥

अजेयस्त्वं रणेऽरीणामपि वज्रभृतः स्वयम्।
इत्येवमुक्त्वा वरदा क्षणेनान्तरधीयत॥ १९॥

लब्ध्वा वरं तु कौन्तेयो मेने विजयमात्मनः।
आरुरोह ततः पार्थो रथं परमसम्मतम्॥ २०॥

कृष्णार्जुनावेकरथौ दिव्यौ शश्वौ प्रदध्मतुः।
य इदं पठते स्तोत्रं कल्य उत्थाय मानवः॥ २१॥

यक्षरक्षःपिशाचेभ्यो न भयं विद्यते सदा।
न चापि रिपवस्तेभ्यः सर्पाद्या ये च दंष्ट्रिणः॥ २२॥

न भयं विद्यते तस्य सदा राजकुलादपि।
विवादे जयमाप्नोति बद्धो मुच्यति बन्धनात्॥ २३॥

दुर्गं तरति चावश्यं तथा चोरैर्विमुच्यते।
सङ्घामे विजयेन्नित्यं लक्ष्मीं प्राप्नोति केवलाम्॥ २४॥

आरोग्यबलसम्पन्नो जीवेद्वर्षशतं तथा।
एतहृष्टं प्रसादात्तु मया व्यासस्य धीमतः॥ २५॥

मोहादेतौ न जानन्ति नरनारायणावृषी।
तव पुत्रा दुरात्मानः सर्वे मन्युवशानुगाः॥ २६॥

प्राप्तकालमिदं वाक्यं कालपाशेन कुण्ठिताः।
द्वैपायनो नारदश्च कण्वो रामस्तथाऽनघः।
अवारयंस्त्व द्वात्मनः सुतं न चासौ तद्गृहीतवान्॥ २७॥

यत्र धर्मो द्युतिः कान्तिर्यत्र हीः श्रीस्तथा मतिः।
यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः॥ २८॥
॥ इति श्रीमन्महाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्वितापर्वणि
त्रयोविंशोऽध्यायः॥

॥ परशुरामकृत-दुर्गास्तोत्रम्॥

श्री-परशुराम उवाच

श्रीकृष्णस्य च गोलोके परिपूर्णतमस्य च।
आविर्भूता विग्रहतः परा सृष्टुन्मुखस्य च॥ १॥

सूर्यकोटिप्रभायुक्ता वस्त्रालङ्घारभूषिता।
वहिशुद्धांशुकाधाना सुस्मिता सुमनोहरा ॥ २ ॥

नवयौवनसम्पन्ना सिन्दूरारुण्यशोभिता।
ललितं कबरीभारं मालतीमाल्यमण्डितम् ॥ ३ ॥

अहोऽनिर्वचनीया त्वं चारुमूर्ति च बिभ्रती।
मोक्षप्रदा मुमुक्षुणां महाविष्णोर्विधिः स्वयम् ॥ ४ ॥

मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम्।
बालैः सम्भूय सहसा सस्मिता धाविता पुरा ॥ ५ ॥

सद्दिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी।
कृष्णस्त्वां सहसा भीतो वीर्याधानं चकार ह ॥ ६ ॥

ततो डिम्भं महज्ज्ञे ततो जातो महान्विराट्।
यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्माणडान्यखिलानि च ॥ ७ ॥

राधारतिक्रमेणैव तन्निःश्वासो बभूव ह।
स निःश्वासो महावायुः स विराङ् विश्वधारकः ॥ ८ ॥

भयधर्मजलेनैव पुप्तुवे विश्वगोलकम्।
स विराङ् विश्वनिलयो जलराशिर्बभूव ह ॥ ९ ॥

ततस्त्वं पञ्चधा भूय पञ्चमूर्तीश्च बिभ्रती।
प्राणाधिष्ठातृमूर्तिर्या कृष्णस्य परमात्मनः ॥ १० ॥

कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः।
वेदाधिष्ठातृमूर्तिर्या वेदशास्त्रप्रसूरपि ॥ ११ ॥

तं सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः।
ऐश्वर्याधिष्ठातृमूर्तिः शान्तिस्त्वं शान्तरूपिणी ॥ १२ ॥

लक्ष्मीं वदन्ति सन्तस्तां शुद्धां सत्त्वस्वरूपिणीम्।
रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः ॥ १३ ॥

सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञां शास्त्रज्ञाः प्रवदन्त्यहो।
बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तेर्या मूर्तिराधिदेवता ॥ १४ ॥

सर्वमङ्गलदा सन्तो वदन्ति सर्वमङ्गलाम्।
सर्वमङ्गलमङ्गल्या सर्वमङ्गलरूपिणी ॥ १५ ॥

सर्वमङ्गलबीजस्य शिवस्य निलयेऽधुना।
शिवे शिवास्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके ॥ १६ ॥

सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया।
राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च ॥ १७ ॥

परमानन्दरूपस्य परमानन्दरूपिणी।
त्वत्कलांशांशकलया देवानामपि योषितः ॥ १८ ॥

त्वं विद्या योषितः सर्वाः सर्वेषां बीजरूपिणी।
छाया सूर्यस्य चन्द्रस्य रोहिणी सर्वमोहिनी ॥ १९ ॥

शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी।
वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्रीः प्राणवल्लभा ॥ २० ॥

वह्नेः प्रिया हि स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी।
यमस्य तु सुशीला च नैऋतस्य च कैटभी ॥ २१ ॥

ऐशानी स्याच्छशिकला शतरूपा मनोः प्रिया ।
देवहृतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती ॥ २२ ॥

लोपामुद्राऽप्यगस्त्यस्य देवमाताऽदितिस्तथा ।
अहत्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा ॥ २३ ॥

गङ्गा च तुलसी चापि पृथिव्यां या सरिद्वरा ।
एताः सर्वाश्च या ह्यन्या सर्वास्त्वत्कलयाऽम्बिके ॥ २४ ॥

गृहलक्ष्मीर्गृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु ।
तपस्त्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च ॥ २५ ॥

सतां सत्त्वस्वरूपा त्वमसतां कलहाङ्कुरा ।
ज्योतीरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च ॥ २६ ॥

सूर्ये प्रभास्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने ।
जले शैत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे ॥ २७ ॥

त्वं भूमौ गन्धरूपा च आकाशे शब्दरूपिणी ।
क्षुतिपासादयस्त्वं च जीविनां सर्वशक्तयः ॥ २८ ॥

सर्वबीजस्वरूपा त्वं संसारे साररूपिणी ।
स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वा ज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम् ॥ २९ ॥

कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा ।
शूलिने कृपया सा त्वं यया मृत्युञ्जयः शिवः ॥ ३० ॥

सृष्टिपालनसंहारशक्तयस्त्रिविधाश्च याः ।
ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते ॥ ३१ ॥

मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः।
स्तुत्वा मुक्तश्च यां देवीं तां मूर्धा प्रणमाम्यहम्॥३२॥

मधुकैटभयोर्युद्धे त्राताऽसौ विष्णुरीश्वरीम्।
बभूव शक्तिमान् स्तुत्वा तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्॥३३॥

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे।
यां तुष्टवुः सुराः सर्वे तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्॥३४॥

विष्णुना वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः।
जघान त्रिपुरं स्तुत्वा तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्॥३५॥

यदाज्ञया वाति वातः सूर्यस्तपति सन्ततम्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निस्तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्॥३६॥

यदाज्ञया हि कालश्च शश्वद्-भ्रमति वेगतः।
मृत्युश्वरति जन्तूनां तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्॥३७॥

स्वष्टा सृजति सृष्टिं च पाता पाति यदाज्ञया।
संहर्ता संहरेत् काले तां दुर्गा प्रणमाम्यहम्॥३८॥

ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम्।
यया विना न शक्तश्च सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम्॥३९॥

रक्ष रक्ष जगन्मातरपराधं क्षमस्व मे।
शिशूनामपराधेन कुतो माता हि कुप्यति॥४०॥

इत्युत्त्वा परशुरामश्च नत्वा तां च रुरोद ह।
तुष्टा दुर्गा सम्भ्रमेण चाभयं च वरं ददौ॥४१॥

अमरो भव हे पुत्र वत्स सुस्थिरतां ब्रज।
शर्वप्रसादात् सर्वत्र जयोऽस्तु तव सन्ततम्॥४२॥

सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टः स्यात्सन्ततं हरिः।
भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुराँ॥४३॥

इष्टदेवे गुराँ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती।
तं हन्तुं न हि शक्ताश्च रुषा वा सर्वदेवताः॥४४॥

श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यो वै शङ्करस्य च।
गुरुपत्नीं स्तौषि यस्मात् कस्त्वां हन्तुमिहेश्वरः॥४५॥

अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
अन्यदेवेषु ये भक्ता न भक्ता वा निरङ्कुशाः॥४६॥

चन्द्रमा बलवांस्तुष्टे येषां भाग्यवतां भृगो।
तेषां तारागणा रुषाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः॥४७॥

यस्मै तुष्टः पालयति नरदेवो महान् सुखी।
तस्य किं वा करिष्यन्ति रुषा भृत्याश्च दुर्बलाः॥४८॥

इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामाय चाऽशिषम्।
जगामान्तःपुरं तूर्णं हर्षशब्दो बभूव ह॥४९॥

॥ फलश्रुतिः ॥

स्तोत्रं वै काण्वशाखोक्तं पूजाकाले च यः पठेत्।
यात्राकाले च प्रातर्वा वाञ्छितार्थं लभेद्वम्॥५०॥

पुत्रार्थीं लभते पुत्रं कन्यार्थीं कन्यकां लभेत्।
विद्यार्थीं लभते विद्यां प्रजार्थीं चाऽप्युयात् प्रजाम्॥५१॥

भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं नष्टवित्तो धनं लभेत्।
यस्य रुषो गुरुर्देवो राजा वा बान्धवोऽथवा ॥ ५२ ॥

तस्मै तुष्टश्च वरदः स्तोत्रराजप्रसादतः।
दस्युग्रस्तो फणिग्रस्तः शत्रुग्रस्तो भयानकः ॥ ५३ ॥

व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्रस्मरणमात्रतः।
राजद्वारे इमशाने च कारागारे च बन्धने ॥ ५४ ॥

जलराशौ निमग्नश्च मुक्तस्तत्स्मृतिमात्रतः।
स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदे च दारुणे ॥ ५५ ॥

स्तोत्रस्मरणमात्रेण वाञ्छितार्थं लभेद्ध्रुवम्।
कृत्वा हविष्यं वर्षं च स्तोत्रराजं श्रृणोति या ॥ ५६ ॥

भक्त्या दुर्गा च सम्पूज्य महावन्ध्या प्रसूयते।
लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम्।
असौभाग्या च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाल्पभेत् ॥ ५७ ॥

नवमासं काकवन्ध्या मृतवत्सा च भक्तिः।
स्तोत्रराजं या श्रृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ ५८ ॥

कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं श्रृणोति या।
घटे सम्पूज्य दुर्गा च सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ ५९ ॥

॥ इति श्री-ब्रह्मवैर्वर्तमहापुराणे गणपतिखण्डे पञ्चचत्वारिंशोऽध्याये
श्री-नारद-नारायण-संवादे श्री-परशुरामकृतं श्री-दुर्गास्तोत्रं

सम्पूर्णम् ॥


॥ गायत्रीस्तोत्रम् ॥

॥ गायत्री-ध्यानम् ॥

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः
 युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्।
 गायत्रीं वरदाभयाङ्कशकशाः शुभ्रं कपालं गदां
 शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

नारद उवाच

भक्तानुकम्पिन् सर्वज्ञं हृदयं पापनाशनम्।
 गायत्र्याः कथितं तस्माद्यायत्र्याः स्तोत्रमीरय ॥ १ ॥

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि।
 सर्वत्र व्यापिकेऽनन्ते श्रीसन्ध्ये ते नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

त्वमेव सन्ध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती।
 ब्रह्माणी वैष्णवी रौद्री रक्तश्वेता सितेतरा ॥ ३ ॥

प्रातर्बाला च मध्याहे यौवनस्था भवेत्पुनः।
 वृद्धा सायं भगवती चिन्त्यते मुनिभिः सदा ॥ ४ ॥

हंसस्था गरुडारूढा तथा वृषभवाहिनी।
 त्रिष्ठवेदाध्यायिनी भूमौ दृश्यते या तपस्त्विभिः ॥ ५ ॥

यजुर्वेदं पठन्ती च ह्यन्तरिक्षे विराजते।
 या सामगाऽपि सर्वेषु भ्राम्यमाणा तथा भुवि ॥ ६ ॥

रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी।
 त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी ॥ ७ ॥

सप्तर्षिप्रीतिजननी माया बहुवरप्रदा।
शिवयोः करनेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेदसमुद्धवा ॥८॥

आनन्दजननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते।
वरेण्या वरदा चैव वरिष्ठा वरवर्णिनी ॥९॥

गरिष्ठा च वराही च वरारोहा च सप्तमी।
नीलगङ्गा तथा सन्ध्या सर्वदा भोगमोक्षदा ॥१०॥

भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि।
त्रिलोकवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी ॥११॥

भूर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्री शोकधारिणी।
भुवो लोके वायुशक्तिः स्वर्लोकि तेजसां निधिः ॥१२॥

महर्लोके महासिद्धिर्जनलोकेऽजनेत्यपि।
तपस्विनी तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक् ॥१३॥

कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकगा।
रुद्रलोके स्थिता गौरी हरार्धाङ्गनिवासिनी ॥१४॥

अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे।
साम्यावस्थात्मिका त्वं हि शबलब्रह्मरूपिणी ॥१५॥

ततः परा पराशक्तिः परमा त्वं हि गीयसे।
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा ॥१६॥

गङ्गा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती।
सरयू रेविका सिन्धुर्नर्मदैरावती तथा ॥१७॥

गोदावरी शतदुश्च कावेरी देवलोकगा।
कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती ॥ १८ ॥

गण्डकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि।
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णा च तृतीयका ॥ १९ ॥

गान्धारी हस्तजिह्वा च पूषाऽपूषा तथैव च।
अलम्बुषा कुहूश्चैव शङ्खिनी प्राणवाहिनी ॥ २० ॥

नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः।
हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्रनायिका ॥ २१ ॥

तालुस्था त्वं सदाधारा बिन्दुस्था बिन्दुमालिनी।
मूले तु कुण्डलीशक्तिव्यापिनी केशमूलगा ॥ २२ ॥

शिखामध्यासना त्वं हि शिखाग्रे तु मनोन्मनी।
किमन्यद्वहुनोक्तेन यत्किञ्चिज्जगतीत्रये ॥ २३ ॥

तत्सर्वं त्वं महादेवि श्रिये सन्ध्ये नमोऽस्तु ते।
इतीदं कीर्तिं स्तोत्रं सन्ध्यायां बहुपुण्यदम् ॥ २४ ॥

महापापप्रशमनं महासिद्धिविदायकम्।
य इदं कीर्तयेत् स्तोत्रं सन्ध्याकाले समाहितः ॥ २५ ॥

अपुत्रः प्राप्नुयात् पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात्।
सर्वतीर्थतपोदानयज्ञयोगफलं लभेत् ॥ २६ ॥

भोगान् भुत्तवा चिरं कालमन्ते मोक्षमवाप्नुयात्।
तपस्विभिः कृतं स्तोत्रं स्नानकाले तु यः पठेत् ॥ २७ ॥

यत्र कुत्र जले ममः सन्ध्यामज्जनजं फलम्।
लभते नात्र सन्देहः सत्यं सत्यं तु नारद॥२८॥

शृणुयाद्योऽपि तद्भक्त्या स तु पापात् प्रमुच्यते।
पीयूषसदृशं वाक्यं सन्ध्योक्तं नारदेरितम्॥२९॥

॥ इति श्री-गायत्री स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ कनकधारास्तवः ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
 भूङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
 अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
 माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
 प्रेमत्रप्राप्णिहितानि गतागतानि।
 माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
 सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
 आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्षमनेत्रं
 भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ३ ॥

बाहन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
 हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
 कल्प्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ४ ॥

कालाम्बुदालिलितोरसि कैटभारेः
 धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
 मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
 भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ५ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
 माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
 मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
 मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ६ ॥
 विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम्
 आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
 ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धम्
 इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दरायाः ॥ ७ ॥
 इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
 दृष्ट्या त्रिविष्टपदं सुलभं लभन्ते।
 दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीस्तिरिष्टां
 पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ८ ॥
 दद्याद्यानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
 अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
 दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
 नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥
 गीर्द्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
 शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
 सृष्टिरिथतिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
 तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
 श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
 रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
 शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
 नमोऽस्तु दुर्घोदधिजन्मभूम्यै।
 नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
 नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥ १२ ॥
 नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
 नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
 नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
 नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै॥ १३ ॥
 नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
 नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
 नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
 नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै॥ १४ ॥
 नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
 नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै।
 नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
 नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै॥ १५ ॥
 सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
 साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षिः।
 त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
 मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥ १६ ॥
 यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
 सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
 सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः
 त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥ १७ ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
 ध्वलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
 त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ १८ ॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
 स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम्।
 प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
 लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम् ॥ १९ ॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
 करुणापूरतरञ्जितैरपाङ्गैः ।
 अवलोकय मामकिञ्चनानां
 प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥ २० ॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहं
 त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
 गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
 भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ २१ ॥

देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
 कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे।
 दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं माम्
 आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-कनकधारास्तवः सम्पूर्णः ॥

॥ महालक्ष्म्यष्टकम् ॥

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेश्वि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्दक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥

॥ इति श्रीमद्दपद्मपुराणे श्री-महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ लक्ष्मीस्तोत्रम् विष्णुपुराणान्तर्गतम् ॥

श्री-पराशर उवाच

सिंहासनगतः शक्रः सम्प्राप्य त्रिदिवं पुनः।
देवराज्ये स्थितो देवीं तुष्टावाजकरां ततः ॥ १ ॥

इन्द्र उवाच

नमस्ये सर्वलोकानां जननीमज्जसम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम् ॥ २ ॥

पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्रनिर्भेक्षणाम्।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियामहम् ॥ ३ ॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मधा श्रद्धा सरस्वती ॥ ४ ॥

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी ॥ ५ ॥

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च।
सौम्यासौम्यैर्जगदूपैस्त्वयैतदेवि पूरितम् ॥ ६ ॥

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगचिन्त्यं गदाभृतः ॥ ७ ॥

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम्।
विनष्टप्रायमभवत्त्वयेदानीं समेधितम् ॥ ८ ॥

दाराः पुत्रास्तथाऽगरसुहृद्धान्यधनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम् ॥ ९ ॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्।
देवि त्वद्विष्टिष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ॥ १० ॥

त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्यासं चराचरम् ॥ ११ ॥

मा नः कोशस्तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि ॥ १२ ॥

मा पुत्रान्मा सुहृद्वर्गं मा पश्चन्मा विभूषणम्।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वेक्षःस्थलालये ॥ १३ ॥

सत्त्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयाऽमले ॥ १४ ॥

त्वया विलोकिताः सद्यः शीलाद्यरिखिलैर्गुणैः।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ॥ १५ ॥

स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि वीक्षितः ॥ १६ ॥

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः।
पराञ्जुखी जगद्वात्री यस्य त्वं विष्णुवल्लभे॥ १७॥

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणाङ्गिहाऽपि वेघसः।
प्रसीद देवि पद्माक्षिं माऽस्मांस्त्याक्षीः कदाचन॥ १८॥

श्री-पराशर उवाच

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक् प्राह हृष्टा शतक्तुम्।
शृण्वतां सर्वदेवानां सर्वभूतस्थिता द्विज॥ १९॥

श्रीरुवाच

परितुष्टाऽस्मि देवेश स्तोत्रेणानेन ते हरे।
वरं वृणीष्व यस्त्वष्टो वरदाऽहं तवाऽगता॥ २०॥

इन्द्र उवाच

वरदा यदि मे देवि वरार्हो यदि वाऽप्यहम्।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मेऽस्तु वरः परः॥ २१॥

स्तोत्रेण यस्तथैतेन त्वां स्तोष्यत्यव्यिसम्भवे।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितीयोऽस्तु वरो मम॥ २२॥

श्रीरुवाच

त्रैलोक्यं त्रिदशश्रेष्ठ न सन्त्यक्ष्यामि वासव।
दत्तो वरो मयाऽयं ते स्तोत्राराधनतुष्टया॥ २३॥

यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराञ्जुखी॥ २४॥

॥ इति श्री-विष्णुपुराणे श्री-लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ महालक्ष्मीस्तुतिः (अगस्त्यकृता) ॥

अगस्तिरुवाच

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
 श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।
 क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
 लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥१॥

त्वं श्रीरुपेन्द्रसदने मदनैकमातर्-
 ज्योत्स्नाऽसि चन्द्रमसि चन्द्रमनोहरास्ये।
 सूर्ये प्रभाऽसि च जगत्तितये प्रभाऽसि
 लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥२॥

त्वं जातवेदसि सदा दहनात्मशक्तिर्-
 वेधास्त्वया जगदिदं विविधं विदध्यात्।
 विश्वम्भरोऽपि बिभृयादखिलं भवत्या
 लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥३॥

त्वत्यक्तमेतदमले हरते हरोऽपि
 त्वं पासि हंसि विदधासि परावरासि।
 ईङ्गो बभूव हरिरप्यमले त्वदास्या
 लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥४॥

शूरः स एव स गुणी स बुधः स धन्यो
 मान्यः स एव कुलशीलकलाकलापैः।
 एकः शुचिः स हि पुमान् सकलेऽपि लोके
 यत्रापतेत्तव शुभे करुणाकटाक्षः॥५॥

यस्मिन्वसेः क्षणमहो पुरुषे गजेऽश्वे
 स्त्रैणे तृणे सरासि देवकुले गृहेऽन्ने।
 रत्ने पतत्रिणि पशौ शयने धरायां
 सश्रीकमेव सकले तदिहास्ति नान्यत्॥६॥

त्वत्स्पृष्टमेव सकलं शुचितां लभेत
 त्वत्त्यक्तमेव सकलं त्वशुचीह लक्ष्मि।
 त्वन्नाम यत्र च सुमङ्गलमेव तत्र
 श्रीविष्णुपतिः कमले कमलालयेऽपि॥७॥

लक्ष्मीं श्रियं च कमलां कमलालयां च
 पद्मां रमां नलिनयुग्मकरां च मां च।
 क्षीरोदजाममृतकुम्भकरामिरां च
 विष्णुप्रियामिति सदा जपतां क्षदुःखम्॥८॥

ये पठिष्ठन्ति च स्तोत्रं त्वद्भूत्या मत्कृतं सदा।
 तेषां कदाचित् सन्तापो माऽस्तु माऽस्तु दरिद्रता॥९॥

माऽस्तु चेष्टवियोगश्च माऽस्तु सम्पत्तिसङ्घयः।
 सर्वत्र विजयश्चाऽस्तु विच्छदो माऽस्तु सन्ततेः॥१०॥

श्रीरुवाच

एवमस्तु मुने सर्वं यत्त्वया परिभाषितम्।
 एतत् स्तोत्रस्य पठनं मम सान्निध्यकारणम्॥११॥

अलक्ष्मीः कालकर्णी च तद्देहे न विशेत् कचित्।
 गजाश्वपशुशान्त्यर्थमेतत्स्तोत्रं सदा जपेत्॥१२॥

इदं बीजरहस्यं मे रक्षणीयं प्रयत्नतः।
श्रद्धाहीने न दातव्यं न देयश्चाशुचौ क्वचित्॥ १३॥

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थे
काशीखण्डेऽगस्त्यप्रस्थानं नाम पञ्चमेऽध्याये श्री-अगस्त्यकृता
महालक्ष्मीस्तुतिः सम्पूर्णा ॥



॥ सरस्वतीस्तोत्रम् अगस्त्यमुनि-प्रोक्तम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
 या वीणावरदण्डमणिडतकरा या श्वेतपद्मासना।
 या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशोषजाङ्गापहा ॥ १ ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
 हस्तेनैकैन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
 भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
 सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥ २ ॥

सुरासुरसेवितपादपङ्कजा
 करे विराजत्कमनीयपुस्तका।
 विरिद्विपत्नी कमलासनस्थिता
 सरस्वती नृत्यतु वाचि मे सदा ॥ ३ ॥

सरस्वती सरसिजकेसरप्रभा
 तपस्विनी सितकमलासनप्रिया।
 घनस्तनी कमलविलोललोचना
 मनस्विनी भवतु वरप्रसादिनी ॥ ४ ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
 विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥ ५ ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं सर्वदेवि नमो नमः।
 शान्तरूपे शशिधरे सर्वयोगे नमो नमः ॥ ६ ॥

नित्यानन्दे निराधारे निष्कलायै नमो नमः।
विद्याधरे विशालाक्षि शुद्धज्ञाने नमो नमः ॥७॥

शुद्धस्फटिकरूपायै सूक्ष्मरूपे नमो नमः।
शब्दब्रह्मि चतुर्हस्ते सर्वसिद्ध्यै नमो नमः ॥८॥

मुक्तालङ्घृत-सर्वाङ्ग्यै मूलाधारे नमो नमः।
मूलमन्त्रस्वरूपायै मूलशक्त्यै नमो नमः ॥९॥

मनो मणिमहायोगे वागीश्वरि नमो नमः।
वाग्भ्यै वरदहस्तायै वरदायै नमो नमः ॥१०॥

वेदायै वेदरूपायै वेदान्तायै नमो नमः।
गुणदोषविवर्जिन्यै गुणदीस्यै नमो नमः ॥११॥

सर्वज्ञाने सदानन्दे सर्वरूपे नमो नमः।
सम्पन्नायै कुमार्यै च सर्वज्ञे ते नमो नमः ॥१२॥

योगानार्य उमादेव्यै योगानन्दे नमो नमः।
दिव्यज्ञानं त्रिनेत्रायै दिव्यमूर्त्यै नमो नमः ॥१३॥

अर्धचन्द्रजटाधारि चन्द्रविम्बे नमो नमः।
चन्द्रादित्यजटाधारि चन्द्रविम्बे नमो नमः ॥१४॥

अणुरूपे महारूपे विश्वरूपे नमो नमः।
अणिमाद्यष्टसिद्धायै आनन्दायै नमो नमः ॥१५॥

ज्ञान-विज्ञान-रूपायै ज्ञानमूर्ते नमो नमः।
नानाशास्त्र-स्वरूपायै नानारूपे नमो नमः ॥१६॥

पद्मदा पद्मवंशा च पद्मरूपे नमो नमः।
परमेष्ठै परामूर्त्यै नमस्ते पापनाशिनि ॥ १७ ॥

महादेव्यै महाकाल्यै महालक्ष्म्यै नमो नमः।
ब्रह्मविष्णुशिवायै च ब्रह्मनार्यै नमो नमः ॥ १८ ॥

कमलाकरपुष्पा च कामरूपे नमो नमः।
कपालि कर्मदीप्तायै कर्मदायै नमो नमः ॥ १९ ॥

सायं प्रातः पठेन्नित्यं षण्मासात् सिद्धिरुच्यते।
चोरव्याघ्रभयं नास्ति पठतां शृण्वतामपि ॥ २० ॥

इत्थं सरस्वतीस्तोत्रम् अगस्त्यमुनिवाचकम्।
सर्वसिद्धिकरं नृणां सर्वपापप्रणाशनम् ॥ २१ ॥

॥ इति श्री-अगस्त्यमुनि-प्रोक्तं श्री-सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सिद्धसरस्वतीस्तोत्रं श्रीमद्-ब्रह्मविरचितम् ॥

॥ न्यासः ॥

ॐ अस्य श्रीसरस्वतीस्तोत्रमन्तरस्य।
ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीसरस्वती देवता।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

॥ ध्यानम् ॥

आरूढा श्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्वकरकरजपैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना ॥ १ ॥

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना।
 अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्कृष्णभिः स्तूयते सदा।
 एवं ध्यात्वा सदा देवीं वाञ्छितं लभते नरः ॥ २ ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

शुक्ळां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्यापिनीं
 वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
 हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
 वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ १ ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
 या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
 या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ २ ॥

हीं हौं हृदैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे
 भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे विश्ववन्धाङ्गिपद्मे।
 पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणजनमनोमोदसम्पादयित्रि
 प्रोत्कुलज्ञानकूटे हरिनिजदयिते देवि संहारसारे ॥ ३ ॥

ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजभूतस्वरूपे
 रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।
 न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविभवे नापि विज्ञानतत्त्वे
 विश्वे विश्वान्तरात्मे सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥ ४ ॥

हीं हीं हीं जाप्यतुषे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
 मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्।
 विद्ये वेदान्तवेद्ये परिणतपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
 मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे॥५॥

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनिभिर्नामभिः कीर्तनीये
 नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे।
 पुण्ये पूण्यप्रवाहे हरिहरनमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे
 मातर्मात्रार्घतत्त्वे मतिमति मतिदे माधवप्रीतिमोदे॥६॥

हूं हूं हूं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते
 सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भिणि स्तम्भविद्ये।
 मोहे मुग्धप्रवाहे कुरु मम विमतिध्वान्तविध्वंसमीडे
 गीर्गौर्वाग्भारति त्वं कविवररसनासिद्धिदे सिद्धिसाध्ये॥७॥

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित् त्यजेथा
 मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम्।
 मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
 शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्माऽस्तु कुण्ठा कदाऽपि॥८॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनश्चो
 वाणी वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्पटुर्मृष्टकण्ठः।
 स्यादिष्टाद्यर्थलाभैः सुतमिव सततं पातितं सा च देवी
 सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति॥९॥

निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतग्रन्थबोधः
 कीर्तिस्तैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदा तस्य साक्षात्।
 दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो
 वाग्देव्याः सम्प्रसादात् त्रिजगति विजयी जायते सत्सभासु ॥ १० ॥

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः।
 सारस्वतो जनः पाठात् सकृदिष्टार्थलाभवान् ॥ ११ ॥

पक्षद्वये त्रयोदश्याम् एकविंशतिसङ्ख्या।
 अविच्छिन्नः पठेद्धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥ १२ ॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः सुभगो लोकविश्रुतः।
 वाञ्छितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशयः ॥ १३ ॥
 ब्रह्मणेति स्वयं प्रोक्तं सरस्वत्याः स्तवं शुभम्।
 प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १४ ॥

॥ इति श्रीमद्भ्रह्मणा विरचितं श्री-सिद्धसरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकम् ॥

सुवक्षोजकुम्भां सुधापूर्णकुम्भां
 प्रसादावलम्बां प्रपुण्यावलम्बाम्।
 सदास्येन्दुविम्बां सदानोष्ठविम्बां
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम् ॥ १ ॥

कटाक्षे दयाद्रौं करे ज्ञानमुद्रां
 कलाभिर्विनिद्रां कलापैः सुभद्राम्।
 पुरस्त्रीं विनिद्रां पुरस्तुङ्गभद्रां
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम् ॥ २ ॥

ललामाङ्कफालां लसद्वानलोलां
 स्वभक्तैकपालां यशःश्रीकपोलाम्।
 करे त्वक्षमालां कनत्रबलोलां
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम्॥३॥
 सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैणीं
 रमत्कीरवाणीं नमद्वज्रपाणीम्।
 सुधामन्थरास्यां मुदा चिन्त्यवेणीं
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम्॥४॥
 सुशान्तां सुदेहां दृगन्ते कचान्तां
 लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम्।
 स्मरेत्तापसैः सङ्गपूर्वस्थितां तां
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम्॥५॥
 कुरञ्जे तुरञ्जे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे
 मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम्।
 महत्यां नवम्यां सदा सामरूपां
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम्॥६॥
 ज्वलत्कान्तिवहिं जगन्मोहनाङ्गीं
 भजे मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृग्नीम्।
 निजस्तोत्रसङ्गीतनृत्यप्रभाङ्गीं
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम्॥७॥
 भवाम्भोजनेत्राजसम्मूज्यमानां
 लसन्मन्दहासप्रभावक्ञचिह्नाम्।
 चलच्चश्वलाचारुताटङ्ककर्णो
 भजे शारदाम्बामजस्तं मदम्बाम्॥८॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ शारदा प्रार्थना ॥

नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुरवासिनि।
 त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥ १ ॥

या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा।
 भक्तजिह्वाग्रसदना शमादिगुणदायिनी ॥ २ ॥

नमामि यामिनीं नाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम्।
 भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीम् ॥ ३ ॥

भद्रकाल्यै नमो नित्यं सरस्वत्यै नमो नमः।
 वेदवेदाङ्गवेदान्तविद्यास्थानेभ्य एव च ॥ ४ ॥

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी।
 सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

यया विना जगत्सर्वं शश्वजीवन्मृतं भवेत्।
 ज्ञानाधिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः ॥ ६ ॥

यया विना जगत्सर्वं मूकमुन्मत्तवत् सदा।
 या देवी वागधिष्ठात्री तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-शारदा-प्रार्थना सम्पूर्णा ॥

॥ वाणीस्तवनम् ॥

श्री-नारायण उवाच

वाग्देवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदम्।
महामुनिर्याज्ञवल्क्यो येन तुष्टव तां पुरा ॥ १ ॥

गुरुशापाच्च स मुनिर्हतविद्यो बभूव ह।
तदा जगाम दुःखातां रविस्थानं च पुण्यदम् ॥ २ ॥

सम्प्राप्य तपसा सूर्य कोणार्के दृष्टिगोचरे।
तुष्टव सूर्य शोकेन रुरोद स पुनः पुनः ॥ ३ ॥

सूर्यस्तं पाठयामास वेदवेदाङ्गमीश्वरः।
उवाच स्तुहि वाग्देवीं भक्त्या च स्मृतिहेतवे ॥ ४ ॥

तमित्युत्त्वा दीननाथो ह्यन्तर्धानं जगाम सः।
मुनिः स्नात्वा च तुष्टव भक्तिनम्रात्मकन्धरः ॥ ५ ॥

याज्ञवल्क्य उवाच

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्।
गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम् ॥ ६ ॥

ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्यां विद्याधिदेवते।
प्रतिष्ठां कवितां देहि शक्तिं शिष्यप्रबोधिकाम् ॥ ७ ॥

ग्रन्थनिर्मितिशक्तिं च सच्छिष्यं सुप्रतिष्ठितम्।
प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम् ॥ ८ ॥

लुप्तां सर्वा दैववशान्नवं कुरु पुनः पुनः।
यथाऽङ्कुरं जनयति भगवान्योगमायया ॥९॥

ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी।
सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥ १० ॥

यया विना जगत्सर्वं शश्वजीवन्मृतं सदा।
ज्ञानाधिदेवी या तस्यै सरस्वत्यै नमो नमः ॥ ११ ॥

यया विना जगत्सर्वं मूकमुन्मत्तवत्सदा।
वागधिष्ठातृदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ॥ १२ ॥

हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाभ्मोजसन्निभा ।
वर्णाधिदेवी या तस्यै चाक्षरायै नमो नमः ॥ १३ ॥

विसर्गबिन्दुमात्राणां यदधिष्ठानमेव च।
इत्थं त्वं गीयसे सद्द्विर्भारत्यै ते नमो नमः ॥ १४ ॥

यया विनाऽत्र सञ्चाकृत्सञ्चां कर्तुं न शकुते।
कालसञ्चास्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ॥ १५ ॥

व्याख्यास्वरूपा या देवी व्याख्याधिष्ठातृदेवता।
भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ॥ १६ ॥

स्मृतिशक्तिर्ज्ञानशक्तिर्बुद्धिशक्तिस्वरूपिणी ।
प्रतिभा कल्पनाशक्तिर्यां च तस्यै नमो नमः ॥ १७ ॥

सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै।
बभूव जडवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः ॥ १८ ॥

तदाऽऽजगाम भगवानात्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः ।
 उवाच स च तं स्तौहि वाणीमिति प्रजापते ॥ १९ ॥
 स च तुष्टव तां ब्रह्मा चाऽऽज्ञया परमात्मनः ।
 चकार तत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम् ॥ २० ॥
 यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा ।
 बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः ॥ २१ ॥
 तदा त्वां च स तुष्टव सञ्चस्तः कश्यपाज्ञया ।
 ततश्चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभञ्जनम् ॥ २२ ॥
 व्यासः पुराणसूत्रं समपृच्छद्वालिमकिं यदा ।
 मौनीभूतः स सस्मार त्वामेव जगदम्बिकाम् ॥ २३ ॥
 तदा चकार सिद्धान्तं त्वद्वरेण मुनीश्वरः ।
 स प्राप निर्मलं ज्ञानं प्रमादध्वंसकारणम् ॥ २४ ॥
 पुराणसूत्रं श्रुत्वा स व्यासः कृष्णकलोद्भवः ।
 त्वां सिषेवे च दध्यौ तं शतवर्षं च पुष्करे ॥ २५ ॥
 तदा त्वत्तो वरं प्राप्य स कवीन्द्रो बभूव ह ।
 तदा वेदविभागं च पुराणानि चकार ह ॥ २६ ॥
 यदा महेन्द्रे पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं शिवा शिवम् ।
 क्षणं त्वामेव सञ्चिन्त्य तस्यै ज्ञानं ददौ विभुः ॥ २७ ॥
 पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम् ।
 दिव्यं वर्षसहस्रं च स त्वां दध्यौ च पुष्करे ॥ २८ ॥
 तदा त्वत्तो वरं प्राप्य दिव्यं वर्षसहस्रकम् ।
 उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम् ॥ २९ ॥

अध्यापिताश्च यैः शिष्या यैरधीतं मुनीश्वरैः।
ते च त्वां परिसञ्चिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरि॥ ३०॥

त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रमनुमानवैः।
दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः॥ ३१॥

जडीभूतः सहस्रास्यः पञ्चवक्त्रश्वतुर्मुखः।
यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्येन मानवः॥ ३२॥

इत्युत्तवा याज्ञवल्क्यश्च भक्तिनप्रात्मकन्धरः।
प्रणनाम निराहारो रुरोद च मुहुर्मुहुः॥ ३३॥

तदा ज्योतिः स्वरूपा सा तेनाऽदृष्टाऽप्युवाच तम्।
सुकवीन्द्रो भवेत्युत्तवा वैकुण्ठं च जगाम ह॥ ३४॥

महामूर्खश्च दुर्मेधा वर्षमेकं च यः पठेत्।
स पण्डितश्च मेधावी सुकविश्च भवेद्गुवम्॥ ३५॥

॥ इति श्रीब्रह्मवैर्वर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे
श्री-नारद-नारायण-संवादे श्री-याज्ञवल्क्योक्तं श्री-वाणीस्तवनं
सम्पूर्णम्॥

॥ सरस्वतीस्तोत्रं बृहस्पतिविरचितम्॥

बृहस्पतिरुवाच

सरस्वति नमस्यामि चेतनां हृदि संस्थिताम्।
कण्ठस्थां पद्मयोनिं त्वां हीङ्कारां सुप्रियां सदा ॥ १॥

मतिदां वरदां चैव सर्वकामफलप्रदाम्।
 केशवस्य प्रियां देवीं वीणाहस्तां वरप्रदाम्॥२॥

मन्त्रप्रियां सदा हृद्यां कुमतिध्वंसकारिणीम्।
 स्वप्रकाशां निरालम्बामज्ञानतिमिरापहाम्॥३॥

मोक्षप्रियां शुभां नित्यां सुभगां शोभनप्रियाम्।
 पद्मोपविष्टं कुण्डलिनीं शुक्लवस्त्रां मनोहराम्॥४॥

आदित्यमण्डले लीनां प्रणमामि जनप्रियाम्।
 ज्ञानाकारां जगद्वीपां भक्तविद्विनाशिनीम्॥५॥

इति सत्यं स्तुता देवी वागीशेन महात्मना।
 आत्मानं दर्शयामास शरदिन्दुसमप्रभाम्॥६॥

श्रीसरस्वत्युवाच

वरं वृणीष्व भद्रं त्वं यत्ते मनसि वर्तते।

बृहस्पतिरुवाच

प्रसन्ना यदि मे देवि परं ज्ञानं प्रयच्छ मे॥७॥

श्रीसरस्वत्युवाच

दत्तं ते निर्मलं ज्ञानं कुमतिध्वंसकारकम्।
 स्तोत्रेणानेन मां भक्त्या ये स्तुवन्ति सदा नराः॥८॥

लभन्ते परमं ज्ञानं मम तुल्यपराक्रमाः।
 कवित्वं मत्प्रसादेन प्राप्नुवन्ति मनोगतम्॥९॥

त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा यस्त्वमं पठते नरः।
 तस्य कण्ठे सदा वासं करिष्यामि न संशयः॥१०॥

॥ इति श्री-रुद्रयामले श्री-बृहस्पतिविरचितं श्री-सरस्वतीस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥

❖ ❖ ❖

॥ सुब्रह्मण्यभुजङ्गम् ॥

सदा बालरूपाऽपि विघ्नाद्रिहन्त्री
 महादन्तिवक्राऽपि पञ्चास्यमान्या।
 विधीन्द्रादिमृग्या गणेशाभिधा मे
 विधत्तां श्रियं काऽपि कल्याणमूर्तिः ॥ १ ॥

न जानामि शब्दं न जानामि चार्थं
 न जानामि पद्यं न जानामि गद्यम्।
 चिदेका षडास्या हृदि द्योतते मे
 मुखान्निस्सरन्ते गिरश्चापि चित्रम् ॥ २ ॥

मयूराधिरूढं महावाक्यगृहं
 मनोहारिदेहं महच्चित्तगेहम्।
 महीदेवदेवं महावेदभावं
 महादेवबालं भजे लोकपालम् ॥ ३ ॥

यदा सन्निधानं गता मानवा मे
 भवाम्भोधिपारं गतास्ते तदैव।
 इति व्यञ्जयन् सिन्धुर्तीरे य आस्ते
 तमीडे पवित्रं पराशक्तिपुत्रम् ॥ ४ ॥

यथाब्येस्तरङ्गा लयं यान्ति तुङ्गास-
 तथैवापदः सन्निधौ सेवतां मे।
 इतीवोर्मिपङ्कीर्नृणां दर्शयन्तं
 सदा भावये हृत्सरोजे गुहं तम् ॥ ५ ॥

गिरौ मन्त्रिवासे नरा येऽधिरूढास-
 तदा पर्वते राजते तेऽधिरूढाः।
 इतीव ब्रुवन् गन्धशैलाधिरूढः
 स देवो मुदे मे सदा षण्मुखोऽस्तु ॥ ६ ॥
 महाभ्योधितीरे महापापचोरे
 मुनीन्द्रानुकूले सुगन्धारव्यशैले।
 गुहायां वसन्तं स्वभासा लसन्तं
 जनार्ति हरन्तं श्रयामो गुहं तम् ॥ ७ ॥
 लसत्स्वर्णगेहे नृणां कामदोहे
 सुमस्तोमसञ्छन्नमाणिक्यमच्चे ।
 समुद्यत्सहस्रार्कतुल्यप्रकाशं
 सदा भावये कार्त्तिकेयं सुरेशम् ॥ ८ ॥
 रणद्वंसके मञ्जुलेऽत्यन्तशोणे
 मनोहारिलावण्यपीयूषपूर्णे ।
 मनःषद्दो मे भवक्षेशतसः
 सदा मोदतां स्कन्दं ते पादपद्मे ॥ ९ ॥
 सुवर्णाभद्रिव्याम्बरैर्भासमानां
 क्षणत्विक्षिणीमेखलाशोभमानाम् ।
 लसद्वेमपट्टेन विद्योतमानां
 कटि भावये स्कन्दं ते दीप्यमानाम् ॥ १० ॥
 पुलिन्देशकन्याघनाभोगतुङ्ग-
 स्तनालिङ्गनासक्तकाशमीररागम्।
 नमस्याम्यहं तारकारे तवोरः
 स्वभक्तावने सर्वदा सानुरागम् ॥ ११ ॥

विधौ कृपदण्डान् स्वलीलाधृताण्डान्
 निरस्तेभशुण्डान् द्विष्टकालदण्डान्।
 हतेन्द्रारिष्टण्डाङ्गत्वाणशौण्डान्
 सदा ते प्रचण्डान् श्रये बाहुदण्डान्॥ १२ ॥

सदा शारदाः षण्मृगाङ्का यदि स्युः
 समुद्यन्त एव स्थिताश्वेत् समन्तात्।
 सदा पूर्णविम्बाः कलङ्कैश्च हीनास्-
 तदा त्वन्मुखानां ब्रुवे स्कन्द साम्यम्॥ १३ ॥

स्फुरन्मन्दहासैः सहंसानि चञ्चत्
 कटाक्षावलीभृज्जसङ्घोज्ज्वलानि ।
 सुधास्यन्दिविम्बाधराणीशसूनो
 तवाऽऽलोकये षण्मुखाम्भोरुहाणि॥ १४ ॥

विशालेषु कर्णान्तदीर्घेष्वजस्तं
 द्यास्यन्दिषु द्वादशस्वीक्षणेषु।
 मयीषत् कटाक्षः सकृत् पातितश्वेद्-
 भवेत् ते द्याशील का नाम हानिः॥ १५ ॥

सुताङ्गोद्भवो मेऽसि जीवेति षड्जा
 जपन् मन्त्रमीशो मुदा जिग्रते यान्।
 जगद्वारभृज्यो जगन्नाथ तेभ्यः
 किरीटोज्ज्वलेभ्यो नमो मस्तकेभ्यः॥ १६ ॥

स्फुरद्रुतकेयूरहाराभिरामश्-
 चलत्कुण्डलश्रीलसदृण्डभागः।
 कटौ पीतवासाः करे चारुशक्तिः
 पुरस्तान्ममास्तां पुरारेस्तनूजः॥ १७ ॥

इहाऽयाहि वत्सेति हस्तान् प्रसार्या-
 ७७ह्यत्यादराच्छङ्करे मातुरङ्कात्।
 समुत्पत्य तातं श्रयन्तं कुमारं
 हराश्लिष्टगात्रं भजे बालमूर्तिम्॥ १८॥
 कुमारेशसूनो गुह स्कन्द सेना-
 पते शक्तिपाणे मयूराधिरूढ।
 पुलिन्दात्मजाकान्त भक्तार्तिहारिन्
 प्रभो तारकारे सदा रक्ष मां त्वम्॥ १९॥
 प्रशान्तेन्द्रिये नष्टसंज्ञे विचेष्टे
 कफोद्वारिवक्रे भयोत्कम्पिगात्रे।
 प्रयाणोन्मुखे मय्यनाथे तदानीं
 द्रुतं मे दयालो भवाग्ने गुह त्वम्॥ २०॥
 कृतान्तस्य दूतेषु चण्डेषु कोपाद्-
 दहच्छन्धि भिन्नीति मां तर्जयत्सु।
 मयूरं समारुह्य मा भीरिति त्वं
 पुरः शक्तिपाणिर्ममाऽयाहि शीघ्रम्॥ २१॥
 प्रणम्यासकृत् पादयोस्ते पतित्वा
 प्रसाद्य प्रभो प्रार्थयेऽनेकवारम्।
 न वकुं क्षमोऽहं तदानीं कृपाव्ये
 न कार्यान्तकाले मनागप्युपेक्षा॥ २२॥
 सहस्राण्डभोक्ता त्वया शूरनामा
 हतस्तारकः सिंहवक्रश्च दैत्यः।
 ममान्तर्हदिस्थं मनःक्लेशमेकं
 न हंसि प्रभो किं करोमि क यामि॥ २३॥

अहं सर्वदा दुःखभारावसन्नो
 भवान् दीनबन्धुस्त्वदन्यं न याचे।
 भवद्दक्तिरोधं सदा कृतबाधं
 ममाधिं द्रुतं नाशयोमासुत त्वम्॥२४॥

अपस्मारकुष्ठक्षयार्शः प्रमेह-
 ज्वरोन्मादगुल्मादिरोगा महान्तः।
 पिशाचाश्च सर्वे भवत्पत्रभूतिं
 विलोक्य क्षणात् तारकारे द्रवन्ते॥२५॥

दृशि स्कन्दमूर्तिः श्रुतौ स्कन्दकीर्तिर्-
 मुखे मे पवित्रं सदा तच्चरित्रम्।
 करे तस्य कृत्यं वपुस्तस्य भृत्यं
 गुहे सन्तु लीना ममाशेषभावाः॥२६॥

मुनीनामुताहो नृणां भक्तिभाजाम्
 अभीष्टप्रदाः सन्ति सर्वत्र देवाः।
 नृणामन्त्यजानामपि स्वार्थदाने
 गुहादेवमन्यं न जाने न जाने॥२७॥

कलत्रं सुता बन्धुवर्गः पशुर्वा
 नरो वाऽथ नारी गृहे ये मदीयाः।
 यजन्तो नमन्तः स्तुवन्तो भवन्तं
 स्मरन्तश्च ते सन्तु सर्वे कुमार॥२८॥

मृगाः पक्षिणो दंशका ये च दुष्टास्-
 तथा व्याधयो बाधका ये मदज्जं।
 भवच्छक्तिरीक्षणाग्रभिन्नाः सुदूरे
 विनश्यन्तु ते चूर्णितकौञ्चशैल ॥ २९ ॥

जनित्री पिता च स्वपुत्रापराधं
 सहेते न किं देवसेनाधिनाथ।
 अहं चातिबालो भवाँल्लोकतातः
 क्षमस्वापराधं समस्तं महेश ॥ ३० ॥

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यं
 नमश्छाग तुभ्यं नमः कुकुटाय।
 नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यं
 पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु ॥ ३१ ॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन्
 जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते।
 जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो
 जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो ॥ ३२ ॥

भुजङ्गाख्यवृत्तेन कृसं स्तवं यः
 पठेद्दक्तियुक्तो गुहं सम्प्रणम्य।
 स पुत्रान् कलत्रं धनं दीर्घमायुर्-
 लभेत् स्कन्दसायुज्यमन्ते नरः सः ॥ ३३ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्गरभगवतः कृतौ
 श्री-सुब्रह्मण्यभुजङ्गं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री-परमशिवेन्द्र-कृतं सुब्रह्मण्य-भुजङ्गम् ॥

गणेशं नमस्कृत्य गौरी-कुमारं
 गजास्यं गुहस्याग्र-जातं गभीरम्।
 प्रलम्बोदरं शूर्प-कर्णं त्रि-णेत्रं
 प्रवक्ष्ये भुजङ्ग-प्रयातं गुहस्य ॥ १ ॥

पृथक्-षट्-किरीट-स्फुरद्-दिव्य-रत्न-
 प्रभाक्षिप्त-मार्तण्ड-कोटि-प्रकाशम् ।
 चलत्-कुण्डलोद्यत्-सु-गण्ड-स्थलान्तं
 महानर्घ-हारोज्ज्वलत्-कम्बु-कण्ठम् ॥ २ ॥

शरत्-पूर्ण-चन्द्र-प्रभा-चारु-वक्रं
 विराजल्लुलाटं कृपा-पूर्ण-नेत्रम्।
 लसद्-भ्रू-सु-नासा-पुटं विद्रुमोषं
 सु-दन्तावलिं सुस्मितं प्रेम-पूर्णम् ॥ ३ ॥

द्वि-षड्-बाहु-दण्डाग्र-देदीप्यमानं
 कणत्-कङ्कणालङ्कतोदार-हस्तम् ।
 लसन्मुद्रिका-रत्न-राजत्-कराग्रं
 कणत्-किङ्किणी-रम्य-काञ्ची-कलापम् ॥ ४ ॥

विशालोदरं विस्फुरत्-पूर्ण-कृक्षिं
 कटौ-स्वर्ण-सूत्रं तटिद्-वर्ण-गात्रम्।
 सु-लावण्य-नाभी-सरस्तीर-राजत्-
 सु-शैवाल-रोमावली-रोचमानम् ॥ ५ ॥

सु-कल्पोल-वीची-वली-रोचमानं
 लसन्मध्य-सुस्तिंघ-वासो वसानम्।
 स्फुरच्चारु-दिव्योरु-जडा-सु-गुल्फं
 विकस्वत्-पदाङ्गं नखेन्दु-प्रभाद्यम्॥ ६॥
 द्वि-षट्-पङ्कजाक्षं महा-शक्ति-युक्तं
 त्रि-लोक-प्रशस्तं सु-कुक्ते-पुर-स्थम्।
 प्रपन्नार्ति-नाशं प्रसन्नं फणीशं
 पर-ब्रह्म-रूपं प्रकाशं परेशम्॥ ७॥
 कुमारं वरेण्यं शरण्यं सु-पुण्यं
 सु-लावण्य-पण्यं सुरेशानुवर्ण्यम्।
 लसत्-पूर्ण-कारुण्य-लक्ष्मीशा-गण्यं
 सु-कारुण्यमार्याद्य-गण्यं नमामि॥ ८॥
 स्फुरद्-रत्न-पीठोपरि भ्राजमानं
 हृदमोज-मध्ये महा-सञ्चिधानम्।
 समावृत्त-जानु-प्रभा-शोभमानं
 सुरैः सेव्यमानं भजे बर्हि-यानम्॥ ९॥
 ज्वल-च्चारु-चामीकरादर्श-पूर्ण
 चलच्चामर-च्छत्र-चित्र-ध्वजाद्यम्।
 सुवर्णामलान्दोलिका-मध्य-संस्थं
 महाहीन्द्र-रूपं भजे सु-प्रतापम्॥ १०॥
 धनुर्बाण-चक्राभयं वज्र-खेटं
 त्रि-शूलासि-पाशाङ्कुशाभीति-शाह्वम्।
 ज्वलत्-कुकुटं प्रोल्लसद्-द्वादशाक्षं
 प्रशस्तायुधं षण्मुखं तं भजेऽहम्॥ ११॥

स्फुरच्चारु-गण्डं द्वि-षड्-बाहु-दण्डं
 श्रितामर्त्य-षण्डं सुसम्पत्-करण्डम्।
 द्विषद्-वंशा-खण्डं सदा दान-शौण्डं
 भव-प्रेम-पिण्डं भजे सु-प्रचण्डम्॥ १२॥
 सदा दीन-पक्षं सुर-द्विड्-विपक्षं
 सुमृष्टान्न-भक्ष्य-प्रदानैक-दक्षम्।
 श्रितामर्त्य-वृक्षं महा-दैत्य-शिक्षं
 बहु-क्षीण-पक्षं भजे द्वादशाक्षम्॥ १३॥
 त्रि-मूर्ति-स्वरूपं त्रयी-सत्-कलापं
 त्रि-लोकाधिनाथं त्रिणेत्रात्म-जातम्।
 त्रि-शक्त्या प्रयुक्तं सु-पुण्य-प्रशस्तं
 त्रि-काल-ज्ञमिष्ठार्थ-दं तं भजेऽहम्॥ १४॥
 विराजद्-भुजङ्गं विशालोत्तमाङ्गं
 विशुद्धात्म-सङ्गं विवृद्ध-प्रसङ्गम्।
 विचिन्त्यं शुभाङ्गं विकृत्तासुराङ्गं
 भव-व्याधि-भङ्गं भजे कुक्क-लिङ्गम्॥ १५॥
 गुह स्कन्द गाङ्गेय गौरी-सुतेश-
 प्रिय क्रौञ्च-भित् तारकारे सुरेश।
 मयूरासनाशोष-दोष-प्रणाश
 प्रसीद प्रसीद प्रभो चित्-प्रकाश॥ १६॥
 लपन् देव-सेनेश भूतेश शोष-
 स्वरूपाग्नि-भूः कार्त्तिकेयान्न-दातः।
 यदेत्थं स्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तं
 तदा मे षडास्य प्रसीद प्रसीद॥ १७॥

भुजे शौर्य-धैर्यं करे दान-धर्मः
 कटाक्षेऽतिशान्तिः पडास्येषु हास्यम्।
 हृदञ्जे दया यस्य तं देवमन्यं
 कुमारान्नं जाने न जाने न जाने॥ १८॥

मही-निर्जरशान्महा-नृत्य-तोषात्
 विहङ्गाधिरूढाद् बिलान्तर्विगृढात्।
 महेशात्म-जातान्महा-भोगि-नाथाद्
 गुहाद् दैवमन्यन्नं मन्ये न मन्ये॥ १९॥

सुरोचुङ्ग-श्यञ्चार-सञ्जीत-पूर्ण-
 प्रसञ्ज-प्रियासञ्ज-सम्मोहनाङ्ग ।
 भुजञ्जेश भूतेश भृञ्जेश तुभ्यं
 नमः कुक्क-लिङ्गाय तस्मै नमस्ते॥ २०॥

नमः काल-कण्ठ-प्रसूढाय तस्मै
 नमो नीलकण्ठाधिरूढाय तस्मै।
 नमः प्रोल्लसच्चारु-चूडाय तस्मै
 नमो दिव्य-रूपाय शान्ताय तस्मै॥ २१॥

नमस्ते नमः पार्वती-नन्दनाय
 स्फुरच्चित्र-बही-कृत-स्यन्दनाय ।
 नमश्चर्चिताङ्गोज्ज्वलच्छन्दनाय
 प्रविच्छेदित-प्राण-भृद्-बन्धनाय॥ २२॥

नमस्ते नमस्ते जगत्-पावनात्-
 स्वरूपाय तस्मै जगजीवनाय।
 नमस्ते नमस्ते जगद्-वन्दिताय
 ह्यरूपाय तस्मै जगन्मोहनाय॥२३॥

नमस्ते नमस्ते नमः क्रौञ्च-भेत्रे
 नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-कर्त्रै।
 नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-गोप्रे
 नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-हन्त्रे॥२४॥

नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-भर्त्रै
 नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-धात्रे।
 नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-नेत्रे
 नमस्ते नमस्ते नमो विश्व-शास्त्रे॥२५॥

नमस्ते नमश्शेष-रूपाय तुभ्यं
 नमस्ते नमो दिव्य-चापाय तुभ्यम्।
 नमस्ते नमः सत्-प्रतापाय तुभ्यं
 नमस्ते नमः सत्-कलापाय तुभ्यम्॥२६॥

नमस्ते नमः सत्-किरीटाय तुभ्यं
 नमस्ते नमः स्वर्ण-पीठाय तुभ्यम्।
 नमस्ते नमः सळुलाटाय तुभ्यं
 नमस्ते नमो दिव्य-रूपाय तुभ्यम्॥२७॥

नमस्ते नमो लोक-रक्षाय तुभ्यं
 नमस्ते नमो दीन-रक्षाय तुभ्यम्।
 नमस्ते नमो दैत्य-शिक्षाय तुभ्यं
 नमस्ते नमो द्वादशाक्षाय तुभ्यम्॥२८॥

भुजङ्गाकृते त्वत्-प्रियार्थं मयेदं
 भुजङ्ग-प्रयातेन वृत्तेन क्षृस्तम्।
 तव स्तोत्रमेतत् पवित्रं सु-पुण्यं
 परानन्द-सन्दोह-संवर्धनाय ॥ २९ ॥

त्वदन्यत् परं दैवतं नाभिजाने
 प्रभो पाहि सम्पूर्ण-दृष्ट्यानुगृह्णा।
 यथा-शक्ति भक्त्या कृतं स्तोत्रमेकं
 विभो मेऽपराधं क्षमस्वाखिलेश ॥ ३० ॥

इदं तारकारेगुण-स्तोत्र-राजं
 पठन्तस्त्रिय-कालं प्रपन्ना जना ये।
 सुपुत्राष-भोगानिह त्वेव भुत्त्वा
 लभन्ते तदन्ते परं स्वर्ग-भोगम् ॥ ३१ ॥

॥ इति श्रीमत्-काश्ची-कामकोटि-मूलाम्नाय-सर्वज्ञ-पीठाधिपति-
 जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-श्रीमत्-सदाशिव-बोधेन्द्र-सरस्वती-श्रीचरण-
 अन्तेवासिवर्य-श्रीमत्-परमशिवेन्द्र-सरस्वती-श्रीचरण-विरचितं
 सुब्रह्मण्य-भुजङ्गं सम्पूर्णम् ॥

॥ गुहपञ्चरत्नम् ॥

ओङ्कारनगरस्थं तं निगमान्तवनेश्वरम्।
 नित्यमेकं शिवं शान्तं वन्दे गुहमुमासुतम् ॥ १ ॥
 वाचामगोचरं स्कन्दं चिदुद्यानविहारिणम्।
 गुरुमूर्ति महेशानं वन्दे गुहमुमासुतम् ॥ २ ॥

सच्चिदनन्दरूपेशं संसारध्वान्तदीपकम्।
सुब्रह्मण्यमनाद्यन्तं वन्दे गुहमुमासुतम्॥३॥

स्वामिनाथं दयासिन्युं भवाव्येस्तारकं प्रभुम्।
निष्कलङ्कं गुणातीतं वन्दे गुहमुमासुतम्॥४॥

निराकारं निराधारं निर्विकारं निरामयम्।
निर्द्वन्द्वं च निरालम्बं वन्दे गुहमुमासुतम्॥५॥
॥इति श्री-गुहपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥सुब्रह्मण्यपञ्चरत्नम्॥

षडाननं चन्दनलेपिताङ्गं
महोरसं दिव्यमयूरवाहनम्।
रुद्रस्य सूनुं सुरलोकनाथं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥१॥

जाज्वल्यमानं सुरवृन्दवन्दं
कुमार-धारातट-मन्दिरस्थम्।
कन्दपरूपं कमनीयगात्रं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥२॥

द्विषङ्गुजं द्वादशादिव्यनेत्रं
त्रयीतनुं शूलमसीदधानम्।
शोषावतारं कमनीयरूपं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥३॥

सुरारिघोराहवशोभमानं
सुरोत्तमं शक्तिघरं कुमारम्।
सुधार-शक्तयायुध-शोभिहस्तं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥४॥

इष्टार्थसिद्धिप्रदमीशपुत्रं
मिष्टान्नदं भूसुरकामधेनुम्।
गङ्गोद्धवं सर्वजनानुकूलं
ब्रह्मण्यदेवं शरणं प्रपद्ये॥५॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठतीह भक्त्या
ब्रह्मण्यदेव-विनिवेशित-मानसः सन्।
प्राप्नोति भोगमखिलं भुवि यद्यदिष्टम्
अन्ते स गच्छति मुदा गुहसाम्यमेव ॥
॥ इति श्री-सुब्रह्मण्यपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ प्रज्ञाविवर्धन-कार्त्तिकेय-स्तोत्रम् ॥

स्कन्द उवाच

योगीश्वरो महासेनः कार्त्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानीः स्वामी शङ्करसम्भवः ॥ १ ॥

गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौञ्चारिश्च षडाननः ॥ २ ॥

शब्दब्रह्मसमुदश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षफलप्रदः ॥ ३ ॥

शरजन्मा गणाधीशपूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वांगमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदायकः ॥ ४ ॥

अष्टाविंशतिनामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूं श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत् ॥ ५ ॥

महामन्त्रमयानीति मम नामानुकीर्तनम्।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ ६ ॥

पुष्यनक्षत्रम् आरभ्य दशवारं पठेन्नरः।
पुष्यनक्षत्र-पर्यन्ते श्वत्थमूले दिने दिने।
पुरश्चरण-मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७ ॥

॥ इति श्री-रुद्र्यामलरहस्ये प्रज्ञाविवर्धन-कार्त्तिकेय-
स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सुब्रह्मण्यषोडशनामस्तोत्रम् ॥

सुब्रह्मण्यं प्रणाम्यहं सर्वज्ञं सर्वगं सदा।
अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं प्रवक्ष्ये नामषोडशम् ॥ १ ॥

प्रथमो ज्ञानशक्तयात्मा द्वितीयो स्कन्द एव च।
अग्निभूश्व तृतीयः स्याद् बाहुलेयश्चतुर्थकः ॥ २ ॥

गाङ्गेयः पञ्चमो विद्यात् षष्ठः शरवणोद्द्वः।
सप्तमः कार्त्तिकेयः स्यात् कुमारः स्यादथाष्टकः ॥ ३ ॥

नवमः षण्मुखश्चैव दशमः कुक्षुटध्वजः।
एकादशः शक्तिधरो गुहो द्वादश एव च ॥ ४ ॥

त्रयोदशो ब्रह्मचारी षाण्मातुरश्चतुर्दशः।
क्रौञ्चभित् पञ्चदशकः षोडशः शिखिवाहनः॥५॥

एतद्वोडशनामानि जपेत् सम्यक् सदादरम्।
विवाहे दुर्गमे मार्गे दुर्जये च तथैव च॥६॥

कवित्वे च महाशस्त्रे विज्ञानार्थी फलं लभेत्।
कन्यार्थी लभते कन्यां जयार्थी लभते जयम्॥७॥

पुत्रार्थी पुत्रलाभं च धनार्थी लभते धनम्।
आयुरारोग्यवश्यश्च धनधान्य-सुखावहम्॥॥८॥

॥ इति श्री-शङ्करसंहितायां शिवरहस्यखण्डे
श्री-सुब्रह्मण्यषोडशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ हरिहरात्मजाष्टकम् ॥

हरिवरासनं विश्वमोहनं
 हरिदधीश्वरम् आराध्यपादुकम्।
 अरिविमर्दनं नित्यनर्तनं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ १ ॥

चरणकीर्तनं भक्तमानसं
 भरणलोलुपं नर्तनालसम्।
 अरुणभासुरं भूतनायकं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ २ ॥

प्रणयसत्यकं प्राणनायकं
 प्रणतकल्पकं सुप्रभञ्चितम्।
 प्रणवमन्दिरं कीर्तनप्रियं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ ३ ॥

तुरगवाहनं सुन्दराननं
 वरगदायुधं वेदवर्णितम्।
 गुरुकृपाकरं कीर्तनप्रियं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ ४ ॥

त्रिभुवनार्चितं देवतात्मकं
 त्रिनयनप्रभुं दिव्यदेशिकम्।
 त्रिदशापूजितं चिन्तितप्रदं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ ५ ॥

भवभयापहं भावुकावकं
 भुवनमोहनं भूतिभूषणम्।
 धवलवाहनं दिव्यवारणं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ ६ ॥

 कलमूदुस्मितं सुन्दराननं
 कलभकोमलं गात्रमोहनम्।
 कलभकेसरीं वाजिवाहनं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ ७ ॥

 श्रितजनप्रियं चिन्तितप्रदं
 श्रुतिविभूषणं साधुजीवनम्।
 श्रुतिमनोहरं गीतलालसं
 हरिहरात्मजं देवमाश्रये ॥ ८ ॥

 ॥ इति श्री-हरिहरात्मजाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ शास्तादशकम् ॥

लोकवीरं महापूज्यं सर्वरक्षकरं विभुम्।
 पार्वती-हृदयानन्दं शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥

 विप्रपूज्यं विश्ववन्द्यं विष्णुशम्भोर्प्रियं सुतम्।
 क्षिप्रप्रसादनिरतं शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥

 मतमातङ्गगमनं कारुण्यामृतपूरितम्।
 सर्वविघ्नहरं देवं शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

 अस्मद्कुलेश्वरं देवम् अस्मच्छत्रुविनाशकम्।
 अस्मदिष्टप्रददरं शास्तारं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

पाण्ड्येशवंशतिलकं केरळे केलिविग्रहम्।
 आर्तत्राणपरं देवं शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥५॥
 ऋम्बकपुरादीशं गणाधिपसमन्वितम्।
 गजारूढमहं वन्दे शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥६॥
 शिववीर्यसमुद्भूतं श्रीनिवासतनूद्भवं।
 शिखिवाहानुजं वन्दे शास्तारं प्रणमाम्यहम्॥७॥
 यस्य धन्वन्तरिर्माता पिता देवो महेश्वरः।
 तं शास्तारमहं वन्दे महारोगनिवारणम्॥८॥
 भूतनाथ सदानन्द सर्वभूतदयापर।
 रक्ष रक्ष महाबाहो शास्त्रे तुभ्यं नमो नमः॥९॥
 आश्यामकोमलविशालतनुं विचित्रं
 वसोऽवसान अरुणोत्कलदामहस्तम्।
 उत्तुञ्जरत्नमकुटं कुटिलाग्रकेशं
 शास्तारमिष्टवरदं शरणं प्रपद्ये॥१०॥
 ॥इति श्री-शास्तादशकं सम्पूर्णम्॥



॥ नवग्रहस्तोत्रम् ॥

जपाकुसुमसङ्काशं काशयपेयं महाद्युतिम्।
 तमोरि सर्वपापन्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ १ ॥

दधिशास्त्रतुषारामं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
 नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
 कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
 सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
 बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥

हिमकुन्दमृणालामं दैत्यानां परमं गुरुम्।
 सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
 छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविर्दनम्।
 सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
 रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥

इति व्यासमुखोदीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
 दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥ १० ॥

नरनारीनृपाणां च भवेहुः स्वप्रनाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥ ११॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः॥ १२॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ नवग्रहमङ्गलाष्टकम् ॥

भास्वानर्कसमिच्च रक्तकिरणः सिंहाधिपः काश्यपो
गुर्विन्दोश्च कुजस्य मित्रमरिगः त्रिस्थः शुभः प्राज्ञुखः।
शत्रुभार्गवसौरयोः प्रियः कुजः कालिङ्गदेशाधिपो
मध्ये वर्तुलमण्डले स्थितिमितः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ १॥

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितरुचिश्चात्रेयगोत्रोद्भवः
चाम्रेये चतुरश्रकोऽपरमुखो गौर्यर्चया तर्पितः।
षष्ठसाग्निदशाद्यशेभनफलोऽशत्रुबुधार्कप्रियः
सौम्यो यामुनदेशपर्णजसमित्कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ २॥

भौमो दक्षिणदिक्क्रिकोणनिलयोऽवन्तीपतिः खादिर-
प्रीतो वृश्चिकमेषयोराधिपतिर्गुर्वक्चन्द्रप्रियः।
ज्ञारिः षड्ग्रिशुभप्रदश्च वसुधादाता गुहाधीश्वरो
भारद्वाजकुलाधिपोऽरुणरुचिः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ ३॥

सौम्यः पीत उद्ज्ञुखः समिदपामार्गोऽत्रिगोत्रोद्भवो
बाणेशानगतः सुहृदविसुतो वैरीकृतानुष्णारुक्।
कन्यायुग्मपतिर्दशाष्टमचतुःषणोत्रगः शोभनो
विष्वाराधनतर्पितो मगधपः कुर्यात्सदा मङ्गलम्॥ ४॥

जीवश्वोत्तरदिष्मुखोत्तरकुभ्जातोऽङ्गिरो गोत्रदः
 पीतोऽश्वत्थसमिच्च सिन्ध्वधिपतिः चापर्क्षमीनाधिपः ।
 सूर्यन्दुक्षितिजप्रियः सितबुधारातिः समो भानुजे
 सप्तापत्यतपोऽर्थगः शुभकरः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥५॥

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितरुचिः पूर्वाननः पूर्वदिक्
 काम्बोजाधिपतिस्तुलावृषभगश्चौदुम्बरैस्तर्पितः ।
 सौम्यकर्योः सुहृदम्बिकास्तुतिवशात् प्रीतोर्कचन्द्राहितो
 नारीभोगकरः शुभो भृगुसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥६॥

सौरिः कृष्णरुचिश्च पश्चिममुखः सौराष्ट्रपः काश्यपो
 नाथः कुम्भमृगक्षयोः प्रियसुहृत् शुक्रज्ञयोरुद्गगः ।
 षड्विस्थः शुभदो शुभो धनुगतिश्चापाकृतौ मण्डले
 सन्तिष्ठन् चिरजीवितादिफलदः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥७॥

राहुर्बर्वरदेशापो निर्त्रितौ कृष्णाङ्गशूर्पासनो
 याम्याशाभिमुखश्च चन्द्ररविरुद्धं पैडीनसिः क्रौर्यवान् ।
 षड्विस्थः शुभकृत् करालवदनः प्रीतश्च दूर्वाहुतौ
 दुर्गापूजनतः प्रसन्नहृदयः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥८॥

केतुजौमिनिगोत्रजः कुशसमिद्वायव्यकोणोरिथितः
 चित्राङ्गध्वजलाज्ज्ञनो हि भगवान् याम्याननः शोभनः ।
 सन्तुष्टो गणनाथपूजनवशात् गङ्गादितीर्थप्रदः
 षड्विस्थः शुभकृच्च चित्रिततनुः कुर्यात्सदा मङ्गलम् ॥९॥
 ॥ इति श्री-नवग्रहमङ्गलाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम् ॥

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः ।

विषमस्थानसमूतां पीडां हरतु मे रविः ॥ १ ॥

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ।

विषमस्थानसमूतां पीडां हरतु मे विघ्नः ॥ २ ॥

भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा ।

वृष्टिकृद्विष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥ ३ ॥

उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।

सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः ॥ ४ ॥

देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः ।

अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः ॥ ५ ॥

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।

प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः ॥ ६ ॥

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।

मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः ॥ ७ ॥

महाशिरा महावक्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।

अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ॥ ८ ॥

अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।

उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ॥ ९ ॥

॥ इति ब्रह्माण्डपुराणोक्तं नवग्रहपीडाहरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



आरोग्यं प्रददातु नो दिनकरश्चन्द्रो यशो निर्मलं
 भूतिं भूमिसुतः सुधांशुतनयः प्रज्ञां गुरुगौरवम्।
 काव्यः कोमलवाणिवलासमतुलं मन्दो मुदं सर्वदा
 राहुर्बाहुबलं विरोधशमनं केतुः कुलस्योन्नतिम्॥

॥ सूर्यग्रहण-पीडापरिहारश्लोकः ॥

इन्द्रोऽनलो दण्डधरश्च ऋक्षः प्रचेतसो वायु-कुबेर-ईशाः।
 मज्जन्म-ऋक्षे मम राशि-संस्थे अर्कोऽपरागं शमयन्तु सर्वे॥

॥ चन्द्रग्रहण-पीडापरिहारश्लोकः ॥

इन्द्रोऽनलो दण्डधरश्च ऋक्षः प्रचेतसो वायु-कुबेर-ईशाः।
 मज्जन्म-ऋक्षे मम राशि-संस्थे सोमोऽपरागं शमयन्तु सर्वे॥



॥ सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम् ॥

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुवरेण्यं
रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूषि।
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं
ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाञ्चनोभिर्-
ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च।
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं
त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥ २ ॥

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्ति
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम् ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः।
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात् ॥
॥ इति श्री-सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ आदित्यहृदयम् ॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ १ ॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमन्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद्रामम् अगस्त्यो भगवान् ऋषिः ॥ २ ॥

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानीरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि ॥ ३ ॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपेन्नित्यम् अक्षय्यं परमं शिवम् ॥ ४ ॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुर्वर्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥

रश्मिमन्तं समुद्घन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ६ ॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥ ७ ॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः ॥ ८ ॥

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ९ ॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्विश्वरेता दिवाकरः ॥ १० ॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शाभ्युस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान् ॥ ११ ॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः।
अग्निर्गर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीपूवङ्गमः ॥ १३ ॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥

नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ १६ ॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ १७ ॥

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः ॥ १८ ॥

ब्रह्मेशानाञ्च्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ १९ ॥

तमोन्नाय हिमन्नाय शत्रुन्नायामितात्मने।
कृतन्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ २० ॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनन्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ २१ ॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गमस्तिभिः ॥ २२ ॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥ २३॥

वेदाश्च क्रतवश्वैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वे एष रविः प्रभुः॥ २४॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥ २५॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत् त्रिगुणितं जस्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥ २६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि।
एवमुत्त्वा तदाऽगस्त्यो जगाम च यथाऽगतम्॥ २७॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥ २८॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जस्वा तु परं हर्षमवास्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥ २९॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्।
सर्वयन्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्॥ ३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निश्चरपतिसङ्घायं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥ ३१॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे
आदित्यहृदयं नाम सप्तोत्तरशततमः सर्गः॥

॥ सूर्यकवचम् ॥

याज्ञवल्क्य उवाच

शृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम् ॥ १ ॥

देदीप्यमानमुकुटं स्फुरन्मकरकुण्डलम्।
ध्यात्वा सहस्रकिरणं स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ॥ २ ॥

शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः।
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः ॥ ३ ॥

घ्राणं घर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुरवन्दितः ॥ ४ ॥

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः ॥ ५ ॥

सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके।
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्वसिद्धयः ॥ ६ ॥

सुखातो यो जपेत्सम्यग्योऽधीते स्वस्थमानसः।
स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति ॥ ७ ॥

॥ इति श्री-याज्ञवल्क्यमुनिविरचितं श्री-सूर्यकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सूर्यमण्डल-स्तोत्रम् ॥

नमोऽस्तु सूर्याय सहस्ररश्मये सहस्रशाखान्वितसम्भवात्मने।
सहस्रयोगोद्भवभावभागिने सहस्रसञ्चायुगधारिणे नमः ॥

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १ ॥

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं विप्रैः स्तुतं भावनमुक्तिकोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ २ ॥

यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त-तेजोमय-दिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ३ ॥

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्।
यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ४ ॥

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यद्यजुःसामसु सम्प्रगीतम्।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ५ ॥

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारण-सिद्धसञ्चाः।
यद्योगिनो योगजुषां च सञ्चाः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ६ ॥

यन्मण्डलं सर्वजनैश्च पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्कालकालाद्यमनादिरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ७ ॥

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखारब्यं यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ८ ॥

यन्मण्डलं विश्वसृजं प्रसिद्धमुत्पत्ति-रक्षा-प्रलय-प्रगल्भम्।
यस्मिङ्गत्संहरतेऽखिलं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ९ ॥

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम्।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ १०॥

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारण-सिद्धसङ्घाः।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ ११॥

यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।
तत्सर्ववेद्यं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ १२॥

सूर्यमण्डलसुस्तोत्रं यः पठेत् सततं नरः।
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते॥ १३॥

॥ इति श्री-भविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सूर्यमण्डलस्तोत्रं
सम्पूर्णम्॥



यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादि-गोचरे।
प्रेरयेत् तस्य यद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे॥

॥ द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः ॥

उद्यन्नय विवस्वानारोहन्नुत्तरां दिवं देवः।
हृद्रोगं मम सूर्यो हरिमाणं चाऽशु नाशयतु॥ १॥

निमिषाधैर्नैकेन द्वे च शते द्वे सहस्रे द्वे।
क्रममाण योजनानां नमोऽस्तु ते नलिननाथाय॥ २॥

कर्म-ज्ञान-ख-दशकं मनश्च जीव इति विश्व-सर्गाय।
द्वादशाधा यो विचरति स द्वादश-मूर्तिरस्तु मोदाय॥ ३॥

त्वं हि यजुर्ऋक् साम त्वमागमस्त्वं वषद्वारः।
त्वं विशं त्वं हंसस्त्वं भानो परमहंसश्च ॥४॥

शिवरूपाज्ञानमहं त्वत्तो मुक्तिं जनार्दनाकारात्।
शिखिरूपादैश्वर्यं त्वत्तश्चारोग्यमिच्छामि ॥५॥

त्वचि दोषा दृशि दोषा हृदि दोषा येऽशिलेन्द्रियज-दोषाः।
तान् पूषा हतदोषः किञ्चिद्दोषाभ्यना दहतु ॥६॥

धर्मार्थ-काम-मोक्ष-प्रतिरोधानुग्र-ताप-वेग-करान् ।
बन्दी-कृतेन्द्रिय-गणान् गदान् विखण्डयतु चण्डांशुः ॥७॥

येन विनेदं तिमिरं जगदेत्य ग्रसति चरमचरमशिलम्।
धृतबोधं तं नलिनीभर्तारं हर्तारमापदामीडे ॥८॥

यस्य सहस्राभीशोरभीशु-लेशो हिमांशु-बिम्बगतः।
भासयति नक्तमशिलं भेदयतु विपद्-गणानरुणः ॥९॥

तिमिरमिव नेत्र-तिमिरं पटलमिवाशेष-रोग-पटलं नः।
काशमिवाधि-निकायं कालपिता रोगयुक्तां हरतात् ॥१०॥

वाताश्मरी-गदाश्चस्त्वग्-दोष-महोदर-प्रमेहांश्च।
ग्रहणी-भगन्दराख्या महतीस्त्वं मे रुजो हंसि ॥११॥

त्वं माता त्वं शरणं त्वं धाता त्वं धनं त्वमाचार्यः।
त्वं त्राता त्वं हर्ता विपदार्मकं प्रसीद मम भानो ॥१२॥

इत्यार्या-द्वादशकं साम्बस्य पुरो नभःस्थलात् पातितम्।
पठतां भाग्य-समृद्धिः समस्त-रोग-क्षयश्च स्यात् ॥१३॥

॥ इति श्री-द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ सूर्यार्यास्तोत्रम् ॥

शुक्तुण्डच्छवि-सवितुश्चण्डरुचेः पुण्डरीकवनबन्धोः ।
मण्डलमुदितं वन्दे कुण्डलमाखण्डलाशायाः ॥ १ ॥

यस्योदयास्तसमये सुरमुकुट-निघृष्ट-चरणकमलोऽपि ।
कुरुतेज्जलिं त्रिनेत्रः स जयति धाम्नां निधिः सूर्यः ॥ २ ॥

उदयाचल-तिलकाय प्रणतोऽस्मि विवस्वते ग्रहेशाय ।
अम्बर-चूडामणये दिग्वनिताकर्णपूराय ॥ ३ ॥

जयति जनानन्दकरः करनिकर-निरस्त-तिमिर-सङ्घातः ।
लोकालोकालोकः कमलारुणमण्डलः सूर्यः ॥ ४ ॥

प्रतिबोधित-कमलवनः कृतघटनश्चकवाकमिथुनानाम् ।
दर्शित-समस्तभुवनः परहितनिरतो रविः सदा जयति ॥ ५ ॥

अपनयतु सकलकलिकृतमलपटलं सप्रतसकनकाभः ।
अरविन्द-वृन्द-विघटन-पटुतरकिरणोत्करः सविता ॥ ६ ॥

उदयादि-चारुचामरहरित हयखुरपरिहितरेणुराग ।
हरितहय हरितपरिकर गगनाङ्गनदीपक नमस्तेऽस्तु ॥ ७ ॥

उदितवति त्वयि विकसति मुकुलीयति समस्त-मस्तमितविम्बे ।
न ह्यन्यस्मिन्दिनकर सकलं कमलायते भुवनम् ॥ ८ ॥

जयति रविरुदयसमये बालातपः कनकसन्निभो यस्य ।
कुसुमाङ्गलिरिव जलधौ तरन्ति रथसप्तयः सप्त ॥ ९ ॥

आर्याः साम्बपुरे सप्त आकाशात्पतिता भुवि ।
यस्य कण्ठे गृहे वाऽपि न स लक्ष्म्या वियुज्यते ॥ १० ॥

आर्याः सप्त सदा यस्तु सप्तम्यां सप्तधा जपेत्।
तस्य गेहं च देहं च पद्मा सत्यं न मुच्चति ॥ ११ ॥

निधिरेश दरिद्राणां रोगिणां परमौषधम्।
सिद्धिः सकलकार्याणां गाथेयं संसृता रवेः ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीयाज्ञवल्क्यविरचितं सूर्यार्यास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सूर्यस्तुतिः ॥

नमो नमो वरेण्याय वरदायांशुमालिने।
ज्योतिर्मय नमस्तुभ्यमनन्तायाजिताय ते ॥ १ ॥

त्रिलोकचक्षुषे तुभ्यं त्रिगुणायामृताय च।
नमो धर्माय हंसाय जगज्जननहेतवे ॥ २ ॥

नरनारीशरीराय नमो मीढुष्टमाय ते।
प्रज्ञानायाखिलेशाय सप्ताश्वाय त्रिमूर्तये ॥ ३ ॥

नमो व्याहृतिरूपाय त्रिलक्षायाशुगामिने।
हर्यश्वाय नमस्तुभ्यं नमो हरितबाहवे ॥ ४ ॥

एकलक्षविलक्षाय बहुलक्षाय दण्डने।
एकसंस्थद्विसंस्थाय बहुसंस्थाय ते नमः ॥ ५ ॥

शक्तित्रयाय शुक्लाय रवये परमेष्ठिने।
त्वं शिवस्त्वं हरिर्देव त्वं ब्रह्मा त्वं दिवस्पतिः ॥ ६ ॥

त्वमोङ्कारो वषङ्कारः स्वधा स्वाहा त्वमेव हि।
त्वामृते परमात्मानं न तत्पश्यामि दैवतम् ॥ ७ ॥

॥ इति श्री-सौरपुराणान्तर्गता मनुकृता सूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ सूर्यस्तवराजः ॥

वसिष्ठ उवाच

स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनि सन्ततः।
राजन् नामसहस्रेण सहस्रांशु दिवाकरम्॥ १ ॥

खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत्॥ २ ॥

श्री-सूर्य उवाच

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत।
अलं नामसहस्रेण पठंस्त्वेवं स्तवं शुभम्॥ ३ ॥

यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा तमवधारय॥ ४ ॥

ॐ विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः।
लोकप्रकाशकः श्रीमाँलोकचक्षुग्रहेश्वरः॥ ५ ॥

लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हृता तमिस्त्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः॥ ६ ॥

गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेवनमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम॥ ७ ॥

शरीरारोग्यदश्वैव धनवृद्धियशस्करः।
स्तवराज इति ख्यातस्थिषु लोकेषु विश्रुतः॥ ८ ॥

य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्येऽस्तमनोदये।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ ९ ॥

कायिकं वाचिकं चापि मानसं यच्च दुष्कृतम्।
तत् सर्वमेकजाप्येन प्रणश्यति ममाग्रतः ॥ १० ॥

एष जप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च।
बलिमन्त्रोऽर्घ्यमन्त्रश्च धूपमन्त्रस्तथैव च ॥ ११ ॥

अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे।
पूजितोऽयं महामन्त्रः सर्वव्याधिहरः शुभः ॥ १२ ॥

एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः।
आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत ॥ १३ ॥

साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम्।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान् ॥ १४ ॥

॥ इति साम्बपुराणे रोगापनयने श्रीसूर्यवक्रविनिर्गतः स्तवराजः
सम्पूर्णः ॥

॥ चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रम् ॥

चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ १ ॥

सुधाकरो विधुः सोमो ग्लौरजः कुमुदप्रियः।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः ॥ २ ॥

शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः ॥ ३ ॥

जैवातुको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भवः।
नक्षत्रनायकः शम्भुशिरश्चूडामणिर्विभुः ॥ ४ ॥

तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत्।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥५॥

तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्वं समीहितम्।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा ॥६॥
॥ इति श्री-चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अङ्गारकस्तोत्रम् ॥

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः।
कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः ॥१॥

ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः।
विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः ॥२॥

सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः।
लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः ॥३॥

रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः।
नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः ॥४॥

ऋणं तस्य च दौर्माण्यं दारिद्र्यं च विनश्यति।
घनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमाम्।
वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशयः ॥५॥

योऽर्चयेदाहि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः।
सर्वा नश्यति पीडा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम् ॥६॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-अङ्गारकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् ॥

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियज्ञुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः ॥ १ ॥

ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः ॥ २ ॥

चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानिज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः ॥ ३ ॥

लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः।
पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत् ॥ ४ ॥

स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम् ॥ ५ ॥

॥ इति श्री-पद्मपुराणे श्री-बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ बृहस्पतिस्तोत्रम् ॥

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदां वरः।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥ १ ॥

सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुञ्जलद्युतिः ॥ २ ॥

लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यः पितामहः ॥ ३ ॥

भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ॥४॥

जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति।
यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥५॥

पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान्मोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्गुरोः ॥६॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणे श्री-बृहस्पतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शुक्रचतुर्विंशतिनामस्तोत्रम् ॥

शृण्वन्तु मुनयः सर्वे शुक्रस्तोत्रमिदं शुभम् ।।
रहस्यं सर्वभूतानां शुक्रप्रीतिकरं शुभम् ॥ १ ॥ १ ॥

येषां सङ्कीर्तनान्नित्यं सर्वान् कामानवाप्नुयात्।
तानि शुक्रस्य नामानि कथयामि शुभानि च ॥ २ ॥

शुक्रः शुभग्रहः श्रीमान् वर्षकृद्वर्षविघ्नकृत्।
तेजोनिधिर्ज्ञानदाता योगी योगविदां वरः ॥ ३ ॥

दैत्यसञ्जीवनो धीरो दैत्यनेतोशना कविः।
नीतिकर्ता ग्रहाधीशो विश्वात्मा लोकपूजितः ॥ ४ ॥

शुक्रमाल्याम्बरधरः श्रीचन्दनसमप्रभः।
अक्षमालाधरः काव्यः तपोमूर्तिर्धनप्रदः ॥ ५ ॥

चतुर्विंशतिनामानि अष्टोत्तरशतं यथा।
देवस्याग्रे विशेषेण पूजां कृत्वा विधानतः ॥ ६ ॥

य इदं पठति स्तोत्रं भार्गवस्य महात्मनः।
विषमस्थोऽपि भगवान् तुष्टः स्यान्नात्र संशयः॥७॥

स्तोत्रं भृगोरिदमनन्तगुणप्रदं यो
भक्त्या पठेच्च मनुजो नियतः शुचिः सन्।
प्राप्नोति नित्यमतुलां श्रियमीप्सितार्थान्।
राज्यं समस्तधनधान्ययुतां समृद्धिम्॥८॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-शुक्लचतुर्विंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ दशरथकृत शनैश्चराष्टकम् ॥

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रमन्तरस्य दशरथ ऋषिः। शनैश्चरो देवता।
त्रिष्टुप् छन्दः। शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्र यमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिङ्गलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥१॥

सुरासुराः किम्पुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥२॥

नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतञ्जभृज्ञाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥३॥

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥४॥

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लौहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मन्त्रैर्निंजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥५॥

प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥ ६ ॥

अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहादतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥ ७ ॥

स्त्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एकस्थिधा ऋग्यजुस्साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥ ८ ॥

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते ॥

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥

एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्दविष्यति ॥
॥ इति श्री-दशरथकृतं श्री-शनैश्चराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ राहुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् ॥

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः ॥ १ ॥

रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यमिलाषुकः ॥ २ ॥

कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विघुन्तुदः सौहिकेयो घोररूपो महाबलः ॥ ३ ॥

ग्रहपीडाकरो दृष्टी रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः॥४॥

यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशुस्तथा॥५॥

ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः॥६॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणे श्री-राहुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् ॥

केतुः कालः कलयिता धूमकेतुर्विवर्णकः।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भगप्रदः॥१॥

रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्ध्यधृक्।
पलालधूमसङ्काशश्चित्रयज्ञोपवीतधृक्॥२॥

तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः।
गणेशादेवो विद्वेशो विष्ठरोगार्तिनाशनः॥३॥

प्रब्राज्यदो ज्ञानदश्च तीर्थयात्राप्रवर्तकः।
पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत्॥४॥

तस्य नश्यति बाधा च सर्वा केतुप्रसादतः।
धनधान्यपशूनां च भवेद्वृद्धिर्न संशयः॥५॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ गङ्गाष्टकम् ॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः
 कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।
 अमरनगरनारीचामरमरग्राहिणीनां
 विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ १ ॥

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुलासयन्ती
 स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात् स्वलन्ती।
 क्षोणी पृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमू निर्भरं भर्त्सयन्ती
 पाथोधिं पूर्यन्ती सुरनगरसरित् पावनी नः पुनातु ॥ २ ॥

मज्जनमातङ्कुमच्युतमदमदिरामोदमत्तालिजालं
 रुनैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत् कुङ्कमासङ्गपिङ्गम्।
 सायं प्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छन्तीरस्थनीरं
 पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरं हस्तरङ्गम् ॥ ३ ॥

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं
 पश्चात् पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
 भूयः शम्मुजटाविभूषणमणिर्जहोर्महर्षेरियं
 कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम् ॥ ४ ॥

शैलेन्द्रादवतारिणी निजजल-मज्जनोत्तारिणी
 पारावारविहारिणी भवभयश्रेणी-समुत्सारिणी।
 शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
 काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी ॥ ५ ॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं
 त्वमापीता पीताम्बरपुनिवासं वितरसि।
 त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृतां
 तदा मातः शान्तक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः ॥ ६ ॥

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
 विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
 सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानगङ्गे
 तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ ७ ॥

मातर्जाह्वी शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
 त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्गिद्यम्।
 सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
 भूयाद् भक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ८ ॥

गङ्गाषटकमिदं पुण्यं यः पठेत् प्रयतो नरः।
 सर्वपापविनिर्भुत्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गङ्गाषटकं सम्पूर्णम् ॥

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूतविस्तीर्णतोये
 पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणि स्वर्गमार्गै।
 प्रायश्चितं यदि स्यात् तव जलकाणिक्रा ब्रह्महत्यादिपापे
 कस्त्वां स्तोतुं समर्थः त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद ॥

॥ गङ्गादशहरास्तोत्रम् ॥

ब्रह्मोवाच

नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमो नमः ॥ १ ॥

नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः।
सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये ॥ २ ॥

सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्-श्रेष्ठे नमोऽस्तु ते।
स्थाणुजङ्गमसमूतविषहन्त्र्यै नमो नमः ॥ ३ ॥

भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः।
मन्दाकिन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः ॥ ४ ॥

नमस्तैलोक्यभूषायै जगद्वात्र्यै नमो नमः।
नमः त्रिशुक्लसंस्थायै तेजोवत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

नन्दायै लिङ्घधारिण्यै नारायण्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमो नमः ॥ ६ ॥

बृहत्यै ते नमस्तेऽस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः।
नमस्ते विश्वमित्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥

पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः।
शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः ॥ ८ ॥

उस्तायै सुखदोग्ध्यै च सञ्जीविन्यै नमो नमः।
ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितस्यै नमो नमः ॥ ९ ॥

प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोऽस्तु ते।
सर्वापत्प्रतिपक्षायै मङ्गलायै नमो नमः ॥ १० ॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ११ ॥

निर्लेपायै दुर्गहच्चयै दक्षायै ते नमो नमः।
परात्परतरे तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा ॥ १२ ॥

गङ्गे ममाग्रतो भूया गङ्गे मे देवि पृष्ठतः।
गङ्गे मे पार्श्वयोरेहि त्वयि गङ्गेऽस्तु मे स्थितिः ॥ १३ ॥

आदौ त्वमन्ते मध्ये च सर्व त्वं गां गते शुभे।
त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं हि नारायणः परः।
गङ्गे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ॥ १४ ॥

य इदं पठति स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरोऽपि यः।
शृणुयाच्छद्धया युक्तः कायवाक्षित्तसम्भवैः ॥ १५ ॥

दशधा संस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते।
सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते ॥ १६ ॥

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गङ्गाजले स्थितः ॥ १७ ॥

यः पठेदशकृत्वस्तु दरिद्रो वाऽपि चाक्षमः।
सोऽपि तत्फलमाप्नोति गङ्गां सम्पूज्य यत्नतः ॥ १८ ॥

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम् ॥ १९ ॥

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असम्बद्धप्रलापश्च वाञ्छयं स्याच्चतुर्विंधम्॥ २०॥

परद्रव्येष्वभिघ्यानं मनसाऽनिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्॥ २१॥

एतानि दशा पापानि हर त्वं मम जाह्वि।
दशपापहरा यस्मात्तस्मादशहरा स्मृता॥ २२॥

त्रयस्त्रिंशच्छतं पूर्वान् पितृनथं पितामहान्।
उद्धरत्येव संसारान्मन्त्रेणानेन पूजिता॥ २३॥

नमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नारायण्यै रेवत्यै
शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नन्दिन्यै ते नमो नमः॥

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम्।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरजुषां
कलितसितदुकूलां जाह्वीं तां नमामि॥ २४॥

आदावादिपितामहस्य निगमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जहोर्महर्षेरियं
देवी कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते॥ २५॥

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥ २६॥

॥ इति श्री-स्कान्दे महापुराणे एकाशीति साहस्र्यां संहितायां तृतीये
काशीखण्डे धर्माभ्यिस्था श्रीगङ्गादशहरास्तुतिः सम्पूर्णा॥

॥ गङ्गाकर्षणाष्टकम् ॥

शम्भो भवन्नामनिरन्तरानुसन्धानभाग्येन भवन्तमेव।
यद्येष सर्वत्र तथाऽन्त्यजेऽद्य पश्यत्यहो कोऽत्र कृतोऽपराधः ॥ १ ॥

अस्त्वेष मन्तुः पितृयज्ञनिष्ठे गङ्गाप्लवो यो विहितोऽपचित्यै।
दूरात्तु तन्नामजपेन शुद्धिर्न स्यात् कथं मे स्मृतिरथर्वादः ॥ २ ॥

त्वन्नामनिष्ठा न हि तावती मे श्रद्धा यतः कर्मसु न प्रदग्धा।
त्रैशङ्कवं मे पशुपान्तरायो मुच्येय तस्मात्कथमार्तबन्धो ॥ ३ ॥

यद्यद्य ते श्राद्धविनष्टिरिष्टा कोऽहं ततोऽन्यच्चरितुं समर्थः।
श्राद्धे वृताः पूर्वदिनोपवासा नान्यत्र भुज्जीयुरिदं तु खिद्ये ॥ ४ ॥

श्रद्धालवः श्राद्धविधातभीत्या स्वात्मोपरोधं विगणत्य धीराः।
यत्प्रोचुरत्रापचितिं महान्तः तत्रोचितं यद्यया विधेहि ॥ ५ ॥

गङ्गाधर त्वद्भजनान्तरायभीत्या गृहे कूपकृतावगाहः।
जाने न तीर्थान्तरमध्य गङ्गामासादयेयं कथमार्तबन्धो ॥ ६ ॥

नाहं तपस्वी सगरान्ववायो जाने न जहश्चरति क्व वेति।
शम्भो जटाजूटमपावृणुष्वेत्यभ्यर्थने नालमयं वराकः ॥ ७ ॥

गङ्गाधराख्या गतिरत्र नान्या तामाश्रये सङ्कटमोचनाय।
हन्त प्रवाहः कथमत्र कूपे विस्फूर्जतीशः खलु मे प्रसन्नः ॥ ८ ॥

गङ्गेति गङ्गेति हरेति गृह्णन् आप्नावितोऽहं दयया पुरारेः।
कूपोत्थितोऽयं करुणाप्रवाहः गङ्गश्चिरायात्र जनान् पुनातु ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमच्छ्रीधरार्यकृतं गङ्गाकर्षणाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ यमुनाष्टकम् ॥

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी
 तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी।
 मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ १ ॥

मलापहारिवारिपूरिभूरिमण्डतामृता
 भृशं प्रवातकप्रपञ्चनातिपण्डतानिशा।
 सुनन्दनन्दिनाङ्गसञ्जरागरञ्जिता हिता
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ २ ॥

लसत्तरञ्जसञ्जधूतभूतजातपातका
 नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका ।
 तटान्तवा सदा सहंससंसृताहिकामदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ३ ॥

विहाररासस्वेदभेदधीरतीरमारुता
 गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता।
 प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ४ ॥

तरञ्जसञ्जसैकतान्तरातितं सदासिता
 शरञ्जिशाकरांशुमञ्जुमञ्जरी सभाजिता।
 भवार्चनाप्रचारुणाम्बुनाऽधुना विशारदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥ ५ ॥

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी
 स्वभर्तुरन्यदुर्लभाङ्गताङ्गतंशभागिनी ।
 स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदिनातिकोविदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥६॥

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी
 विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी ।
 सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥७॥

सदैव नन्दिनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला
 तटोत्थफुल्मलिकाकदम्बरेणुसूज्जवला ।
 जलावगाहिनां नृणां भवाव्यसिन्धुपारदा
 धुनोतु नो मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥८॥
 ॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-यमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ नर्मदाष्टकम् ॥

सबिन्दु-सिन्धु-सुसखलत-तरङ्ग-भङ्ग-रञ्जितं
 द्विषत्सु पाप-जात-जातकादि-वारि-संयुतम् ।
 कृतान्त-दूत-काल-भूत-भीति-हारि-वर्मदे
 त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे ॥१॥

त्वदम्बु-लीन-दीन-मीन-दिव्य-सम्प्रदायकं
 कलौ मलौध-भार-हारि-सर्व-तीर्थ-नायकम्।
 सुमच्छ-कच्छ-नक-चक-वाक-चक्र-शर्मदे
 त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥२॥
 महा-गभीर-नीर-पूर-पाप-धूत-भूतलं
 ध्वनत्-समस्त-पातकारि-दारिताप-दाढलम्।
 जगल्लये महाभये मृकण्डु-सूनु-हर्म्यदे
 त्वदीय-पादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥३॥
 गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा
 मृकण्डु-सूनु-शौनका-सुरारि-सेवितं सदा।
 पुनर्-भवाब्धि-जन्मजं भवाब्धि-दुःख-वर्मदे
 त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥४॥
 अलक्ष्य-लक्ष्य-किञ्चरामरासुरादि-पूजितं
 सुलक्ष-नीर-तीर-धीर-पक्षि-लक्ष-कूजितम्।
 वसिष्ठ-शिष्ठ-पिप्पलादि-कर्दमादि-शर्मदे
 त्वदीय-पादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥५॥
 सनत्कुमार-नाचिकेत-कश्यपात्रि-षत्पदैः
 धृतं स्वकीय-मानसेषु नारदादि-षत्पदैः।
 रवीन्दु-रन्ति-देव-देवराज-कर्म-शर्मदे
 त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥६॥
 अलक्ष-लक्ष-लक्ष-पाप-लक्ष-सारसायुधं
 ततस्तु जीव-जन्तु-तन्तु-भुक्ति-मुक्ति-दायकम्।
 विरिञ्चि-विष्णु-शङ्कर-स्वकीय-धाम-वर्मदे
 त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥७॥

अहो धृतं स्वनं श्रुतं महेशि-केशा-जातटे
 किरात-सूत-बाढबेषु पण्डते शठे नटे।
 दुरन्त-पाप-तापहारि-सर्व-जन्तु-शर्मदे
 त्वदीय-पाद-पङ्कजं नमामि देवि नर्मदे॥८॥
 इदं तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा
 पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा।
 सुलभ्यदेहदुर्लभं महेशाधामगौरवं
 पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम्॥९॥
 ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-नर्मदाष्टकम् सम्पूर्णम्॥

॥ त्रिवेणीस्तोत्रम् ॥

मुक्तामयालङ्कृतमुद्रवेणी भक्ताभयत्राणसुबद्धवेणी।
 मत्तालिगुञ्जन्मकरन्दवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ १ ॥
 लोकत्रयैश्वर्यनिदानवेणी तापत्रयोच्चाटनबद्धवेणी।
 धर्मा-ईर्थकामाकलनैकवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ २ ॥
 मुक्ताङ्नामोहन-सिद्धवेणी भक्तान्तरानन्द-सुबोधवेणी।
 वृत्त्यन्तरोद्वेगविवेकवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ३ ॥
 दुग्धोदधिस्फूर्जसुभद्रवेणी नीलाभ्रशोभाललिता च वेणी।
 स्वर्णप्रभाभासुरमध्यवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ४ ॥
 विश्वेश्वरोत्तुङ्कपर्दिवेणी विरिञ्चिविष्णुप्रणतैकवेणी।
 त्रयीपुराणा सुरसार्धवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ५ ॥

माङ्गल्यसम्पत्तिसमृद्धवेणी मात्रान्तरन्यस्तनिदानवेणी।
परम्परापातकहारिवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ६ ॥

निमज्जदुन्मज्जमनुष्यवेणी त्रयोदयोभाग्यविवेकवेणी।
विमुक्तजन्माविभवैकवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ७ ॥

सौन्दर्यवेणी सुरसार्धवेणी माधुर्यवेणी महनीयवेणी।
रत्नैकवेणी रमणीयवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ८ ॥

सारस्वताकार-विघातवेणी कालिन्दकन्यामयलक्ष्यवेणी।
भागीरथीरूप-महेशवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ९ ॥

श्रीमद्भवानीभवनैकवेणी लक्ष्मीसरस्वत्यभिमानवेणी।
माता त्रिवेणी त्रयीरत्नवेणी श्रीमत्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ १० ॥

त्रिवेणीदशकं स्तोत्रं प्रातर्नित्यं पठेन्नरः।
तस्य वेणी प्रसन्ना स्याद् विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-त्रिवेणीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ कावेरी प्रार्थना ॥

मरुदृधे महाभागे महादेवि मनोहरे।
सर्वाभीष्टप्रदे देवि स्नास्थितां पुण्यवर्धिनि ॥ १ ॥

सर्वपापक्षयकरे मम पापं विनाशय।
कवेरकन्ये कावेरि समुद्रमहिषिप्रिये ॥ २ ॥

देहि मे भक्तिमुक्ति त्वं सर्वतीर्थस्वरूपिणि।
सिन्धुवर्यै दयासिन्धो मामुद्धर दयाम्बुधे॥३॥

स्त्रियं देहि सुतं देहि श्रियं देहि ततः स्वगा।
आयुष्यं देहि चाऽरोग्यं ऋषणान्मुक्तं कुरुष्व माम्॥४॥

तासां च सरितां मध्ये सह्यकन्याऽघनाशिनि।
कावेरि लोकविरव्याता जनतापनिवारिणि॥५॥

॥इति श्री-ब्रह्माण्ड पुराणे कावरी प्रार्थना सम्पूर्णा॥



॥ कार्तवीर्यार्जुन-द्वादशनामस्तोत्रम् ॥

ॐ श्रीं क्रों कार्तवीर्यार्जुनाय नमः ।

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान् ।
तस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ॥ १ ॥

कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली ।
सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः ॥ २ ॥

रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः ।
द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् ॥ ३ ॥

सम्पदस्तत्र जायन्ते जनस्तत्र वशं गतः ।
आनयत्याशु दूरस्थं क्षेमलाभयुतं प्रियम् ॥ ४ ॥

सहस्रबाहुसशारं महितं सचापं
रक्ताम्बरं रक्तकिरीटकुण्डलम् ।
चोरादि-दुष्टभय-नाशम् इष्टदं तं
ध्यायेन्महाबल-विजृम्भित-कार्तवीर्यम् ॥ ५ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण सर्वदुःखक्षयो भवेत् ।
यन्नामानि महावीर्यश्चार्जुनः कृतवीर्यवान् ॥ ६ ॥

हैहयाधिपतेः स्तोत्रं सहस्रावृत्तिकारितम् ।
वाञ्छितार्थप्रदं नृणां स्वराज्यं सुकृतं यदि ॥ ७ ॥

॥ इति श्री-कार्तवीर्यार्जुन-द्वादशनाम-स्तोत्रम् ॥

॥ यमभयनिवारणस्तोत्रम् ॥

अतिभीषण कटुभाषण यम किङ्कर पटली
 कृतताडन परिपीडन मरणागमसमये।
 उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
 शिव शङ्कर शिव शङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥

॥ यमाष्टकम् ॥

श्रीनारायण उवाच

हरेरुत्कीर्तनं श्रुत्वा सावित्री यमवक्रतः।
 साश्रुनेत्रा सपुलका यमं पुनरुवाच सा ॥ १ ॥

सावित्र्युवाच

हरेरुत्कीर्तनं धर्मं स्वकुलोद्घारकारणम्।
 श्रोतृणां चैव वक्तृणां जन्ममृत्युजराहरम् ॥ २ ॥

दानानां च ब्रतानां च सिद्धीनां तपसां परम्।
 योगानां चैव वेदानां सेवनं कीर्तनं हरेः ॥ ३ ॥

मुक्तत्वममरत्वं च सर्वसिद्धित्वमेव वा।
 श्रीकृष्णसेवनस्यैव कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४ ॥

भजामि केन विधिना श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम्।
 मूढां मामबलां तात वद वेदविदां वर ॥ ५ ॥

शुभकर्मविपाकं च श्रुतं नृणां मनोहरम्।
 कर्माशुभविपाकं च तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ ६ ॥

इत्युत्त्वा सा सती ब्रह्मन् भक्तिनम्रात्मकन्धरा।
तुष्टव धर्मराजं च वेदोक्तेन स्तवेन च॥७॥

सावित्र्युवाच

तपसा धर्ममाराध्य पुष्करे भास्करः पुरा।
धर्मशं यं सुतं प्राप धर्मराजं नमाम्यहम्॥८॥

समता सर्वभूतेषु यस्य सर्वस्य साक्षिणः।
अतो यन्नाम शमनमिति तं प्रणमाम्यहम्॥९॥

येनान्तश्च कृतो विश्वे सर्वेषां जीविनां परम्।
कामानुरूपकालेन तं कृतान्तं नमाम्यहम्॥१०॥

बिभर्ति दण्डं दण्ड्याय पापिनां शुद्धिहेतवे।
नमामि तं दण्डधरं यः शास्ता सर्वकर्मणाम्॥११॥

विश्वे च कलयत्येव सर्वायुश्चापि सन्ततम्।
अतीव दुर्निर्वार्यं च तं कालं प्रणमाम्यहम्॥१२॥

तपस्वी वैष्णवो धर्मी यः संयमी विजितेन्द्रियः।
जीविनां कर्मफलदं तं यमं प्रणमाम्यहम्॥१३॥

स्वात्मारामश्च सर्वज्ञो मित्रं पुण्यकृतां भवेत्।
पापिनां क्लेशादो यस्य पुण्यं मित्रं नमाम्यहम्॥१४॥

यज्जन्म ब्रह्मणो वंशो ज्वलन्तं ब्रह्मतेजसा।
यो ध्यायति परं ब्रह्म ब्रह्मवंशं नमाम्यहम्॥१५॥

इत्युत्त्वा सा च सावित्री प्रणनाम यमं मुने।
यमस्तां विष्णुभजनं कर्मपाकमुवाच ह॥१६॥

इदं यमाष्टकं नित्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
यमात्तस्य भयं नास्ति सर्वपापात्रमुच्यते ॥ १७ ॥

महापापी यदि पठेन्नित्यं भक्त्या च नारद।
यमः करोति संशुद्धं कायव्यूहेन निश्चितम् ॥ १८ ॥

॥ इति श्री-ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे
श्री-नारद-नारायण-संवादे श्री-तुलस्योपारव्याने
श्री-सावित्रीकृतयमस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ कलिदोषनिवारणस्तोत्रम् ॥

कार्कौटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ॥

॥ अवैधव्यप्रार्थनास्तोत्रम् ॥

ओङ्कारपूर्विके देवि वीणापुस्तकधारिणि।
वेदमातर्नमस्तुभ्यं अवैधव्यं प्रयच्छ मे ॥

पतिब्रते महाभागे भर्तुश्च प्रियवादिनि।
अवैधव्यं च सौभाग्यं देहि त्वं मम सुव्रते।
पुत्रान् पौत्रांश्च सौरव्यं च सौमज्जल्यं च देहि मे ॥



॥ वन्दे मातरम् ॥
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्त्वाम् पुलकित-यामिनीम्
 फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्।
 सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
 सुखदां वरदां मातरम्॥
 सप्तकोटि कण्ठ-कल्कल-निनाद-कराले
 निसप्तकोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले
 के बोले मा तुमी अबले
 बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
 रिपुदलवारिणीं मातरम्॥
 तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि हृदि तुमि मर्म।
 त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहु ते तुमि मा शक्ति।
 हृदये तुमि मा भक्ति
 तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे मन्दिरे॥
 त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
 कमला कमलदल विहारिणी
 वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्
 नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्
 सुजलां सुफलां मातरम्॥
 श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
 धरणीं भरणीं मातरम्॥

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
तानि सर्वाणि हे देव क्षमस्व पुरुषोत्तम ॥

करचरणकृतं वाक्यायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्ये श्रीमहादेव शम्भो ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोऽस्तु ते ॥

विसर्गबिन्दुमात्राणि पदपादाक्षराणि च।
न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्द्विःखभाग् भवेत्॥
सर्वं श्री-कृष्णार्पणमस्तु ॥
ॐ शान्तिः_शान्तिः_शान्तिः! ॥
हरिः ॐ तत् सत् ॥



विभागः २

शतनामस्तोत्राणि

॥ गणेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

विनायको विघ्नराजो गौरीपुत्रो गणेश्वरः।
स्कन्दाग्रजोऽव्ययो पूतो दक्षोऽध्यक्षो द्विजप्रियः ॥ १ ॥

अग्निगर्भच्छिदिन्द्रश्रीप्रदो वाणीबलप्रदः।
सर्वसिद्धिप्रदः शर्वतनयः शर्वरीप्रियः ॥ २ ॥

सर्वात्मकः सृष्टिकर्ता देवोऽनेकार्चितः शिवः।
शुद्धो बुद्धिप्रियः शान्तो ब्रह्मचारी गजाननः ॥ ३ ॥

द्वैमात्रेयो मुनिस्तुत्यो भक्तविघ्नविनाशनः।
एकदन्तश्वतुर्बाहुश्वतुरः शक्तिसंयुतः ॥ ४ ॥

लम्बोदरः शूर्पकर्णो हरिर्ब्रह्मविदुत्तमः।
कालो ग्रहपतिः कामी सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ५ ॥

पाशाङ्कुशधरश्वण्डो गुणातीतो निरञ्जनः।
अकल्मषः स्वयंसिद्धः सिद्धार्चितपदाम्बुजः ॥ ६ ॥

बीजपूरफलासक्तो वरदः शाश्वतः कृतिः।
विद्वित्रियो वीतभयो गदी चक्रीक्षुचापधृत् ॥ ७ ॥

श्रीदोऽजोत्पलकरः श्रीपतिः स्तुतिहर्षितः।
कुलाद्रिभेता जटिलः कलिकल्मषनाशनः ॥ ८ ॥

चन्द्रचूडामणिः कान्तः पापहारी समाहितः।
आश्रितः श्रीकरः सौम्यो भक्तवाञ्छितदायकः ॥ ९ ॥

शान्तः कैवल्यसुखदः सच्चिदानन्दविग्रहः।
ज्ञानी दयायुतो दान्तो ब्रह्म द्वेषविवर्जितः ॥ १० ॥

प्रमत्तदैत्यभयदः श्रीकण्ठो विबुधेश्वरः।
रमार्चितो विधिर्नागराजयज्ञोपवीतवान्॥ ११ ॥

स्थूलकण्ठः स्वयङ्कर्ता सामघोषप्रियो परः।
स्थूलतुण्डोऽग्रणीर्धीरो वागीशः सिद्धिदायकः॥ १२ ॥

दूर्वाबिल्वप्रियोऽव्यक्तमूर्तिरद्भुतमूर्तिमान्।
शैलेन्द्रतनुजोत्सङ्खेलनोत्सुकमानसः॥ १३ ॥

स्वलावण्यसुधासारजितमन्मथविग्रहः।
समस्तजगदाधारो मायी मूषिकवाहनः।
हृष्टस्तुष्टः प्रसन्नात्मा सर्वसिद्धिप्रदायकः॥ १४ ॥

॥ इति श्री-गणेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

ॐकारसन्निभमिभाननमिन्दुभालं
मुक्ताग्रविन्दुममलद्युतिमेकदन्तम् ।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवं
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम्॥

॥ स्तोत्रम्॥

गणेश्वरो गणक्रीडो महागणपतिस्तथा।
विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जयः॥ १ ॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः॥ २ ॥

चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रश्वतुभुजः।
शम्भुतेजा यज्ञकायः सर्वात्मा सामबृंहितः ॥ ३ ॥

कुलाचलांसो व्योमनाभिः कल्पद्रुमवनालयः।
निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्धुजः ॥ ४ ॥

पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः।
सर्वायवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः ॥ ५ ॥

इक्षुचापधरः शूली कान्तिकन्दलिताश्रयः।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् विजयावहः ॥ ६ ॥

कामिनीकामनाकाममालिनीकेलिलालितः।
अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ७ ॥

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः ॥ ८ ॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कटिसूत्रभृत्।
कारुण्यदेहः कपिलो गुह्यागमनिरूपितः ॥ ९ ॥

गुहाशयो गुहाब्यिस्थो घटकुम्मो घटोदरः।
पूर्णानन्दः परानन्दो धनदो धरणीधरः ॥ १० ॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्रियः।
भव्यो भूतालयो भोगदाता चैव महामनाः ॥ ११ ॥

वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारणः।
विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक् ॥ १२ ॥

स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पस्तथा सौभाग्यवर्धनः।
कीर्तिदः शोकहारी च त्रिवर्गफलदायकः ॥ १३ ॥

चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुर्थातिथिसम्भवः ।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ १४ ॥

कामरूपः कामगतिर्द्विरदो द्वीपरक्षकः।
क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता लयस्थो लङ्घकप्रियः ॥ १५ ॥

प्रतिवादिमुखस्तम्भो दुष्टचित्तप्रसादनः।
भगवान् भक्तिसुलभो याज्ञिको याजकप्रियः ॥ १६ ॥

इत्येवं देवदेवस्य गणराजस्य धीमतः।
शतमष्टोत्तरं नान्नां सारभूतं प्रकीर्तिम् ॥ १७ ॥

सहस्रनामामाकृष्य मया प्रोक्तं मनोहरम्।
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम्।
पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराजः प्रसीदति ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे
श्रीगणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ गणपति गकार अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

गकाररूपो गम्बीजो गणेशो गणवन्दितः।
गणनीयो गणोगण्यो गणनातीतसद्गुणः ॥ १ ॥

गगनादिकसृद्गङ्गासुतो गङ्गासुतार्चितः।
गङ्गाधरप्रीतिकरो गवीशेष्यो गदापहः ॥ २ ॥

गदाधरनुतो गद्यपद्यात्मककवित्वदः ।
गजास्यो गजलक्ष्मीवान् गजवाजिरथप्रदः ॥ ३ ॥

गञ्जानिरतशिक्षाकृद्दणितज्ञो गणोत्तमः ।
गणडदानाश्चितो गन्ता गणडोपलसमाकृतिः ॥ ४ ॥

गगनव्यापको गम्यो गमानादिविवर्जितः ।
गणडदोषहरो गणडभ्रमद्धमरकुण्डलः ॥ ५ ॥

गतागतज्ञो गतिदो गतमृत्युर्गतोद्भवः ।
गन्धप्रियो गन्धवाहो गन्धसिन्धूरबृन्दगः ॥ ६ ॥

गन्धादिपूजितो गव्यभोक्ता गर्गादिसन्तुतः ।
गरिष्ठो गरभिद्वर्वहरो गरलिभूषणः ॥ ७ ॥

गविष्ठो गर्जितारावो गभीरहृदयो गदी ।
गलत्कुष्ठहरो गर्भप्रदो गर्भारक्षकः ॥ ८ ॥

गर्भाधारो गर्भवासि-शिशुज्ञान-प्रदायकः ।
गरुत्मत्तुल्यजवनो गरुडध्वजवन्दितः ॥ ९ ॥

गयेडितो गयाश्राद्धफलदश्च गयाकृतिः ।
गदाधरावतारी च गन्धर्वनगरार्चितः ॥ १० ॥

गन्धर्वगानसन्तुष्टो गरुडाग्रजवन्दितः ।
गणरात्रसमाराध्यो गर्हणस्तुति-साम्यधीः ॥ ११ ॥

गर्ताभनाभिर्गव्यूतिदीर्घतुण्डो गभस्तिमान् ।
गर्हिताचारदूरश्च गरुडोपलभूषितः ॥ १२ ॥

गजारिविक्रमो गन्धमूषवाजी गतश्रमः ।
गवेषणीयो गहनो गहनस्थमुनिस्तुतः ॥ १३ ॥

गवयच्छद्दण्डकभिद्वहरापथवारणः ।
गजदन्तायुधो गर्जद्रिपुम्नो गजकर्णिकः ॥ १४ ॥

गजचर्मामयच्छेत्ता गणाध्यक्षो गणार्चितः ।
गणिकानर्तनप्रीतो गच्छन् गन्धफली प्रियः ॥ १५ ॥

गन्धकादिरसाधीशो गणकानन्ददायकः ।
गरभादिजनुर्हर्ता गणडकीगाहनोत्सुकः ॥ १६ ॥

गणदूषीकृतवाराशिः गरिमालधिमादिदः ।
गवाक्षवत्सौधवासी गर्भितो गर्भिणीनुतः ॥ १७ ॥

गन्धमादनशैलाभो गणडभेरुण्डविक्रमः ।
गदितो गद्धदारावसंस्तुतो गहरीपतिः ॥ १८ ॥

गजेशो गरीयान् गद्येऽयो गतभीर्गदितागमः ।
गर्हणीय गुणाभावो गङ्गादिकशुचिप्रदः ॥ १९ ॥

गणनातीत-विद्या-श्री-बलायुष्यादि-दायकः ।
एवं श्रीगणनाथस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ २० ॥

पठनाच्छवणात् पुंसां श्रेयः प्रेमप्रदायकम् ।
पूजान्ते यः पठेन्नित्यं प्रीतः सन् तस्य विघ्नराट् ॥ २१ ॥

यं यं कामयते कामं तं तं शीघ्रं प्रयच्छति ।
दूर्व्याभ्यर्चयन् देवमेकविंशतिवासरान् ॥ २२ ॥

एकविंशतिवारं यो नित्यं स्तोत्रं पठेद्यदि।
तस्य प्रसन्नो विद्वेशः सर्वान् कामान् प्रयच्छति ॥२३॥

॥ इति श्री-गणपति गकार अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ रामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वयरलदीपम्।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीरामो रामभद्रश्च रामचन्द्रश्च शाश्वतः।
राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुञ्जवः ॥ १ ॥

जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः।
विश्वामित्रप्रियो दान्तः शरणत्राणतत्परः ॥ २ ॥

वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः।
सत्यव्रतो ब्रतधरः सदा हनुमदाश्रितः ॥ ३ ॥

कौसलेयः खरध्वंसी विराघवधपण्डितः।
विभीषणपरित्राता हरकोदण्डखण्डनः ॥ ४ ॥

सप्ततालप्रभेत्ता च दशग्रीवशिरोहरः।
जामदग्न्यमहार्दर्पदलनस्ताटकान्तकः ॥ ५ ॥

वेदान्तसारो वेदात्मा भवरोगस्य भेषजम्।
दूषणत्रिशिरोहन्ता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः ॥ ६ ॥

त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः।
त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यकर्तनः ॥ ७ ॥

अहल्याशापशमनः पितृभक्तो वरप्रदः।
जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितामित्रो जगद्गुरुः ॥ ८ ॥

ऋक्षवानरसङ्घाती चित्रकूटसमाश्रयः।
जयन्तत्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः ॥ ९ ॥

सर्वदेवादिदेवश्च मृतवानरजीवनः।
मायामारीचहन्ता च महादेवो महाभुजः ॥ १० ॥

सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसंस्तुतः।
महायोगो महोदारः सुग्रीवेप्सितराज्यदः ॥ ११ ॥

सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतसर्वाधनाशनः।
अनादिरादिपुरुषो महापूरुष एव च ॥ १२ ॥

पुण्योदयो दयासारः पुराणपुरुषोत्तमः।
स्मितवक्त्रो मितभाषी पूर्वभाषी च राघवः ॥ १३ ॥

अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तमः।
मायामानुषचारित्रो महादेवादिपूजितः ॥ १४ ॥

सेतुकृजितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः।
श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्धरः ॥ १५ ॥

सर्वयज्ञाधिपो यज्वा जरामरणवर्जितः।
शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता सर्वापगुणवर्जितः ॥ १६ ॥

परमात्मा परं ब्रह्म सञ्चिदानन्दविग्रहः।
परञ्ज्योतिः परन्धाम पराकाशः परात्परः।
परेशः पारगः पारः सर्वदेवात्मकः परः ॥ १७ ॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे
श्रीरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

आञ्जनेयो महावीरो हनुमान् मारुतात्मजः ।
तत्त्वज्ञानप्रदः सीतादेवीमुद्राप्रदायकः ॥ १ ॥

अशोकवनिकाच्छेत्ता सर्वमायाविभञ्जनः ।
सर्वबन्धविमोक्ता च रक्षोविघ्वंसकारकः ॥ २ ॥

परविद्यापरीहर्ता परशौर्यविनाशकः ।
परमन्त्रनिराकर्ता परयन्त्रप्रभेदकः ॥ ३ ॥

सर्वग्रहविनाशी च भीमसेनसहायकृत् ।
सर्वदुःखहरः सर्वलोकचारी मनोजवः ॥ ४ ॥

पारिजातद्वमूलस्थः सर्वमन्त्रस्वरूपवान् ।
सर्वतन्त्रस्वरूपी च सर्वयन्त्रात्मिकस्तथा ॥ ५ ॥

कपीश्वरो महाकायः सर्वरोगहरः प्रभुः ।
बलसिद्धिकरः सर्वविद्यासम्पत्रदायकः ॥ ६ ॥

कपिसेनानायकश्च भविष्यच्चतुराननः ।
कुमारब्रह्मचारी च रत्नकुण्डलदीप्तिमान् ॥ ७ ॥

चञ्चलद्वालसन्नद्धो लम्बमानशिखोज्ज्वलः ।
गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञो महाबलपराक्रमः ॥ ८ ॥

कारागृहविमोक्ता च शृङ्खलाबन्धमोचकः ।
सागरोत्तारकः प्राज्ञो रामदूतः प्रतापवान् ॥ ९ ॥

वानरः केसरीसूनुः सीताशोकनिवारणः ।
अञ्जनागर्भसम्भूतो बालार्कसदृशाननः ॥ १० ॥

विभीषणप्रियकरो दशग्रीवकुलान्तकः ।
 लक्ष्मणप्राणदाता च वज्रकायो महाद्युतिः ॥ ११ ॥
 चिरञ्जीवी रामभक्तो दैत्यकार्यविघातकः ।
 अक्षहन्ता काञ्चनाभः पञ्चवक्रो महातपाः ॥ १२ ॥
 लङ्किणीभञ्जनः श्रीमान् सिंहिकाप्राणभञ्जनः ।
 गन्धमादनशैलस्थो लङ्कापुरविदाहकः ॥ १३ ॥
 सुग्रीवसचिवो धीरः शूरो दैत्यकुलान्तकः ।
 सुरार्चितो महातेजो रामचूडामणिप्रदः ॥ १४ ॥
 कामरूपी पिङ्गलाक्षो वर्धिमैनाकपूजितः ।
 कबलीकृतमार्तण्डमण्डलो विजितेन्द्रियः ॥ १५ ॥
 रामसुग्रीवसन्ध्याता महिरावणमर्दनः ।
 स्फटिकाभो वागधीशो नवव्याकृतिपण्डितः ॥ १६ ॥
 चतुर्बाहुर्दीनबन्धुर्महात्मा भक्तवत्सलः ।
 सञ्जीवननगाहर्ता शुचिर्वाग्मी धृतव्रतः ॥ १७ ॥
 कालनेमिप्रमथनो हरिमर्कटमर्कटः ।
 दान्तः शान्तः प्रसन्नात्मा शतकण्ठमदापहः ॥ १८ ॥
 योगी रामकथालोलः सीतान्वेषणपण्डितः ।
 वज्रदंष्ट्रे वज्रनखो रुद्रवीर्यसमुद्धवः ॥ १९ ॥
 इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्रविनिवारकः ।
 पार्थध्वजाग्रसंवासी शरपञ्जरहेलकः ॥ २० ॥
 दशबाहुर्लोकपूज्यो जाम्बवत्प्रीतिवर्धनः ।
 सीतासमेतश्रीरामपादसेवाधुरन्धरः ॥ २१ ॥
 ॥ इति श्री-आञ्जनेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य श्रीशेष ऋषिः ।

अनुष्टुप्-छन्दः । श्रीकृष्णो देवता ।

श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे श्री-कृष्णाष्टोत्तरशतनामजपे विनियोगः ।

॥ ध्यानम् ॥

शिरिमुकुटविशेषं नीलपद्माङ्गदेशं
विघुमुखकृतकेशं कौस्तुभापीतवेशम् ।
मधुररवकलेशं शं भजे भ्रातृशेषं
ब्रजजनवनितेशं माधवं राधिकेशम् ॥

श्रीशेष उवाच

वसुन्धरे वरारोहे जनानामस्ति मुक्तिदम् ।
सर्वमङ्गलमूर्धन्यमणिमाद्यष्टसिद्धिदम् ॥

महापातककोटिम् सर्वतीर्थफलप्रदम् ।
समस्तजपयज्ञानां फलदं पापनाशनम् ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तर शतम् ।
सहस्रनामां पुण्यानां त्रिरावृत्या तु यत्कलम् ॥

एकावृत्या तु कृष्णस्य नामैकं तत्प्रयच्छति ।
तस्मात्पुण्यतरं चैतत्स्तोत्रं पातकनाशनम् ॥

नाम्नामष्टोत्तरशतस्याहमेव ऋषिः प्रिये ।
छन्दोऽनुष्टुप्ब्देवता तु योगः कृष्णप्रियावहः ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीकृष्णः कमलानाथो वासुदेवः सनातनः ।
वसुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः ॥ १ ॥

श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः ।
चतुर्भुजात्तचक्रासिगदाशङ्खाम्बुजायुधः ॥ २ ॥

देवकीनन्दनः श्रीशो नन्दगोपप्रियात्मजः ।
यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुजः ॥ ३ ॥

पूतनाजीवितहरः शकटासुरभञ्जनः ।
नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्दविग्रहः ॥ ४ ॥

नवनीतविलिप्ताङ्गो नवनीतनटोऽनघः ।
नवनीतनवाहारो मुच्युकुन्दप्रसादकः ॥ ५ ॥

घोडशश्वीसहस्रेशस्त्रिभञ्जी मधुराकृतिः ।
शुकवाग्मृताब्धीन्दुर्गोविन्दो योगिनां पतिः ॥ ६ ॥

वत्सवाटचरोऽनन्तो धेनुकासुरभञ्जनः ।
तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभञ्जनः ॥ ७ ॥

उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः ।
गोपगोपीश्वरो योगी कोटिसूर्यसमप्रभः ॥ ८ ॥

इलापतिः परञ्योतिर्यादवेन्द्रो यदूद्ध्रहः ।
वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः ॥ ९ ॥

गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपालः सर्वपालकः ।
अजो निरञ्जनः कामजनकः कञ्जलोचनः ॥ १० ॥

मधुहा मथुरानाथो द्वारकानायको बली।
वृन्दावनान्तसञ्चारी तुलसीदामभूषणः ॥ ११ ॥

स्यमन्तकमणेहर्ता नरनारायणात्मकः।
कुजाकृष्णाम्बरधरो मायी परमपूरुषः ॥ १२ ॥

मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदः ।
संसारवैरी कंसारिमुरारिनरकान्तकः ॥ १३ ॥

अनादिब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः।
शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलान्तकः ॥ १४ ॥

विदुराकूरवरदो	विश्वरूपप्रदर्शकः।
सत्यवाक्	सत्यसङ्कल्पः सत्यभामारतो जयी ॥ १५ ॥

सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः।
जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुनादविशारदः ॥ १६ ॥

वृषभासुरविघ्वंसी बाणासुरकरान्तकः।
युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः ॥ १७ ॥

पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः।
कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः ॥ १८ ॥

दामोदरो यज्ञभोक्ता दानवेन्द्रविनाशकः।
नारायणः परब्रह्म पन्नगाशनवाहनः ॥ १९ ॥

जलक्रीडासमासक्तगोपीवस्त्रापहारकः ।
पुण्यश्लोकस्तीर्थपादो वेदवेद्यो दयानिधिः ॥ २० ॥

सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपी परात्परः।
 इत्येवं कृष्णदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ २१ ॥
 कृष्णेन कृष्णभक्तेन श्रुत्वा गीतामृतं पुरा।
 स्तोत्रं कृष्णप्रियकरं कृतं तस्मान्मया श्रुतम्॥ २२ ॥
 कृष्णप्रेमामृतं नाम परमानन्ददायकम्।
 अत्युपद्रवदुःखघं परमायुष्यवर्धनम्॥ २३ ॥
 दानं ब्रतं तपस्तीर्थं यत्कृतं त्विह जन्मनि।
 पठतां शृण्वतां चैव कोटिकोटिगुणं भवेत्॥ २४ ॥
 पुच्छप्रदमपुच्छाणामगतीनां गतिप्रदम्।
 धनावहं दरिद्राणां जयेच्छूनां जयावहम्॥ २५ ॥
 शिशूनां गोकुलानां च पुष्टिदं पुण्यवर्धनम्।
 बालरोगग्रहादीनां शमनं शान्तिकारकम्॥ २६ ॥
 अन्ते कृष्णस्मरणं भवतापत्रयापहम्।
 असिद्धसाधकं भद्रे जपादिकरमात्मनाम्॥ २७ ॥
 कृष्णाय यादवेन्द्राय ज्ञानमुद्राय योगिने।
 नाथाय रुक्मिणीशाय नमो वेदान्तवेदिने॥ २८ ॥
 इमं मन्त्रं महादेवि जपन्नेव दिवानिशम्।
 सर्वग्रहानुग्रहभाक् सर्वप्रियतमो भवेत्॥ २९ ॥
 पुत्रपौत्रैः परिवृत्तैः सर्वसिद्धिसमृद्धिमान्।
 निषेव्यभोगानन्तेऽपि कृष्णसायुज्यमाप्युनात्॥ ३० ॥
 ॥ इति श्रीब्रह्माण्डे महापुराणे वायुप्रोक्ते मध्यभागे तृतीय
 उपोद्घातपादे भार्गवचरिते षड्विशत्तमोऽध्यायान्तर्गत
 श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ लक्ष्मीनारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

श्रीविष्णुः कमला शार्ङ्गी लक्ष्मीवैकुण्ठनायकः ।
पद्मालया चतुर्बाहुः क्षीराभ्यितनयाऽच्युतः ॥ १ ॥

इन्दिरा पुण्डरीकाक्षो रमा गरुडवाहनः ।
भार्गवी शोषपर्यङ्को विशालाक्षी जनार्दनः ॥ २ ॥

स्वर्णाङ्गी वरदो देवी हरिरिन्दुमुखी प्रभुः ।
सुन्दरी नरकध्वंसी लोकमाता मुरान्तकः ॥ ३ ॥

भक्तप्रिया दानवारिरम्बिका मधुसूदनः ।
वैष्णवी देवकीपुत्रो रुक्मिणी केशिमर्दनः ॥ ४ ॥

वरलक्ष्मी जगन्नाथः कीरवाणी हलायुधः ।
नित्या सत्यव्रतो गौरी शौरिः कान्ता सुरेश्वरः ॥ ५ ॥

नारायणी हृषीकेशः पद्महस्ता त्रिविक्रमः ।
माधवी पद्मनाभश्च स्वर्णवर्णा निरीश्वरः ॥ ६ ॥

सती पीताम्बरः शान्ता वनमाली क्षमाऽनघः ।
जयप्रदा बलिध्वंसी वसुधा पुरुषोत्तमः ॥ ७ ॥

राज्यप्रदाऽखिलाधारो माया कंसविदारणः ।
महेश्वरी महादेवो परमा पुण्यविग्रहः ॥ ८ ॥

रमा मुकुन्दः सुमुखी मुचुकुन्दवरप्रदः ।
वेदवेद्याऽब्य-जामाता सुरूपाऽकेन्दुलोचनः ॥ ९ ॥

पुण्याङ्गना पुण्यपादो पावनी पुण्यकीर्तनः ।
विश्वप्रिया विश्वनाथो वाग्रूपी वासवानुजः ॥ १० ॥

सरस्वती स्वर्णगर्भो गायत्री गोपिकाप्रियः।
यज्ञरूपा यज्ञभेद्या भक्ताभीष्टप्रदा गुरुः॥ ११॥

स्तोत्रक्रिया स्तोत्रकारः सुकुमारी सवर्णकः।
मानिनी मन्दरधरो सावित्री जन्मवर्जितः॥ १२॥

मन्त्रगोप्त्री महेष्वासो योगिनी योगवल्लभः।
जयप्रदा जयकरो रक्षित्री सर्वरक्षकः॥ १३॥

अष्टोत्तरशतं नाम्नां लक्ष्म्या नारायणस्य च।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सर्वदा विजयी भवेत्॥ १४॥

॥ इति श्री-लक्ष्मीनारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ नृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

नारसिंहो महासिंहो दिव्यसिंहो महाबलः।
उग्रसिंहो महादेवः स्तम्भजश्चोग्रलोचनः॥ १॥

रौद्रः सर्वाद्भुतः श्रीमान् योगानन्दस्त्रिविक्रमः।
हरिः कोलाहलश्वक्री विजयो जयवर्घनः॥ २॥

पञ्चाननः परब्रह्म अघोरो घोरविक्रमः।
ज्वालामुखो ज्वालामाली महाज्वालो महाप्रभुः॥ ३॥

निटिलाक्षः सहस्राक्षो दुर्नीरीक्ष्यः प्रतापनः।
महादंष्ट्रायुधः प्राज्ञश्वण्डकोपी सदाशिवः॥ ४॥

हिरण्यकशिपुध्वंसी दैत्यदानवभञ्जनः।
गुणभद्रो महाभद्रो बलभद्रो सुभद्रकः॥ ५॥

करालो विकरालश्च विकर्ता सर्वकर्तुकः।
शिंशुमारस्त्रिलोकात्मा ईशः सर्वेश्वरो विभुः ॥ ६ ॥

भैरवाडम्बरो दिव्यश्चाच्युतः कविमाधवः।
अधोक्षजोऽक्षरः शर्वो वनमाली वरप्रदः ॥ ७ ॥

विश्वम्भरोऽद्भुतो भव्यो विष्णुश्च पुरुषोत्तमः।
अमोघास्त्रो नखास्त्रश्च सूर्यज्योतिः सुरेश्वरः ॥ ८ ॥

सहस्रबाहुः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिप्रदायकः।
वज्रदंष्ट्रे वज्रनखो महानादः परन्तपः ॥ ९ ॥

सर्वमन्त्रैकरूपश्च सर्वयन्त्रविदारणः।
सर्वतन्त्रात्मकोऽव्यक्तः सुव्यक्तो भक्तवत्सलः ॥ १० ॥

वैशाखशुक्लसम्भूतः शरणागतवत्सलः।
उदारकीर्तिः पुण्यात्मा महात्मा चण्डविक्रमः ॥ ११ ॥

वेदत्रयप्रपूज्यश्च भगवान् परमेश्वरः।
श्रीवत्साङ्कः श्रीनिवासो जगद्यापी जगन्मयः ॥ १२ ॥

जगत्पालो जगन्नाथो महाकायो द्विरूपभृत्।
परमात्मा परञ्ज्योतिर्निर्गुणश्च नृकेसरी ॥ १३ ॥

परतत्त्वं परन्धाम सच्चिदानन्दविग्रहः।
लक्ष्मीनृसिंहः सर्वात्मा धीरः प्रह्लादपालकः ॥ १४ ॥

॥ इति श्री-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ हयग्रीवाष्टेत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

वन्दे पूरितचन्द्रमण्डलगतं श्वेतागविन्दासनं
 मन्दाकिन्यमृताब्धिकुन्दकुमुदक्षीरेन्दुहासं हरिम्।
 मुद्रापुस्तकशङ्खचक्रविलसच्छ्रीमद्भुजामण्डितं
 नित्यं निर्मलभारतीपरिमलं विश्वेशमध्याननम् ॥ १ ॥

ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम्।
 आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

हयग्रीवो महाविष्णुः केशवो मधुसूदनः।
 गोविन्दः पुण्डरीकाक्षो विष्णुर्विश्वम्भरो हरिः ॥ २ ॥

आदित्यः सर्ववागीशः सर्वाधारः सनातनः।
 निराधारो निराकारो निरीशो निरुपद्रवः ॥ ३ ॥

निरञ्जनो निष्कलङ्घो नित्यतृप्तो निरामयः।
 चिदानन्दमयः साक्षी शरण्यः सर्वदायकः ॥ ४ ॥

श्रीमान् लोकत्रयाधीशः शिवः सारस्वतप्रदः।
 वेदोद्धर्ता वेदनिधिर्वेदवेद्यः प्रभूतनः ॥ ५ ॥

पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिः परात्परः।
 परमात्मा परञ्ज्योतिः परेशः पारगः परः ॥ ६ ॥

सर्ववेदात्मको विद्वान् वेदवेदाङ्गपारगः।
 सकलोपनिषद्वेद्यो निष्कलः सर्वशास्त्रकृत् ॥ ७ ॥

अक्षमालाज्ञानमुद्रायुक्तहस्तो वरप्रदः।
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शरण्यः परमेश्वरः ॥८॥

शान्तो दान्तो जितक्रोधो जितामित्रो जगन्मयः।
जगन्मृत्युहरो जीवो जयदो जाड्यनाशनः ॥९॥

जनप्रियो जनस्तुत्यो जापकप्रियकृत्प्रभुः।
विमलो विश्वरूपश्च विश्वगोप्ता विधिस्तुतः ॥१०॥

विधीन्दशिवसंस्तुत्यः शान्तिदः क्षान्तिपारगः।
श्रेयप्रदः श्रुतिमयः श्रेयसां पतिरीश्वरः ॥११॥

अच्युतोऽनन्तरूपश्च प्राणदः पृथिवीपतिः।
अव्यक्तो व्यक्तरूपश्च सर्वसाक्षी तमोहरः ॥१२॥

अज्ञाननाशको ज्ञानी पूर्णचन्द्रसमप्रभः।
ज्ञानदो वाक्पतिर्योगी योगीशः सर्वकामदः ॥१३॥

महायोगी महामौनी मौनीशः श्रेयसां पतिः।
हंसः परमहंसश्च विश्वगोप्ता विराट् स्वराट् ॥१४॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशो जटामण्डलसंयुतः।
आदिमध्यान्तरहितः सर्ववागीश्वरेश्वरः ॥१५॥

॥ इति श्री-हयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

शङ्खं चक्रं जलौकां दधदमृतघटं चारुदोर्भिश्चतुर्भिः
सूक्ष्मस्वच्छातिहृदयांशुक-परिविलसन्मौलिमम्भोजनेत्रम्।
कालाम्भोदोज्जवलाङ्गं कटितटविलसच्चारूपीताम्बराढ्यं
वन्दे धन्वन्तरि तं निरिलगदवनप्रौढदावाम्भिलीलम्॥

॥ स्तोत्रम् ॥

धन्वन्तरिः सुधापूर्णकलशाढ्यकरो हरिः।
जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थनासाधकः प्रभुः ॥ १ ॥

निर्विकल्पो निस्समानो मन्दस्मितमुखाम्बुजः।
आञ्जनेयप्रापिताद्रिः पार्श्वस्थविनतासुतः ॥ २ ॥

निमग्नमन्दरधरः कूर्मरूपी बृहत्तनुः।
नीलकुञ्चितकेशान्तः परमाद्भुतरूपधृत् ॥ ३ ॥

कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवासुकिः सिंहविक्रमः।
स्मर्तृहृद्रोगहरणो महाविष्णवंशसम्भवः ॥ ४ ॥

प्रेक्षणीयोत्पलश्याम आयुर्वेदाधिदैवतम्।
भेषजग्रहणानेहस्स्मरणीयपदाम्बुजः ॥ ५ ॥

नवयौवनसम्भन्नः किरीटान्वितमस्तकः।
नक्रकुण्डलसंशोभिश्रवणद्वयशङ्कुलिः ॥ ६ ॥

दीर्घपीवरदोर्दण्डः कम्बुग्रीवोऽम्बुजेक्षणः ।
चतुर्भुजः शङ्खधरश्चकहस्तो वरप्रदः ॥ ७ ॥

सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्रलसत्करः ।
शतपद्याढ्यहस्तश्च कस्तूरीतिलकाञ्चितः ॥ ८ ॥

सुकपोलः सुनासश्च सुन्दरभूलताञ्चितः ।
स्वञ्जुलीतलशोभाढ्यो गूढजत्रुर्महाहनुः ॥ ९ ॥

दिव्याङ्गदलसद्वाहुः केयूरपरिशोभितः ।
विचित्ररत्नखचितवलयद्वयशोभितः ॥ १० ॥

समोल्लसत्सुजातांसश्चाङ्गुलीयविभूषितः ।
सुधागन्धरसास्वादमिलद्वज्ञमनोहरः ॥ ११ ॥

लक्ष्मीसमर्पितोत्कुल्कञ्जमालालसद्वलः ।
लक्ष्मीशोभितवक्षस्को वनमालाविराजितः ॥ १२ ॥

नवरत्नमणीहृतहारशोभितकन्धरः ।
हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जितदिङ्गुखः ॥ १३ ॥

विरजोऽम्बरसंवीतो विशालोरा: पृथुश्रवाः ।
निम्ननाभिः सूक्ष्ममध्यः स्थूलजङ्घो निरञ्जनः ॥ १४ ॥

सुलक्षणपदाङ्गुष्ठः सर्वसामुद्रिकान्वितः ।
अलक्तकारक्तपादो मूर्तिमद्वार्धिपूजितः ॥ १५ ॥

सुधार्थान्योन्यसंयुध्यदैतेयसान्त्वनः ।
कोटिमन्मथसङ्काशः सर्वावयवसुन्दरः ॥ १६ ॥

अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसञ्चपरिष्टुतः ।
पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुलसेवितः ॥ १७ ॥

शञ्चतूर्यमृदज्ञादिसुवादित्राप्सरोवृतः ।
विष्वकर्सेनादियुक्पार्थः सनकादिमुनिस्तुतः ॥ १८ ॥

साश्वर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्रसमीक्षितः ।
साशङ्कसम्ब्रमदितिदनुवंश्यसमीडितः ॥ १९ ॥

नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्नलसत्पदः ।
दिव्यतेजः पुञ्जरूपः सर्वदेवहितोत्सुकः ॥ २० ॥

स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशिर्दुन्दुभिस्वनः ।
गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्कमहामनाः ॥ २१ ॥

निष्कञ्चनजनप्रीतो भवसम्प्राप्तरोगहृतः ।
अन्तर्हितसुधापात्रो महात्मा मायिकाग्रणीः ॥ २२ ॥

क्षणार्धमोहनीरूपः सर्वस्त्रीशुभलक्षणः ।
मदमत्तेभगमनः सर्वलोकविमोहनः ॥ २३ ॥

स्त्रंसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्तदिव्यकराङ्गुलिः ।
रत्नदर्वीलसञ्चस्तो देवदैत्यविभागकृत् ॥ २४ ॥

सञ्चातदेवतान्यासो दैत्यदानववश्वकः ।
देवामृतप्रदाता च परिवेषणहृष्टधीः ॥ २५ ॥

उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्तपङ्कितविभाजकः ।
पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षः शिरोहरः ॥ २६ ॥

राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गतिविधायकः ।
अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यदेवारिसूदनः ॥ २७ ॥

गरुत्मद्वाहनारूढः सर्वेशस्तोत्रसंयुतः ।
स्वस्वाधिकारसन्तुष्टशक्रवह्यादिपूजितः ॥ २८ ॥

मोहिनीदर्शनायातस्थाणुचित्तविमोहकः ।
शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नीमण्डलसन्मुतः ॥ २९ ॥

वेदान्तवेद्यमहिमा सर्वलोकैकरक्षकः ।
राजराजप्रपूज्याङ्गिश्चनितार्थप्रदायकः ॥ ३० ॥

धन्वन्तरेभंगवतो नाम्नामष्टेत्तरं शतम् ।
यः पठेत्सततं भक्त्या नीरोगः सुखभाग्भवेत् ॥ ३१ ॥

॥ इति बृहद्ब्रह्मानन्दोपनिषदान्तर्गतं
श्री-धन्वन्तर्यष्टेत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ विष्णोरष्टेत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् ॥

अष्टेत्तरशतस्थानेष्वाविर्भूतं जगत्पतिम् ।
नमामि जगतामीशं नारायणमनन्यधीः ॥ १ ॥

श्रीवैकुण्ठे वासुदेवमामोदे कर्षणाह्वयम् ।
प्रद्युम्नं च प्रमोदाख्ये सम्मोदे चानिरुद्धकम् ॥ २ ॥

सत्यलोके तथा विष्णुं पद्माक्षं सूर्यमण्डले ।
क्षीराब्यौ शेषशयनं श्वेतद्वीपेतु तारकम् ॥ ३ ॥

नारायणं बद्यारब्दे नैमिषे हरिमव्ययम्।
शालग्रामं हरिक्षेत्रे अयोध्यायां रघूत्तमम्॥ ४॥

मथुरायां बालकृष्णं मायायां मधुसूदनम्।
काश्यां तु भोगशयनमवन्त्यामवनीपतिम्॥ ५॥

द्वारवत्यां यादवेन्द्रं ब्रजे गोपीजनप्रियम्।
वृन्दावने नन्दसूनुं गोविन्दं कालियहृदे॥ ६॥

गोवर्धने गोपवेषं भवन्नं भक्तवत्सलम्।
गोमन्तपर्वते शौरि हरिद्वारे जगत्पतिम्॥ ७॥

प्रयागे माधवं चैव गयायां तु गदाधरम्।
गङ्गासागरगे विष्णुं चित्रकूटे तु राघवम्॥ ८॥

नन्दिग्रामे राक्षसद्वं प्रभासे विश्वरूपिणम्।
श्रीकूर्मे कूर्ममचलं नीलाद्रौ पुरुषोत्तमम्॥ ९॥

सिंहाचले महासिंहं गदिनं तुलसीवने।
घृतशैले पापहरं श्वेताद्रौ सिंहरूपिणम्॥ १०॥

योगानन्दं धर्मपुर्या काकुले त्वान्त्रनायकम्।
अहोबिले गारुडाद्रौ हिरण्यासुरमर्दनम्॥ ११॥

विठ्ठलं पाण्डुरङ्गे तु वेङ्कटाद्रौ रमासखम्।
नारायणं यादवाद्रौ नृसिंहं घटिकाचले॥ १२॥

वरदं वारणगिरौ काञ्च्यां कमललोचनम्।
यथोक्तकारिणं चैव परमेशापुराश्रयम्॥ १३॥

पाण्डवानां तथा दूतं त्रिविक्रममथोन्नतम्।
कामासिक्यां नृसिंहं च तथाष्टभुजसङ्कम्॥ १४॥

मेघाकारं शुभाकारं शेषाकारं तु शोभनम्।
अन्तरा शितिकण्ठस्य कामकोट्यां शुभप्रदम्॥ १५॥

कालमेघं खगारूढं कोटिसूर्यसमप्रभम्।
दिव्यं दीपप्रकाशं च देवानामधिपं मुने॥ १६॥

प्रवालवर्णं दीपाभं काञ्च्यामष्टादशस्थितम्।
श्रीगृध्रसरसस्तीरे भान्तं विजयराघवम्॥ १७॥

वीक्षारण्ये महापुण्ये शायानं वीरराघवम्।
तोताद्रौ तुञ्जशयनं गजार्तिन्द्रं गजस्थले॥ १८॥

महाबलं बलिपुरे भक्तिसारे जगत्पतिम्।
महावराहं श्रीमुष्णे महीन्द्रे पद्मलोचनम्॥ १९॥

श्रीरङ्गे तु जगन्नाथं श्रीधामे जानकीप्रियम्।
सारक्षेत्रे सारनाथं खण्डने हरचापहम्॥ २०॥

श्रीनिवासस्थले पूर्णं सुवर्णं स्वर्णमन्दिरे।
व्याघ्रपुर्यां महाविष्णुं भक्तिस्थाने तु भक्तिदम्॥ २१॥

धेतहृदे शान्तमूर्तिमग्निपुर्या सुरप्रियम्।
भर्गारब्यं भार्गवस्थाने वैकुण्ठारब्ये तु माधवम्॥ २२॥

पुरुषोत्तमे भक्तसर्वं चक्रतीर्थे सुदर्शनम्।
कुम्भकोणे चक्रपाणिं भूतस्थाने तु शार्ङ्गिणम्॥ २३॥

कपिस्थले गजार्तिंग्नं गोविन्दं चित्रकूटके।
अनुत्तमं चोत्तमायां श्वेताद्रौ पद्मलोचनम्॥ २४॥

पार्थस्थले परब्रह्म कृष्णाकोट्यां मधुद्विषम्।
नन्दपुर्या महानन्दं वृद्धपुर्या वृषाश्रयम्॥ २५॥

असङ्गं सङ्गमग्रामे शरण्ये शरणं महत्।
दक्षिणद्वारकायां तु गोपालं जगतां पतिम्॥ २६॥

सिंहक्षेत्रे महासिंहं मल्लारि मणिमण्डपे।
निविडे निविडाकारं धानुष्के जगदीश्वरम्॥ २७॥

मौहूरे कालमेघं तु मधुरायां तु सुन्दरम्।
वृषभाद्रौ महापुण्ये परमस्वामिसङ्गकम्॥ २८॥

श्रीमद्वरगुणे नाथं कुरुकायां रमासखम्।
गोष्ठीपुरे गोष्ठपतिं शयानं दर्भसंस्तरे॥ २९॥

धन्विमङ्गलके शौरि बलाढ्यं भ्रमरस्थले।
कुरञ्जे तु तथा पूर्णं कृष्णामेकं वटस्थले॥ ३०॥

अच्युतं क्षुद्रनद्यां तु पद्मनाभमनन्तके।
एतानि विष्णोः स्थानानि पूजितानि महात्मभिः॥ ३१॥

अधिष्ठितानि देवेश तत्रासीनं च माधवम्।
यः स्मरेत्सततं भक्त्या चेतसानन्यगामिना॥ ३२॥

स विधूयातिसंसारबन्धं याति हरेः पदम्।
अष्टोत्तरशतं विष्णोः स्थानानि पठता स्वयम्॥ ३३॥

अधीताः सकला वेदाः कृताश्च विविधा मखाः।
सम्पादिता तथा मुक्तिः परमानन्ददायिनी ॥ ३४ ॥

अवगाढानि तीर्थानि ज्ञातः स भगवान् हरिः।
आद्यमेतत्स्वयं व्यक्तं विमानं रङ्गसज्जकम्।
श्रीमुष्णं वेङ्कटादिं च शालग्रामं च नैमिषम् ॥ ३५ ॥

तोतादिं पुष्करं चैव नरनारायणाश्रमम्।
अष्टौ मे मूर्तयः सन्ति स्वयं व्यक्ता महीतले ॥ ३६ ॥

॥ इति श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ वेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

सिद्धा ऊचुः

भगवन् वेङ्कटेशस्य नामामष्टोत्तरं शतम्।
अनुब्रूहि दयासिन्धो क्षिप्रसिद्धिप्रदं नृणाम् ॥

नारद उवाच

सावधानेन मनसा शृण्वन्तु तदिदं शुभम्।
जप्तं वैखानसैः पूर्वं सर्वसौभाग्यवर्धनम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ओङ्कारपरमार्थश्च नरनारायणात्मकः।
मोक्षलक्ष्मीप्राणकान्तो वेङ्कटाचलनायकः ॥ १ ॥

करुणापूर्णहृदयः टेङ्कारजपसौरव्यदः।
शास्त्रप्रमाणगम्यश्च यमाद्यष्टाङ्गोचरः ॥ २ ॥

भक्तलोकैकवरदो वरेण्यो भयनाशनः।
यजमानस्वरूपश्च हस्तन्यस्तसुदर्शनः ॥ ३ ॥

रमावतारङ्गेशो णाकारजपसुप्रियः।
यज्ञेशो गतिदाता च जगतीवल्लभो वरः ॥ ४ ॥

रक्षःसन्दोहसंहर्ता वर्चस्वी रघुपुञ्जवः।
दानधर्मपरो याजी घनश्यामलविग्रहः ॥ ५ ॥

हरादिसर्वदेवेऽयो रामो यदुकुलायणीः।
श्रीनिवासो महात्मा च तेजस्वी तत्त्वसन्निधिः ॥ ६ ॥

त्वमर्थलक्ष्यरूपश्च रूपवान् पावनो यशः।
सर्वेशो कमलाकान्तो लक्ष्मीसल्लापसम्मुखः ॥ ७ ॥

चतुर्मुखप्रतिष्ठाता राजराजवरप्रदः।
चतुर्वेदशिरोरत्नं रमणो नित्यवैभवः ॥ ८ ॥

दासवर्गपरित्राता नारदादिमुनिस्तुतः।
यादवाचलवासी च खिद्यद्वक्तार्तिभञ्जनः ॥ ९ ॥

लक्ष्मीप्रसादको विष्णुदेवेशो रम्यविग्रहः।
माधवो लोकनाथश्च लालिताखिलसेवकः ॥ १० ॥

यक्षगन्धर्ववरदः कुमारो मातृकार्चितः।
रटद्वालकपोषी च शेषशैलकृतस्थलः ॥ ११ ॥

षाङ्गण्यपरिपूर्णश्च द्वैतदोषनिवारणः।
तियंगजन्त्वर्चिताद्विश्च नेत्रानन्दकरोत्सवः ॥ १२ ॥

द्वादशोत्तमलीलश्च दरिद्रजनरक्षकः।
शत्रुकृत्यादिभीतिन्नो भुजञ्जशयनप्रियः ॥ १३ ॥

जाग्रद्रहस्यावासो यः शिष्टानां परिपालकः।
वरेण्यः पूर्णबोधश्च जन्मसंसारभेषजम् ॥ १४ ॥

कार्त्तिकैयवपुर्धारी यतिशेखरभावितः।
नरकादिभयध्वंसी रथोत्सवकलाधरः ॥ १५ ॥

लोकार्चामुख्यमूर्तिश्च केशवाद्यवतारवान्।
शास्त्रश्रुतानन्तलीलो यमशिक्षानिबर्हणः ॥ १६ ॥

मानसंरक्षणपर इरिणाङ्गुरधान्यदः।
नेत्रहीनाक्षिदायी च मतिहीनमतिप्रदः ॥ १७ ॥

हिरण्यदानसङ्गाही मोहजालनिकृन्तनः।
दधिलाजाक्षतार्च्यश्च यातुधानविनाशनः ॥ १८ ॥

यजुर्वेदशिखागम्यो वेङ्कटो दक्षिणास्थितः।
सारपुष्करणीतीरो रात्रौदेवगणार्चितः ॥ १९ ॥

यत्प्रवत्प्रकल्पसन्धाता श्रीञ्जपाञ्चनवृद्धिकृत।
क्लीञ्कारजापिकाम्यार्थप्रदानसदयान्तरः ॥ २० ॥

सौं सर्वसिद्धिसन्धाता नमस्कर्तुरभीष्टदः।
मोहिताखिललोकश्च नानारूपव्यवस्थितः ॥ २१ ॥

राजीवलोचनो यज्ञवराहो गणवेङ्कटः।
तेजोराशीक्षणः स्वामी हार्दाविद्यानिवारणः ॥ २२ ॥

इति श्रीवेङ्कटेशस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
 प्रातः प्रातः समुत्थाय यः पठेद्विक्तिमान्नरः।
 सर्वेषार्थानवाप्नोति वेङ्कटेशप्रसादतः ॥
 ॥ इति श्री-वेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ हरिहराष्ट्रेत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

माधवोमाधवावीशौ सर्वसिद्धिविधायिनौ।
 वन्दे परस्परात्मानौ परस्परनुतिप्रियौ ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे
 शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे।
 दामोदराच्युत जनार्दन वासुदेव
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ १ ॥

गङ्गाधरान्धकरिपो हर नीलकण्ठ
 वैकुण्ठ कैटभरिपो कमठाजपाणे।
 भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ २ ॥

विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे
 गौरीपते गिरिश शङ्कर चन्द्रचूड।
 नारायणासुरनिर्बहर्णा शार्ङ्गपाणे
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ३ ॥

मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो
 श्रीकान्तं पीतवसनाम्बुद्नीलं शौरै।
 ईशानं कृत्तिवसनं त्रिदशैकनाथ
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥४॥
 लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य
 श्रीकण्ठं दिग्वसनं शान्तं पिनाकपाणे।
 आनन्दकन्दं धरणीधरं पद्मनाभ
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥५॥
 सर्वेश्वरं त्रिपुरसूदनं देवदेव
 ब्रह्मण्यदेवं गरुडध्वजं शङ्खपाणे।
 अक्षोरगाभरणं बालमृगाङ्गमौले
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥६॥
 श्रीरामं राघवं रमेश्वरं रावणारे
 भूतेशं मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ।
 चाणूरमर्दनं हृषीकपते मुरारे
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥७॥
 शूलिनं गिरीशं रजनीशकलावतंस
 कंसप्रणाशनं सनातनं केशिनाश।
 भर्गं त्रिनेत्रं भव भूतपते पुरारे
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥८॥
 गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो
 कर्पूरगौरं वृषभध्वजं भालनेत्र।
 गोवर्धनोद्धरणं धर्मधुरीणं गोप
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥९॥

स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधर स्मरारे
 कृष्णानिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे।
 विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्जटाकलाप
 त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ १० ॥

अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नां
 सन्दर्भितां ललितरत्नकदम्बकोन।
 सन्नामकां दृढगुणां द्विजकण्ठगां यः
 कुर्यादिमांस्रजमहो स यमं न पश्येत् ॥ ११ ॥

अगस्तिरुवाच

यो धर्मराजरचितां ललितप्रबन्धां
 नामावलीं सकलकल्मषबीजहच्चीम्।
 धीरोऽत्र कौस्तुभभृतः शशिभूषणस्य
 नित्यं जपेत् स्तनरसं स पिबेन्न मातुः ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डपूर्वार्धे यमप्रोक्तं
 श्रीहरिहराषोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिमं चारुचन्द्रावतंसं
 रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
 पद्मासीनं समन्तात् स्तुतमरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं
 विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्रं त्रिनेत्रम्॥

॥ स्तोत्रम् ॥

अस्य शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य विष्णुर्त्रिष्ठिः, अनुष्टुप् छन्दः,
 शिवः परमेश्वरो—देवता, शिवप्रसादसिद्धर्थे जपे विनियोगः।

शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशोखरः।
 वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः ॥ १ ॥

शङ्करः शूलपाणिश्च खद्वाङ्गी विष्णुवल्लभः।
 शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः ॥ २ ॥

भवः शर्वस्त्रिलोकीशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः।
 उग्रः कपाली कामारिरन्धकासुरसूदनः ॥ ३ ॥

गङ्गाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः।
 भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥ ४ ॥

कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः।
 वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्भूलितविग्रहः ॥ ५ ॥

सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः।
 सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ६ ॥

हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः ।
 विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥ ७ ॥
 हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः ।
 भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः ॥ ८ ॥
 कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः ।
 मृत्युंजयः सूक्ष्मतनुर्जगद्यापी जगदुरुः ॥ ९ ॥
 व्योमकेशो महासेनजनकश्चारुविक्रमः ।
 रुद्रो भूतपतिः स्थाणुराहिर्बृद्ध्यो दिग्म्बरः ॥ १० ॥
 अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ।
 शाश्वतः खण्डपरशुरजः पाशविमोचकः ॥ ११ ॥
 मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययो हरिः ।
 पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः ॥ १२ ॥
 भग्नेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
 अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः ॥ १३ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इमानि दिव्यनामानि जप्यन्ते सर्वदा मया ।
 नामकल्पलतेयं मे सर्वाभीष्टप्रदायिनि ॥
 नामान्येतानि सुभगे शिवदानि न संशयः ।
 वेदसर्वस्वभूतानि नामान्येतानि वस्तुतः ॥
 एतानि यानि नामानि तानि सर्वार्थदान्यतः ।
 जप्यन्ते सादरं नित्यं मया नियमपूर्वकम् ॥

वेदेषु शिवनामानि श्रेष्ठान्यघहरणि च।
सन्त्यनन्तानि सुभगे वेदेषु विविधेष्वपि॥

तेभ्यो नामानि सङ्गृह्य कुमाराय महेश्वरः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नामुपदिशत् पुरा॥

॥ इति शिवरहस्ये सप्तमे अंशो त्रयोदशो अध्याये नामकल्पलता नाम
शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

कैलासाचल-मध्यस्थं कामिताभीष्टदायकम्।
ब्रह्मादि-प्रार्थना-प्राप्त-दिव्यमानुष-विग्रहम् ॥

भक्तानुग्रहणैकान्त-शान्त-स्वान्त-समुज्ज्वलम्।
संयज्ञं संयमीन्द्राणां सार्वभौमं जगद्गुरुम्॥

किङ्करीभूतभक्तैः पङ्कजातविशोषणम्।
ध्यायामि शङ्कराचार्यं सर्वलोकैकशङ्करम् ॥

॥ स्तोत्रम्॥

श्रीशङ्कराचार्यवर्यो ब्रह्मज्ञानप्रदायकः।
अज्ञानतिमिरादित्यः सुज्ञानाम्बुधिचन्द्रमा ॥ १ ॥

वर्णाश्रमप्रतिष्ठाता श्रीमान् मुक्तिप्रदायकः।
शिष्योपदेशनिरतो भक्ताभीष्टप्रदायकः ॥ २ ॥

सूक्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञः कार्यकार्यप्रबोधकः।
ज्ञानमुद्राश्चित्करः शिष्य-हृत्ताप-हारकः॥३॥

पारिव्राज्याश्रमोद्धर्ता सर्वतत्त्वस्वतत्त्वधीः।
अद्वैतस्थापनाचार्यः साक्षाच्छङ्कररूपभृत्॥४॥

षणमतस्थापनाचार्यस्त्रीमार्गप्रकाशकः।
वेदवेदान्ततत्त्वज्ञो दुर्वादिमतखण्डनः॥५॥

वैराग्यनिरतः शान्तः संसारार्णवतारकः।
प्रसन्नवदनाभ्योजः परमार्थप्रकाशकः॥६॥

पुराणस्मृतिसारज्ञो नित्यतृप्तो महच्छुचिः।
नित्यानन्दो निरातङ्को निःसङ्गो निर्मलात्मकः॥७॥

निर्ममो निरहङ्कारो विश्ववन्द्यपदाम्बुजः।
सत्त्वप्रधानः सङ्कावः सञ्चातीतगुणोज्ज्वलः॥८॥

अनघः सारहृदयः सुधीः सारस्वतप्रदः।
सत्यात्मा पुण्यशीलश्च साञ्च्ययोगविचक्षणः॥९॥

तपोराशिर्महातेजा गुणत्रयविभागवित्।
कलिघ्नः कालधर्मज्ञस्तमोगुणनिवारकः॥१०॥

भगवान् भारतीजेता शारदाह्वानपण्डितः।
धर्माधर्मविभागज्ञो लक्ष्यमेदप्रदर्शकः॥११॥

नादविन्दुकलाभिज्ञो योगिहृत्पद्मभास्करः।
अतीन्द्रिय-ज्ञाननिधिर्नित्यानित्यविवेकवान्॥१२॥

चिदानन्दश्चिन्मयात्मा परकाय-प्रवेशकृत।
अमानुष-चरित्राढ्यः क्षेमदायी क्षमाकरः ॥ १३ ॥

भवो भद्रप्रदो भूरिमहिमा विश्वरञ्जकः।
स्वप्रकाशः सदाधारो विश्वबन्धुः शुभोदयः ॥ १४ ॥

विशालकीर्तिर्वागीशः सर्वलोकहितोत्सुकः।
कैलासयात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजकः ॥ १५ ॥

काञ्च्यां श्रीचक्र-राजारव्य-यन्त्रस्थापन-दीक्षितः।
श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथः ॥ १६ ॥

श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादिग्रन्थकल्पकः।
चतुर्दिक्तुराम्भायप्रतिष्ठाता महामतिः ॥ १७ ॥

द्विसप्तति-मतोच्छेत्ता सर्वदिग्विजयप्रभुः।
काषायवसनोपेतो भस्मोद्घूलितविग्रहः ॥ १८ ॥

ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्यः कमण्डलुलसत्करः।
व्याससन्दर्शनप्रीतो भगवत्पादसंज्ञकः ॥ १९ ॥

चतुःषष्ठिकलाभिज्ञो ब्रह्मराक्षस-मोक्षदः।
सौन्दर्यलहरीमुख्यबहुस्तोत्रविधायकः ॥ २० ॥

श्रीमन्मण्डनमिश्रारव्यस्वयम्भूजयसन्नुतः।
तोटकाचार्यसम्पूज्यः पद्मपादार्चिताङ्गिकः ॥ २१ ॥

हस्तामलकयोगीन्द्रब्रह्मज्ञानप्रदायकः ।
सुरेश्वरादि-सच्चिद्य-सन्ध्यासाश्रम-दायकः ॥ २२ ॥

निर्व्यजकरुणामूर्तिर्जगत्पूज्यो जगदुरुः।
 भेरीपटहवाद्यादिराजलक्षणलक्षितः ।
 सकृत्स्मरणसन्तुष्टः सर्वज्ञो ज्ञानदायकः ॥ २३ ॥

॥ इति श्री-शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् ॥

अष्टोत्तरशतं भूमौ स्थितं क्षेत्रं वदाम्यहम्।
 कैवल्यशैले श्रीकण्ठः केदारो हिमवत्यपि ॥ १ ॥

काशीपुर्या विश्वनाथः श्रीशैले मल्लिकार्जुनः।
 प्रयागे नीलकण्ठेशो गयायां रुद्रनामकः ॥ २ ॥

नीलकण्ठेश्वरः साक्षात् कालञ्जरपुरे शिवः।
 द्राक्षारामे तु भीमेशो मायूरे चाम्बिकेश्वरः ॥ ३ ॥

ब्रह्मावर्ते देवलिङ्गः प्रभासे शशिभूषणः।
 वृषध्वजाभिधः श्रीमतिः श्वेतहस्तिपुरेश्वरः ॥ ४ ॥

गोकर्णशस्तु गोकर्णं सोमेशः सोमनाथके।
 श्रीरूपाख्ये त्यागराजो वेदे वेदपुरीश्वरः ॥ ५ ॥

भीमारामे तु भीमेशो मन्थने कालिकेश्वरः।
 मधुरायां चोकनाथो मानसे माधवेश्वरः ॥ ६ ॥

श्रीवाञ्छके चम्पकेशः पञ्चवट्यां वटेश्वरः।
 गजारण्ये तु वैद्येशस्तीर्थाद्रौ तीर्थकेश्वरः ॥ ७ ॥

कुम्भकोणे तु कुम्भेशो लेपाक्ष्यां पापनाशनः।
 कण्वपुर्या तु कण्वेशो मध्ये मध्यार्जुनेश्वरः ॥ ८ ॥

हरिहरपुरे श्रीशङ्करनारायणेश्वरः।
विरच्चिपुर्या मार्गेशः पञ्चनद्यां गिरीश्वरः ॥९॥

पम्पापुर्या विरूपाक्षः सोमाद्रौ मल्लिकार्जुनः।
त्रिमकूटे त्वगस्त्येशः सुब्रह्मण्येऽहिपेश्वरः ॥१०॥

महाबलेश्वरः साक्षान्महाबलशिलोच्चये।
रविणा पूजितो दक्षिणावर्तेऽकेश्वरः स्वयम् ॥११॥

वेदारण्ये महापुण्ये वेदारण्येश्वराभिधः।
मूर्तित्रयात्मकः सोमपुर्या सोमेश्वराभिधः ॥१२॥

अवन्त्यां रामलिङ्गेशः काश्मीरे विजयेश्वरः।
महानन्दिपुरे साक्षान्महानन्दिपुरेश्वरः ॥१३॥

कोटितीर्थे तु कोटीशो वृद्धे वृद्धाचलेश्वरः।
महापुण्ये तत्र ककुद्दिरौ गङ्गाधरेश्वरः ॥१४॥

चामराज्यारव्यनगरे चामराजेश्वरः स्वयम्।
नन्दीश्वरो नन्दिगिरौ चण्डेशो बधिराचले ॥१५॥

नञ्जुण्डेशो गरपुरे शतशङ्खे।
घनानन्दाचले सोमो नल्लूरे विमलेश्वरः ॥१६॥

नीडानाथपुरे साक्षान्नीडानाथेश्वरः स्वयम्।
एकान्ते रामलिङ्गेशः श्रीनागे कुण्डलीश्वरः ॥१७॥

श्रीकन्यायां त्रिभङ्गीश उत्सङ्घे राघवेश्वरः।
मत्स्यतीर्थे तु तीर्थेशस्त्रिकूटे ताण्डवेश्वरः ॥१८॥

प्रसन्नाख्यपुरे मार्गसहायेशो वरप्रदः।
गण्डक्यां शिवनाभस्तु श्रीपतौ श्रीपतीश्वरः ॥ १९ ॥

धर्मपुर्या धर्मलिङ्गः कन्याकुञ्जे कलाधरः।
वाणिग्रामे विरिच्छेशो नेपाले नकुलेश्वरः ॥ २० ॥

मार्कण्डेयो जगन्नाथे स्वयम्भूर्नम्दातटे।
धर्मस्थले मञ्जुनाथो व्यासेशस्तु त्रिरूपके ॥ २१ ॥

स्वर्णावत्यां कलिङ्गेशो निर्मले पन्नगेश्वरः।
पुण्डरीके जैमिनीशोऽयोध्यायां मधुरेश्वरः ॥ २२ ॥

सिद्धवट्यां तु सिद्धेशः श्रीकूर्मे त्रिपुरान्तकः।
मणिकुण्डलतीर्थे तु मणिमुक्तानदीश्वरः ॥ २३ ॥

वटाटव्यां कृत्तिवासाख्विवेण्यां सङ्गमेश्वरः।
स्तनिताख्ये तु मल्लेश इन्द्रकीलेऽर्जुनेश्वरः ॥ २४ ॥

शेषाद्रौ कपिलेशस्तु पुष्पे पुष्पगिरीश्वरः।
भुवनेशश्वित्रकूटे तूजिन्यां कालिकेश्वरः ॥ २५ ॥

ज्वालामुख्यां शूलटङ्को मङ्गल्यां सङ्गमेश्वरः।
बृहतीशस्तञ्जापुर्या रामेशो वहिपुष्करे ॥ २६ ॥

लङ्काद्वीपे तु मत्स्येशः कूर्मेशो गन्धमादने।
विन्ध्याच्चले वराहेशो नृसिंहः स्यादहोविले ॥ २७ ॥

कुरुक्षेत्रे वामनेशस्ततः कपिलतीर्थके।
तथा परशुरामेशः सेतौ रामेश्वराभिघः ॥ २८ ॥

साकेते बलरामेशो बौद्धेशो वारणावते।
तत्त्वक्षेत्रे च कल्कीशः कृष्णेशः स्यान्महेन्द्रके॥ २९॥

॥ इति ललितागमे ज्ञानपादे शिवलिङ्गप्रादुर्भावपटलान्तर्गते
श्रीशिवाष्ट्रोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ अर्धनारीश्वराष्ट्रोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

चामुण्डिकाम्बा श्रीकण्ठः पार्वती परमेश्वरः।
महाराज्ञी महादेवः सदाराध्या सदाशिवः॥ १॥

शिवार्धाङ्गी शिवार्धाङ्गो भैरवी कालभैरवः।
शक्तित्रितयरूपाद्या मूर्तित्रितयरूपवान्॥ २॥

कामकोटि-सुपीठस्था काशीक्षेत्रसमाश्रयः।
दाक्षायणी दक्षवैरिः शूलिनी शूलधारकः॥ ३॥

हीङ्कारपञ्चरशुकी हरिशङ्कररूपवान्।
श्रीमद्भूषणेशजननी षडगनन-सुजन्मभूः॥ ४॥

पञ्चप्रेतासनारूढा पञ्चब्रह्मस्वरूपभृत।
चण्डमुण्डशिरश्छेत्री जलन्धरशिरोहरः॥ ५॥

सिंहवाहा वृषारूढः इयामाभा स्फटिकप्रभः।
महिषासुरसंहर्त्री गजासुरविमर्दनः॥ ६॥

महाबलाचलावासा महाकैलासवासभूः।
भद्रकाली वीरभद्रो मीनाक्षी सुन्दरेश्वरः॥ ७॥

भण्डासुरादिसंहर्त्री दुष्टान्धकविमर्दनः।
मधुकैटभसंहर्त्री मधुरापुरनायकः॥ ८॥

कालत्रयस्वरूपाढ्या कार्यत्रयविधायकः ।
गिरिजाता गिरीशश्च वैष्णवी विष्णुवल्लभः ॥ ९ ॥

विशालाक्षी विश्वनाथः पुष्पास्त्रा विष्णुमार्गणः ।
कौसुम्भवसनोपेता व्याघ्रचर्माम्बरावृतः ॥ १० ॥

मूलप्रकृतिरूपाढ्या परब्रह्मस्वरूपवान् ।
रुण्डमालाविभूषाढ्या लसदुद्राक्षमालिकः ॥ ११ ॥

मनोरूपेक्षुकोदण्डा महामेरुधनुर्घरः ।
चन्द्रचूडा चन्द्रमौलिर्महामाया महेश्वरः ॥ १२ ॥

महाकाली महाकालो दिव्यरूपा दिगम्बरः ।
विन्दुपीठसुखासीना श्रीमदोङ्कारपीठगः ॥ १३ ॥

हरिद्राकुङ्कुमालिसा भस्मोद्भूलितविग्रहः ।
महापद्माटवीलोला महाबिल्वाटवीप्रियः ॥ १४ ॥

सुधामयी विषधरो मातज्जी मकुटेश्वरः ।
वेदवेद्या वेदवाजी चक्रेशी विष्णुचक्रदः ॥ १५ ॥

जगन्मयी जगदूपो मृडानी मृत्युनाशनः ।
रामार्चितपदाम्भोजा कृष्णपुत्रवरप्रदः ॥ १६ ॥

रमावाणीसुसंसेव्या विष्णुब्रह्मसुसेवितः ।
सूर्यचन्द्राग्निनयना तेजस्त्रयविलोचनः ॥ १७ ॥

चिदग्निकुण्डसम्भूता महालिङ्गसमुद्भवः ।
कम्बुकण्ठी कालकण्ठो वज्रेशी वज्रिपूजितः ॥ १८ ॥

त्रिकण्टकी त्रिभज्जीशो भस्मरक्षा स्मरान्तकः ।
हयग्रीववरोद्धात्री मार्कण्डेयवरप्रदः ॥ १९ ॥

चिन्तामणिगृहावासा मन्दराचलमन्दिरः ।
विन्ध्याचलकृतावासा विन्ध्यशैलार्यपूजितः ॥ २० ॥

मनोन्मनी लिङ्गरूपो जगदम्बा जगत्पिता ।
योगनिद्रा योगगम्यो भवानी भवमूर्तिमान् ॥ २१ ॥

श्रीचक्रात्मरथारुढा धरणीधरसंस्थितः ।
श्रीविद्यावेद्यमहिमा निगमागमसंश्रयः ॥ २२ ॥

दशशीर्षसमायुक्ता पञ्चविंशतिशीर्षवान् ।
अष्टादशभुजायुक्ता पञ्चाशत्करमण्डितः ॥ २३ ॥

ब्राह्म्यादिमातृकारूपा शताष्टेकादशात्मवान् ।
स्थिरा स्थाणुस्तथा बाला सद्योजात उमा मृडः ॥ २४ ॥

शिवा शिवश्च रुद्राणी रुद्रश्चैवेश्वरीश्वरः ।
कदम्बकाननावासा दारुकारण्यलोलुपः ॥ २५ ॥

नवाक्षरीमनुस्तुत्या पञ्चाक्षरमनुप्रियः ।
नवावरणसम्पूज्या पञ्चायतनपूजितः ॥ २६ ॥

देवस्थृष्टकदेवी दहराकाशमध्यगः ।
योगिनीगणसंसेव्या भृगवादिप्रमथावृतः ॥ २७ ॥

उग्रताराघोररूपः शर्वाणी शर्वमूर्तिमान् ।
नागवेणी नागभूषो मन्त्रिणी मन्त्रदैवतः ॥ २८ ॥

ज्वलज्जिहा ज्वलन्नेत्रो दण्डनाथा दृगायुधः।
पार्थंज्ञनास्त्रसन्दात्री पार्थपाशुपतास्त्रदः ॥ २९ ॥

पुष्पवच्चक्रताटङ्का फणिराजसुकुण्डलः।
बाणपुत्रीवरोद्धात्री बाणासुरवरप्रदः ॥ ३० ॥

व्यालकञ्चुकसंवीता व्यालयज्ञोपवीतवान्।
नवलावण्यरूपाढ्या नवयौवनविग्रहः ॥ ३१ ॥

नाठ्यप्रिया नाठ्यमूर्तिस्त्रिसन्ध्या त्रिपुरान्तकः।
तन्त्रोपचारसुप्रीता तन्त्रादिमविधायकः ॥ ३२ ॥

नववल्लीष्टवरदा नववीरसुजन्मभूः।
भ्रमरज्या वासुकिज्यो भेरुण्डा भीमपूजितः ॥ ३३ ॥

निशुभशुभदमनी नीचापस्मारमर्दनः।
सहस्राराम्बुजारूढा सहस्रकमलार्चितः ॥ ३४ ॥

गङ्गासहोदरी गङ्गाधरो गौरी त्रियम्बकः।
श्रीशैलभ्रमराम्बारव्या मल्लिकार्जुनपूजितः ॥ ३५ ॥

भवतापप्रशमनी भवरोगनिवारकः।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था मुनिमानसहंसकः ॥ ३६ ॥

प्रत्यङ्गिरा प्रसन्नात्मा कामेशी कामरूपवान्।
स्वयम्भ्रमा स्वप्रकाशः कालरात्री कृतान्तहृत् ॥ ३७ ॥

सदानन्नपूर्णा भिक्षाटो वनदुर्गा वसुप्रदः।
सर्वचैतन्यरूपाढ्या सच्चिदानन्दविग्रहः ॥ ३८ ॥

सर्वमङ्गलरूपाद्या सर्वकल्याणदायकः।
राजराजेश्वरी श्रीमद्राजराजप्रियङ्करः ॥ ३९ ॥

अर्धनारीश्वरस्येदं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
पठन्नर्चन् सदा भक्त्या सर्वसाम्राज्यमाप्नुयात् ॥ ४० ॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणे श्री-अर्धनारीश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥

॥ दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ न्यासः ॥

अस्य श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामास्तोत्रमालामन्त्रस्य
महाविष्णुमहेश्वराः ऋषयः। अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीदुर्गापरमेश्वरी देवता।

हां बीजम्। हीं शक्तिः। हूं कीलकम्।
सर्वाभीष्टसिद्धर्थे जपहोमार्चने विनियोगः।

॥ स्तोत्रम् ॥

सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाऽद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ १ ॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहङ्कारा चिद्रूपा च चिदाकृतिः ॥ २ ॥

अनन्ता भाविनी भव्या ह्यभव्या च सदागतिः।
शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया तथा ॥ ३ ॥

सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी।
अपर्णाऽनेकवर्णा च पाटला पाटलावती ॥ ४ ॥

पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी।
ईशानी च महाराज्ञी ह्यप्रमेयपराक्रमा ॥ ५ ॥

रुद्राणी क्रूररूपा च सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातज्ञी मतज्ञमुनिकन्यका ॥ ६ ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ७ ॥

विमला ज्ञानरूपा च क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा महिषासुरमर्दिनी ॥ ८ ॥

मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी।
सर्वशास्त्रमयी चैव सर्वदानवधातिनी ॥ ९ ॥

अनेकशास्त्रहस्ता च सर्वशास्त्रास्त्रधारिणी।
भद्रकाली सदाकन्या कैशोरी युवतिर्यतिः ॥ १० ॥

प्रौढाऽप्रौढा वृद्धमाता घोररूपा महोदरी।
बलप्रदा घोररूपा महोत्साहा महाबला ॥ ११ ॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री तपस्त्विनी।
नारायणी महादेवी विष्णुमाया शिवात्मिका ॥ १२ ॥

शिवदूती कराली च ह्यनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी महाविद्या महामेधास्वरूपिणी ॥ १३ ॥

गौरी सरस्वती चैव सावित्री ब्रह्मवादिनी।
सर्वतत्त्वैकनिलया वेदमन्त्रस्वरूपिणी ॥ १४ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इदं स्तोत्रं महादेव्या नाम्नाम् अष्टोत्तरं शतम्।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं भक्तिभावेन चेतसा ॥ १५ ॥

शत्रुभ्यो न भयं तस्य तस्य शत्रुक्षयं भवेत्।
सर्वदुःखदरिद्राच्च सुसुखं मुच्यते ध्रुवम् ॥ १६ ॥

विद्यार्थीं लभते विद्यां धनार्थीं लभते धनम्।
कन्यार्थीं लभते कन्यां कन्या च लभते वरम् ॥ १७ ॥

ऋणी ऋणाद्विमुच्येत ह्यपुत्रो लभते सुतम्।
रोगाद्विमुच्यते रोगी सुखमत्यन्तमश्वते ॥ १८ ॥

भूमिलाभो भवेत् तस्य सर्वत्र विजयी भवेत्।
सर्वान् कामानवामोति महादेवीप्रसादतः ॥ १९ ॥

कुङ्कुमैर्बिल्वपत्रैश्च सुगन्धै रक्तपुष्पकैः।
रक्तपत्रैर्विशेषेण पूजयन् भद्रमश्वते ॥ २० ॥

॥ इति श्री-दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूराभां त्रिनेत्राममृतशशिकलां खेचरीं रत्नवस्त्रां
पीनोच्चुञ्जस्तनाद्व्यामभिनवविलसद्यौवनारम्भरम्याम्।
नानालङ्घारयुक्तां सरसिजनयनामिन्दुसङ्कान्तमूर्ति
देवीं पाशाङ्गशाद्व्यामभयवरकरामन्नपूर्णा नमामि ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

अन्नपूर्णा शिवा देवी भीमा पुष्टिः सरस्वती।
सर्वज्ञा पार्वती दुर्गा शर्वाणी शिववल्लभा ॥ १ ॥

वेदविद्या महाविद्या विद्यादात्री विशारदा।
कुमारी त्रिपुरा बाला लक्ष्मीः श्रीर्भयहारिणी ॥ २ ॥

भवानी विष्णुजननी ब्रह्मादिजननी तथा।
गणेशजननी शक्तिः कुमारजननी शुभा ॥ ३ ॥

भोगप्रदा भगवती भक्ताभीष्टप्रदायिनी।
भवरोगहरा भव्या शुभा परममङ्गला ॥ ४ ॥

भवानी चञ्चला गौरी चारुचन्द्रकलाधरा।
विशालाक्षी विश्वमाता विश्ववन्द्या विलासिनी ॥ ५ ॥

आर्या कल्याणनिलया रुद्राणी कमलासना।
शुभप्रदा शुभावर्ता वृत्तपीनपयोधरा ॥ ६ ॥

अम्बा संहारमथनी मृडानी सर्वमङ्गला।
विष्णुसंसेविता सिद्धा ब्रह्माणी सुरसेविता ॥ ७ ॥

परमानन्ददा शान्तिः परमानन्दरूपिणी।
परमानन्दजननी परानन्दप्रदायिनी ॥ ८ ॥

परोपकारनिरता परमा भक्तवत्सला।
पूर्णचन्द्राभवदना पूर्णचन्द्रनिभांशुका ॥ ९ ॥

शुभलक्षणसम्पन्ना शुभानन्दगुणार्णवा।
शुभसौभाग्यनिलया शुभदा च रतिप्रिया ॥ १० ॥

चण्डिका चण्डमथनी चण्डर्दर्पनिवारिणी।
मार्तण्डनयना साध्वी चन्द्राग्निनयना सती ॥ ११ ॥

पुण्डरीकहरा पूर्णा पुण्यदा पुण्यरूपिणी।
मायातीता श्रेष्ठमाया श्रेष्ठधर्मात्मवन्दिता ॥ १२ ॥

असृष्टिः सङ्गरहिता सृष्टिहेतुः कपर्दिनी।
वृषारूढा शूलहस्ता स्थितिसंहारकारिणी ॥ १३ ॥

मन्दस्मिता स्कन्दमाता शुद्धचित्ता मुनिस्तुता।
महाभगवती दक्षा दक्षाध्वरविनाशिनी ॥ १४ ॥

सर्वार्थदात्री सावित्री सदाशिवकुटुम्बिनी।
नित्यसुन्दरसर्वाङ्गी सच्चिदानन्दलक्षणा ॥ १५ ॥

नाम्नामष्टोत्तरशतमम्बायाः पुण्यकारणम्।
सर्वसौभाग्यसिद्धर्थं जपनीयं प्रयत्नतः ॥ १६ ॥

एतानि दिव्यनामानि श्रुत्वा ध्यात्वा निरन्तरम्।
स्तुत्वा देवीं च सततं सर्वान् कामानवाप्न्यात् ॥ १७ ॥

॥ इति श्रीशिवरहस्ये श्री-अन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ गौर्यष्टेत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

गौरी गणेशजननी गिरिराजतनूद्वा।
गुहाम्बिका जगन्माता गङ्गाधरकुटुम्बिनी ॥ १ ॥

वीरभद्रप्रसूर्विश्वव्यापिनी विश्वरूपिणी।
अष्टमूर्त्यात्मिका कष्टदारिद्यशमनी शिवा ॥ २ ॥

शाम्भवी शङ्करी बाला भवानी भद्रदायिनी।
माङ्गल्यदायिनी सर्वमङ्गला मञ्जुभाषिणी ॥ ३ ॥

महेश्वरी महामाया मन्त्राराध्या महाबला।
हेमाद्रिजा हैमवती पार्वती पापनाशिनी ॥ ४ ॥

नारायणांशजा नित्या निरीशा निर्मलाऽम्बिका।
मृडानी मुनिसंसेव्या मानिनी मेनकात्मजा ॥ ५ ॥

कुमारी कन्यका दुर्गा कलिदोषनिषूदिनी।
कात्यायनी कृपापूर्णा कल्याणी कमलार्चिता ॥ ६ ॥

सती सर्वमयी चैव सौभाग्यदा सरस्वती।
अमलाऽमरसंसेव्या अन्नपूर्णाऽमृतेश्वरी ॥ ७ ॥

अखिलागमसंसेव्या सुखसच्चित्सुधारसा।
बाल्याराधितभूतेशा भानुकोटिसमद्युतिः ॥ ८ ॥

हिरण्मयी परा सूक्ष्मा शीतांशुकृतशेखरा।
हरिद्राकुङ्कुमाराध्या सर्वकालसुमङ्गली ॥ ९ ॥

सर्वबोधप्रदा सामशिखा वेदान्तलक्षणा।
कर्मब्रह्ममयी कामकलना काङ्गितार्थदा ॥ १० ॥

चन्द्राकार्युतताटङ्गा चिदम्बरशरीरिणी।
श्रीचक्रवासिनी देवी कला कामेश्वरप्रिया ॥ ११ ॥

मारारातिप्रियार्धज्ञी मार्कण्डेयवरप्रदा।
पुत्रपौत्रप्रदा पुण्या पुरुषार्थप्रदायिनी ॥ १२ ॥

सत्यधर्मरता सर्वसाक्षिणी सर्वरूपिणी।
श्यामला बगला चण्डी मातृका भगमालिनी ॥ १३ ॥

शूलिनी विरजा स्वाहा स्वधा प्रत्यज्ञिराम्बिका।
आर्या दाक्षायणी दीक्षा सर्ववस्तूत्तमोत्तमा ॥ १४ ॥

शिवाभिधाना श्रीविद्या प्रणवार्थस्वरूपिणी।
ह्रीङ्गारी नादरूपा च त्रिपुरा त्रिगुणेश्वरी।
सुन्दरी स्वर्णगौरी च षोडशाक्षरदेवता ॥ १५ ॥

॥ इति श्री-गौर्यष्टेत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शत्त्यष्टेत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम् ॥

दक्ष उवाच

एवमुक्तोऽब्रवीदक्षः केषु केषु मयाऽनघे।
तीर्थेषु च त्वं द्रष्टव्या स्तोतव्या कैश्च नामभिः ॥

देव्युवाच

सर्वगा सर्वभूतेषु द्रष्टव्या सर्वतो भुवि।
सप्तलोकेषु यत्किञ्चिद्रहितं न मया विना ॥

तथाऽपि येषु स्थानेषु द्रष्टव्याः सिद्धिमीप्सुभिः ।
स्मर्तव्या भूतिकामैर्वा तानि वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

वाराणस्यां विशालाक्षी नैमिषे लिङ्गधारिणी ।
प्रयागे ललिता देवी कामुका गन्धमादने ॥ १ ॥

मानसे कुमुदा नाम विश्वकाया तथेश्वरे ।
गोमन्ते गोमती नाम मन्दरे कामचारिणी ॥ २ ॥

मदोत्कटा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे ।
कान्यकुञ्जे तथा गौरी रम्भा मलयर्पवते ॥ ३ ॥

एकाम्रके कीर्तिमती विश्वां विश्वेश्वरे विदुः ।
पुष्करे पुरुहूतेति केदारे मार्गदायिनी ॥ ४ ॥

नन्दा हिमवतः पृष्ठे गोकर्णे भद्रकर्णिका ।
स्थानेश्वरे भवानी तु बिल्वके बिल्वपत्रिका ॥ ५ ॥

श्रीशैले माधवी नाम भद्रा भद्रेश्वरे तथा ।
जया वराहशैले तु कमला कमलालये ॥ ६ ॥

रुद्रकोट्यां च रुद्राणी काली कालज्ञरे गिरौ ।
महालिङ्गे तु कपिला मर्कोटे मुकुटेश्वरी ॥ ७ ॥

शालग्रामे महादेवी शिवलिङ्गे जलप्रिया ।
मायापुर्यां कुमारी तु सन्ताने ललिता तथा ॥ ८ ॥

उत्पलाक्षी सहस्राक्षे हिरण्याक्षे महोत्पला ।
गयायां मङ्गला नाम विमला पुरुषोत्तमे ॥ ९ ॥

विपाशायामघोराक्षी पाटला पुण्ड्रवर्घने।
नारायणी सुपार्श्वे तु त्रिकूटे रुद्रसुन्दरी ॥ १० ॥

विपुले विपुला नाम कल्याणी मलयाचले।
कौटवी कोटितीर्थेषु सुगन्धा माधवे वने ॥ ११ ॥

गोदाश्रमे त्रिसन्ध्या तु गङ्गाद्वारे रतिप्रिया।
शिवकुण्डे शिवानन्दा नन्दिनी देविकातटे ॥ १२ ॥

रुक्मणी द्वारवत्यां तु राधा वृन्दावने वने।
देवकी मथुरायां तु पाताले परमेश्वरी ॥ १३ ॥

चित्रकूटे तथा सीता विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिनी।
सह्यद्वारे करीरा तु हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका ॥ १४ ॥

रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती।
करवीरे महालक्ष्मीरुमादेवी विनायके ॥ १५ ॥

अरोगा वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी।
अभयेत्युष्णतीर्थेषु चामृता विन्ध्यकन्दरे ॥ १६ ॥

माण्डव्ये माण्डवी नाम स्वाहा माहेश्वरे पुरे।
छागलाण्डे प्रचण्डा तु चण्डिकामरकण्टके ॥ १७ ॥

सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती।
देवमाता सरस्वत्यां पारा पारातटे मता ॥ १८ ॥

महालये महाभागा पयोष्णयां पिङ्गलेश्वरी।
सिंहिका कृतशौचे तु कार्त्तिकेये तु शङ्करी ॥ १९ ॥

उत्पलावर्तके लोला सुभद्रा शोणसङ्गमे।
महासिद्धवने लक्ष्मीरनज्ञा भरताश्रमे॥ २०॥

जालन्धरे विश्वमुखी तारा किञ्चिन्धपर्वते।
देवदारुवने पुष्टिर्मधा काश्मीरमण्डले॥ २१॥

भीमादेवी हिमाद्रौ तु पुष्टिर्विश्वेश्वरे तथा।
कपालमोचने शुद्धिर्माता कायावरोहणे॥ २२॥

शङ्खोद्धारे ध्वनिर्नाम धृतिः पिण्डारके तथा।
काला तु चन्द्रभागायामच्छोदे शिवकारिणी॥ २३॥

वेणायाममृता नाम बद्याम् उर्वशी तथा।
औषधी चोत्तरकुरौ कुशद्वीपे कुशोदका॥ २४॥

मन्मथा हेमकूटे तु मुकुटे सत्यवादिनी।
अश्वत्थे वन्दनीया तु निधिर्वैश्रवणालये॥ २५॥

गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसन्निधौ।
देवलोके तथेन्द्राणी ब्रह्मास्येषु सरस्वती॥ २६॥

सूर्यबिम्बे प्रभा नाम मातृणां वैष्णवी तथा।
अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा॥ २७॥

चित्ते ब्रह्मकला नाम शक्तिः सर्वशरीरिणाम्।
एतदुद्देशतः प्रोक्तं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ २८॥

अष्टोत्तरं च तीर्थानां शतमेतदुदाहृतम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ २९॥

एषु तीर्थेषु यः कृत्वा स्तानं पश्यन्ति मां नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः कल्पं शिवपुरे वसेत्॥ ३० ॥

यस्तु मत्परमः कालं करोत्येतेषु मानवः।
स भित्त्वा ब्रह्मसदनं पदमभ्येति शाङ्करम्॥ ३१ ॥

नामाष्टशतकं यस्तु श्रावयेच्छिवसन्निधौ।
तृतीयायामथाष्टम्यां बहुपुत्रो भवेन्नरः॥ ३२ ॥

गोदाने श्राद्धकाले वा अहन्यहनि वा पुनः।
देवार्चनविधौ विद्वान् पठन् ब्रह्माधिगच्छति॥ ३३ ॥

एवं वदन्ती सा तत्र ददाहात्मानमात्मना।
स्वायम्भुवेऽपि काले च दक्षप्राचेतसोऽभवत्॥ ३४ ॥

पार्वती चाभवदेवी शिवदेहार्घ्यारिणी।
मेनागर्भसमुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिफलप्रदा॥ ३५ ॥

अरुन्धती जपन्त्येतत्तदासा योगमुत्तमम्।
पुरुखाश्च राजर्षिलोकेषु जयतामगात्॥ ३६ ॥

ययातिः पुत्रलाभं तु धनलाभं तु भार्गवः।
तथाऽन्ये देवदैत्याश्च ब्राह्मणाः क्षत्रियास्तथा।
वैश्याः शूद्राश्च बहवः सिद्धिमीर्यथेप्सिताम्॥ ३७ ॥

यत्रेतल्लिखितं तिष्ठेत् पूज्यते देवसन्निधौ।
न तत्र शोकदौर्गत्यं कदाचिदपि जायते॥ ३८ ॥

॥ इति श्रीमत्यमहापुराणे त्रयोदशोऽध्याये
श्री-शक्त्यष्टेत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ सीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

वामाङ्गे रघुनाथकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना
 या विप्राधिपयानरम्यनयना या विप्रपालानना।
 विद्युत्पुञ्जविराजमानवसना भक्तार्तिसङ्खण्डना
 श्रीमद्राघवपादपद्मयुगलन्यस्तेक्षणा साऽवतु ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीसीता जानकी देवी वैदेही राघवप्रिया।
 रमाऽवनिसुता रामा राक्षसान्तप्रकारिणी ॥ १ ॥

रत्नगुप्ता मातुलुञ्जी मैथिली भक्ततोषदा।
 पद्माक्षजा कञ्जनेत्रा स्मितास्या नूपुरस्वना ॥ २ ॥

वैकुण्ठनिलया मा श्रीमुक्तिदा कामपूरणी।
 नृपात्मजा हेमवर्णा मृदुलाङ्गी सुभाषिणी ॥ ३ ॥

कुशाम्बिका दिव्यदा च लवमाता मनोहरा।
 हनुमद्वन्दितपदा मुग्धा केयूरधारिणी ॥ ४ ॥

अशोकवनमध्यस्था रावणादिकमोहिनी।
 विमानसंस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता ॥ ५ ॥

रजोरूपा सत्त्वरूपा तामसी वह्निवासिनी।
 हेममृगासक्तचित्ता वाल्मीक्याश्रमवासिनी ॥ ६ ॥

पतिव्रता महामाया पीतकौशेयवासिनी।
 मृगनेत्रा च बिम्बोष्ठी धनुर्विद्याविशारदा ॥ ७ ॥

सौम्यरूपा दशरथस्तुषा चामरवीजिता।
सुमेधादुहिता दिव्यरूपा त्रैलोक्यपालिनी ॥ ८ ॥

अन्नपूर्णा महालक्ष्मीर्धार्लिङ्गा च सरस्वती।
शान्तिः पुष्टिः क्षमा गौरी प्रभाऽयोध्यानिवासिनी ॥ ९ ॥

वसन्तशीतला गौरी स्नानसन्तुष्टमानसा।
रमानामभद्रसंस्था हेमकुम्भपयोधरा ॥ १० ॥

सुरार्चिता धृतिः कान्तिः स्मृतिर्मेधा विभावरी।
लघूदरा वरारोहा हेमकङ्कणमणिडता ॥ ११ ॥

द्विजपत्व्यर्पितनिजभूषा राघवतोषिणी।
श्रीरामसेवानिरता रत्नताटङ्कधारिणी ॥ १२ ॥

रामवामाङ्गसंस्था च रामचन्द्रैकरञ्जनी।
सरयूजलसङ्कीडाकारिणी राममोहिनी ॥ १३ ॥

सुवर्णतुलिता पुण्या पुण्यकीर्तिः कलावती।
कलकण्ठा कम्बुकण्ठा रम्भोरुर्गजगामिनी ॥ १४ ॥

रामार्पितमना रामवन्दिता रामवल्लभा।
श्रीरामपदचिह्नाङ्का रामरामेतिभाषिणी ॥ १५ ॥

रामपर्यङ्कशयना रामाङ्गिक्षालिनी वरा।
कामधेन्वन्नसन्तुष्टा मातुलङ्गकरे धृता ॥ १६ ॥

दिव्यचन्द्रनसंस्था श्रीर्मूलकासुरमर्दिनी।
एवमष्टोत्तरशतं सीतानाम्नां सुपुण्यदम् ॥ १७ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

ये पठन्ति नरा भूम्यां ते धन्याः स्वर्गगामिनः।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सीतायाः स्तोत्रमुत्तमम्॥ १८॥

जपनीयं प्रयत्नेन सर्वदा भक्तिपूर्वकम्।
सन्ति स्तोत्राण्यनेकानि पुण्यदानि महान्ति च ॥ १९ ॥

नानेन सदृशानीह तानि सर्वाणि भूसुर।
स्तोत्राणामुत्तमं चेदं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम्॥ २० ॥

एवं सुतीक्ष्ण ते प्रोक्तमष्टोत्तरशतं शुभम्।
सीतानाम्नां पुण्यदं च श्रवणान्मङ्गलप्रदम्॥ २१ ॥

नरैः प्रातः समुत्थाय पठितव्यं प्रयत्नतः।
सीतापूजनकालेऽपि सर्ववाज्ञितदायकम्॥ २२ ॥

॥ इति श्री-आनन्दरामायणे श्रीसीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदां
हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्।
भक्ताभीष्टफलप्रदां हरिहरब्रह्मादिभिः सेवितां
पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥

॥ स्तोत्रम् ॥

प्रकृतिं विकृतिं विद्यां सर्वभूतहितप्रदाम्।
श्रद्धां विभूतिं सुरभिं नमामि परमात्मिकाम्॥ १ ॥

वाचं पद्मालयां पद्मां शुचिं स्वाहां स्वधां सुधाम्।
धन्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं नित्यपुष्टां विभावरीम्॥ २ ॥

अदितिं च दितिं दीप्तां वसुधां वसुधारिणीम्।
नमामि कमलां कान्तां क्षमां क्षीरोदसम्भवाम्॥ ३ ॥

अनुग्रहप्रदां बुद्धिमनधां हरिवल्लभाम्।
अशोकाममृतां दीप्तां लोकशोकविनाशिनीम्॥ ४ ॥

नमामि धर्मनिलयां करुणां लोकमातरम्।
पद्मप्रियां पद्महस्तां पद्माक्षीं पद्मसुन्दरीम्॥ ५ ॥

पद्मोद्भवां पद्ममुखीं पद्मनाभप्रियां रमाम्।
पद्ममालाधरां देवीं पद्मिनीं पद्मगन्धिनीम्॥ ६ ॥

पुण्यगन्धां सुप्रसन्नां प्रसादाभिमुखीं प्रभाम्।
नमामि चन्द्रवदनां चन्द्रां चन्द्रसहोदरीम्॥ ७ ॥

चतुर्भुजां चन्द्ररूपामिन्दिरामिन्दुशीतलाम्।
आह्नादजननीं पुष्टिं शिवां शिवकरीं सतीम्॥ ८ ॥

विमलां विश्वजननीं तुष्टिं दारिद्र्यनाशिनीम्।
प्रीतिपुष्करिणीं शान्तां शुक्ळमाल्याम्बरां श्रियम्॥ ९ ॥

भास्करीं बिल्वनिलयां वरारोहां यशस्विनीम्।
वसुन्धरामुदाराङ्गां हरिणीं हेममालिनीम्॥ १० ॥

धनधान्यकरीं सिद्धिं स्वैणसौम्यां शुभप्रदाम्।
नृपवेशमगतानन्दां वरलक्ष्मीं वसुप्रदाम्॥ ११॥

शुभां हिरण्यप्राकारां समुद्रतनयां जयाम्।
नमामि मङ्गलां देवीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्॥ १२॥

विष्णुपतीं प्रसन्नाक्षीं नारायणसमाश्रिताम्।
दारिद्र्यध्वंसिनीं देवीं सर्वोपद्रवहारिणीम्॥ १३॥

नवदुर्गा महाकालीं ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्।
त्रिकालज्ञानसम्पन्नां नमामि भुवनेश्वरीम्॥ १४॥

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्राजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीं
दासीभूतसमस्तदेववनितां लोकैकदीपाङ्कुराम्।
श्रीमन्नन्दकटाक्षलब्धविभवब्रह्मेन्द्रगङ्गाधरां
त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्॥ १५॥

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥ १६॥

॥ फलश्रुतिः ॥

त्रिकालं यो जपेद्विद्वान् षण्मासं विजितेन्द्रियः।
दारिद्र्यध्वंसनं कृत्वा सर्वमाप्नोत्ययत्नतः॥ १७॥

देवीनामसहस्रेषु पुण्यमष्टोत्तरं शतम्।
येन श्रियमवाप्नोति कोटिजन्मदरिद्रितः॥ १८॥

भृगुवारे शतं धीमान् पठेद्वत्सरमात्रकम्।
 अष्टैश्वर्यमवाप्नोति कुबेर इव भूतले॥ १९॥

दारिद्र्यमोचनं नाम स्तोत्रमम्बापरं शतम्।
 येन श्रियमवाप्नोति कोटिजन्मदरिद्रितः॥ २०॥

भुत्तवा तु विपुलान् भोगानस्याः सायुज्यमाप्नुयात्।
 प्रातःकाले पठेन्नित्यं सर्वदुःखोपशान्तये।
 पठंस्तु चिन्तयेद्वीं सर्वाभरणभूषिताम्॥ २१॥

॥ इति श्री-लक्ष्म्यष्टेतरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ गोदाष्टेतरशतनामस्तोत्रम्॥

॥ ध्यानम्॥

शतमखमणि नीला चारुकह्लारहस्ता
 स्तनभरनमिताङ्गी सान्द्रवात्सल्यसिन्धुः।
 अलकविनिहिताभिः स्वग्भराकृष्टनाथा
 विलसतु हृदि गोदा विष्णुचित्तात्मजा नः॥

॥ स्तोत्रम्॥

श्रीरङ्गनायकी गोदा विष्णुचित्तात्मजा सती।
 गोपीवेषधरा देवी भूसुता भोगशालिनी॥ १॥

तुलसीकाननोद्भूता श्रीधन्विपुरवासिनी।
 भद्रनाथप्रियकरी श्रीकृष्णाहितभोगिनी॥ २॥

आमुक्तमाल्यदा बाला रङ्गनाथप्रिया परा।
 विश्वभरा कलालापा यतिराजसहोदरी॥ ३॥

कृष्णानुरक्ता सुभगा सुलभश्रीः सलक्षणा।
लक्ष्मीप्रियसखी श्यामा दयाश्चितद्वगच्छला ॥ ४ ॥

फलगुन्याविर्भवा रम्या धनुर्मासकृतव्रता।
चम्पकाशोक-पुन्नाग-मालती-विलसत्-कचा ॥ ५ ॥

आकारत्रयसम्पन्ना नारायणपदाश्रिता।
श्रीमदष्टाक्षरीमन्त्र-राजस्थित-मनोरथा ॥ ६ ॥

मोक्षप्रदाननिपुणा मनुरत्नाधिदेवता।
ब्रह्मण्या लोकजननी लीलामानुषरूपिणी ॥ ७ ॥

ब्रह्मज्ञानप्रदा माया सच्चिदानन्दविग्रहा।
महापतिव्रता विष्णुगुणकीर्तनलोलुपा ॥ ८ ॥

प्रपन्नार्तिहरा नित्या वेदसौधविहारिणी।
श्रीरङ्गनाथमाणिक्यमञ्जरी मञ्जुभाषिणी ॥ ९ ॥

पद्मप्रिया पद्महस्ता वेदान्तद्वयबोधिनी।
सुप्रसन्ना भगवती श्रीजनार्दनदीपिका ॥ १० ॥

सुगन्धवयवा चारुरङ्गमञ्जलदीपिका।
ध्वजवज्राङ्कशाङ्का-मूढुपाद-लताश्चिता ॥ ११ ॥

तारकाकारनखरा प्रवालमृदुलाङ्गुली।
कूर्मोपमेय-पादोर्ध्वभागा शोभनपाण्डिका ॥ १२ ॥

वेदार्थभावतत्त्वज्ञा लोकाराध्याङ्गिपङ्कजा।
आनन्दबुद्धुदाकार-सुगुल्फा परमाणुका ॥ १३ ॥

तेजःश्रियोज्ज्वलधृतपादाङ्गुलि-सुभूषिता।
मीनकेतन-तूणीर-चारुजङ्घा-विराजिता ॥ १४ ॥

ककुद्धज्जानुयुग्माढ्या स्वर्णरम्भाभसविथका।
विशालजघना पीनसुश्रोणी मणिमेखला ॥ १५ ॥

आनन्दसागरावर्त-गम्भीराम्भोज-नाभिका।
भास्वद्वलित्रिका चारुजगत्पूर्ण-महोदरी ॥ १६ ॥

नववल्लीरोमराजी सुधाकुम्भायितस्तनी।
कल्पमालानिभभुजा चन्द्रखण्ड-नखाश्चिता ॥ १७ ॥

सुप्रवाशाङ्गुलीन्यस्तमहारत्नाङ्गुलीयका।
नवारुणप्रवालाभ-पाणिदेश-समाश्चिता ॥ १८ ॥

कम्बुकण्ठी सुचुबुका विम्बोष्ठी कुन्ददन्तयुक्।
कारुण्यरस-निष्ठन्द-नेत्रद्वय-सुशोभिता ॥ १९ ॥

मुक्ताशुचिस्मिता चारुचाम्पेयनिभनासिका।
दर्पणाकार-विपुल-कपोल-द्वितयाश्चिता ॥ २० ॥

अनन्तार्क-प्रकाशोद्यन्मणि-ताटङ्क-शोभिता।
कोटिसूर्याग्निसङ्काश-नानाभूषण-भूषिता ॥ २१ ॥

सुगन्धवदना सुभ्रू अर्धचन्द्रललाटिका।
पूर्णचन्द्रानना नीलकुटिलालकशोभिता ॥ २२ ॥

सौन्दर्यसीमा विलसत्-कस्तूरी-तिलकोज्ज्वला।
धगद्व-गायमानोद्यन्मणि-सीमन्त-भूषणा ॥ २३ ॥

जाज्वल्यमान-सद्रत्न-दिव्यचूडावतंसका ।
सूर्यार्धचन्द्र-विलसत्-भूषणाश्चित्-वेणिका ॥ २४ ॥

अत्यर्कानल-तेजोधिमणि-कञ्चुकधारिणी ।
सद्रत्नाश्चितविद्योत-विद्युत्कुञ्जाभ-शाटिका ॥ २५ ॥

नानामणिगणाकीर्ण-हेमाङ्गदसुभूषिता ।
कुङ्कुमागरु-कस्तूरी-दिव्यचन्दन-चर्चिता ॥ २६ ॥

स्वोचितौज्वल्य-विविध-विचित्र-मणि-हारिणी ।
असञ्ज्ञेय-सुखस्पर्श-सर्वातिशय-भूषणा ॥ २७ ॥

मल्लिका-पारिजातादि दिव्यपुष्प-स्रगश्चिता ।
श्रीरङ्गनिलया पूज्या दिव्यदेशसुशोभिता ॥ २८ ॥
॥ इति श्री-गोदाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

तुलसी पावनी पूज्या वृन्दावननिवासिनी ज्ञानदात्री ज्ञानमयी निर्मला
सर्वपूजिता

सती पतिव्रता वृन्दा क्षीराब्धिमथनोद्धवा ।
कृष्णवर्णा रोगहन्त्री त्रिवर्णा सर्वकामदा ॥ १ ॥

लक्ष्मीसखी नित्यशुद्धा सुदती भूमिपावनी ।
हरिद्राघैकनिरता हरिपादकृतालया ॥ २ ॥

पवित्ररूपिणी धन्या सुगन्धिन्यमृतोद्घवा।
सुरूपाऽरोग्यदा तुष्टा शक्तित्रितयरूपिणी ॥ ३ ॥

देवी देवर्षिसंस्तुत्या कान्ता विष्णुमनःप्रिया।
भूतवेतालभीतिद्वी महापातकनाशिनी ॥ ४ ॥

मनोरथप्रदा मेधा कान्तिर्विजयदायिनी।
शङ्खचक्रगदापद्मधारिणी कामरूपिणी ॥ ५ ॥

अपर्वग्प्रदा श्यामा कृशमध्या सुकेशिनी।
वैकुण्ठवासिनी नन्दा बिम्बोष्ठी कोकिलस्वरा ॥ ६ ॥

कपिला निम्नगाजन्मभूमिरायुष्यदायिनी।
वनरूपा दुःखनाशिन्यविकारा चतुर्मुजा ॥ ७ ॥

गरुत्मद्वाहना शान्ता दान्ता विघ्ननिवारिणी।
श्रीविष्णुमूलिका पुष्टिस्त्रिवर्गफलदायिनी ॥ ८ ॥

महाशक्तिर्महामाया लक्ष्मीवाणीसुपूजिता।
सुमङ्गल्यर्चनप्रीता सौमङ्गल्यविवर्धिनी ॥ ९ ॥

चातुर्मास्योत्सवाराध्या विष्णुसान्निध्यदायिनी।
उत्थानद्वादशीपूज्या सर्वदेवप्रपूजिता ॥ १० ॥

गोपीरतिप्रदा नित्या निर्गुणा पार्वतीप्रिया।
अपमृत्युहरा राधाप्रिया मृगविलोचना ॥ ११ ॥

अमूर्णाना हंसगमना कमलासनवन्दिता।
भूलोकवासिनी शुद्धा रामकृष्णादिपूजिता ॥ १२ ॥

सीतापूज्या राममनःप्रिया नन्दनसंस्थिता ।
सर्वतीर्थमयी मुक्ता लोकसृष्टिविधायिनी ॥ १३ ॥

प्रातर्दृश्या ग्लानिहन्त्री वैष्णवी सर्वसिद्धिदा ।
नारायणी सन्ततिदा मूलमृद्घारिपावनी ॥ १४ ॥

अशोकवनिकासंस्था सीताध्याता निराश्रया ।
गोमतीसरयूतीररोपिता कुटिलालका ॥ १५ ॥

अपात्रभक्ष्यपापन्नी दानतोयविशुद्धि ।
श्रुतिधारणसुप्रीता शुभा सर्वेषदायिनी ॥ १६ ॥

नाम्नां शतं साष्टकं तच्चुलस्याः सर्वमङ्गलम् ।
सौमङ्गल्यप्रदं प्रातः पठेऽद्भृत्या सुभाग्यदम् ।
। || १७ ॥

लक्ष्मीपतिप्रसादेन सर्वविद्याप्रदं नृणाम् ।
॥ इति श्री-तुलस्यष्टोत्रशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सरस्वत्यष्टोत्रशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशोषजाज्यापहा ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

सरस्वती महाभद्रा महामाया वरप्रदा।

श्रीप्रदा पद्मनिलया पद्माक्षी पद्मवक्रका ॥ १ ॥

शिवानुजा पुस्तकभृज्ज्ञानमुद्रा रमा परा।
कामरूपा महाविद्या महापातकनाशिनी ॥ २ ॥

महाश्रया मालिनी च महाभोगा महामुजा।
महाभागा महोत्साहा दिव्याङ्गा सुखविन्दिता ॥ ३ ॥

महाकाली महापाशा महाकारा महाङ्गुशा।
पीता च विमला विश्वा विद्युन्माला च वैष्णवी ॥ ४ ॥

चन्द्रिका चन्द्रवदना चन्द्रलेखविभूषिता।
सावित्री सुरसा देवी दिव्यालङ्कारभूषिता ॥ ५ ॥

वाग्देवी वसुदा तीव्रा महाभद्रा महाबला।
भोगदा भारती भामा गोविन्दा गोमती शिवा ॥ ६ ॥

जटिला विन्ध्यवासा च विन्ध्याचलविराजिता।
चण्डिका वैष्णवी ब्रह्मज्ञानैकसाधना ॥ ७ ॥

सौदामिनी सुधामूर्तिः सुभद्रा सुरपूजिता।
सुवासिनी सुनासा च विनिद्रा पद्मलोचना ॥ ८ ॥

विद्यारूपा विशालाक्षी ब्रह्मजाया महाफला।
त्रयीमूर्ती त्रिकालज्ञा त्रिगुणा शास्त्ररूपिणी ॥ ९ ॥

शुभ्मासुरप्रमथिनी शुभदा च स्वरात्मिका।
रक्तबीजनिहन्त्री च चामुण्डा चाम्बिका तथा ॥ १० ॥

मुण्डकायप्रहरणा धूम्रलोचनमर्दना।
सर्वदेवस्तुता सौम्या सुरासुरनमस्कृता ॥ ११ ॥

कालरात्रिः कलाधारा रूपसौभाग्यदायिनी।
वाग्देवी च वरारोहा वाराही वारिजासना ॥ १२ ॥

चित्राम्बरा चित्रगन्धा चित्रमाल्यविभूषिता।
कान्ता कामप्रदा वन्धा विद्याधरसुपूर्जिता ॥ १३ ॥

श्वेतानना नीलभुजा चतुर्वर्गफलप्रदा।
चतुराननसाम्राज्या रक्तमध्या निरञ्जना ॥ १४ ॥

हंसासना नीलजङ्घा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका।
एवं सरस्वतीदेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १५ ॥

॥ इति श्री-सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

शक्तिहस्तं विरूपाक्षं शिखिवाहं षडाननम्।
दारुणं रिपुरोगम्नं भावये कुकुटध्वजम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

स्कन्दो गुहः षण्मुखश्च फालनेत्रसुतः प्रभुः।
पिङ्गलः कृत्तिकासूनुः शिखिवाहो द्विषङ्घजः ॥ १ ॥

द्विषण्णेत्रः शक्तिधरः पिशिताशप्रभञ्जनः।
तारकासुरसंहारी रक्षोबलविमर्दनः ॥ २ ॥

मत्तः प्रमत्तोन्मत्तश्च सुरसैन्यसुरक्षकः।
देवसेनापतिः प्राज्ञः कृपालुर्भक्तवत्सलः ॥ ३ ॥

उमासुतः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः।
सेनानीरग्निजन्मा च विशाखः शङ्करात्मजः ॥ ४ ॥

शिवस्वामी गणस्वामी सर्वस्वामी सनातनः।
अनन्तमूर्तिरक्षोभ्यः पार्वतीप्रियनन्दनः ॥ ५ ॥

गङ्गासुतः शरोद्धूत आहृतः पावकात्मजः।
जृम्भः प्रजृम्भ उज्जृम्भः कमलासनसंस्तुतः ॥ ६ ॥

एकवर्णो द्विवर्णश्च त्रिवर्णः सुमनोहरः।
चतुर्वर्णः पञ्चवर्णः प्रजापतिरहःपतिः ॥ ७ ॥

अग्निगर्भः शमीगर्भो विश्वरेता सुरारिहा।
हरिद्वर्णः शुभकरो वटुश्च पटुवेषभृत् ॥ ८ ॥

पूषा गमस्तिर्गहनश्चन्द्रवर्णः कलाधरः।
मायाधरो महामायी कैवल्यः शङ्करात्मजः ॥ ९ ॥

विश्वयोनिरमेयात्मा तेजोयोनिरनामयः।
परमेष्ठी परब्रह्म वेदगर्भो विराहुतः ॥ १० ॥

पुलिन्दकन्याभर्ता च महासारस्वतावृतः।
आश्रिताखिलदाता च चोरम्भो रोगनाशनः ॥ ११ ॥

अनन्तमूर्तिरानन्दः शिखण्डी-कृतकेतनः।
डम्भः परमडम्भश्च महाडम्भो वृषाकपि: ॥ १२ ॥

कारणोत्पत्ति-देहश्च कारणातीत-विग्रहः।
 अनीश्वरोऽमृतः प्राणः प्राणायामपरायणः ॥ १३ ॥

विरुद्धहन्तो वीरभ्नो रक्तश्यामगलोऽपि च।
 सुब्रह्मण्यो गुहः प्रीतो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः।
 वंशवृद्धिकरो वेदवेद्योऽक्षयफलप्रदः ॥ १४ ॥

॥ इति श्री-सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ कार्त्तिकैयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

सिन्दूरारुणकान्तिमिन्दुवदनं केयूरहारादिभिः
 दिव्यैराभरणौर्विभूषिततनुं स्वर्गस्य सौख्यप्रदम्।
 अभ्मोजाभयशक्तिकुकुटधरं रत्नाङ्गरागांशुकं
 सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोदयतम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

विश्वामित्रस्तु भगवान् कुमारं शरणं गतः।
 स्तवं दिव्यं सम्प्रचक्रे महासेनस्य चापि सः ॥ १ ॥

अष्टोत्तरशतनामान्नं शृणु त्वं तानि फाल्युन।
 जपेन येषां पापानि यान्ति ज्ञानमवाम्बुयात् ॥ २ ॥

त्वं ब्रह्मवादी त्वं ब्रह्मा ब्रह्मब्राह्मणवत्सलः।
 ब्रह्मण्यो ब्रह्मदेवश्च ब्रह्मदो ब्रह्मसञ्चहः ॥ ३ ॥

त्वं परं परमं तेजो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
 अप्रमेयगुणश्वैव मन्त्राणां मन्त्रगो भवान् ॥ ४ ॥

त्वं सावित्रीमयो देवः सर्वत्रैवापराजितः।
मन्त्रः सर्वात्मको देवः षडक्षरवतां वरः ॥ ५ ॥

गवां पुत्रः सुरारिघ्नः सम्भवो भवभावनः।
पिनाकी शत्रुहा चैव कूटः स्कन्दः सुराग्रणीः ॥ ६ ॥

द्वादशो भूर्भुवो भावी भुवः पुत्रो नमस्कृतः।
नागराजः सुधर्मात्मा नाकपृष्ठः सनातनः ॥ ७ ॥

हेमगर्भो महागर्भो जयश्च विजयेश्वरः।
त्वं कर्ता त्वं विधाता च नित्योऽनित्योऽरिमर्दनः ॥ ८ ॥

महासेनो महातेजा वीरसेनश्चमूपतिः।
सुरसेनः सुराध्यक्षो भीमसेनो निरामयः ॥ ९ ॥

शौरिर्यदुर्महातेजा वीर्यवान् सत्यविक्रमः।
तेजोगर्भोऽसुररिपुः सुरमूर्तिः सुरोर्जितः ॥ १० ॥

कृतज्ञो वरदः सत्यः शरण्यः साधुवत्सलः।
सुव्रतः सूर्यसङ्काशो वह्निगर्भो रणोत्सुकः ॥ ११ ॥

पिप्पली शीघ्रगो रौद्रिगाङ्गेयो रिपुदारणः।
कार्त्तिकेयः प्रभुः क्षान्तो नीलदंष्ट्रो महामनाः ॥ १२ ॥

निग्रहो निग्रहाणां च नेता त्वं दैत्यसूदनः।
प्रग्रहः परमानन्दः क्रोधघस्तारकोऽच्छिदः ॥ १३ ॥

कुकुटी बहुलो वादी कामदो भूरिवर्धनः।
अमोघोऽमृतदो ह्यग्निः शत्रुघ्नः सर्वबोधनः ॥ १४ ॥

अनघो ह्यमरः श्रीमानुन्नतो ह्यग्निसम्भवः।
पिशाचराजः सूर्यभः शिवात्मा त्वं सनातनः ॥ १५ ॥

एवं स सर्वभूतानां संस्तुतः परमेश्वरः।
नाम्नामष्टशतेनायं विश्वामित्रमहर्षिणा ॥ १६ ॥

प्रसन्नमूर्तिराहेदं मुनीन्द्र व्रियतामिति।
मम त्वया द्विजश्रेष्ठ स्तुतिरेषा विनिर्मिता ॥ १७ ॥

भविष्यति मनोभीष्टप्राप्तये प्राणिनां भुवि।
विवर्धते कुले लक्ष्मीस्तस्य यः प्रपठेदिमम् ॥ १८ ॥

न राक्षसाः पिशाचा वा न भूतानि न चाऽपदः।
विघ्नकारीणि तद्देहे यत्रैवं संस्तुवन्ति माम् ॥ १९ ॥

दुःस्वप्नं न च पश्येत्स बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
स्तवस्यास्य प्रभावेण दिव्यभावः पुमान्भवेत् ॥ २० ॥

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे माहेश्वरखण्डान्तर्गते कुमारिकाखण्डे
श्रीकार्त्तिकेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ हरिहरपुत्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

महाशास्ता महादेवो महादेवसुतोऽव्ययः।
लोककर्ता लोकभर्ता लोकहन्ता परात्परः ॥ १ ॥

त्रिलोकरक्षको धन्वी तपस्वी भूतसैन्यकः।
मन्त्रवेत्ता महावेत्ता मारुतो जगदीश्वरः ॥ २ ॥

लोकाध्यक्षोऽग्रणीः श्रीमान् अप्रमेयपराक्रमः ।
 सिंहारूढो गजारूढो हयारूढो महेश्वरः ॥ ३ ॥
 नानाशास्त्रधरोऽनर्घो नानाविद्याविशारदः ।
 नानारूपधरो वीरो नानाप्राणिनिषेवितः ॥ ४ ॥
 भूतेशः पूजितो भृत्यो भुजङ्गाभरणोत्तमः ।
 इक्षुधन्वी पुष्पबाणो महारूपो महाप्रभुः ॥ ५ ॥
 मायादेवीसुतो मान्यो महानीतो महागुणः ।
 महाशैवो महारुद्रो वैष्णवो विष्णुपूजकः ॥ ६ ॥
 विद्वेशो वीरभद्रेशो भैरवो षण्मुखध्युवः ।
 मेरुशृङ्खसमासीनो मुनिसङ्खनिषेवितः ॥ ७ ॥
 देवो भद्रो जगन्नाथो गणनाथो गणेश्वरः ।
 महायोगी महामायी महाज्ञानी महाधिपः ॥ ८ ॥
 देवशास्ता भूतशास्ता भीमहासपराक्रमः ।
 नागहारश्च नागेशो व्योमकेशः सनातनः ॥ ९ ॥
 कालज्ञो निर्गुणो नित्यो नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
 लोकाश्रयो गुणाधीशश्वतुःषष्ठिकलामयः ॥ १० ॥
 ऋग्यजुःसामरूपी च मल्लकासुरभञ्जनः ।
 त्रिमूर्तीर्दत्यमथनो प्रकृतिः पुरुषोत्तमः ॥ ११ ॥
 सुगुणश्च महाज्ञानी कामदः कमलेक्षणः ।
 कल्पवृक्षो महावृक्षो विद्यावृक्षो विभूतिदः ॥ १२ ॥
 संसारतापविच्छेत्ता पशुलोकभयङ्करः ।
 रोगहन्ता प्राणदाता परगर्वविभञ्जनः ॥ १३ ॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो नीतिमान् पापभञ्जनः ।
पुष्कलापूर्णसंयुक्तो परमात्मा सतां गतिः ॥ १४ ॥

अनन्तादित्यसङ्काशः सुब्रह्मण्यानुजो बली ।
भक्तानुकम्पी देवेशो भगवान् भक्तवत्सलः ॥ १५ ॥

॥ इति श्री-हरिहरपुत्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ आदित्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

नवग्रहाणां सर्वेषां सूर्यादीनां पृथक् पृथक् ।
पीडा च दुःसहा राजन् जायते सततं नृणाम् ॥ १ ॥

पीडानाशाय राजेन्द्र नामानि शृणु भास्वतः ।
सूर्यादीनां च सर्वेषां पीडा नश्यति शृणवतः ॥ २ ॥

आदित्यः सविता सूर्यः पूषाऽर्कः शीघ्रगो रविः ।
भगस्त्वष्टाऽर्यमा हंसो हेलिस्तेजोनिधिर्हरिः ॥ ३ ॥

दिननाथो दिनकरः सप्तसप्तिः प्रभाकरः ।
विभावसुर्वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ ४ ॥

हरिदश्वः कालवक्त्रः कर्मसाक्षी जगत्पतिः ।
पद्मिनीबोधको भानुर्भास्करः करुणाकरः ॥ ५ ॥

द्वादशात्मा विश्वकर्मा लोहिताङ्गस्तमोनुदः ।
जगन्नाथोऽरविन्दाक्षः कालात्मा कश्यपात्मजः ॥ ६ ॥

भूताश्रयो ग्रहपतिः सर्वलोकनमस्कृतः ।
जपाकुसुमसङ्काशो भास्वानदितिनन्दनः ॥ ७ ॥

ध्वान्तेभसिंहः सर्वात्मा लोकनेत्रो विकर्तनः।
मार्तण्डो मिहिरः सूरस्तपनो लोकतापनः ॥ ८ ॥

जगत्कर्ता जगत्साक्षी शनैश्चरपिता जयः।
सहस्ररशिमस्तरणिर्भगवान् भक्तवत्सलः ॥ ९ ॥

विवस्वानादिदेवश्च देवदेवो दिवाकरः।
धन्वन्तरिर्व्याधिहर्ता ददुकुष्ठविनाशनः ॥ १० ॥

चराचरात्मा मैत्रेयोऽमितो विष्णुर्विकर्तनः।
लोकशोकापहर्ता च कमलाकर आत्मभूः ॥ ११ ॥

नारायणो महादेवो रुद्रः पुरुष ईश्वरः।
जीवात्मा परमात्मा च सूक्ष्मात्मा सर्वतोमुखः ॥ १२ ॥

इन्द्रोऽनलो यमश्वैव नैऋतो वरुणोऽनिलः।
श्रीद ईशान इन्दुश्च भौमः सौम्यो गुरुः कविः ॥ १३ ॥

सौरिर्विधुन्तुदः केतुः कालः कालात्मको विभुः।
सर्वदेवमयो देवः कृष्णः कामप्रदायकः ॥ १४ ॥

य एतैर्नामभिर्मर्त्यो भक्त्या स्तौति दिवाकरम्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ॥ १५ ॥

पुत्रवान् धनवाञ्छीमान् जायते स न संशयः।
रविवारे पठेद्यस्तु नामान्येतानि भास्वतः ॥ १६ ॥

पीडाशान्तिर्भवेत्तस्य ग्रहाणां च विशेषतः।
सद्यः सुखमवाप्नोति चाऽयुर्दीर्घं च नीरुजम् ॥ १७ ॥

॥ इति श्री-भविष्यपुराणे आदित्य अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

धौम्य उवाच

सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषाऽकर्कः सविता रविः ।
गभस्त्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः ॥ १ ॥

पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम् ।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥ २ ॥

इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः ॥ ३ ॥

वैद्यूतो जाठरश्चाग्निरैन्यनस्तेजसां पतिः ।
धमध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ ४ ॥

कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः ।
कलाकाषामुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ ५ ॥

संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः ।
पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः ॥ ६ ॥

कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः ।
वरुणः सागरोऽशुश्र जीमूतो जीवनोऽरिहा ॥ ७ ॥

भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः ।
स्तष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः ॥ ८ ॥

अनन्तः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः ।
जयो विशालो वरदः सर्वभूतनिषेवितः ॥ ९ ॥

मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारकः ।
धन्वतरिधूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः ॥ १० ॥

द्वादशात्माऽरविन्दाक्षः पिता माता पितामहः ।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम् ॥ ११ ॥

देहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः ॥ १२ ॥

एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः ।
नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत् स्वयम्भुवा ॥ १३ ॥

सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम् ।
वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम् ॥ १४ ॥

सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत्
स पुत्रदारान् धनरत्नसञ्चयान् ।
लभेत जातिस्मरतां नरः सदा
धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान् ॥ १५ ॥

इमं स्तवं देववरस्य यो नरः
प्रकीर्तयेच्छुद्धमनाः समाहितः ।
विमुच्यते शोकदवाग्निसागरात्
लभेत कामान् मनसा यथेष्टितान् ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे
श्री-सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ व्यासाष्टेत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

नारायणकुलोद्भूतो नारायणपरो वरः ।

नारायणावतारश्च नारायणवशंवदः ॥ १ ॥

स्वयम्भूवंशसम्भूतो वसिष्ठकुलदीपकः ।

शक्तिपौत्रः पापहन्ता पराशरसुतोऽमलः ॥ २ ॥

द्वैपायनो मातृभक्तः शिष्टः सत्यवतीसुतः ।

स्वयमुद्भूतवेदश्च चतुर्वेदविभागकृत् ॥ ३ ॥

महाभारतकर्ता च ब्रह्मसूत्रप्रजापतिः ।

अष्टादशपुराणानां कर्ता इयामः प्रशिष्यकः ॥ ४ ॥

शुक्तातः पिङ्जटः प्रांशुर्दण्डी मृगाजिनः ।

वश्यवाग् ज्ञानदाता च शङ्करायुःप्रदः शुचिः ॥ ५ ॥

मातृवाक्यकरो धर्मी कर्मी तत्त्वार्थदर्शकः ।

सञ्चयज्ञानदाता च प्रतिस्मृत्युपदेशकः ॥ ६ ॥

सर्वधर्मोपदेष्टा च मृतदर्शनपण्डितः ।

विचक्षणः प्रहृष्टात्मा पर्वपूज्यः प्रभुर्मुनिः ॥ ७ ॥

वीरो विश्रुतविज्ञानः प्राज्ञश्चाज्ञाननाशनः ।

ब्राह्मकृत् पाद्मकृद् धीरो विष्णुकृच्छ्रवकृत् तथा ॥ ८ ॥

श्रीभागवतकर्ता च भविष्यरचनादरः ।

नारदाख्यस्य कर्ता च मार्कण्डेयकरोऽग्निकृत् ॥ ९ ॥

ब्रह्मवैर्वर्तकर्ता च लिङ्गकृच्च वराहकृत् ।

स्कान्दकर्ता वामनकृत् कूर्मकर्ता च मत्स्यकृत् ॥ १० ॥

गरुडारव्यस्य कर्ता च ब्रह्माणडारव्यपुराणकृत्।
उपपुराणानां कर्ता पुराणः पुरुषोत्तमः ॥ ११ ॥

काशिवासी ब्रह्मनिधिर्गीतादाता महामतिः।
सर्वज्ञः सर्वसिद्धिश्च सर्वशास्त्रप्रवर्तकः ॥ १२ ॥

सर्वाश्रयः सर्वहितः सर्वः सर्वगुणाश्रयः।
विशुद्धः शुद्धिकृद् दक्षो विष्णुभक्तः शिवार्चकः ॥ १३ ॥

देवीभक्तः स्कन्दरुचिर्गणेशादच्च योगवित्।
पैलाचार्य ऋचः कर्ता शाकल्यार्यश्च याजुषः ॥ १४ ॥

जैमिन्यार्यः सामकर्ता सुमन्त्वार्योऽप्यथर्वकृत्।
रोमहर्षणसूतार्यो लोकाचार्यो महामुनिः ॥ १५ ॥

व्यासकाशीरतिर्विश्वपूज्यो विश्वेशापूजकः।
शान्तः शान्ताकृतिः शान्तचित्तः शान्तिप्रदस्तथा ॥ १६ ॥

॥ इति व्यासाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ गङ्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

सितमकरनिषणां शुभ्रवर्णं त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम्।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां
कलितसितदुकूलां जाह्वीं तां नमामि ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्री-नारद उवाच

गङ्गा नाम परं पुण्यं कथितं परमेश्वर।
नामानि कति शस्तानि गङ्गायाः प्रणिशंस मे ॥ १ ॥

श्री-महादेव उवाच

नामां सहस्रमध्ये तु नामाष्टशतमुत्तमम्।
जाह्नव्या मुनिशार्दूल तानि मे शृणु तत्त्वतः ॥ २ ॥

गङ्गा त्रिपथगा देवी शम्भुमौलिविहारिणी।
जाह्नवी पापहन्त्री च महापातकनाशिनी ॥ ३ ॥

पतितोद्घारिणी स्रोतस्वती परमवेगिनी।
विष्णुपादाङ्गसम्भूता विष्णुदेहकृतालया ॥ ४ ॥

स्वर्गाब्यनिलया साध्वी स्वर्णदी सुरनिम्नगा।
मन्दाकिनी महावेगा स्वर्णशङ्खप्रभेदिनी ॥ ५ ॥

देवपूज्यतमा दिव्या दिव्यस्थान निवासिनी।
सुचारुनीररुचिरा महापर्वतभेदिनी ॥ ६ ॥

भागीरथी भगवती महामोक्षप्रदायिनी।
सिन्धुसङ्गता शुद्धा रसातलनिवासिनी ॥ ७ ॥

महाभोगा भोगवती सुभगानन्ददायिनी।
महापापहरा पुण्या परमाह्नाददायिनी ॥ ८ ॥

पार्वती शिवपत्नी च शिवशीर्षगतालया।
शम्भोर्जटामध्यगता निर्मला निर्मलानना ॥ ९ ॥

महाकलुषहन्त्री च जहूपुत्री जगत्प्रिया।
त्रैलोक्यपावनी पूर्णा पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी ॥ १० ॥

जगत्पूज्यतमा चारुरूपिणी जगदम्बिका।
लोकानुग्रहकर्त्री च सर्वलोकदयापरा ॥ ११ ॥

याम्यभीतिहरा तारा पारा संसारतारिणी।
ब्रह्माण्डभेदिनी ब्रह्मकमण्डलकृतालया ॥ १२ ॥

सौभाग्यदायिनी पुंसां निर्वाणपददायिनी।
अचिन्त्यचरिता चारुरुचिरातिमनोहरा ॥ १३ ॥

मर्त्यस्था मृत्युभयहा स्वर्गमोक्षप्रदायिनी।
पापापहारिणी दूरचारिणी वीचिधारिणी ॥ १४ ॥

कारुण्यपूर्णा करुणामयी दुरितनाशिनी।
गिरिराजसुता गौरीभगिनी गिरिशप्रिया ॥ १५ ॥

मेनकागर्भसम्भूता मैनाकभगिनीप्रिया।
आद्या त्रिलोकजननी त्रैलोक्यपरिपालिनी ॥ १६ ॥

तीर्थश्रेष्ठतमा श्रेष्ठा सर्वतीर्थमयी शुभा।
चतुर्वेदमयी सर्वा पितृसन्तुष्टिदायिनी ॥ १७ ॥

शिवदा शिवसायुज्यदायिनी शिववल्लभा।
तेजस्विनी त्रिनयना त्रिलोचनमनोरमा ॥ १८ ॥

सप्तधारा शतमुखी सगरान्वयतारिणी।
मुनिसेव्या मुनिसुता जहूजानुप्रभेदिनी ॥ १९ ॥

मकरस्था सर्वगता सर्वाशुभनिवारिणी।
सुदृश्या चाक्षुषीतृप्तिदायिनी मकरालया ॥ २० ॥

सदानन्दमयी नित्यानन्ददा नगपूजिता।
सर्वदेवाधिदेवैश्वं परिपूज्यपदाम्बुजा ॥ २१ ॥

एतानि मुनिशार्दूल नामानि कथितानि ते।
शस्तानि जाहवीदेव्याः सर्वपापहरणि च ॥ २२ ॥

य इदं पठते भक्त्या प्रातरुत्थाय नारद।
गङ्गायाः परमं पुण्यं नामाष्टशतमेव हि ॥ २३ ॥

तस्य पापानि नश्यन्ति ब्रह्महत्यादिकान्यपि।
आरोग्यमतुलं सौरव्यं लभते नात्र संशयः ॥ २४ ॥

यत्र कुत्रापि संस्नायात्पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
तत्रैव गङ्गास्तानस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ २५ ॥

प्रत्यहं प्रपठेदेतद् गङ्गानामशताष्टकम्।
सोऽन्ते गङ्गामनुप्राप्य प्रयाति परमं पदम् ॥ २६ ॥

गङ्गायां स्नानसमये यः पठेद्दक्षिसंयुतः।
सोऽश्वमेघसहस्राणां फलमाप्नोति मानवः ॥ २७ ॥

गवामयुतदानस्य यत्कलं समुदीरितम्।
तत्कलं समवाप्नोति पञ्चम्यां प्रपठन्नरः ॥ २८ ॥

कार्त्तिक्यां पौर्णमास्यां तु स्नात्वा सगरसङ्गमे।
यः पठेत्स महेशत्वं याति सत्यं न संशयः ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे श्रीगङ्गाष्ठोत्तरशतनामस्तोत्रं

सम्पूर्णम् ॥



विभागः ३

दीर्घ एवं सहस्रनामस्तोत्राणि

॥ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्मोपशान्तये ॥ १ ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ २ ॥

सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायाक्षिष्ठकारिणे।
नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे ॥ ३ ॥

कृष्णद्वैपायनं व्यासं सर्वभूतहिते रतम्।
वेदाभास्करं वन्दे शमादिनिलयं मुनिम् ॥ ४ ॥

सहस्रमूर्तेः पुरुषोत्तमस्य
सहस्रनेत्राननपादबाहोः ।

सहस्रनामान्नां स्तवनं प्रशस्तं
निरुच्यते जन्मजरादिशान्त्यै ॥ ५ ॥

व्यासं वसिष्ठनसारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुक्तातं तपोनिधिम् ॥ ६ ॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥ ७ ॥

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥ ८ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ९ ॥

ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे

श्री-वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ १ ॥

श्री-युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाऽप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कर्मचन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ २ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ ३ ॥

श्री-भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ ४ ॥

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यन्श्च यजमानस्तमेव च ॥ ५ ॥

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ ६ ॥

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ ७ ॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरचेन्नरः सदा ॥ ८ ॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।

परमं यो महद्भूतं परमं यः परायणम्॥९॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ १० ॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ ११ ॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम्॥ १२ ॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ १३ ॥

ऋषिर्नामां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥ १४ ॥

अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः।
त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थै विनियुज्यते ॥ १५ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ १६ ॥

॥ पूर्वन्यासः ॥

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य।

श्री-वेदव्यासो भगवान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।

श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता।

अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्। देवकीनन्दनः स्त्रैषेति शक्तिः।

उद्धवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः ।
 शश्वभृत्नन्दकी चक्रीति कीलकम् ।
 शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यश्वम् ।
 रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति नेत्रम् ।
 त्रिसामा सामगः सामेति कवचम् ।
 आनन्दं परब्रह्मेति योनिः ।
 त्रैतुः सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः ।
 श्रीविश्वरूप इति ध्यानम् ।
 श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे सहस्रनामजपे विनियोगः ॥
 ॥ ध्यानम् ॥

क्षीरोदन्वत्रदेशे शुचिमणिविलसत्त्वैकतेमौक्तिकानां
 मालाङ्गुष्ठासनरथः स्फटिकमणिनिमौक्तिकैर्मणिडताङ्गः ।
 शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूषवर्षैः
 आनन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदाशश्वपाणिर्मुकुन्दः ॥ १ ॥
 भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्वन्दसूर्यौ च नेत्रे
 कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमव्यिः ।
 अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धवैदेत्यैः
 चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
 विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
 लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृदध्यानगम्यं
 वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ ३ ॥

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं
 श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्धासिताङ्गम्।
 पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं
 विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम्॥४॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते।
 अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥५॥

सशाङ्कचक्रं सकिरीटकुण्डलं
 सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
 सहारवक्षःस्थलशोभिकौस्तुभं
 नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥६॥

छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि
 आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलङ्कृतम् ।
 चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कितवक्षसं
 रुक्मणीसत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये॥७॥

॥ हरिः ॐ ॥

॥ विश्वस्मै नमः ॥

विश्वं विष्णुर्वषङ्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
 भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः॥१॥

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः।
 अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च॥२॥

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः।
 नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः॥३॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुभूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ ४ ॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ ५ ॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ ६ ॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुञ्च्याम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ ७ ॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माघवो मधुसूदनः ॥ ८ ॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ ९ ॥

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेता प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ १० ॥

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११ ॥

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्माऽसमितः समः।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ १२ ॥

रुद्रो बहुशिरा ब्रह्मर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ १३ ॥

सर्वगः सर्वविद्धानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः।
वेदो वेदविदव्यज्ञो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥ १४ ॥

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दृष्टश्चतुर्भुजः ॥ १५ ॥

आजिष्णुर्भौजिनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ १६ ॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः।
अतीन्द्रः सङ्घ्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ १७ ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ १८ ॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः।
अनिर्देशयवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ १९ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ २० ॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपा पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ २१ ॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ २२ ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्नग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ २३ ॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ २४ ॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वहिरनिलो धरणीधरः ॥ २५ ॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वद्युग्मिश्वभुग्मिभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जहुर्नारायणो नरः ॥ २६ ॥

असङ्घेयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ २७ ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ २८ ॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहदूपः शिरिविष्टः प्रकाशनः ॥ २९ ॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्वन्दांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ३० ॥

अमृतांशूद्धवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ३१ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ ३२ ॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ ३३ ॥

इष्टेऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ ३४ ॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३५ ॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ ३६ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिज्ञनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ ३७ ॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत ।
महर्द्धिर्द्वंश्चो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ ३८ ॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिज्ञयः ॥ ३९ ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ४० ॥

उद्द्ववः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ ४१ ॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ४२ ॥

रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ४३ ॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्यासो वायुरधोक्षजः ॥ ४४ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ४५ ॥

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ४६ ॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः।
नक्षत्रनेर्मिनक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ४७ ॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च कर्तुः सत्रं सतां गतिः।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ४८ ॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ४९ ॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ५० ॥

धर्मगुब्यर्मकृद्धर्मी सदसत्करमक्षरम्।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विद्याता कृतलक्षणः ॥ ५१ ॥

गभस्तिनेमि: सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभूरुः ॥ ५२ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः।
शरीरभूतभृद्धोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ ५३ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्त्वतां पर्तिः ॥ ५४ ॥

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः।
अम्मोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ ५५ ॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ ५६ ॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्खः कृतान्तकृत् ॥ ५७ ॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चकगदाधरः ॥ ५८ ॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ५९ ॥

भगवान् भगहाऽनन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ६० ॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः।
दिवःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ ६१ ॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्।
सन्ध्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥ ६२ ॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ६३ ॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेपा क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥ ६४ ॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ ६५ ॥

स्वक्षः स्वज्ञः शतानन्दो नन्दिज्योर्तिर्गणेश्वरः।
विजितात्माऽविघेयात्मा सत्कीर्तिश्छन्नसंशयः ॥ ६६ ॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ६७ ॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ ६८ ॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरि� शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ ६९ ॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥ ७० ॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्-ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्-ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ ७१ ॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ७२ ॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ ७३ ॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ७४ ॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्गूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ ७५ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहा दर्पदो दृष्टो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ७६ ॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ७७ ॥

एको नैकः सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम्।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ७८ ॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ ७९ ॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ८० ॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥ ८१ ॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ८३ ॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

उद्धवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः।
अर्को वाजसनः शृङ्खी जयन्तः सर्वविजयी ॥ ८५ ॥

सुवर्णविन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
महाहृदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ ८६ ॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः।
न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्वाणूरान्त्रिनिषूदनः ॥ ८८ ॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्धयनाशनः ॥ ८९ ॥

अणुर्बृहत् कृशः स्थूलो गुणभृत्तिर्गुणो महान्।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ ९० ॥

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ ९१ ॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ॥ ९२ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥ ९३ ॥

विहायसगतिज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ ९४ ॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अनिर्विणः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्गुतः ॥ ९५ ॥

सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥ ९६ ॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ ९७ ॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ९८ ॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्नाशनः।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ ९९ ॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ १०० ॥

अनादिर्भूम्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ १०१ ॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ १०२ ॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ १०३ ॥

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाज्ञो यज्ञवाहनः ॥ १०४ ॥

यज्ञभृद्-यज्ञकृद्-यज्ञी यज्ञभुग्-यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्-यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद् एव च ॥ १०५ ॥

आत्मयोनिः स्वयज्ञातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ १०६ ॥

शास्त्रभृत्यन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०७ ॥

सर्वप्रहरणायुधं ॐ नम इति ।

वनमाली गदी शार्ङ्गी शास्त्री चक्री च नन्दकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ॥ १०८ ॥

श्री-वासुदेवोऽभिरक्षतु ॐ नम इति ।

॥ फलश्रुति श्लोकाः ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नामां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तिम् ॥ १ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात् किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ २ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्धः सुखमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी चाऽप्नुयात्प्रजाम् ॥ ४ ॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्वत्मानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत्॥५॥

यशः प्राप्नोति विपुलं याति प्राधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम्॥६॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः॥७॥

रोगार्ता मुच्यते रोगाद्वद्धो मुच्येत बन्धनात्।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येताऽपन्न आपदः॥८॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः॥९॥

वासुदेवाश्रयो मत्यो वासुदेवपरायणः।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम्॥१०॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते॥११॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
युज्येताऽत्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः॥१२॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे॥१३॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः।
वासुदेवस्य वीर्येण विघृतानि महात्मनः॥१४॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम्।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम्॥ १५॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च॥ १६॥

सर्वांगमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः॥ १७॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम्॥ १८॥

योगो ज्ञानं तथा साङ्घं विद्याः शिल्पादि कर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात्॥ १९॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रीँल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्गे विश्वभुगव्ययः॥ २०॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्।
पठेद्य इच्छेत् पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च॥ २१॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम्।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम्॥ २२॥

न ते यान्ति पराभवम् ॐ नम इति।

अर्जुन उवाच

पद्मपत्रविशालाक्षं पद्मनाभं सुरोत्तम।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन॥ २३॥

श्रीभगवानुवाच

यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥ २४ ॥

स्तुत एव न संशय ॐ नम इति।

व्यास उवाच

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥

श्री-वासुदेव नमोऽस्तुत ॐ नम इति।

पार्वत्युवाच

केनोपायेन लघुना विष्णोर्नामसहस्रकम्।
पठ्यते पण्डितैर्नित्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो ॥ २६ ॥

श्री-ईश्वर उवाच

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ २७ ॥

श्रीरामनाम वरानन ॐ नम इति।

ब्रह्मोवाच

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥ २८ ॥

सहस्रकोटियुगधारिणे नम ॐ नम इति।

सङ्ख्य उवाच

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम्॥ २९॥

श्रीभगवानुवाच

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ ३०॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ ३१॥

आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः।
घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः।
सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रं
विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति॥ ३२॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽस्तमना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

॥ ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां
वैयासिक्याम् आनुशासनिकर्पर्वणि श्री-भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे
श्री-विष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ सङ्केपरामायणम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्मोपशान्तये॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।

यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्॥

॥ श्री-गुरु-प्रार्थना ॥

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।

अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

अखण्डमण्डलाकारं व्यासं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ श्री-सरस्वती-प्रार्थना ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना

हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।

भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना

सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥

॥ श्री-वाल्मीकि-नमस्त्रिया ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ १ ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम्॥२॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
अतृप्रस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्पषम्॥३॥

॥ श्री-हनुमन्नमस्त्रिया ॥

गोष्ठदीकृत-वाराशिं मशकीकृत-राक्षसम्।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥१॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्घाभयङ्घरम्॥२॥

उल्छ्व सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवहिं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्घां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥३॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम्।
पारिजात-तरुमूल-वासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम्॥४॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥५॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥६॥

॥ श्री-रामायण-प्रार्थना ॥

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादरात्
 वाल्मीकिर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु।
 जन्म-व्याधि-जरा-विपत्ति-मरणैरत्यन्त-सोपद्रवं
 संसारं स विहाय गच्छति पुमान् विष्णोः पदं शाश्वतम् ॥ १ ॥
 तदुपगत-समास-सन्धियोगं सममधुरोपनतार्थ-वाक्यबद्धम्।
 रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वर्धं निशामयध्वम् ॥ २ ॥
 वाल्मीकि-गिरिसम्भूता रामसागरगामिनी।
 पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी ॥ ३ ॥
 श्लोकसारजलाकीर्णं सर्गकल्पोलसङ्कुलम्।
 काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम् ॥ ४ ॥
 वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
 वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥ ५ ॥

॥ श्री-राम-ध्यानम् ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाच्यति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे इयामलम् ॥ १ ॥
 वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे इयामलम् ॥ २ ॥

रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं वायुसूनं च प्रणमामि पुनः पुनः ॥ ३ ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्धणेभ्यः ॥ ४ ॥

ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः।

॥ श्रीमद्रामायणम् ॥

॥ बालकाण्डः ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
नारदं परिप्रच्छ वाल्मीकिमुनिपुज्जवम्॥ १ ॥

को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः॥ २ ॥

चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः॥ ३ ॥

आत्मवान् को जितक्रोधो मतिमान् कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे॥ ४ ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे।
महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्॥ ५ ॥

श्रुत्वा चैतच्चिलोकज्ञो वाल्मीकिर्नारदो वचः।
श्रूयतामिति चाऽऽमन्ब्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत्॥ ६ ॥

बहवो दुर्लभाश्वैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः।
मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः॥ ७ ॥

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी॥ ८ ॥

बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाऽच्छत्रुनिर्बर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥९॥

महोरस्को महेष्वासो गृद्जत्रुररिन्द्रमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥१०॥

समः समविभक्ताङ्गः स्त्रिगंधवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ॥११॥

धर्मज्ञः सत्यसन्ध्यश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥१२॥

प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥१३॥

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ॥१४॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥१५॥

सर्वदाऽभिगतः सद्दिः समुद्र इव सिन्धुभिः।
आर्यः सर्वसमश्वैव सदैव प्रियदर्शनः ॥१६॥

स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः।
समुद्र इव गाम्मीर्ये धैर्येण हिमवानिव ॥१७॥

विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत् प्रियदर्शनः।
कालान्त्रिसदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ॥१८॥

धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः।
तमेवज्ञुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम्॥ १९॥

ज्येष्ठं श्रेष्ठगुणैर्युक्तं प्रियं दशरथः सुतम्।
प्रकृतीनां हितैर्युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया॥ २०॥

यौवराज्येन संयोक्तुम् ऐच्छत् प्रीत्या महीपतिः।
तस्याभिषेकसम्भारान् दृष्ट्वा भार्याऽथ कैकयी॥ २१॥

पूर्वं दत्तवरा देवी वरमेनमयाचत।
विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम्॥ २२॥

स सत्यवचनाद्राजा धर्मपाशेन संयतः।
विवासयामास सुतं रामं दशरथः प्रियम्॥ २३॥

स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन्।
पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः प्रियकारणात्॥ २४॥

तं ब्रजन्तं प्रियो भ्राता लक्ष्मणोऽनुजगाम ह।
स्त्रेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानन्दवर्धनः॥ २५॥

भ्रातरं दयितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुदर्शयन्।
रामस्य दयिता भार्या नित्यं प्राणसमा हिता॥ २६॥

जनकस्य कुले जाता देवमायेव निर्मिता।
सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधूः॥ २७॥

सीताऽप्यनुगता रामं शशिनं रोहिणी यथा।
पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च॥ २८॥

शृङ्खवेरपुरे सूतं गङ्गाकूले व्यसर्जयत्।
गुहमासाद्य धर्मात्मा निषादाधिपतिं प्रियम्॥ २९॥

गुहेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च सीतया।
ते वनेन वनं गत्वा नदीस्तीर्त्वा बहूदकाः॥ ३०॥

चित्रकूटमनुप्राप्य भरद्वाजस्य शासनात्।
रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः॥ ३१॥

देवगन्धर्वसङ्काशास्त्रत्र ते न्यवसन् सुखम्।
चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकातुरस्तथा॥ ३२॥

राजा दशरथः स्वर्गं जगाम विलपन् सुतम्।
मृते तु तस्मिन् भरतो वसिष्ठप्रमुखौद्विजैः॥ ३३॥

नियुज्यमानो राज्याय नैच्छद्राज्यं महाबलः।
स जगाम वनं वीरो रामपादप्रसादकः॥ ३४॥

गत्वा तु स महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम्।
अयाचञ्चातरं रामम् आर्यभावपुरस्कृतः॥ ३५॥

त्वमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽब्रवीत्।
रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहायशाः॥ ३६॥

न चेच्छत् पितुरादेशाद्राज्यं रामो महाबलः।
पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्त्वा पुनः पुनः॥ ३७॥

निवर्त्यामास ततो भरतं भरताग्रजः।
स काममनवाप्यैव रामपादावुपस्पृशन्॥ ३८॥

नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकाङ्क्ष्या।
 गते तु भरते श्रीमान् सत्यसन्धो जितेन्द्रियः ॥ ३९ ॥
 रामस्तु पुनरालक्ष्य नागरस्य जनस्य च।
 तत्राऽग्नमनमेकायो दण्डकान् प्रविवेश ह ॥ ४० ॥
 प्रविश्य तु महारण्यं रामो राजीवलोचनः।
 विराधं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं दर्दशं ह ॥ ४१ ॥
 सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं च अगस्त्यभ्रातरं तथा।
 अगस्त्यवचनाचैव जग्राहैन्द्रं शरासनम् ॥ ४२ ॥
 खड्गं च परमप्रीतस्तूपी चाक्षयसायकौ।
 वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह ॥ ४३ ॥
 ऋषयोऽभ्यागमन् सर्वे वधायासुररक्षसाम्।
 स तेषां प्रति शुश्राव राक्षसानां तदा वने ॥ ४४ ॥
 प्रतिज्ञातश्च रामेण वधः संयति रक्षसाम्।
 ऋषीणामग्निकल्पानां दण्डकारण्यवासिनाम् ॥ ४५ ॥
 तेन तत्रैव वसता जनस्थाननिवासिनी।
 विरूपिता शूर्पणखा राक्षसी कामरूपिणी ॥ ४६ ॥
 ततः शूर्पणखावाक्यादुद्युक्तान् सर्वराक्षसान्।
 खरं त्रिशिरसं चैव दूषणं चैव राक्षसम् ॥ ४७ ॥
 निजघान रणे रामस्तेषां चैव पदानुगान्।
 वने तस्मिन् निवसता जनस्थाननिवासिनाम् ॥ ४८ ॥
 रक्षसां निहतान्यासन् सहस्राणि चतुर्दशा।
 ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ४९ ॥

सहायं वरयामास मारीचं नाम राक्षसम्।
वार्यमाणः सुबहुशो मारीचेन स रावणः ॥ ५० ॥

न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते।
अनादृत्य तु तद्वाक्यं रावणः कालचोदितः ॥ ५१ ॥

जगाम सहमारीचस्तस्याऽश्रमपदं तदा।
तेन मायाविना दूरमपवाह्य नृपात्मजौ ॥ ५२ ॥

जहार भार्या रामस्य गृग्रं हत्वा जटायुषम्।
गृग्रं च निहतं दृष्ट्वा हृतां श्रुत्वा च मैथिलीम् ॥ ५३ ॥

राघवः शोकसन्त्सो विललापाऽकुलेन्द्रियः।
ततस्तेनैव शोकेन गृग्रं दग्ध्वा जटायुषम् ॥ ५४ ॥

मार्गमाणो वने सीतां राक्षसं सन्दर्दर्श ह।
कबन्धं नाम रूपेण विकृतं घोरदर्शनम् ॥ ५५ ॥

तं निहत्य महाबाहुर्ददाह स्वर्गतश्च सः।
स चास्य कथयामास शबरीं धर्मचारिणीम् ॥ ५६ ॥

श्रमणीं धर्मनिपुणाम् अभिगच्छेति राघव।
सोऽभ्यगच्छन् महातेजाः शबरीं शत्रुसूदनः ॥ ५७ ॥

शबर्या पूजितः सम्यग्रामो दशरथात्मजः।
पम्पातीरे हनुमता सङ्क्षिप्तो वानरेण ह ॥ ५८ ॥

हनुमद्वचनाच्चैव सुग्रीवेण समागतः।
सुग्रीवाय च तत्सर्वं शंसद्रामो महाबलः ॥ ५९ ॥

आदितस्तद्यथा वृत्तं सीतायाश्च विशेषतः ।
सुग्रीवश्चापि तत्सर्वं श्रुत्वा रामस्य वानरः ॥ ६० ॥

चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम् ।
ततो वानरराजेन वैरानुकथनं प्रति ॥ ६१ ॥

रामायाऽवेदितं सर्वं प्रणयाद्दुःखितेन च ।
प्रतिज्ञातं च रामेण तदा वालिवधं प्रति ॥ ६२ ॥

वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः ।
सुग्रीवः शङ्खितश्चासीन्नित्यं वीर्येण राघवे ॥ ६३ ॥

राघवः प्रत्ययार्थं तु दुन्दुभेः कायमुत्तमम् ।
दर्शयामास सुग्रीवो महापर्वतसन्निभम् ॥ ६४ ॥

उत्स्मयित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः ।
पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप सम्पूर्णं दशायोजनम् ॥ ६५ ॥

बिभेद च पुनः सालान् सप्तकेन महेषुणा ।
गिरि रसातलं चैव जनयन् प्रत्ययं तदा ॥ ६६ ॥

ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ।
किञ्चिन्न्यां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७ ॥

ततोऽगर्जद्विवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८ ॥

अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६९ ॥

ततः सुग्रीववचनाद्वत्वा वालिनमाहवे।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ७० ॥

स च सर्वान् समानीय वानरान् वानरर्षभः।
दिशः प्रस्थापयामास दिव्यकृजनकात्मजाम् ॥ ७१ ॥

ततो गृहस्य वचनात्सम्पार्तेर्हनुमान् बली।
शतयोजनविस्तीर्णं पुष्पुवे लवणार्णवम् ॥ ७२ ॥

तत्र लङ्घां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम्।
ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकां गताम् ॥ ७३ ॥

निवेदयित्वाऽभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च।
समाश्वास्य च वैदेहीं मर्दयामास तोरणम् ॥ ७४ ॥

पञ्च सेनाग्रगान् हत्वा सप्त मन्त्रिसुतानपि।
शूरमक्षं च निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत् ॥ ७५ ॥

अखेणोन्मुक्तमात्मानं ज्ञात्वा पैतामहाद्वरात्।
मर्षयन् राक्षसान् वीरो यन्त्रिणस्तान् यदृच्छ्या ॥ ७६ ॥

ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्घाम् ऋते सीतां च मैथिलीम्।
रामाय प्रियमारव्यातुं पुनरायान् महाकपिः ॥ ७७ ॥

सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम्।
न्यवेदयदमेयात्मा दृष्टा सीतेति तत्त्वतः ॥ ७८ ॥

ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः।
समुद्रं क्षोभयामास शैररादित्यसन्निभैः ॥ ७९ ॥

दर्शयामास चाऽऽत्मानं समुद्रः सरितां पतिः ।
समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत् ॥ ८० ॥

तेन गत्वा पुरीं लङ्घां हत्वा रावणमाहवे ।
रामः सीतामनुप्राप्य परां ब्रीडामुपागमत् ॥ ८१ ॥

तामुवाच ततो रामः परुषं जनसंसदि ।
अमृष्यमाणा सा सीता विवेश ज्वलनं सती ॥ ८२ ॥

ततोऽग्निवचनात् सीतां ज्ञात्वा विगतकल्पषाम् ।
कर्मणा तेन महता त्रैलोक्यं सच्चराचरम् ॥ ८३ ॥

सदेवर्षिगणं तुष्टं राघवस्य महात्मनः ।
बभौ रामः सम्प्रहृष्टः पूजितः सर्वदैवतैः ॥ ८४ ॥

अभिषिञ्च्य च लङ्घायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् ।
कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः प्रमुमोद ह ॥ ८५ ॥

देवताभ्यो वरान् प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान् ।
अयोध्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेण सुहृद्-वृतः ॥ ८६ ॥

भरद्वाजाश्रमं गत्वा रामः सत्यपराक्रमः ।
भरतस्यान्तिके रामो हनूमन्तं व्यसर्जयत् ॥ ८७ ॥

पुनरारव्यायिकां जल्पन् सुग्रीवसहितस्तदा ।
पुष्पकं तत् समारुद्ध्य नन्दिग्रामं ययौ तदा ॥ ८८ ॥

नन्दिग्रामे जटां हित्वा भ्रातृभिः सहितोऽनघः ।
रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं पुनरवासवान् ॥ ८९ ॥

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः।
निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः॥१०॥

न पुत्रमरणं केचिद्-द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।
नार्यश्वाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः॥११॥

न चाग्निं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः।
न वातजं भयं किञ्चिन्नापि ज्वरकृतं तथा॥१२॥

न चापि क्षुद्धयं तत्र न तस्करभयं तथा।
नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च॥१३॥

नित्यं प्रमुदिताः सर्वे यथा कृतयुगे तथा।
अश्वमेधशतौरिष्वा तथा बहुसुवर्णकैः॥१४॥

गवां कोट्ययुतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विघिपूर्वकम्।
असङ्क्षेयं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः॥१५॥

राजवंशाज्ञतगुणान् स्थापयिष्यति राघवः।
चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन् स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति॥१६॥

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।
रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं गमिष्यति॥१७॥

इदं पवित्रं पापद्वं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
यः पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१८॥

एतदाख्यानमायुष्यं पठन् रामायणं नरः।
सपुत्रपौत्रः सगणः प्रेत्य स्वर्गं महीयते॥१९॥

पठन् द्विजो वागृषभत्वमीयात्
 स्यात् क्षत्रियो भूमिपतित्वमीयात्।
 वणिगजनः पण्यफलत्वमीयात्
 जनश्च शूद्रोऽपि महत्त्वमीयात्॥ १०० ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये बालकाण्डे प्रथमः
 सर्गः ॥

॥ मङ्गलश्लोकाः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
 न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
 गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
 लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
 देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ २ ॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
 अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ ३ ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
 एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ ४ ॥

शृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा।
 स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा ॥ ५ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेघसे।
 रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्तुते।
वृत्रनाशे समभवत् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥७॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत् पुरा।
अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम्॥८॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् भ्रतो वज्रधरस्य यत्।
अदितिर्मङ्गलं प्रादात् तत्ते भवतु मङ्गलम्॥९॥

त्रीन् विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः।
यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ १०॥

ऋषयः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते।
मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा ॥ ११ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाव्ये।
चक्रवर्तितनूजाय सर्वभौमाय मङ्गलम्॥ १२॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि ॥



॥ सन्तानगोपाल-स्तोत्रम् ॥

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम्।
सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥ १ ॥

नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदाङ्गतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम् ॥ २ ॥

अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा ॥ ३ ॥

गोपालं डिभ्मकं वन्दे कमलापतिमच्युतम्।
पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम् ॥ ४ ॥

पुत्रकामेष्टिफलदं कञ्जाक्षं कमलापतिम्।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम ॥ ५ ॥

पद्मापते पद्मनेत्रं पद्मनाभं जनार्दनं।
देहि मे तनयं श्रीशं वासुदेवं जगत्पते ॥ ६ ॥

यशोदाङ्गतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम्।
अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम् ॥ ७ ॥

श्रीपते देवदेवेशं दीनार्तिहरणाच्युतं।
गोविन्दं मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दनं ॥ ८ ॥

भक्तकामदं गोविन्दं भक्तं रक्षं शुभप्रदं।
देहि मे तनयं कृष्णं रुकिमणीवल्लभं प्रभो ॥ ९ ॥

रुकिमणीनाथं सर्वेशं देहि मे तनयं सदा।
भक्तमन्दारं पद्माक्षं त्वामहं शरणं गतः ॥ १० ॥

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ११ ॥

वासुदेव जगद्गुन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १२ ॥

कञ्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १३ ॥

लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १४ ॥

कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा।
नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते ॥ १५ ॥

राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे ॥ १६ ॥

अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते ॥ १७ ॥

श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥ १८ ॥

अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ॥ १९ ॥

वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो ॥ २० ॥

डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव।
 भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन॥२१॥
 नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते।
 कमलानाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित॥२२॥
 अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
 सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे॥२३॥
 यशोदा-स्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम्।
 वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरि सदा॥२४॥
 नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो।
 रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते॥२५॥
 पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माघव।
 अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते॥२६॥
 गोपालडिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते।
 अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते॥२७॥
 मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत।
 मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन॥२८॥
 याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्रसम्पदम्।
 भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो॥२९॥
 आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम्।
 अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन॥३०॥
 वन्दे सन्तानगोपालं माघवं भक्तकामदम्।
 अस्माकं पुत्रसम्प्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम्॥३१॥

ओङ्कारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम्।
क्षीयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम्॥३२॥

वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो॥३३॥

राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा॥३४॥

अजापद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव॥३५॥

नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मणीवल्लभ प्रभो॥३६॥

दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम्॥३७॥

यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक॥३८॥

अस्माकं वाञ्छितं देहि देहि पुत्रं रमापते।
भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते॥३९॥

रमाहृदयसम्भार सत्यभामामनःप्रिय।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मणीवल्लभ प्रभो॥४०॥

चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते॥४१॥

कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित।
 देहि मे तनयं कृष्ण देवकी-नन्दनन्दन ॥ ४२ ॥
 देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते।
 समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा ॥ ४३ ॥
 भक्तमन्दार गम्भीर शङ्खराच्युत माधव।
 देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते ॥ ४४ ॥
 श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन।
 भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो ॥ ४५ ॥
 जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे।
 वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो ॥ ४६ ॥
 श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते।
 देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ४७ ॥
 दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो।
 देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ४८ ॥
 गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो।
 देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ४९ ॥
 श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन।
 मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनादन ॥ ५० ॥
 स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं
 विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम्।
 स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभिः
 वन्दे यशोदाङ्गगतं मुकुन्दम् ॥ ५१ ॥

याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन।
 देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ५२ ॥
 अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते।
 शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित ॥ ५३ ॥
 वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम।
 कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित ॥ ५४ ॥
 कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदा-प्रियनन्दन।
 मह्यं च पुत्र-सन्तानं दातव्यं भवता हरे ॥ ५५ ॥
 वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत।
 देहि मे तनयं राम कौसल्याप्रियनन्दन ॥ ५६ ॥
 पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव।
 देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव ॥ ५७ ॥
 कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमणिडत मुनिवन्दित।
 लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा ॥ ५८ ॥
 देहि मे तनयं राम दशरथ-प्रियनन्दन।
 सीतानायक कञ्जाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद ॥ ५९ ॥
 विभीषणस्य या लङ्घा प्रदत्ता भवता पुरा।
 अस्माकं तत्पकारेण तनयं देहि माधव ॥ ६० ॥
 भवदीयपदाम्भोजे चिन्तयामि निरन्तरम्।
 देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव ॥ ६१ ॥
 राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद।
 देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित ॥ ६२ ॥

राम राघव सीतेश लक्ष्मणाग्रज देहि मे।
भाग्यवत् पुत्रसन्तानं दशरथात्मज श्रीपते ॥ ६३ ॥

देवकीर्भसञ्जात यशोदाप्रियनन्दन।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव ॥ ६४ ॥

कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शङ्कर।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ६५ ॥

गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥ ६६ ॥

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम्।
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो
दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः ॥ ६७ ॥

दीयतां वासुदेवेन तनयो सत्प्रियः सुतः।
कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम ॥ ६८ ॥

राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ६९ ॥

वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ७० ॥

ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ७१ ॥

चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ७२ ॥

विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो॥ ७३॥

नमामि त्वां पद्मनेत्रं सुतलाभाय कामदम्।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम्॥ ७४॥

भगवन् कृष्ण गोविन्दं सर्वकामफलप्रद।
देहि मे तनयं स्वामिस्त्वामहं शरणं गतः॥ ७५॥

स्वामिस्त्वं भगवन् राम कृष्ण माधव कामद।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः॥ ७६॥

तनयं देहि गोविन्दं कञ्जाक्षं कमलापते।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७७॥

पद्मापते पद्मनेत्रं प्रद्युम्नजनकं प्रभो।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः॥ ७८॥

शश्वच्क्रगदाखङ्कशार्ङ्गपाणे रमापते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥ ७९॥

नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित॥ ८०॥

राम राघव गोविन्दं देवकीवरनन्दन।
रुक्मिणीनाथं सर्वेशं नारदादिसुरार्चित॥ ८१॥

देवकीसुतं गोविन्दं वासुदेवं जगत्पते।
देहि मे तनयं श्रीशं गोपबालकनायक॥ ८२॥

मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ८३ ॥

गोपिकार्जितपञ्चेजमरन्दासक्तमानस ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ८४ ॥

रमाहृदयपञ्चेजलोल माधव कामद।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ८५ ॥

वासुदेव रमानाथ दासानां मङ्गलप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ८६ ॥

कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ८७ ॥

पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ८८ ॥

पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ८९ ॥

दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ९० ॥

पुत्रसम्पत्तदातारं गोविन्दं देवपूजितम्।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्रलाभप्रदायिनम् ॥ ९१ ॥

कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये।
नमस्ते पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो ॥ ९२ ॥

नमस्तस्मै रमेशाय रुक्मिणीवल्लभाय ते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ९३ ॥

नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रङ्गशायिने ॥ ९४ ॥

रङ्गशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ९५ ॥

दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते ॥ ९६ ॥

यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ९७ ॥

मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ९८ ॥

नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजायते।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित ॥ ९९ ॥

यः पठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत्।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च ॥ १०० ॥

जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम्।
ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः ॥ १०१ ॥

॥ इति श्री-सन्तानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ गकारादि श्री-गणपति सहस्रनाम-स्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीगणपतिगकारादिसहस्रनाममालामन्त्रस्य।
दुर्वासा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्री-गणपतिर्देवता।
गं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। ग्लौं कीलकम्।
सकलभीष्टसिद्धर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ करन्यासः ॥

ओं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
हीं मध्यमाभ्यां नमः। क्रीं अनामिकाभ्यां नमः।
ग्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। गं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
एवं हृदयादिन्यासः।
अथवा षड्गीर्धभाजागमितिवीजेन कराङ्गन्यासः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ओङ्कार-सन्निभमिभाननमिन्दुभालम्
मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तं ।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवम्
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ओं गणेश्वरो गणाध्यक्षो गणाराध्यो गणप्रियः।
गणनाथो गणस्वामी गणेशो गणनायकः ॥ १ ॥

गणमूर्तिर्गणपतिर्गणत्राता	गणञ्जयः।
गणपोऽथ गणक्रीडो गणदेवो गणाधिपः ॥ २ ॥	

गणज्येष्ठो गणश्रेष्ठो गणप्रेष्ठो गणाधिराट् ।
गणराड् गणगोप्ताथ गणाङ्गो गणदैवतम् ॥ ३ ॥

गणबन्धुर्गणसुहृद्वणाधीशो गणप्रथः ।
गणप्रियसखः शश्वद्वणप्रियसुहृत् तथा ॥ ४ ॥

गणप्रियरतो नित्यं गणप्रीतिविवर्धनः ।
गणमण्डलमध्यस्थो गणकेलिपरायणः ॥ ५ ॥

गणाग्रणीर्गणेशानो गणगीतो गणोच्छयः ।
गण्यो गणहितो गर्जद्वणसेनो गणोच्छतः ॥ ६ ॥

गणभीतिप्रमथनो गणभीत्यपहारकः ।
गणनाहौं गणप्रौढो गणभर्ता गणप्रभुः ॥ ७ ॥

गणसेनो गणचरो गणप्रज्ञो गणैकराट् ।
गणाग्र्यो गणनामा च गणपालनतत्परः ॥ ८ ॥

गणजिद्वणगर्भस्थो गणप्रवणमानसः ।
गणगर्वपरीहर्ता गणो गणनमस्कृतः ॥ ९ ॥

गणार्चिताङ्गियुगलो गणरक्षणकृत् सदा ।
गणध्यातो गणगुरुर्गणप्रणयतत्परः ॥ १० ॥

गणागणपरित्राता गणाधिहरणोद्धुरः ।
गणसेतुर्गणनुतो गणकेतुर्गणाग्रगः ॥ ११ ॥

गणहेतुर्गणग्राही गणानुग्रहकारकः ।
गणागणानुग्रहभूर्गणागणवरप्रदः ॥ १२ ॥

गणस्तुतो गणप्राणो गणसर्वस्वदायकः।
गणवल्लभमूर्तिश्च गणभूतिर्गणेष्टदः ॥ १३ ॥

गणसौख्यप्रदाता च गणदुःखप्रणाशनः।
गणप्रथितनामा च गणाभीष्टकरः सदा ॥ १४ ॥

गणमान्यो गणख्यातो गणवीतो गणोत्कटः।
गणपालो गणवरो गणगौरवदायकः ॥ १५ ॥

गणगर्जितसन्तुष्टो गणस्वच्छन्दगः सदा।
गणराजो गणश्रीदो गणाभयकरः क्षणात् ॥ १६ ॥

गणमूर्धाभिषिक्तश्च गणसैन्यपुरस्सरः।
गुणातीतो गुणमयो गुणत्रयविभागकृत् ॥ १७ ॥

गुणी गुणाकृतिधरो गुणशाली गुणप्रियः।
गुणपूर्णो गुणाभ्योधिर्गुणभाग् गुणदूरगः ॥ १८ ॥

गुणागुणवपुर्गोणशारीरो गुणमणिडतः।
गुणस्त्रष्टा गुणेशानो गुणेशोऽथ गुणेश्वरः ॥ १९ ॥

गुणसृष्टजगत्सङ्घो गुणसङ्घो गुणैकराट्।
गुणप्रवृष्टो गुणभूर्गुणीकृतचराचरः ॥ २० ॥

गुणप्रवणसन्तुष्टो गुणहीनपराङ्मुखः।
गुणैकभूर्गुणश्रेष्ठो गुणज्येष्ठो गुणप्रभुः ॥ २१ ॥

गुणज्ञो गुणसम्भूज्यो गुणैकसदनं सदा।
गुणप्रणयवान् गौणप्रकृतिर्गुणभाजनम् ॥ २२ ॥

गुणिप्रणतपादाज्ञो गुणिगीतो गुणोज्ज्वलः ।
गुणवान् गुणसम्पन्नो गुणानन्दितमानसः ॥ २३ ॥

गुणसञ्चारचतुरो गुणसञ्चयसुन्दरः ।
गुणगौरो गुणाधारो गुणसंवृतचेतनः ॥ २४ ॥

गुणकृदुणभृन्नित्यं गुणाश्र्यो गुणपारद्वक् ।
गुणप्रचारी गुणयुग् गुणागुणविवेककृत् ॥ २५ ॥

गुणाकरो गुणकरो गुणप्रवणवर्धनः ।
गुणगूढचरो गौणसर्वसंसारचेष्टिः ॥ २६ ॥

गुणदक्षिणसौहार्दो गुणलक्षणतत्त्ववित् ।
गुणहारी गुणकलो गुणसञ्चसखः सदा ॥ २७ ॥

गुणसंस्कृतसंसारो गुणतत्त्वविवेचकः ।
गुणगर्वधरो गौणसुखदुःखोदयो गुणः ॥ २८ ॥

गुणाधीशो गुणलयो गुणवीक्षणलालसः ।
गुणगौरवदाता च गुणदाता गुणप्रदः ॥ २९ ॥

गुणकृदुणसम्बन्धो गुणभृदुणबन्धनः ।
गुणहृद्यो गुणस्थायी गुणदायी गुणोत्कटः ॥ ३० ॥

गुणचक्रधरो गौणावतारो गुणबान्धवः ।
गुणबन्धुर्गुणप्रज्ञो गुणप्राज्ञो गुणालयः ॥ ३१ ॥

गुणधाता गुणप्राणो गुणगोपो गुणाश्रयः ।
गुणयायी गुणाधायी गुणपो गुणपालकः ॥ ३२ ॥

गुणाहृततनुर्गौणो गीर्वाणो गुणगौरवः।
गुणवत्पूजितपदो गुणवत्तीतिदायकः ॥ ३३ ॥

गुणवद्वीतकीर्तिश्च गुणवद्वद्वसौहृदः।
गुणवद्वरदो नित्यं गुणवत्प्रतिपालकः ॥ ३४ ॥

गुणवद्वुणसन्तुष्टो गुणवद्रचितस्त्वः।
गुणवद्रक्षणपरो गुणवत्प्रणयप्रियः ॥ ३५ ॥

गुणवच्चकसञ्चारो गुणवत्कीर्तिवर्धनः।
गुणवद्वुणचित्तस्थो गुणवद्वुणरक्षकः ॥ ३६ ॥

गुणवत्पोषणकरो गुणवच्छत्रुसूदनः।
गुणवत्सद्विदाता च गुणवद्वौरवप्रदः ॥ ३७ ॥

गुणवत्प्रवणस्वान्तो गुणवद्वुणभूषणः।
गुणवत्कुलविद्वेषिविनाशकरणक्षमः ॥ ३८ ॥

गुणिस्तुतगुणो गर्जप्रलयाम्बुदनिःस्वनः।
गजो गजपतिर्गर्जद्रजयुद्धविशारदः ॥ ३९ ॥

गजास्यो गजकणोऽथ गजराजो गजाननः।
गजरूपधरो गर्जद्रजयूथोद्धुरध्वनिः ॥ ४० ॥

गजाधीशो गजाधारो गजासुरजयोद्धुरः।
गजदन्तो गजवरो गजकुम्भो गजध्वनिः ॥ ४१ ॥

गजमायो गजमयो गजश्रीर्गजगर्जितः।
गजामयहरो नित्यं गजपुष्टिप्रदायकः ॥ ४२ ॥

गजोत्पत्तिर्गजत्राता गजहेतुर्गजाधिपः ।
गजमुख्यो गजकुलप्रवरो गजदैत्यहा ॥ ४३ ॥

गजकेतुर्गजाध्यक्षो गजसेतुर्गजाकृतिः ।
गजवन्द्यो गजप्राणो गजसेव्यो गजप्रभुः ॥ ४४ ॥

गजमत्तो गजेशानो गजेशो गजपुञ्जवः ।
गजदन्तधरो गुञ्जन्मधुपो गजवेषभृत् ॥ ४५ ॥

गजच्छन्नो गजाग्रस्थो गजयायी गजाजयः ।
गजराङ्गजयूथस्थो गजगञ्जकभञ्जकः ॥ ४६ ॥

गर्जितोऽग्नितदैत्यासुर्गर्जितत्रातविष्टपः ।
गानज्ञो गानकुशलो गानतत्त्वविवेचकः ॥ ४७ ॥

गानश्लाघी गानरसो गानज्ञानपरायणः ।
गानागमज्ञो गानाङ्गो गानप्रवणचेतनः ॥ ४८ ॥

गानकृद्गानचतुरो गानविद्याविशारदः ।
गानध्येयो गानगम्यो गानध्यानपरायणः ॥ ४९ ॥

गानभूर्गानशीलश्च गानशाली गतश्रमः ।
गानविज्ञानसम्पन्नो गानश्रवणलालसः ॥ ५० ॥

गानयत्तो गानमयो गानप्रणयवान् सदा ।
गानध्याता गानबुद्धिर्गानोत्सुकमनाः पुनः ॥ ५१ ॥

गानोत्सुको गानभूमिर्गानसीमा गुणोज्ज्वलः ।
गानज्ञज्ञानवान् गानमानवान् गानपेशलः ॥ ५२ ॥

गानवत्प्रणयो गानसमुद्रो गानभूषणः।
गानसिन्धुर्गानपरो गानप्राणो गणाश्रयः ॥ ५३ ॥

गानैकभूर्गानहृष्टो गानचक्षुर्गाणैकदृक्।
गानमत्तो गानरुचिर्गानविद्वानवित्रियः ॥ ५४ ॥

गानान्तरात्मा गानाद्यो गानध्राजत्सभः सदा।
गानमयो गानधरो गानविद्याविशोधकः ॥ ५५ ॥

गानाहितघो गानेन्द्रो गानलीनो गतिप्रियः।
गानाधीशो गानलयो गानाधारो गतीश्वरः ॥ ५६ ॥

गानवन्मानदो गानभूतिर्गानैकभूतिमान्।
गानतानततो गानतानदानविमोहितः ॥ ५७ ॥

गुरुर्गुरुदरश्रोणिर्गुरुतत्त्वार्थदर्शनः ।
गुरुस्तुतो गुरुगुणो गुरुमायो गुरुप्रियः ॥ ५८ ॥

गुरुकीर्तिर्गुरुभुजो गुरुवक्षा गुरुप्रभः।
गुरुलक्षणसमन्नो गुरुद्रोहपराञ्चुखः ॥ ५९ ॥

गुरुविद्यो गुरुप्राणो गुरुबाहुबलोच्छयः।
गुरुदैत्यप्राणहरो गुरुदैत्यापहारकः ॥ ६० ॥

गुरुगर्वहरो गुह्यप्रवरो गुरुदर्पहा।
गुरुगौरवदायी च गुरुभीत्यपहारकः ॥ ६१ ॥

गुरुशुण्डो गुरुस्कन्धो गुरुजङ्घो गुरुप्रथः।
गुरुभालो गुरुगलो गुरुश्रीर्गुरुगर्वनुत् ॥ ६२ ॥

गुरुर्गुरुर्गुरुपीनांसो गुरुप्रणयलालसः ।
 गुरुमुख्यो गुरुकुलस्थायी गुरुगुणः सदा ॥ ६३ ॥

गुरुसंशयभेत्ता च गुरुमानप्रदायकः ।
 गुरुधर्मसदाराध्यो गुरुधर्मनिकेतनः ॥ ६४ ॥

गुरुदैत्यकुलच्छेत्ता गुरुसैन्यो गुरुद्युतिः ॥ ६५ ॥

गुरुधर्माग्रगण्योऽथ गुरुधर्मधुरन्धरः ।
 गरिष्ठो गुरुसन्तापशमनो गुरुपूजितः ॥ ६६ ॥

गुरुधर्मधरो गौरधर्माधारो गदापहः ।
 गुरुशास्त्रविचारज्ञो गुरुशास्त्रकृतोद्यमः ॥ ६७ ॥

गुरुशास्त्रार्थनिलयो गुरुशास्त्रालयः सदा ।
 गुरुमन्त्रो गुरुशेषो गुरुमन्त्रफलप्रदः ॥ ६८ ॥

गुरुस्त्रीगमनोदामप्रायश्चित्तनिवारकः ।
 गुरुसंसारसुखदो गुरुसंसारदुःखभित् ॥ ६९ ॥

गुरुश्लाघापरो गौरभानुखण्डावतंसभृत् ।
 गुरुप्रसन्नमूर्तिश्च गुरुशापविमोचकः ॥ ७० ॥

गुरुकान्तिर्गुरुमयो गुरुशासनपालकः ।
 गुरुतन्त्रो गुरुप्रज्ञो गुरुभो गुरुदैवतम् ॥ ७१ ॥

गुरुविक्रमसञ्चारो गुरुदृग्गुरुविक्रमः ।
 गुरुक्रमो गुरुप्रेष्ठो गुरुपाखण्डखण्डकः ॥ ७२ ॥

गुरुगर्जितसम्पूर्णब्रह्माण्डो गुरुगर्जितः ।
 गुरुपुत्रप्रियसखो गुरुपुत्रभयापहः ॥ ७३ ॥

गुरुपुत्रपरित्राता गुरुपुत्रवरप्रदः।
गुरुपुत्रार्तिशमनो गुरुपुत्राधिनाशनः ॥ ७४ ॥

गुरुपुत्रप्राणदाता गुरुभक्तिपरायणः।
गुरुविज्ञानविभवो गौरभानुवरप्रदः ॥ ७५ ॥

गौरभानुस्तुतो गौरभानुत्रासापहारकः।
गौरभानुप्रियो गौरभानुगौरववर्धनः ॥ ७६ ॥

गौरभानुपरित्राता गौरभानुसखः सदा।
गौरभानुर्प्रभुर्गौरभानुभीतिप्रणाशनः ॥ ७७ ॥

गौरीतेजःसमुत्पन्नो गौरीहृदयनन्दनः।
गौरीस्तनन्धयो गौरीमनोवाञ्छितसिद्धिकृत् ॥ ७८ ॥

गौरो गौरगुणो गौरप्रकाशो गौरभैरवः।
गौरीशनन्दनो गौरीप्रियपुत्रो गदाधरः ॥ ७९ ॥

गौरीवरप्रदो गौरीप्रणयो गौरसच्छविः।
गौरीगणेश्वरो गौरीप्रवणो गौरभावनः ॥ ८० ॥

गौरात्मा गौरकीर्तिश्च गौरभावो गरिष्ठट्क।
गौतमो गौतमीनाथो गौतमीप्राणवल्लभः ॥ ८१ ॥

गौतमाभीष्टवरदो गौतमाभयदायकः।
गौतमप्रणयप्रद्वो गौतमाश्रमदुःखहा ॥ ८२ ॥

गौतमीतीरसञ्चारी गौतमीतीर्थनायकः।
गौतमापत्परिहारो गौतमाधिविनाशनः ॥ ८३ ॥

गोपतिर्गोर्धनो गोपो गोपालप्रियदर्शनः।
 गोपालो गोगणाधीशो गोकश्मलनिवर्तकः ॥८४॥
 गोसहस्रो गोपवरो गोपगोपीसुखावहः।
 गोवर्धनो गोपगोपो गोपो गोकुलवर्धनः ॥८५॥
 गोचरो गोचराध्यक्षो गोचरप्रीतिवृद्धिकृत्।
 गोमी गोकष्टसन्त्राता गोसन्तापनिवर्तकः ॥८६॥
 गोष्ठो गोष्ठाश्रयो गोष्ठपतिर्गोर्धनवर्धनः।
 गोष्ठप्रियो गोष्ठमयो गोष्ठामयनिवर्तकः ॥८७॥
 गोलोको गोलको गोभृदोभर्ता गोसुखावहः।
 गोधुग्गोधुग्गणप्रेष्ठो गोदोग्धा गोमयप्रियः ॥८८॥
 गोत्रं गोत्रपतिर्गोत्रप्रभुर्गोत्रभयापहः।
 गोत्रवृद्धिकरो गोत्रप्रियो गोत्रार्तिनाशनः ॥८९॥
 गोत्रोद्धारपरो गोत्रप्रवरो गोत्रदैवतम्।
 गोत्रविरक्ष्यातनामा च गोत्री गोत्रप्रपालकः ॥९०॥
 गोत्रसेतुर्गोत्रकेतुर्गोत्रहेतुर्गतक्षमः ।
 गोत्रत्राणकरो गोत्रपतिर्गोत्रेशपूजितः ॥९१॥
 गोत्रभिद्वोत्रभित्त्वाता गोत्रभिद्वरदायकः।
 गोत्रभित्पूजितपदो गोत्रभिच्छत्रुसूदनः ॥९२॥
 गोत्रभित्प्रीतिदो नित्यं गोत्रभिद्वोत्रपालकः।
 गोत्रभिद्वीतचरितो गोत्रभिद्वाज्यरक्षकः ॥९३॥
 गोत्रभिज्जयदायी च गोत्रभित्प्रणयः सदा।
 गोत्रभिद्वयसम्भेत्ता गोत्रभिन्मानदायकः ॥९४॥

गोत्रभिद्वोपनपरो गोत्रभित्सैन्यनायकः।
गोत्राधिप्रियो गोत्रपुत्रीपुत्रो गिरिप्रियः ॥ ९५ ॥

ग्रन्थज्ञो ग्रन्थकृद्ग्रन्थग्रन्थभिद्ग्रन्थविज्ञहा।
ग्रन्थादिग्रन्थसञ्चारो ग्रन्थश्रवणलोलुपः ॥ ९६ ॥

ग्रन्थादीनक्रियो ग्रन्थप्रियो ग्रन्थार्थतत्त्ववित्।
ग्रन्थसंशायसञ्छेदी ग्रन्थवक्ता ग्रहाग्रणीः ॥ ९७ ॥

ग्रन्थगीतगुणो ग्रन्थगीतो ग्रन्थादिपूजितः।
ग्रन्थारम्भस्तुतो ग्रन्थग्राही ग्रन्थार्थपारदृक् ॥ ९८ ॥

ग्रन्थदृग्ग्रन्थविज्ञानो ग्रन्थसन्दर्भषोधकः।
ग्रन्थकृत्पूजितो ग्रन्थकरो ग्रन्थपरायणः ॥ ९९ ॥

ग्रन्थपारायणपरो ग्रन्थसन्देहभञ्जकः।
ग्रन्थकृद्वरदाता च ग्रन्थकृद्वन्दितः सदा ॥ १०० ॥

ग्रन्थानुरक्तो ग्रन्थज्ञो ग्रन्थानुग्रहदायकः।
ग्रन्थान्तरात्मा ग्रन्थार्थपण्डितो ग्रन्थसौहृदः ॥ १०१ ॥

ग्रन्थपारदृमो ग्रन्थगुणविद्ग्रन्थविग्रहः।
ग्रन्थसेतुर्ग्रन्थहेतुर्ग्रन्थकेतुर्ग्रहाग्रगः ॥ १०२ ॥

ग्रन्थपूज्यो ग्रन्थगेयो ग्रन्थग्रथनलालसः।
ग्रन्थभूमिर्ग्रहश्रेष्ठो ग्रहकेतुर्ग्रहाश्रयः ॥ १०३ ॥

ग्रन्थकारो ग्रन्थकारमान्यो ग्रन्थप्रसारकः।
ग्रन्थश्रमज्ञो ग्रन्थाज्ञो ग्रन्थब्रमनिवारकः ॥ १०४ ॥

ग्रन्थप्रवणसर्वज्ञो ग्रन्थप्रणयतत्परः।
गीतं गीतगुणो गीतकीर्तिर्गीतविशारदः ॥ १०५ ॥

गीतस्फीतयशा गीतप्रणयो गीतचञ्चुरः।
गीतप्रसन्नो गीतात्मा गीतलोलो गतस्पृहः ॥ १०६ ॥

गीताश्रयो गीतमयो गीततत्त्वार्थकोविदः।
गीतसंशायसञ्छेत्ता गीतसङ्गीतशासनः ॥ १०७ ॥

गीतार्थज्ञो गीततत्त्वो गीतातत्त्वं गताश्रयः।
गीतासारोऽथ गीताकृद्गीताकृद्विघ्नाशनः ॥ १०८ ॥

गीताशक्तो गीतलीनो गीताविगतसञ्चरः।
गीतैकदृग्गीतभूतिर्गीतप्रीतो गतालसः ॥ १०९ ॥

गीतवाद्यपटुर्गीतप्रभुर्गीतार्थतत्त्ववित्।
गीतागीतविवेकज्ञो गीताप्रवणचेतनः ॥ ११० ॥

गतभीर्गतविद्वेषो गतसंसारबन्धनः।
गतमायो गतत्रासो गतदुःखो गतज्वरः ॥ १११ ॥

गतासुहृदतज्ञानो गतदुष्टाशयो गतः।
गतार्तिर्गतसङ्कल्पो गतदुष्टविचेष्टिः ॥ ११२ ॥

गताहङ्कारसञ्चारो गतदर्पणे गताहितः।
गतविद्वो गतभयो गतागतनिवारकः ॥ ११३ ॥

गतव्यथो गतापायो गतदोषो गतेः परः।
गतसर्वविकारोऽथ गतगञ्जितकुञ्जरः ॥ ११४ ॥

गतकम्पितभूपृष्ठो गतरुग्गतकल्मणः।
 गतदैन्यो गतस्तैन्यो गतमानो गतश्रमः ॥ ११५ ॥
 गतक्रोधो गतग्लानिर्गतम्लानो गतश्रमः।
 गताभावो गतभवो गततत्त्वार्थसंशयः ॥ ११६ ॥
 गयासुरशिरश्छेत्ता गयासुरवरप्रदः।
 गयावासो गयानाथो गयावासिनमस्कृतः ॥ ११७ ॥
 गयातीर्थफलाध्यक्षो गयायात्राफलप्रदः।
 गयामयो गयाक्षेत्रं गयाक्षेत्रनिवासकृत् ॥ ११८ ॥
 गयावासिस्तुतो गयान्मधुत्रतलसत्कटः।
 गायको गायकवरो गायकेष्टफलप्रदः ॥ ११९ ॥
 गायकप्रणयी गाता गायकाभयदायकः।
 गायकप्रवणस्वान्तो गायकः प्रथमः सदा ॥ १२० ॥
 गायकोद्वीतसम्प्रीतो गायकोत्कटविघ्नहा।
 गानगेयो गानकेशो गायकान्तरसञ्चरः ॥ १२१ ॥
 गायकप्रियदः शश्वद्वायकाधीनविग्रहः।
 गेयो गेयगुणो गेयचरितो गेयतत्त्ववित् ॥ १२२ ॥
 गायकत्रासहा ग्रन्थो ग्रन्थतत्त्वविवेचकः।
 गाढानुरागो गाढाङ्गो गाढागङ्गाजलोऽन्वहम् ॥ १२३ ॥
 गाढावगाढजलधिर्गाढप्रज्ञो गतामयः।
 गाढप्रत्यर्थिसैन्योऽथ गाढानुग्रहतत्परः ॥ १२४ ॥
 गाढश्वेषरसाभिज्ञो गाढनिर्वृतिसाधकः।
 गङ्गाधरेष्टवरदो गङ्गाधरभयापहः ॥ १२५ ॥

गङ्गाधरगुरुर्गङ्गाधरध्यातपदः सदा।
गङ्गाधरस्तुतो गङ्गाधराराध्यो गतस्मयः ॥ १२६ ॥

गङ्गाधरप्रियो गङ्गाधरो गङ्गाम्बुसुन्दरः।
गङ्गाजलरसास्वादचतुरो गाङ्गतीरयः ॥ १२७ ॥

गङ्गाजलप्रणयवान् गङ्गतीरविहारकृत्।
गङ्गप्रियो गङ्गाजलावगाहनपरः सदा ॥ १२८ ॥

गन्धमादनसंवासो गन्धमादनकेलिकृत्।
गन्धानुलिप्तसर्वाङ्गो गन्धलुब्धमधुव्रतः ॥ १२९ ॥

गन्धो गन्धर्वराजोऽथ गन्धर्वप्रियकृत् सदा।
गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञो गन्धर्वप्रीतिवर्धनः ॥ १३० ॥

गकारबीजनिलयो गकारो गर्विगर्वनुत्।
गन्धर्वगणसंसेव्यो गन्धर्ववरदायकः ॥ १३१ ॥

गन्धर्वो गन्धमातज्ञो गन्धर्वकुलदैवतम्।
गन्धर्वर्गवसञ्छेत्ता गन्धर्ववरदर्पहा ॥ १३२ ॥

गन्धर्वप्रवणस्वान्तो गन्धर्वगणसंस्तुतः।
गन्धर्वार्चितपादाङ्गो गन्धर्वभयहारकः ॥ १३३ ॥

गन्धर्वभयदः शश्वद्गन्धर्वप्रतिपालकः।
गन्धर्वगीतचरितो गन्धर्वप्रणयोत्सुकः ॥ १३४ ॥

गन्धर्वगानश्रवणप्रणयी गर्वभञ्जनः।
गन्धर्वत्राणसन्नद्धो गन्धर्वसमरक्षमः ॥ १३५ ॥

गन्धर्वस्त्रीभिराराध्यो गानं गानपटुः सदा।
गच्छो गच्छपतिर्गच्छनायको गच्छगर्वहा ॥ १३६ ॥

गच्छराजोऽथ गच्छेशो गच्छराजनमस्कृतः।
गच्छप्रियो गच्छगुरुर्गच्छत्राणकृतोद्यमः ॥ १३७ ॥

गच्छप्रभुर्गच्छचरो गच्छप्रियकृतोद्यमः।
गच्छगीतगुणो गच्छमर्यादाप्रतिपालकः ॥ १३८ ॥

गच्छधाता गच्छभर्ता गच्छवन्द्यो गुरोर्गुरुः।
गृत्सो गृत्समदो गृत्समदाभीष्टवप्रदः ॥ १३९ ॥

गीर्वाणगीतचरितो गीर्वाणगणसेवितः।
गीर्वाणवरदाता च गीर्वाणभयनाशकृत् ॥ १४० ॥

गीर्वाणगुणसंवीतो गीर्वाणारातिसूदूनः।
गीर्वाणधाम गीर्वाणगोप्ता गीर्वाणगर्वहृत् ॥ १४१ ॥

गीर्वाणार्तिहरो नित्यं गीर्वाणवरदायकः।
गीर्वाणशरणं गीतनामा गीर्वाणसुन्दरः ॥ १४२ ॥

गीर्वाणप्राणदो गन्ता गीर्वाणानीकरक्षकः।
गुहेहापूरको गन्धमत्तो गीर्वाणपुष्टिदः ॥ १४३ ॥

गीर्वाणप्रयुतत्राता गीतगोत्रो गताहितः।
गीर्वाणसेवितपदो गीर्वाणप्रथितो गलत् ॥ १४४ ॥

गीर्वाणगोत्रप्रवरो गीर्वाणफलदायकः।
गीर्वाणप्रियकर्ता च गीर्वाणागमसारवित् ॥ १४५ ॥

गीर्वाणागमसम्पत्तिर्गीर्वाणव्यसनापहः।
गीर्वाणप्रणयो गीतय्रहणोत्सुकमानसः ॥ १४६ ॥

गीर्वाणभ्रमसम्भेत्ता गीर्वाणगुरुपूजितः।
ग्रहो ग्रहपतिर्ग्राहो ग्रहपीडाप्रणाशनः ॥ १४७ ॥

ग्रहस्तुतो ग्रहाध्यक्षो ग्रहेशो ग्रहदैवतम्।
ग्रहकृद्रहभर्ता च ग्रहेशानो ग्रहेश्वरः ॥ १४८ ॥

ग्रहाराध्यो ग्रहत्राता ग्रहगोपा ग्रहोत्कटः।
ग्रहगीतगुणो ग्रन्थप्रणेता ग्रहवन्दितः ॥ १४९ ॥

गवी गवीश्वरो गर्वी गर्विष्ठो गर्विगर्वहा।
गवाम्प्रियो गवान्नाथो गवीशानो गवाम्पती ॥ १५० ॥

गव्यप्रियो गवाङ्गोपा गविसम्पत्तिसाधकः।
गविरक्षणसन्नद्धो गवाभयहरः क्षणात् ॥ १५१ ॥

गविगर्वहरो गोदो गोप्रदो गोजयप्रदः।
गजायुतबलो गण्डगुञ्जन्मत्तमधुव्रतः ॥ १५२ ॥

गण्डस्थललसदानमिलन्मत्तालिमण्डितः।
गुडो गुडप्रियो गुण्डगलदानो गुडाशनः ॥ १५३ ॥

गुडाकेशो गुडाकेशसहायो गुडलङ्घभुक्।
गुडभुगगुडभुगणयो गुडाकेशवरप्रदः ॥ १५४ ॥

गुडाकेशार्चितपदो गुडाकेशसखः सदा।
गदाधरार्चितपदो गदाधरवरप्रदः ॥ १५५ ॥

गदायुधो गदापाणिर्गदायुद्धविशारदः ।
गदहा गदर्दप्नो गदगर्वप्रणाशनः ॥ १५६ ॥

गदग्रस्तपरित्राता गदाडम्बरखण्डकः ।
गुहो गुहाग्रजो गुसो गुहाशायी गुहाशयः ॥ १५७ ॥

गुहप्रीतिकरो गूढो गूढगुल्फो गुणैकट्क ।
गीर्गीष्यतिर्गिरीशानो गीर्देवीगीतसद्गुणः ॥ १५८ ॥

गीर्देवो गीष्मियो गीर्भूर्गीरात्मा गीष्मियङ्करः ।
गीर्भूमिर्गीरसन्नोऽथ गीःप्रसन्नो गिरीश्वरः ॥ १५९ ॥

गिरीशजो गिरौशायी गिरिराजसुखावहः ।
गिरिराजार्चितपदो गिरिराजनमस्कृतः ॥ १६० ॥

गिरिराजगुहाविष्टो गिरिराजाभयप्रदः ।
गिरिराजेष्टवरदो गिरिराजप्रपालकः ॥ १६१ ॥

गिरिराजसुतासूनुर्गिरिराजजयप्रदः ।
गिरिवजवनस्थायी गिरिवजचरः सदा ॥ १६२ ॥

गर्गो गर्गप्रियो गर्गदेहो गर्गनमस्कृतः ।
गर्गभीतिहरो गर्गवरदो गर्गसंस्तुतः ॥ १६३ ॥

गर्गगीतप्रसन्नात्मा गर्गानन्दकरः सदा ।
गर्गप्रियो गर्गमानप्रदो गर्गारिभञ्जकः ॥ १६४ ॥

गर्गवर्गपरित्राता गर्गसिद्धिप्रदायकः ।
गर्गलानिहरो गर्गभ्रमहृदर्गसङ्गतः ॥ १६५ ॥

गर्गचार्यो गर्गमुनिर्गर्गसम्मानभाजनः।
 गम्भीरो गणितप्रज्ञो गणितागमसारवित्॥ १६६॥
 गणको गणकश्लाघ्यो गणकप्रणयोत्सुकः।
 गणकप्रवणस्वान्तो गणितो गणितागमः॥ १६७॥
 गद्यं गद्यमयो गद्यपद्यविद्याविशारदः।
 गललभ्महानागो गलदर्चिंगलन्मदः॥ १६८॥
 गलत्कुष्ठिव्यथाहन्ता गलत्कुष्ठिसुखप्रदः।
 गम्भीरनाभिर्गम्भीरस्वरो गम्भीरलोचनः॥ १६९॥
 गम्भीरगुणसम्पन्नो गम्भीरगतिशोभनः।
 गर्भप्रदो गर्भरूपो गर्भापद्मिनिवारकः॥ १७०॥
 गर्भागमनसन्नाशो गर्भदो गर्भशोकनुत्।
 गर्भत्राता गर्भगोप्ता गर्भपुष्टिकरः सदा॥ १७१॥
 गर्भाश्रयो गर्भमयो गर्भमयनिवारकः।
 गर्भधारो गर्भधरो गर्भसन्तोषसाधकः॥ १७२॥
 गर्भगौरवसन्धानसन्धानं गर्भवर्गहृत्।
 गरीयान् गर्वनुदूर्वमर्दी गरदमर्दकः॥ १७३॥
 गरसन्तापशमनो गुरुराज्यसुखप्रदः।
 ॥ फलश्रुतिः ॥
 नामां सहस्रमुदितं महद्वणपतेरिदम्॥ १७४॥
 गकारादि जगद्वन्द्यं गोपनीयं प्रयत्नतः।
 य इदं प्रयतः प्रातस्त्रिसन्ध्यं वा पठेन्नरः॥ १७५॥

वाज्चितं समवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् धनार्थी लभते धनम्॥ १७६॥

विद्यार्थी लभते विद्यां सत्यं सत्यं न संशयः।
भूर्जत्वचि समालिख्य कुङ्कुमेन समाहितः॥ १७७॥

चतुर्थी भौमवारो च चन्द्रसूर्योपरागके।
पूजयित्वा गणधीशं यथोक्तविधिना पुरा॥ १७८॥

पूजयेद्यो यथाशक्त्या जुहुयाच्च शमीदलैः।
गुरुं सम्पूज्य वस्त्राद्यैः कृत्वा चापि प्रदक्षिणम्॥ १७९॥

धारयेद्यः प्रयत्नेन स साक्षाद्वृणनायकः।
सुराश्चासुरवर्याश्च पिशाचाः किन्नरोरगः॥ १८०॥

प्रणमन्ति सदा तं वै दुष्टा विस्मितमानसाः।
राजा सपदि वश्यः स्यात् कामिन्यस्तद्वशो स्थिराः॥ १८१॥

तस्य वंशो स्थिरा लक्ष्मीः कदाऽपि न विमुच्चति।
निष्कामो यः पठेदेतद्गणेश्वरपरायणः॥ १८२॥

स प्रतिष्ठां परां प्राप्य निजलोकमवाप्न्यात्।
इदं ते कीर्तिं नामां सहस्रं देवि पावनम्॥ १८३॥

न देयं कृपणायाथ शठाय गुरुविद्विषे।
दत्त्वा च भ्रंशामाप्नोति देवतायाः प्रकोपतः॥ १८४॥

इति श्रुत्वा महादेवी तदा विस्मितमानसा।
पूजयामास विधिवद्गणेश्वरपदद्वयम्॥ १८५॥

॥ इति श्री-रुद्रयामले महागुप्तसारे शिवपार्वतीसंवादे गकारादि
श्री-गणपतिसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

मुनिरुवाच

कथं नामां सहस्रं तं गणेशा उपदिष्टवान्।
शिवदं तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे।
अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल ॥ २ ॥

मनसा स विनिर्धार्य ददृशे विघ्नकारणम्।
महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि ॥ ३ ॥

विघ्नप्रशामनोपायमपृच्छदपरिश्रमम् ।
सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम् ॥ ४ ॥

सर्वविघ्नप्रशामनं सर्वकामफलप्रदम्।
ततस्तस्मै स्वयं नामां सहस्रमिदमब्रवीत् ॥ ५ ॥

अस्य श्रीवक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रमन्तर्गतस्य
महागणपतिर्त्रैषिः । अनुष्टुप् छन्दः । महागणपतिर्देवता ।
गं बीजम् । हुं शक्तिः । स्वाहा कीलकम् ।
चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ करन्यासः ॥

गणेश्वरो गणक्रीड इत्यज्ञुष्ठाभ्यां नमः ।
कुमारगुरुरीशान इति तर्जनीभ्यां नमः ।

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमेति मध्यमाभ्यां नमः ।
रक्तो रक्ताम्बरधर इत्यनामिकाभ्यां नमः ।
सर्वसद्गुरुसंसेव्य इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
लुम्पविघ्नः स्वभक्तानामिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

॥ हृदयादिन्यासः ॥

छन्दश्छन्दोद्भव इति हृदयाय नमः ।
निष्कलो निर्मल इति शिरसे स्वाहा ।
सृष्टिस्थितिलयक्रीड इति शिखायै वषट् ।
ज्ञानं विज्ञानमानन्द इति कवचाय हुम् ।
अष्टाङ्गयोगफलभृदिति नेत्रत्रयाय वौषट् ।
अनन्तशक्तिसहित इत्यस्त्राय फट् ।
भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः ।

॥ ध्यानम् ॥

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रं
बृहदुदरमशेषं भूतिराजं पुराणम् ।
अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशं
पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि ॥

र्खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताधातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥

सकलविघ्नविनाशनद्वारा श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्धर्थे जपे
विनियोगः ।
॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीगणपतिरुचाच

ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः ।
एकदन्तो वक्रतुण्डो गजवक्रो महोदरः ॥ १ ॥

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननाशनः ।
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः ॥ २ ॥

भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः ।
हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः ॥ ३ ॥

नन्दनो लम्पटो भीमो मेघनादो गणञ्जयः ।
विनायको विरूपाक्षो वीरः शूरवरप्रदः ॥ ४ ॥

महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ।
रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः ॥ ५ ॥

कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः ।
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः ॥ ६ ॥

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः ।
कटङ्कटो राजपुत्रः शाकलः सम्मितोऽमितः ॥ ७ ॥

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः ।
भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः ॥ ८ ॥

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्गुणः।
कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्रियः ॥ ९ ॥

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः।
हिरण्मयपुरान्तःस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः ॥ १० ॥

कराहतिष्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभित्।
उमाङ्गकेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपावनः ॥ ११ ॥

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः।
वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः ॥ १२ ॥

सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्नीमित्तहृत्।
दुःस्वप्रहृत्यसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः ॥ १३ ॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः।
पीताम्बरः खण्डरदः खण्डवैशाखसंस्थितः ॥ १४ ॥

चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रो हविर्मुजः।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ १५ ॥

गणाधिराजो विजयः रिथरो गजपतिर्धर्जी।
देवदेवः स्मरः प्राणदीपको वायुकीलकः ॥ १६ ॥

विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नमहाचलः।
वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥ १७ ॥

इच्छाशक्तिभवो देवत्राता दैत्यविमर्दनः।
शम्भुवक्रोद्धवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥ १८ ॥

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः।
उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वधुनीभवः॥१९॥

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्षा शुभाननः।
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुपश्रुतिः॥२०॥

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमभालः सत्यशिरोरुहः।
जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽस्यर्कसोमदृक्॥२१॥

गिरिन्द्रैकरदो धर्माधर्मौष्ठः सामवृहितः।
ग्रहर्क्षदशानो वाणीजिह्वो वासवनासिकः॥२२॥

भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोदकः।
कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः॥२३॥

नदीनदभुजः सर्पाङ्गुलीकस्तारकानखः।
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः॥२४॥

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षः किञ्चरमानुषः।
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शौलोरुद्घजानुकः॥२५॥

पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः।
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलो हृदयालाननिश्चलः॥२६॥

हृतपद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः।
सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः॥२७॥

प्रतापी काश्यपो मन्ता गणको विष्टपी बली।
यशस्वी धार्मिको जेता प्रथमः प्रमथेश्वरः॥२८॥

चिन्तामणिर्दीर्घपपतिः कल्पद्रुमवनालयः।
रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः ॥ २९ ॥

तीव्राशिरोद्धृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः।
नन्दानन्दितपीठश्रीभर्णगदो भूषितासनः ॥ ३० ॥

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः।
तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः ॥ ३१ ॥

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्तयम्बुजालयः।
लिपिपद्मासनाधारो वहिधामत्रयालयः ॥ ३२ ॥

उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्षिकः।
पीनजङ्घः लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः ॥ ३३ ॥

निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्धुजः।
पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ॥ ३४ ॥

भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः।
हस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः ॥ ३५ ॥

स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः।
सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥ ३६ ॥

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः।
सर्पकक्षोदराबन्धः सर्पराजोत्तरच्छदः ॥ ३७ ॥

रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमालाविभूषणः।
रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोषपल्लवः ॥ ३८ ॥

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमालाविभूषणः ।
श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः ॥ ३९ ॥

सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः ।
सर्वाभरणशोभाद्यः सर्वशोभासमन्वितः ॥ ४० ॥

सर्वमञ्जलमाञ्जल्यः सर्वकारणकारणम् ।
सर्वदेववरः शाङ्कीं बीजपूरी गदाधरः ॥ ४१ ॥

इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत् ।
पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत् ॥ ४२ ॥

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी ।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् मुद्रायुधः ॥ ४३ ॥

पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृताङ्कशमूलकः ।
करस्थान्नफलशूतकलिकाभृत्कुठारवान् ॥ ४४ ॥

पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः ।
भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः ॥ ४५ ॥

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः ।
रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥ ४६ ॥

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः ।
आमोदमोदजननः सम्प्रमोदप्रमोदनः ॥ ४७ ॥

संवर्धितमहावृद्धिरैद्धिसिद्धिप्रवर्घनः ।
दन्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दलिताश्रयः ॥ ४८ ॥

मदनावत्याश्रिताद्विः कृतवैमुख्यदुर्मुखः ।
 विघ्नसम्पल्लवः पद्मः सर्वोन्नतमद्रवः ॥ ४९ ॥
 विघ्नकृन्निघ्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः ।
 तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥ ५० ॥
 मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डनः ।
 कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥ ५१ ॥
 वसुधारामदोन्नादो महाशङ्खनिधिप्रियः ।
 नमद्वसुमतीमाली महापद्मनिधिः प्रभुः ॥ ५२ ॥
 सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशाहृदाश्रयः ।
 ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखः पवननन्दनः ॥ ५३ ॥
 प्रत्युग्रनयनो दिव्यो दिव्यास्त्रशतपर्वधृक् ।
 ऐरावतादिसर्वाशावारणो वारणप्रियः ॥ ५४ ॥
 वज्राद्यस्त्रपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः ।
 जयाज्यपरिकरो विजयाविजयावहः ॥ ५५ ॥
 अजयार्चितपादाङ्गो नित्यानन्दवनस्थितः ।
 विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डी सौन्दर्यमण्डितः ॥ ५६ ॥
 अनन्तानन्तसुखदः सुमञ्जलसुमञ्जलः ।
 ज्ञानाश्रयः क्रियाधार इच्छाशक्तिनिषेवितः ॥ ५७ ॥
 सुभगासंश्रितपदो ललिताललिताश्रयः ।
 कामिनीपालनः कामकामिनीकेलिलालितः ॥ ५८ ॥
 सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः ।
 गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥ ५९ ॥

नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः ।
रौद्रीमुद्रितपादाङ्गो हुम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः ॥ ६० ॥

विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः ।
अमृताभ्युकृतावासो मदघूर्णितलोचनः ॥ ६१ ॥

उच्छिष्टोच्छिष्टगणको गणेशो गणनायकः ।
सार्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यसेव्यो दिगम्बरः ॥ ६२ ॥

अनपायोऽनन्तदृष्टिप्रमेयोऽजरामरः ।
अनाविलोऽप्रतिहतिरच्युतोऽमृतमक्षरः ॥ ६३ ॥

अप्रतक्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः ।
अमेयसिद्धिरद्वैतमधोरोऽग्निसमाननः ॥ ६४ ॥

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलम्भोऽव्यक्तलक्षणः ।
आधारपीठमाधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ६५ ॥

आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः ।
इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः ॥ ६६ ॥

इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः ।
इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः ॥ ६७ ॥

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलमण्डितः ।
ईध्मप्रिय इडाभाग इडावानिन्द्रराप्रियः ॥ ६८ ॥

इक्ष्वाकुविघ्नविघ्वंसी इतिकर्तव्यतोप्सितः ।
ईशानमौलिरीशान ईशानप्रिय ईतिहा ॥ ६९ ॥

ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः ।
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुडुनाथकरप्रियः ॥ ७० ॥

उन्नतानन उत्तुञ्ज उदारस्त्रिदशाग्रणीः ।
ऊर्जस्वानूष्मलमद् ऊहापोहदुरासदः ॥ ७१ ॥

ऋग्यजुः सामनयन ऋद्धिसिद्धिसमर्पकः ।
ऋजुचित्तैकसुलभो ऋणत्रयविमोचनः ॥ ७२ ॥

लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ।
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥ ७३ ॥

एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः ।
एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः ॥ ७४ ॥

ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः ।
ऐरम्दसमोन्मेष ऐरावतसमाननः ॥ ७५ ॥

ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः ।
औदार्यनिधिरौद्धत्यघैर्य औन्नत्यनिःसमः ॥ ७६ ॥

अङ्कुशः सुरनागानामङ्कुशाकारसंस्थितः ।
अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तिः ॥ ७७ ॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः ।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः ॥ ७८ ॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः ।
कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ॥ ७९ ॥

खर्वः खड्गप्रियः खडः खान्तान्तःस्थः खनिर्मलः ।
खल्वाटश्छनिलयः खद्वाङ्गी खन्दुरासदः ॥ ८० ॥

गुणाद्यो गहनो गद्यो गद्यपद्यसुधार्णवः।
गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः ॥ ८१ ॥

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः।
गुहाशयो गुडाभिस्थो गुरुगम्यो गुरुर्गुरुः ॥ ८२ ॥

घण्टाधर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः।
डंकारवाच्यो डाकारो डंकाराकारशुण्डभृत् ॥ ८३ ॥

चण्डश्वेष्वरश्वेष्वर्णी चण्डेशश्वेष्वर्णविक्रमः।
चराचरपिता चिन्तामणिश्वर्वणलालसः ॥ ८४ ॥

छन्दश्छन्दोद्भवश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः।
जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ॥ ८५ ॥

जप्यो जपपरो जाप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः।
स्ववद्वण्डोल्लसद्धानद्वारिभ्रमराकुलः ॥ ८६ ॥

टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारमणिनूपुरः ।
ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रेषु सिद्धिदः ॥ ८७ ॥

डिण्डमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डमप्रियः।
ढक्कानिनादमुदितो ढौङ्को ढुण्डिविनायकः ॥ ८८ ॥

तत्त्वानां प्रकृतिस्तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः।
तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ॥ ८९ ॥

स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत्।
दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानं दमो दया ॥ ९० ॥

दयावान्दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः।
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः ॥ ११ ॥

दंष्ट्रालभ्रद्वीपघटो देवार्थनृगजाकृतिः।
धनं धनपतेर्बन्धुर्धनदो धरणीधरः ॥ १२ ॥

ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः।
ध्वनिप्रकृतिचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥ १३ ॥

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः।
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः ॥ १४ ॥

परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम्।
परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचनः।
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ॥ १५ ॥
पद्मप्रसन्नवदनः प्रणताज्ञाननाशनः।
प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्त्तिनिवारणः ॥ १६ ॥

फणिहस्तः फणिपतिः फूत्कारः फणितप्रियः।
बाणार्चिताङ्गियुगलो बालकेलिकुतूहली।
ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ॥ १७ ॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः।
बृहन्नादाग्न्यचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥ १८ ॥

भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः।
भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः ॥ १९ ॥

भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः।
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्तो मनोरमः ॥ २० ॥

मेरेखलाहीश्वरो मन्दगतिर्मन्दनिभेक्षणः।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः ॥ १०१ ॥

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः ॥ १०२ ॥

रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः।
राज्यरक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः ॥ १०३ ॥

लक्षो लक्षपतिर्लक्ष्यो लयस्थो लड्डुकप्रियः।
लासप्रियो लास्यपरो लाभकृष्णोकविश्रुतः ॥ १०४ ॥

वरेण्यो वहिवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः।
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः ॥ १०५ ॥

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः।
विवस्वद्वन्धनो विश्वाधारो विश्वेश्वरो विभुः ॥ १०६ ॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शम्बरेश्वरः ॥ १०७ ॥

षड्टुकुसुमस्नग्वी षडाधारः षडक्षरः।
संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ॥ १०८ ॥

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदकः।
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्दक्तिदायकः ॥ १०९ ॥

साक्षी समुद्रमथनः स्वयंवैद्यः स्वदक्षिणः।
स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पः सामगानरतः सुखी ॥ ११० ॥

हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक्।
हव्यं हुतप्रियो हृष्टो हृलेखामन्त्रमध्यगः ॥ १११ ॥

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमाक्षमपरायणः।
क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः ॥ ११२ ॥

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः।
विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ ११३ ॥

आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥ ११४ ॥

मेघादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुषचित्तप्रसादनः ॥ ११५ ॥

पराभिन्चारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः।
लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परक्षणः ॥ ११६ ॥

घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम्।
पक्षो मासर्त्वयनाब्दयुगं कल्पो महालयः ॥ ११७ ॥

राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम्।
लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः ॥ ११८ ॥

राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः।
कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जडमं जगत् ॥ ११९ ॥

भूरापोऽग्निर्मरुद्योमाहङ्कृतिः प्रकृतिः पुमान्।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः ॥ १२० ॥

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः।
सिद्धविद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः ॥ १२१ ॥

समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः।
साङ्घं पातञ्जलं योगं पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः ॥ १२२ ॥

वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम् ॥ १२३ ॥

वैखानसं भागवतं मानुषं पाञ्चरात्रकम्।
शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम् ॥ १२४ ॥

शाकं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता।
सदसद्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम् ॥ १२५ ॥

बन्धो मोक्षः सुखं भोगो योगः सत्यमणुर्महान्।
स्वस्ति हुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषण्णमः ॥ १२६ ॥

ज्ञानं विज्ञानमानन्दो बोधः संवित्समोऽसमः।
एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः ॥ १२७ ॥

एकाग्रधीरेकवीर एकोऽनेकस्वरूपधृक्।
द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः ॥ १२८ ॥

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वहीनो द्वयातिगः।
त्रिधामा त्रिकरस्तेता त्रिवर्गफलदायकः ॥ १२९ ॥

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्थिशक्तीशस्थिलोचनः।
चतुर्विंधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः ॥ १३० ॥

चतुर्बाहुश्वतुर्दन्तश्वतुरात्मा चतुर्भुजः ।
चतुर्विघोपायमयश्वतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ॥ १३१ ॥

चतुर्थीपूजनप्रीतश्वतुर्थीतिथिसम्भवः ।
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्तमः ॥ १३२ ॥

पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः ।
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवमातृकः ॥ १३३ ॥

पञ्चब्रह्मयस्फूर्तिः पञ्चावरणवारितः ।
पञ्चभक्षप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः ॥ १३४ ॥

षड्कोणपीठः षड्कधामा षड्नन्थिभेदकः ।
षड्जध्वान्तविध्वंसी षड्जुलमहाहृदः ॥ १३५ ॥

षण्मुखः षण्मुखब्राता षड्क्तिपरिवारितः ।
ष्वैरिवर्गविध्वंसी षड्गुर्मिभयभञ्जनः ॥ १३६ ॥

षट्कर्कदूरः षट्कर्मा षड्गुणः षड्ग्रसाश्रयः ।
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥ १३७ ॥

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणवन्दितः ॥ १३८ ॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोत्रः सप्तस्वराश्रयः ।
सप्ताभ्यिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः ॥ १३९ ॥

सप्तच्छन्दो मोदमदः सप्तच्छन्दो मखप्रभुः ।
अष्टमूर्तिर्ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥ १४० ॥

अष्टाङ्गयोगफलभृदष्टपत्राम्बुजासनः ।

अष्टशक्तिसमानश्रीरष्टैश्वर्यप्रवर्धनः ॥ १४१ ॥

अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ।

अष्टमैर्खसेव्योऽष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् ॥ १४२ ॥

अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्टद्व्यहविःप्रियः ।

अष्टश्रीरष्टसामश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ।

नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासितः ॥ १४३ ॥

नवद्वारपुरावृत्तो नवद्वारनिकेतनः ।

नवनाथमहानाथो नवनागविभूषितः ॥ १४४ ॥

नवनारायणस्तुल्यो नवदुर्गानिषेवितः ।

नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्घृतः ॥ १४५ ॥

दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः ।

दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥ १४६ ॥

दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः ।

एकादशमहारुद्रैःस्तुतश्वैकादशाक्षरः ॥ १४७ ॥

द्वादशद्विदशाष्टादिदोर्दण्डास्त्रनिकेतनः ।

त्रयोदशभिदाभिन्नो विश्वेदेवाधिदैवतम् ॥ १४८ ॥

चतुर्दशेन्द्रवरदश्वतुर्दशमनुप्रभुः ।

चतुर्दशाद्यविद्याद्यश्वतुर्दशजगत्पतिः ॥ १४९ ॥

सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलः ।

तिथिपञ्चदशाकारस्तिथ्या पञ्चदशार्चितः ॥ १५० ॥

घोडशाधारनिलयः घोडशस्वरमातृकः ।
घोडशान्तपदावासः घोडशेन्दुकलात्मकः ॥ १५१ ॥

कलासप्तदशी सप्तदशसप्तदशाक्षरः ।
अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ॥ १५२ ॥

अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः ।
अष्टादशलिपिव्यष्टिसमिज्ञानकोविदः ॥ १५३ ॥

अष्टादशान्नसम्पत्तिरष्टादशविजातिकृत् ।
एकविंशः पुमानेकविंशत्यज्ञुलिपल्लवः ॥ १५४ ॥

चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशारब्यपूरुषः ।
सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत् ॥ १५५ ॥

द्वात्रिंशद्वैरवाधीशश्वतुस्त्रिंशन्महाहृदः ।
षट्ड्विंशतत्त्वसम्भूतिरष्ट्रिंशत्कलात्मकः ॥ १५६ ॥

पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः ।
द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्ठक्षरसंश्रयः ।
पञ्चाशदक्षरश्रेणीपञ्चाशदुद्रविग्रहः ॥ १५७ ॥

चतुःषष्ठिमहासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः ।
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्गर्णनिर्गलः ॥ १५८ ॥

चतुःषष्ठर्थनिर्णता चतुःषष्ठिकलानिधिः ।
अष्टषष्ठिमहातीर्थक्षेत्रभैरववन्दितः ॥ १५९ ॥

चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिकप्रभुः ।
शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः ॥ १६० ॥

शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः।
सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणिभूषणः ॥ १६१ ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः ॥ १६२ ॥

दशसाहस्रफणिभृत्कणिराजकृतासनः ।
अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रपाठितः ॥ १६३ ॥

लक्षाधारः प्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः।
चतुर्लक्षजप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशकः ॥ १६४ ॥

चतुरशीतिलक्षणां जीवानां देहसंस्थितः।
कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः ॥ १६५ ॥

शिवोद्भवाद्यष्टकोटिवैनायकधुरन्धरः ।
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः ॥ १६६ ॥

त्रयस्त्रिंशत्कोटि सुरश्रेणीप्रणतपादुकः ।
अनन्तदेवतासेव्यो ह्यनन्तशुभद्रायकः ॥ १६७ ॥

अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तोऽनन्तसौख्यदः।
अनन्तशक्तिसहितो ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः ॥ १६८ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इति वैनायकं नामां सहस्रमिदमीरितम्।
इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः ॥ १६९ ॥

करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम्।
आयुरारोग्यमैश्वर्य धैर्य शौर्य बलं यशः ॥ १७० ॥

मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमभिरूपता।
सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दक्षिण्यं धर्मशीलता ॥ १७१ ॥

जगत्संवननं विश्वसंवादो वेदपाटवम्।
सभापाणिडत्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम् ॥ १७२ ॥

ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वासता तथा ॥ १७३ ॥

धनधान्यादिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत्।
वश्यं चतुर्विंधं विश्वं जपादस्य प्रजायते ॥ १७४ ॥

राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः।
जप्यते यस्य वश्यार्थं स दासस्तस्य जायते ॥ १७५ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम्।
शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षयहभयापहम् ॥ १७६ ॥

साम्राज्यसुखदं सर्वसप्तमदर्मदनम्।
समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम् ॥ १७७ ॥

दुःस्वप्नशमनं क्रुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम्।
षष्ठ्यगाष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानकारणम् ॥ १७८ ॥

परकृत्यप्रशमनं परचकप्रमदनम्।
सङ्ग्राममार्गं सर्वेषामिदमेकं जयावहम् ॥ १७९ ॥

सर्ववन्ध्यत्वदोषम् गर्भरक्षैककारणम्।
पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम् ॥ १८० ॥

देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च।
न तद्देहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः ॥ १८१ ॥

क्षयकुष्ठप्रमेहार्शभगन्द्रविषूचिकाः ।
गुल्मं स्त्रीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम् ॥ १८२ ॥

कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोफामयोदरम्।
शिरोरोगं वमिं हिकां गण्डमालामरोचकम् ॥ १८३ ॥

वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ।
आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम् ॥ १८४ ॥

इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगदोषादिसम्भवम्।
सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपः ॥ १८५ ॥

प्राप्यतेऽस्य जपात्सिद्धिः स्त्रीशूद्रैः पतितैरपि।
सहस्रनाममन्त्रोऽयं जपितव्यः शुभासये ॥ १८६ ॥

महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम्।
इच्छ्या सकलान् भोगानुपभुज्येह पार्थिवान् ॥ १८७ ॥

मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ।
चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मशर्वादिसद्मसु ॥ १८८ ॥

कामरूपः कामगतिः कामदः कामदेश्वरः।
भुत्त्वा यथेष्टितान्भोगानभीष्टैः सह बन्धुभिः ॥ १८९ ॥

गणेशानुचरो भूत्वा गणो गणपतिप्रियः।
नन्दीश्वरादिसानन्दैर्नन्दितः सकलैर्गणैः ॥ १९० ॥

शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः।
शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः॥ १९१॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते।
निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः॥ १९२॥

योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंयुतः।
निरन्तरे निराबाधे परमानन्दसंज्ञिते॥ १९३॥

विश्वोत्तीर्णे परे पूर्णे पुनरावृत्तिवर्जिते।
लीनो वैनायके धान्मि रमते नित्यनिर्वृते॥ १९४॥

यो नामभिर्हृतैर्दत्तैः पूजयेदर्चयेन्नरः।
राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम्॥ १९५॥

तस्य सिध्यन्ति मन्त्राणां दुर्लभाश्वेष्टसिद्धयः।
मूलमन्त्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतमं मम॥ १९६॥

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि।
दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत्॥ १९७॥

अष्टद्रव्यविशेषेण कुर्याद्दक्षिणुसंयुतः।
तस्येपितं धनं धान्यमैश्वर्यं विजयो यशः॥ १९८॥

भविष्यति न सन्देहः पुत्रपौत्रादिकं सुखम्।
इदं प्रजपितं स्तोत्रं पठितं श्रावितं श्रुतम्॥ १९९॥

व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिवन्दितम्।
इहामुत्र च विश्वेषां विश्वैश्वर्यप्रदायकम्॥ २००॥

स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन सन्धार्यते स्तवः ।
स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्यष्टकोटिभिः ॥ २०१ ॥

लिखितं पुस्तकस्तोत्रं मन्त्रभूतं प्रपूजयेत् ।
तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम् ॥ २०२ ॥

दानैरशोषैरखिलैर्वैश्च
तीर्थैरशोषैरखिलैर्मर्मखैश्च ।
न तत्कलं विन्दति यद्बणेश-
सहस्रनामस्मरणेन सद्यः ॥ २०३ ॥

एतनाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने
सायं मध्यन्दिने वा त्रिष्वणमथवा सन्ततं वा जनो यः ।
स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति वचसां कीर्तिमुच्चैस्तनोति
दारिद्र्यं हन्ति विश्वं वशयति सुचिरं वर्धते पुत्रपौत्रैः ॥ २०४ ॥

अकिञ्चनोऽप्येकचित्तो नियतो नियतासनः ।
प्रजपंश्वतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः ॥ २०५ ॥

दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि ।
लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ २०६ ॥

आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं सम्पदश्चार्तिनाशः
कीर्तिर्नित्यावदाता भवति खलु नवा कान्तिरव्याजभव्या ।
पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदन्यच्च तत्तत्
नित्यं यः स्तोत्रमेतत् पठति गणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम् ॥ २०७ ॥

गणञ्जयो गणपतिर्हरम्बो धरणीधरः ।
महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ॥ २०८ ॥

अमोघसिद्धिरमृतमन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः।
सुमङ्गलो वीजमाशापूरको वरदः कलः ॥ २०९ ॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो दुष्टिर्विनायकः।
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान् ॥ २१० ॥

उपायनं ददेद्भूत्या मत्प्रसादं चिकीर्षति।
वत्सरं विघ्नराजोऽस्य तथ्यमिष्टार्थसिद्धये ॥ २११ ॥

यः स्तौति मद्भूतमना ममाराधनतत्परः।
स्तुतो नाम्ना सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः ॥ २१२ ॥

नमो नमः सुरवरपूजिताङ्गये
नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलदयैकसिद्धये
नमो नमः करिकलभाननाय ते ॥ २१३ ॥

किङ्किणीगणरचितचरणः
प्रकटितगुरुमितचारुकरणः ।
मद्जललहरीकलितकपोलः
शमयतु दुरितं गणपतिनाम्ना ॥ २१४ ॥

॥ इति श्रीगणेशापुराणे उपासनाखण्डे ईश्वरगणेशसंवादे
गणेशसहस्रनामस्तोत्रं नाम षड्त्वारिशोऽध्यायः ॥



॥ शिवसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्मोपशान्तये ॥

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुलारविन्दायतपत्रनेत्रा।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवहिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥

॥ पूर्वभागः ॥

युधिष्ठिर उवाच

त्वयाऽपगेय नामानि श्रुतानीह जगत्पतेः।
पितामहेशाय विभोर्नामान्याचक्षव शम्भवे ॥ १ ॥

ब्रह्मवे विश्वरूपाय महाभाग्यं च तत्त्वतः।
सुरासुरगुरौ देवे शङ्करेऽव्यक्तयोनये ॥ २ ॥

भीष्म उवाच

अशक्तोऽहं गुणान् वकुं महादेवस्य धीमतः।
यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते ॥ ३ ॥

ब्रह्मविष्णुसुरेशानां स्त्रष्टा च प्रभुरेव च।
ब्रह्मादयः पिशाचान्ता यं हि देवा उपासते॥४॥

प्रकृतीनां परत्वेन पुरुषस्य च यः परः।
चिन्त्यते यो योगविद्धिर्ग्रंथिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥५॥

प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षोभयित्वा स्वतेजसा।
ब्रह्माणमसृजत् तस्मादेवदेवः प्रजापतिः॥६॥

को हि शक्तो गुणान् वकुं देवदेवस्य धीमतः।
गर्भजन्मजरायुक्तो मत्यो मृत्युसमन्वितः॥७॥

को हि शक्तो भवं ज्ञातुं मद्विधः परमेश्वरम्।
ऋते नारायणात् पुत्र शङ्खचक्रगदाधरात्॥८॥

एष विद्वान् गुणश्रेष्ठो विष्णुः परमदुर्जयः।
दिव्यचक्षुर्महातेजा वीक्ष्यते योगचक्षुषा॥९॥

रुद्रभक्त्या तु कृष्णेन जगद्व्याप्तं महात्मना।
तं प्रसाद्य तदा देवं बद्या किल भारत॥१०॥

अर्थात् प्रियतरत्वं च सर्वलोकेषु वै तदा।
प्राप्तवानेव राजेन्द्र सुवर्णाक्षान्महेश्वरात्॥११॥

पूर्णं वर्षसहस्रं तु तप्तवानेष माधवः।
प्रसाद्य वरदं देवं चराचरगुरुं शिवम्॥१२॥

युगे युगे तु कृष्णेन तोषितो वै महेश्वरः।
भक्त्या परमया चैव प्रीतश्वैव महात्मनः॥१३॥

ऐश्वर्यं यादृशं तस्य जगद्योनेर्महात्मनः।
तदयं दृष्टवान् साक्षात् पुत्रार्थे हरिरच्युतः॥ १४॥

यस्मात् परतरं चैव नान्यं पश्यामि भारत।
व्यारव्यातुं देवदेवस्य शक्तो नामान्यशेषतः॥ १५॥

एष शक्तो महाबाहुर्वकुं भगवतो गुणान्।
विभूतिं चैव कात्स्वर्णेन सत्यां माहेश्वरीं नृप॥ १६॥

सुरासुरगुरो देव विष्णो त्वं वक्तुम् अर्हसि।
शिवाय शिवरूपाय यन्माऽपृच्छद्युधिष्ठिरः॥ १७॥

नामां सहस्रं देवस्य तण्डिना ब्रह्मवादिना।
निवेदितं ब्रह्मलोके ब्रह्मणो यत् पुराऽभवत्॥ १८॥

द्वैपायनप्रभृतयस्तथा चेमे तपोधनाः।
ऋषयः सुब्रता दान्ताः शृण्वन्तु गदतस्तव॥ १९॥

वासुदेव उवाच

न गतिः कर्मणां शक्या वेत्तुमीशस्य तत्त्वतः।
हिरण्यगर्भप्रमुखा देवाः सेन्द्रा महर्षयः॥ २०॥

न विदुर्यस्य निधनम् आदिं वा सूक्ष्मदर्शिनः।
स कथं नाममात्रेण शक्यो ज्ञातुं सतां गतिः॥ २१॥

तस्याहम् असुरघस्य कांश्चिद्गवतो गुणान्।
भवतां कीर्तयिष्यामि ब्रतेशाय यथातथम्॥ २२॥

वैशम्पायन उवाच

एवमुत्त्वा तु भगवान् गुणांस्तस्य महात्मनः ।
उपस्पृश्य शुचिर्भूत्वा कथयामास धीमतः ॥ २३ ॥

वासुदेव उवाच

ततः स प्रयतो भूत्वा मम तात युधिष्ठिर ।
प्राञ्जलिः प्राह विप्रर्घिर्नामसञ्चहामादितः ॥ २४ ॥

उपमन्युरुवाच

ब्रह्मप्रोक्तैर्ऋषिप्रोक्तैर्वेदवेदाङ्गसम्बैः ।
सर्वलोकेषु विरव्यातं स्तुत्यं स्तोष्यामि नामभिः ॥ २५ ॥

महद्विर्विहितैः सत्यैः सिद्धैः सर्वार्थसाधकैः ।
ऋषिणा तण्डना भक्त्या कृतैर्वेदकृतात्मना ॥ २६ ॥

यथोक्तैः साधुभिः ख्यातैर्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।
प्रवरं प्रथमं स्वर्ग्यं सर्वभूतहितं शुभम् ॥ २७ ॥

श्रुतैः सर्वत्र जगति ब्रह्मलोकावतारितैः ।
सत्यैस्तत् परमं ब्रह्म ब्रह्मप्रोक्तं सनातनम् ।
वक्ष्ये यदुकुलश्रेष्ठं शृणुष्वावहितो मम ॥ २८ ॥

वरयैनं भवं देवं भक्तस्त्वं परमेश्वरम् ।
तेन ते श्रावयिष्यामि यत् तद्ब्रह्म सनातनम् ॥ २९ ॥

न शक्यं विस्तरात् कृत्वं वकुं शर्वस्य केनचित् ।
युक्तेनापि विभूतीनामपि वर्षशतैरपि ॥ ३० ॥

यस्यादिर्मध्यमन्तं च सुरैरपि न गम्यते।
कस्तस्य शक्याद्वकुं गुणान् कात्म्येन माधव ॥ ३१ ॥

किं तु देवस्य महतः सङ्घितार्थपदाक्षरम्।
शक्तितश्चरितं वक्ष्ये प्रसादात् तस्य धीमतः ॥ ३२ ॥

अप्राप्य तु ततोऽनुज्ञां न शक्यः स्तोतुमीश्वरः।
यदा तेनाभ्यनुज्ञातः स्तुतो वै स तदा मया ॥ ३३ ॥

अनादिनिधनस्याहं जगद्योनेर्महात्मनः।
नाम्नां कञ्चित् समुद्देश्यं वक्ष्याम्यव्यक्तयोनिनः ॥ ३४ ॥

वरदस्य वरेण्यस्य विश्वरूपस्य धीमतः।
शृणु नाम्नां चयं कृष्ण यदुकुं पद्मयोनिना ॥ ३५ ॥

दशनामसहस्राणि यान्याह प्रपितामहः।
तानि निर्मथ्य मनसा दध्नो घृतमिवोद्धृतम् ॥ ३६ ॥

गिरेः सारं यथा हेम पुष्पसारं यथा मधु।
घृतात् सारं यथा मण्डस्तथैतत् सारमुद्धृतम् ॥ ३७ ॥

सर्वपापापहमिदं चतुर्वेदसमन्वितम्।
प्रयत्नेनाधिगन्तव्यं धार्य च प्रयतात्मना ॥ ३८ ॥

सर्वभूतात्मभूतस्य हरस्यामिततेजसः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे शृणु।
यच्छ्रुत्वा मनुजव्याघ्र सर्वान् कामानवाप्स्यसि ॥ ३९ ॥

॥ ध्यानम् ॥

शान्तं पद्मानस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्रं त्रिनेत्रं
 शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।
 नागं पाशं घण्टां प्रलयहुतवहं साङ्कुशं वामभागे
 नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः ।
 सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः ॥ १ ॥
 जटी चर्मी शिखण्डी च सर्वज्ञः सर्वभावनः ।
 हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः ॥ २ ॥
 प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः शाश्वतो ध्रुवः ।
 इमशानवासी भगवान् खचरो गोचरोऽर्द्दनः ॥ ३ ॥
 अभिवाद्यो महाकर्मा तपस्वी भूतभावनः ।
 उन्मत्तवेषप्रच्छन्नः सर्वलोकप्रजापतिः ॥ ४ ॥
 महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशाः ।
 महात्मा सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः ॥ ५ ॥
 लोकपालोऽन्तर्हितात्मा प्रसादो हयगर्दभिः ।
 पवित्रं च महांश्चैव नियमो नियमाश्रितः ॥ ६ ॥
 सर्वकर्मा स्वयम्भूत आदिरादिकरो निधिः ।
 सहस्राक्षो विशालाक्षः सोमो नक्षत्रसाधकः ॥ ७ ॥
 चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्ग्रहो ग्रहपतिर्वरः ।
 अत्रिरत्न्यानमस्कर्ता मृगबाणार्पणोऽनघः ॥ ८ ॥

महातपा घोरतपा अदीनो दीनसाधकः ।
 संवत्सरकरो मन्त्रः प्रमाणं परमं तपः ॥९॥

 योगी योज्यो महाबीजो महारेता महाबलः ।
 सुवर्णरेताः सर्वज्ञः सुबीजो बीजवाहनः ॥१०॥

 दशाबाहुस्त्वनिमिषो नीलकण्ठ उमापतिः ।
 विश्वरूपः स्वयंश्रेष्ठो बलवीरोऽबलो गणः ॥११॥

 गणकर्ता गणपतिर्दिग्वासाः काम एव च ।
 मन्त्रवित् परमो मन्त्रः सर्वभावकरो हरः ॥१२॥

 कमण्डलुधरो धन्वी बाणहस्तः कपालवान् ।
 अशानी शतधी खड्डी पट्टिशी चाऽऽयुधी महान् ॥१३॥

 सुवहस्तः सुरूपश्च तेजस्तेजस्करो निधिः ।
 उष्णिषी च सुवक्रश्च उदयो विनतस्तथा ॥१४॥

 दीर्घश्च हरिकेशश्च सुतीर्थः कृष्ण एव च ।
 सृगालरूपः सिद्धार्थो मुण्डः सर्वशुभङ्करः ॥१५॥

 अजश्च बहुरूपश्च गन्धधारी कपर्द्यपि ।
 ऊर्ध्वरेता ऊर्ध्वलिङ्गं ऊर्ध्वशायी नमःस्थलः ॥१६॥

 त्रिजटी चीरवासाश्च रुद्रः सेनापतिर्विभुः ।
 अहश्चरो नक्तञ्चरस्तिग्ममन्युः सुवर्चसः ॥१७॥

 गजहा दैत्यहा कालो लोकधाता गुणाकरः ।
 सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माम्बरावृतः ॥१८॥

कालयोगी महानादः सर्वकामश्चतुष्पथः।
निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः ॥ १९ ॥

बहुभूतो बहुधरः स्वर्भानुरमितो गतिः।
नृत्यप्रियो नित्यनर्तो नर्तकः सर्वलालसः ॥ २० ॥

घोरो महातपाः पाशो नित्यो गिरिरुहो नभः।
सहस्रहस्तो विजयो व्यवसायो ह्यतन्द्रितः ॥ २१ ॥

अधर्षणो धर्षणात्मा यज्ञहा कामनाशकः।
दक्षयागापहारी च सुसहो मध्यमस्तथा ॥ २२ ॥

तेजोपहारी बलहा मुदितोऽर्थोऽजितो वरः।
गम्भीरघोषो गम्भीरो गम्भीरबलवाहनः ॥ २३ ॥

न्यग्रोधरूपो न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थितिर्विभुः।
सुतीक्ष्णदशनश्वैव महाकायो महाननः ॥ २४ ॥

विष्वकसेनो हरिर्यज्ञः संयुगापीडवाहनः।
तीक्ष्णतापश्च हर्यश्चः सहायः कर्मकालवित् ॥ २५ ॥

विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो बडवामुखः।
हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्मा हुताशनः ॥ २६ ॥

उग्रतेजा महातेजा जन्यो विजयकालवित्।
ज्योतिषामयनं सिद्धिः सर्वविग्रह एव च ॥ २७ ॥

शिरवी मुण्डी जटी ज्वाली मूर्तिजो मूर्धजो बली।
वैणवी पणवी ताली खली कालकटङ्कटः ॥ २८ ॥

नक्षत्रविग्रहमतिर्गुणबुद्धिर्लयोऽगमः ।
प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागः सर्वगोऽमुखः ॥ २९ ॥

विमोचनः सुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः ।
मेद्रजो बलचारी च महीचारी स्तुतस्तथा ॥ ३० ॥

सर्वतूर्यविनोदी च सर्वातोद्यपरिग्रहः ।
व्यालरूपो गुहावासी गुहो माली तरङ्गवित् ॥ ३१ ॥

त्रिदशस्त्रिकालधृक् कर्मसर्वबन्धविमोचनः ।
बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधि शत्रुविनाशनः ॥ ३२ ॥

साञ्छ्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसाधुनिषेवितः ।
प्रस्कन्दनो विभागज्ञोऽतुल्यो यज्ञविभागवित् ॥ ३३ ॥

सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः ।
हैमो हेमकरो यज्ञः सर्वधारी धरोत्तमः ॥ ३४ ॥

लोहिताक्षो महाक्षश्च विजयाक्षो विशारदः ।
सञ्च्छंहो निग्रहः कर्ता सर्पचीरनिवासनः ॥ ३५ ॥

मुख्योऽमुख्यश्च देहश्च काहलिः सर्वकामदः ।
सर्वकालप्रसादश्च सुबलो बलरूपधृक् ॥ ३६ ॥

सर्वकामवरश्वैव सर्वदः सर्वतोमुखः ।
आकाशनिर्विरूपश्च निपाती ह्यवशः खगः ॥ ३७ ॥

रौद्ररूपोऽशुरादित्यो बहुरश्मिः सुवर्चसी ।
वसुवेगो महावेगो मनोवेगो निशाचरः ॥ ३८ ॥

सर्ववासी श्रियावासी उपदेशकरोऽकरः।
 मुनिरात्मनिरालोकः समग्रश्च सहस्रदः ॥ ३९ ॥

पक्षी च पक्षरूपश्च अतिदीप्तो विशाम्पतिः।
 उन्मादो मदनः कामो ह्यश्वत्थोऽर्थकरो यशः ॥ ४० ॥

वामदेवश्च वामश्च प्रागदक्षिणश्च वामनः।
 सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः सिद्धसाधकः ॥ ४१ ॥

भिक्षुश्च भिक्षुरूपश्च विपणो मृदुरव्ययः।
 महासेनो विशाखश्च षष्ठिभागो गवां पतिः ॥ ४२ ॥

वज्रहस्तश्च विष्कम्भी चमूस्तम्भन एव च।
 वृत्तावृत्तकरस्तालो मधुर्मधुकलोचनः ॥ ४३ ॥

वाचस्पत्यो वाजसनो नित्यमाश्रितपूजितः।
 ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित् ॥ ४४ ॥

ईशान ईश्वरः कालो निशाचारी पिनाकवान्।
 निमित्तस्थो निमित्तं च नन्दिर्नन्दिकरो हरिः ॥ ४५ ॥

नन्दीश्वरश्च नन्दी च नन्दनो नन्दिवर्घनः।
 भगहारी निहन्ता च कालो ब्रह्मा पितामहः ॥ ४६ ॥

चतुर्मुखो महालिङ्गश्चारुलिङ्गस्तथैव च।
 लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः ॥ ४७ ॥

बीजाध्यक्षो बीजकर्ता अध्यात्माऽनुगतो बलः।
 इतिहासः सकल्पश्च गौतमोऽथ निशाकरः ॥ ४८ ॥

दम्भो ह्यदम्भो वैदम्भो वश्यो वशकरः कलिः।
 लोककर्ता पशुपतिर्महाकर्ता ह्यनौषधः ॥ ४९ ॥

अक्षरं परमं ब्रह्म बलवच्चक एव च।
नीतिर्द्युनीतिः शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतः ॥ ५० ॥

बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणोऽथ त्वमित्रजित्।
वेदकारो मन्त्रकारो विद्वान् समरमर्दनः ॥ ५१ ॥

महामेघनिवासी च महाधोरो वशीकरः।
अग्निज्वालो महाज्वालो अतिधूमो हुतो हविः ॥ ५२ ॥

वृषणः शङ्करो नित्यं वर्चस्वी धूमकेतनः।
नीलस्तथाऽङ्गलुब्धश्च शोभनो निरवग्रहः ॥ ५३ ॥

स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भागी भागकरो लघुः।
उत्सङ्गश्च महाङ्गश्च महागर्भपरायणः ॥ ५४ ॥

कृष्णवर्णः सुवर्णश्च इन्द्रियं सर्वदेहिनाम्।
महापादो महाहस्तो महाकायो महायशाः ॥ ५५ ॥

महामूर्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः।
महान्तको महाकर्णो महोषश्च महाहनुः ॥ ५६ ॥

महानासो महाकम्बुर्महाग्रीवः इमशानभाक्।
महावक्षा महोरस्को ह्यन्तरात्मा मृगालयः ॥ ५७ ॥

लम्बनो लम्बितोषश्च महामायः पयोनिधिः।
महादन्तो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः ॥ ५८ ॥

महानखो महारोमो महाकोशो महाजटः।
प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो गिरिसाधनः ॥ ५९ ॥

स्नेहनोऽस्नेहनश्चैव अजितश्च महामुनिः।
वृक्षाकारो वृक्षकेतुरनलो वायुवाहनः ॥ ६० ॥

गण्डली मेरुधामा च देवाधिपतिरेव च।
अर्थर्वशीर्षः सामास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः ॥ ६१ ॥

यजुः पादभुजो गुह्यः प्रकाशो जड्जमस्तथा।
अमोघार्थः प्रसादश्च अभिगम्यः सुदर्शनः ॥ ६२ ॥

उपकारः प्रियः सर्वः कनकः काञ्चनच्छविः।
नाभिर्नन्दिकरो भावः पुष्करः स्थपतिः स्थिरः ॥ ६३ ॥

द्वादशस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञो यज्ञसमाहितः।
नक्तं कलिश्च कालश्च मकरः कालपूजितः ॥ ६४ ॥

सगणो गणकारश्च भूतवाहनसारथिः।
भस्मशायो भस्मगोप्ता भस्मभूतस्तरुर्गणः ॥ ६५ ॥

लोकपालस्तथाऽलोको महात्मा सर्वपूजितः।
शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः ॥ ६६ ॥

आश्रमस्थः क्रियावस्थो विश्वकर्ममतिर्वरः।
विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालः सुनिश्चलः ॥ ६७ ॥

कपिलः कपिशः शुक्ल आयुश्चैव परोऽपरः।
गन्धर्वो ह्यदितिस्ताक्ष्यः सुविज्ञेयः सुशारदः ॥ ६८ ॥

परश्वधायुधो देव अनुकारी सुबान्धवः।
तुम्बवीणो महाक्रोध ऊर्ध्वरेता जलेशयः ॥ ६९ ॥

उग्रो वंशकरो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः।
सर्वाङ्गरूपो मायावी सुहृदो ह्यनिलोऽनलः ॥ ७० ॥

बन्धनो बन्धकर्ता च सुवन्धनविमोचनः।
सयज्ञारिः सकामारिमहादंष्ट्रे महायुधः ॥ ७१ ॥

बहुधा निन्दितः शर्वः शङ्करः शङ्करोऽधनः।
अमरेशो महादेवो विश्वदेवः सुरारिहा ॥ ७२ ॥

अहिर्बुद्ध्योऽनिलाभश्च चेकितानो हविस्तथा।
अजैकपाच्च कापाली त्रिशङ्कुरजितः शिवः ॥ ७३ ॥

धन्वन्तरिर्धूमकेतुः स्कन्दो वैश्रवणस्तथा।
धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा ध्रुवो धरः ॥ ७४ ॥

प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमा सविता रविः।
उषङ्गुश्च विधाता च मान्याता भूतभावनः ॥ ७५ ॥

विभुर्वर्णविभावी च सर्वकामगुणावहः।
पद्मनाभो महागर्भश्चन्द्रवक्रोऽनिलोऽनलः ॥ ७६ ॥

बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणः पुण्यचञ्चुरी।
कुरुकर्ता कुरुवासी कुरुभूतो गुणौषधः ॥ ७७ ॥

सर्वाशयो दर्भचारी सर्वेषां प्राणिनां पतिः।
देवदेवः सुखासक्तः सदसत् सर्वरत्नवित् ॥ ७८ ॥

कैलासगिरिवासी च हिमवद्विरिसंश्रयः।
कूलहारी कूलकर्ता बहुविद्यो बहुप्रदः ॥ ७९ ॥

वणिजो वर्धकी वृक्षो वकुलश्चन्दनश्छदः।
सारग्रीवो महाजत्रुरलोलश्च महौषधः ॥ ८० ॥

सिद्धार्थकारी सिद्धार्थश्छन्दोव्याकरणोत्तरः।
सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहवाहनः ॥ ८१ ॥

प्रभावात्मा जगत्कालस्थालो लोकहितस्तरुः।
सारङ्गो नवचक्राङ्गः केतुमाली सभावनः ॥ ८२ ॥

भूतालयो भूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः ॥ ८३ ॥

वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च विभुर्भवः।
अमोघः संयतो ह्यश्वो भोजनः प्राणधारणः ॥ ८४ ॥

धृतिमान् मतिमान् दक्षः सत्कृतश्च युगाधिपः।
गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्मवसनो हरिः ॥ ८५ ॥

हिरण्यबाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनाम्।
प्रकृष्टारिम्हाहर्षो जितकामो जितेन्द्रियः ॥ ८६ ॥

गान्धारश्च सुवासश्च तपः सक्तो रतिर्नरः।
महागीतो महानृत्यो ह्यप्सरोगणसेवितः ॥ ८७ ॥

महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः ।
आवेदनीय आदेशः सर्वगन्धसुखावहः ॥ ८८ ॥

तोरणस्तारणो वातः परिधीः पतिखेचरः।
संयोगो वर्धनो वृद्धो अतिवृद्धो गुणाधिकः ॥ ८९ ॥

नित्यमात्मसहायश्च देवासुरपतिः पतिः।
युक्तश्च युक्तबाहुश्च देवो दिवि सुपर्वणः ॥ ९० ॥

आषाढश्च सुषाढश्च ध्रुवोऽथ हरिणो हरः।
वपुरावर्तमानेभ्यो वसुश्रेष्ठो महापथः ॥ ९१ ॥

शिरोहारी विर्मशश्च सर्वलक्षणलक्षितः।
अक्षश्च रथयोगी च सर्वयोगी महाबलः ॥ ९२ ॥

समान्नायोऽसमान्नायस्तीर्थदेवो महारथः।
निर्जीवो जीवनो मन्त्रः शुभाक्षो बहुकर्कशः ॥ ९३ ॥

रत्नप्रभूतो रक्ताङ्गो महार्णवनिपानवित्।
मूलं विशालो ह्यमृतो व्यक्ताव्यक्तस्तपोनिधिः ॥ ९४ ॥

आरोहणोऽधिरोहश्च शीलधारी महायशाः।
सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः ॥ ९५ ॥

युगरूपो महारूपो महानागहनो वधः।
न्यायनिर्वपणः पादः पण्डितो ह्यचलोपमः ॥ ९६ ॥

बहुमालो महामालः शशी हरसुलोचनः।
विस्तारो लवणः कूपस्त्रियुगः सफलोदयः ॥ ९७ ॥

त्रिलोचनो विषण्णाङ्गो मणिविद्धो जटाधरः।
बिन्दुर्विसर्गः सुमुखः शरः सर्वायुधः सहः ॥ ९८ ॥

निवेदनः सुखाजातः सुगन्धारो महाधनुः।
गन्धपाली च भगवानुत्थानः सर्वकर्मणाम् ॥ ९९ ॥

मन्थानो बहुलो वायुः सकलः सर्वलोचनः।
तलस्तालः करस्थाली ऊर्ध्वसंहननो महान् ॥ १०० ॥

छत्रं सुच्छत्रो विरव्यातो लोकः सर्वाश्रयः क्रमः ।
मुण्डो विरूपो विकृतो दण्डी कुण्डी विकुर्वणः ॥ १०१ ॥

हर्यक्षः ककुभो वज्री शतजिह्वः सहस्रपात् ।
सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सर्वदेवमयो गुरुः ॥ १०२ ॥

सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत् ।
पवित्रं त्रिकुन्मन्त्रः कनिष्ठः कृष्णपिङ्गलः ॥ १०३ ॥

ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतभीपाशशक्तिमान् ।
पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः ॥ १०४ ॥

गमस्तिर्ब्रह्मकृद्-ब्रह्मी ब्रह्मविद्-ब्राह्मणो गतिः ।
अनन्तरूपो नैकात्मा तिग्मतेजाः स्वयम्भुवः ॥ १०५ ॥

ऊर्ध्वगात्मा पशुपतिर्वातरंहा मनोजवः ।
चन्दनी पद्मनालायः सुरभ्युत्तरणो नरः ॥ १०६ ॥

कर्णिकारमहास्वग्वी नीलमौलिः पिनाकधृक् ।
उमापतिरुमाकान्तो जाह्वीधृगुमाधवः ॥ १०७ ॥

वरो वराहो वरदो वरेण्यः सुमहास्वनः ।
महाप्रसादो दमनः शत्रुहा श्वेतपिङ्गलः ॥ १०८ ॥

पीतात्मा परमात्मा च प्रयतात्मा प्रधानधृक् ।
सर्वपार्श्वमुखस्यक्षो धर्मसाधारणो वरः ॥ १०९ ॥

चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वरः ।
साध्यर्षिर्वसुरादित्यो विवस्वान् सविताऽमृतः ॥ ११० ॥

व्यासः सर्गः सुसङ्खेपो विस्तरः पर्ययो नरः।
ऋतुः संवत्सरो मासः पक्षः सञ्चासमापनः ॥ १११ ॥

कलाः काष्ठा लवा मात्रा मुहूर्ताहः क्षपाः क्षणाः।
विश्वक्षेत्रं प्रजाबीजं लिङ्गमाद्यस्तु निर्गमः ॥ ११२ ॥

सदसद्यक्तमव्यक्तं पिता माता पितामहः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम् ॥ ११३ ॥

निर्वाणं ह्लादनश्चैव ब्रह्मलोकः परा गतिः।
देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः ॥ ११४ ॥

देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः।
देवासुरमहामात्रो देवासुरगणाश्रयः ॥ ११५ ॥

देवासुरगणाध्यक्षो देवासुरगणाग्रणीः।
देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः ॥ ११६ ॥

देवासुरेश्वरो विश्वो देवासुरमहेश्वरः।
सर्वदेवमयोऽचिन्त्यो देवतात्माऽत्मसम्भवः ॥ ११७ ॥

उद्दिन्द्रिविक्रमो वैद्यो विरजो नीरजोऽमरः।
ईङ्ग्यो हस्तीश्वरो व्याघ्रो देवसिंहो नरर्षभः ॥ ११८ ॥

विकुधोऽग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः।
सुयुक्तः शोभनो वज्री प्रासानां प्रभवोऽव्ययः ॥ ११९ ॥

गुहः कान्तो निजः सर्गः पवित्रं सर्वपावनः।
शृङ्गी शृङ्गप्रियो बन्धु राजराजो निरामयः ॥ १२० ॥

अभिरामः सुरगणो विरामः सर्वसाधनः।
ललाटाक्षो विश्वदेवो हरिणो ब्रह्मवर्चसः ॥ १२१ ॥

स्थावराणां पतिश्वैव नियमेन्द्रियवर्धनः।
सिद्धार्थः सिद्धभूतार्थोऽचिन्त्यः सत्यब्रतः शुचिः ॥ १२२ ॥

ब्रताधिपः परं ब्रह्म भक्तानां परमा गतिः।
विमुक्तो मुक्ततेजाश्च श्रीमान् श्रीवर्धनो जगत् ॥ १२३ ॥

श्रीमान् श्रीवर्धनो जगत् ॐ नम इति।

॥ उत्तरभागः ॥

यथा प्रधानं भगवान् इति भक्त्या स्तुतो मया।
यं न ब्रह्मादयो देवा विदुस्तत्त्वेन नर्षयः ॥ १ ॥

स्तोतव्यमर्च्य वन्द्यं च कः स्तोष्यति जगत्पतिम्।
भक्तिं त्वेवं पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्विभुः ॥ २ ॥

ततोऽभ्यनुज्ञां सम्प्राप्य स्तुतो मतिमतां वरः।
शिवमेभिः स्तुवन् देवं नामभिः पुष्टिवर्धनैः ॥ ३ ॥

नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तः प्राप्नोत्यात्मानमात्मना।
ऋषयश्वैव देवाश्च स्तुवन्त्येतेन तत्परम् ॥ ४ ॥

स्तूयमानो महादेवस्तुष्यते नियमात्मभिः।
भक्तानुकम्भी भगवान् आत्मसंस्थाकरो विभुः ॥ ५ ॥

तथैव च मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधानतः।
आस्तिकाः श्रद्धानाश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तवैः ॥ ६ ॥

भक्त्या ह्यनन्यमीशानं परं देवं सनातनम्।
 कर्मणा मनसा वाचा भावेनामिततेजसः ॥७॥
 शयाना जाग्रमाणाश्च ब्रजन्मुपविशंस्तथा।
 उन्मिषन्निमिषंश्वैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः ॥८॥
 शृणवन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च ते भवम्।
 स्तुवन्तः स्तूयमानाश्च तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
 जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु।
 जन्तोर्विंगतपापस्य भवे भक्तिः प्रजायते ॥१०॥
 उत्पन्ना च भवे भक्तिरनन्या सर्वभावतः।
 भाविनः कारणे चास्य सर्वयुक्तस्य सर्वथा ॥११॥
 एतद्देवेषु दुष्टापं मनुष्येषु न लभ्यते।
 निर्विद्मा निश्वला रुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी ॥१२॥
 तस्यैव च प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृणाम्।
 येन यान्ति परां सिद्धिं तद्वावगतचेतसः ॥१३॥
 ये सर्वभावानुगताः प्रपद्यन्ते महेश्वरम्।
 प्रपन्नवत्सलो देवः संसारात् तान् समुद्धरेत् ॥१४॥
 एवम् अन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचनम्।
 मनुष्याणामृते देवं नान्या शक्तिस्तपोबलम् ॥१५॥
 इति तेनेन्द्रकल्पेन भगवान् सदसत्पतिः।
 कृत्तिवासाः स्तुतः कृष्ण तपिण्डना शुद्धबुद्धिना ॥१६॥
 स्तवमेतं भगवतो ब्रह्मा स्वयमधारयत्।
 गीयते च स बुद्ध्येत ब्रह्मा शङ्करसन्निधौ ॥१७॥

इदं पुण्यं पवित्रं च सर्वदा पापनाशनम्।
योगदं मोक्षदं चैव स्वर्गदं तोषदं तथा ॥ १८ ॥

एवमेतत् पठन्ते य एकभक्तया तु शङ्करम्।
या गतिः साह्ययोगानां ब्रजन्त्येतां गतिं तदा ॥ १९ ॥

स्तवमेतं प्रयत्नेन सदा रुद्रस्य सन्निधौ।
अब्दमेकं चरेद्भक्तः प्रामुयादीप्सितं फलम् ॥ २० ॥

एतद्रहस्यं परमं ब्रह्मणो हृदि संस्थितम्।
ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच मृत्यवे ॥ २१ ॥

मृत्युः प्रोवाच रुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तप्तिष्ठमागमत्।
महता तपसा प्राप्तस्तप्तिष्ठना ब्रह्मसद्भानि ॥ २२ ॥

तप्तिः प्रोवाच शुक्राय गौतमाय च भार्गवः।
वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधव ॥ २३ ॥

नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय धीमते।
यमाय प्राह भगवान् साध्यो नारायणोऽच्युतः ॥ २४ ॥

नाचिकेताय भगवान् आह वैवस्वतो यमः।
मार्कण्डेयाय वार्ण्यं नाचिकेतोऽभ्यभाषत ॥ २५ ॥

मार्कण्डेयान्मया प्राप्तं नियमेन जनार्दन।
तवाप्यहम् अमित्रम् स्तवं दद्यां ह्यविश्रुतम् ॥ २६ ॥

स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यं वेदेन सम्मितम्।
नास्य विद्मं विकुर्वन्ति दानवा यक्षराक्षसाः।
पिशाचा यातुधानाश्च गुह्यका भुजगा अपि ॥ २७ ॥

यः पठेत शुचिर्भूत्वा ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः।
अभग्नयोगो वर्षं तु सोऽश्वमेधफलं लभेत्॥ २८॥

जैगीषव्य उवाच

ममाष्टगुणमैश्वर्यं दत्तं भगवता पुरा।
यत्नेनान्येन बलिना वाराणस्यां युधिष्ठिर॥ २९॥

वाराणस्यां युधिष्ठिर ॐ नम इति।

गर्ग उवाच

चतुःषष्ठ्यमददत् कलाज्ञानं ममाद्गुतम्।
सरस्वत्यास्तटे तुष्टो मनोयज्ञेन पाण्डव॥ ३०॥

मनोयज्ञेन पाण्डव ॐ नम इति।

वैशम्पायन उवाच

ततः कृष्णोऽब्रवीद्वाक्यं पुनर्मतिमतां वरः।
युधिष्ठिरं धर्मनिधिं पुरुहृतमिवेश्वरः।
उपमन्युर्मयि प्राह तपन्निव दिवाकरः॥ ३१॥

अशुभैः पापकर्माणो ये नराः कलुषीकृताः।
ईशानं न प्रपद्यन्ते तमोराजसवृत्तयः।
ईश्वरं सम्प्रपद्यन्ते द्विजा भावितभावनाः॥ ३२॥

एवमेव महादेव भक्ता ये मानवा भुवि।
न ते संसारवशागा इति मे निश्चिता मतिः॥ ३३॥

इति मे निश्चिता मतिः ॐ नम इति।

॥ इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्याम्
आनुशासनिकपर्वणि अष्टादशोऽध्यायः॥

दुःस्वप्न-दुःशकुन-दुर्गति-दौर्मनस्य
 दुर्भिक्ष-दुर्व्यसन-दुःसह-दुर्यशांसि ।
 उत्पात-ताप-विषभीतिम् असद्-ग्रहार्ति
 व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥
 ॥ इति श्री-शिवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ शिवसहस्रनामस्तोत्रम् (विष्णुकृतम्) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविद्वोपशान्तये ॥
 नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
 येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ॥
 नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
 देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥
 वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
 वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
 वन्दे सूर्यशशाङ्कवहिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
 वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥

ऋषय ऊचुः

कथं देवेन वै सूत देवदेवान्महेश्वरात्।
 सुदर्शनारब्यं वै लब्यं वक्तुर्मर्हसि विष्णुना ॥ १ ॥

सूत उवाच

देवानामसुरेन्द्राणामभवच्च सुदारुणः।
सर्वेषामेव भूतानां विनाशकरणो महान्॥ २ ॥

ते देवाः शक्तिमुसलैः सायकैर्नतपर्वभिः।
प्रभिद्यमानाः कुन्तैश्च दुदुर्वुर्भयविह्लाः॥ ३ ॥

पराजितास्तदा देवा देवदेवेश्वरं हरिम्।
प्रणेमुस्तं सुरेशानं शोकसंविग्रहमानसाः॥ ४ ॥

तान् समीक्ष्याथ भगवान् देवदेवेश्वरो हरिः।
प्रणिपत्य स्थितान् देवानिदं वचनमब्रवीत्॥ ५ ॥

वत्साः किमिति वै देवाश्च्युतालङ्कारविक्रमाः।
समागताः ससन्तापा वक्तुमर्हथ सुब्रताः॥ ६ ॥

तस्य तद् वचनं श्रुत्वा तथाभूताः सुरोत्तमाः।
प्रणम्याहुर्यथावृत्तं देवदेवाय विष्णवे॥ ७ ॥

भगवन् देवदेवेश विष्णो जिष्णो जनार्दन।
दानवैः पीडिताः सर्वे वयं शरणमागताः॥ ८ ॥

त्वमेव देवदेवेश गतिर्नः पुरुषोत्तम।
त्वमेव परमात्मा हि त्वं पिता जगतामपि॥ ९ ॥

त्वमेव भर्ता हर्ता च भोक्ता दाता जनार्दन।
हन्तुमर्हसि तस्मात् त्वं दानवान् दानवार्दन॥ १० ॥

दैत्याश्च वैष्णवैर्ब्रह्मै रौद्रैर्याम्यैः सुदारुणैः।
कौबेरैश्चैव सौम्यैश्च नैऋत्यैर्वारुणैर्दृढैः॥ ११ ॥

वायव्यैश्च तथा ऽग्नेर्यैरेशानैर्वार्षिकैः शुभैः ।
सौरै रौद्रैस्तथा भीमैः कम्पनैर्जूम्हणौदृढैः ॥ १२ ॥

अवध्या वरलाभात् ते सर्वे वारिजलोचन।
सूर्यमण्डलसम्भूतं त्वदीयं चक्रमुद्घतम् ॥ १३ ॥

कुण्ठितं हि दधीचेन च्यावनेन जगद्गुरो ।
दण्डं शार्ङ्गं तवास्त्रं च लब्धं दैत्यैः प्रसादतः ॥ १४ ॥

पुरा जलन्धरं हेतुं निर्मितं त्रिपुरारिणा ।
रथाङ्गं सुशितं घोरं तेन तान् हन्तुमर्हसि ॥ १५ ॥

तस्मात् तेन निहन्तव्या नान्यैः शस्त्रशतैरपि ।
ततो निशम्य तेषां वै वचनं वारिजेक्षणः ॥ १६ ॥

वाचस्पतिमुखानाह स हरिश्चक्रभृत् स्वयम् ।

श्रीविष्णुरुवाच

भो भो देवा महादेवं सर्वैर्देवैः सनातनैः ॥ १७ ॥

सम्प्राप्य साम्प्रतं सर्वं करिष्यामि दिवौकसाम् ।
देवा जलन्धरं हन्तुं निर्मितं हि पुरारिणा ॥ १८ ॥

लब्ध्वा रथाङ्गं तेनैव निहत्य च महासुरान् ।
सर्वान् धुन्धुमुखान् दैत्यान् अष्टष्टिशतान् सुरान् ॥ १९ ॥

सबान्धवान् क्षणादेव युष्मान् सन्तारयाम्यहम् ।

सूत उवाच

एवमुत्तवा सुरश्रेष्ठान् सुरश्रेष्ठमनुस्मरन् ॥ २० ॥

सुरश्रेष्ठस्तदा श्रेष्ठं पूजयामास शङ्करम्।
लिङ्गं स्थाप्य यथान्यायं हिमवच्छिखरे शुभे ॥ २१ ॥

मेरुपर्वतसङ्काशं निर्मितं विश्वकर्मणा।
त्वरितारव्येन रुद्रेण रौद्रेण च जनार्दनः ॥ २२ ॥

स्थाप्य सम्पूज्य गन्धाद्यैर्ज्वालाकारं मनोरमम्।
तुष्टाव च तदा रुद्रं सम्पूज्यामौ प्रणम्य च ॥ २३ ॥

देवं नाम्नां सहस्रेण भवाद्येन यथाक्रमम्।
पूजयामास च शिवं प्रणवाद्यं नमोन्तकम् ॥ २४ ॥

देवं नाम्नां सहस्रेण भवाद्येन महेश्वरम्।
प्रतिनाम स पद्मेन पूजयामास शङ्करम् ॥ २५ ॥

अग्नौ च नामभिर्देवं भवाद्यैः समिदादिभिः।
स्वाहान्तौर्विधिवद्वुत्वा प्रत्येकमयुतं प्रभुम् ॥ २६ ॥

तुष्टाव च पुनः शम्भुं भवाद्यैर्भवमीश्वरम्।

॥ न्यासः ॥

अस्य श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य
श्रीविष्णुः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, परमात्मा श्रीशङ्करो देवता।

॥ ध्यानम् ॥

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं
वामाङ्गारूढगौरीनिविडकुचभराभोगगाढोपगूढम् ।
नानालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिनेत्रं
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीविष्णुरुवाच

भवः शिवो हरो रुद्रः पुरुषः पद्मलोचनः ।
अर्थितव्यः सदाचारः सर्वशम्भुमहेश्वरः ॥ १ ॥

ईश्वरः स्थाणुरीशानः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
वरीयान् वरदो वन्द्यः शङ्करः परमेश्वरः ॥ २ ॥

गङ्गाधरः शूलधरः परार्थैकप्रयोजनः ।
सर्वज्ञः सर्वदेवादिगिरिधन्वा जटाधरः ॥ ३ ॥

चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विद्वान् विश्वामरेश्वरः ।
वेदान्तसारसन्दोहः कपाली नीललोहितः ॥ ४ ॥

ध्यानाधारोऽपरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः ।
अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गः स्वर्गसाधनः ॥ ५ ॥

ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः ।
वामदेवो महादेवः पाण्डुः परिदृढोऽदृढः ॥ ६ ॥

विश्वरूपो विश्वपाक्षो वागीशः शुचिरन्तरः ।
सर्वप्रणयसंवादी वृषाङ्गो वृषवाहनः ॥ ७ ॥

ईशः पिनाकी खद्वाङ्गी चित्रवेषश्चिरन्तरः ।
तमोहरो महायोगी गोसा ब्रह्माङ्गहृजटी ॥ ८ ॥

कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणवात्मकः ।
उन्मत्तवेषश्चक्षुष्यो दुर्वासाः स्मरशासनः ॥ ९ ॥

दृढायुधः स्कन्दगुरुः परमेष्ठी परायणः।
अनादिमध्यनिधनो गिरिशो गिरिबान्धवः ॥ १० ॥

कुबेरबन्धुः श्रीकण्ठो लोकवर्णोत्तमोत्तमः।
सामान्यदेवः कोटण्डी नीलकण्ठः परश्वधी ॥ ११ ॥

विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः।
धर्मकर्माक्षमः क्षेत्रं भगवान् भगनेत्रभित् ॥ १२ ॥

उग्रः पशुपतिस्तार्क्ष्यप्रियभक्तः प्रियंवदः।
दान्तोदयाकरो दक्षः कपर्दी कामशासनः ॥ १३ ॥

श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः।
लोककर्ता भूतपतिर्महाकर्ता महौषधी ॥ १४ ॥

उत्तरो गोपतिर्गांसा ज्ञानगम्यः पुरातनः।
नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमसोमरतः सुखी ॥ १५ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमो महानीतिर्महामतिः।
अजातशत्रुरालोकः सम्भाव्यो हव्यवाहनः ॥ १६ ॥

लोककारो वेदकारः सूत्रकारः सनातनः।
महर्षिः कपिलाचार्यो विश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः ॥ १७ ॥

पिनाकपाणिर्भूर्देवः स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् सदा।
त्रिधामा सौभगः शर्वसर्वज्ञः सर्वगोचरः ॥ १८ ॥

ब्रह्मधृग्विश्वसूक्स्वर्गः कर्णिकारः प्रियः कविः।
शाखो विशाखो गोशाखः शिवो नैकः क्रतुः समः ॥ १९ ॥

गङ्गाप्लवोदको भावः सकलः स्थपतिस्थिरः।
विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः ॥ २० ॥

सगणो गणकार्यश्च सुकीर्तिश्छन्नसंशयः।
कामदेवः कामपालो भस्मोद्घूलितविग्रहः ॥ २१ ॥

भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कान्तः कृतागमः।
समायुक्तो निवृत्तात्मा धर्मयुक्तः सदाशिवः ॥ २२ ॥

चतुर्मुखश्चतुर्बाहुदुरावासो दुरासदः।
दुर्गमो दुर्लभो दुर्गः सर्वायुधविशारदः ॥ २३ ॥

अध्यात्मयोगनिलयः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः।
शुभाङ्गो लोकसारङ्गो जगदीशोऽमृताशनः ॥ २४ ॥

भस्मशुद्धिकरो मेरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः।
हिरण्यरेतास्तरणिर्मरीचिर्महिमालयः ॥ २५ ॥

महाहृदो महार्गभः सिद्धवृन्दारवन्दितः।
व्याघ्रचर्मधरो व्याली महाभूतो महानिधिः ॥ २६ ॥

अमृताङ्गोऽमृतवपुः पञ्चयज्ञः प्रभञ्जनः।
पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः पारिजातः परावरः ॥ २७ ॥

सुलभः सुव्रतः शूरो वाञ्छयैकनिधिर्निधिः।
वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ २८ ॥

आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवानचलाचलः।
प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ २९ ॥

धनुर्धरो धनुर्वदो गुणराशिर्गुणाकरः।
अनन्तदृष्टिरानन्दो दण्डो दमयिता दमः ॥ ३० ॥

अभिवाद्यो महाचार्यो विश्वकर्मा विशारदः।
वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः ॥ ३१ ॥

उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामोऽजितप्रियः।
कल्याणप्रकृतिः कल्पः सर्वलोकप्रजापतिः ॥ ३२ ॥

तपःस्वी तारको धीमान् प्रधानप्रभुरव्ययः।
लोकपालोऽन्तर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः ॥ ३३ ॥

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो नियमो नियमाश्रयः।
चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्विरामो विद्वमच्छविः ॥ ३४ ॥

भक्तिगम्यः परब्रह्ममृगबाणार्पणोऽनघः।
अद्विराजालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ॥ ३५ ॥

सर्वकर्माचलस्त्वष्टा मङ्गल्यो मङ्गलावृतः।
महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ ३६ ॥

अहः संवत्सरो व्यासिः प्रमाणं परमं तपः।
संवत्सरकरो मन्त्रः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ ३७ ॥

अजः सर्वेश्वरः स्त्रिग्धो महारेता महाबलः।
योगी योग्यो महारेताः सिद्धः सर्वादिरभिदः ॥ ३८ ॥

वसुर्वसुमनाः सत्यसर्वपापहरो हरः।
अमृतः शाश्वतः शान्तो बाणहस्तः प्रतापवान् ॥ ३९ ॥

कमण्डलुधरो धन्वी वेदाङ्गो वेदविन्मुनिः।
भ्राजिष्णुर्भैजनं भोक्ता लोकनेता दुराधरः ॥ ४० ॥

अतीन्द्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः।
कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः ॥ ४१ ॥

महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरन्दरः।
निशाचरः प्रेतचारिमहाशक्तिर्महाद्युतिः ॥ ४२ ॥

अनिर्देशयवपुः श्रीमान् सर्वहार्यमितो गतिः।
बहुश्रुतो बहुमयो नियतात्मा भवोद्भवः ॥ ४३ ॥

ओजस्तेजोद्युतिकरो नर्तकः सर्वकामकः।
नृत्यप्रियो नृत्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रतापनः ॥ ४४ ॥

बुद्धस्पष्टाक्षरो मन्त्रः सन्मानः सारसम्मूवः।
युगादिकृद् युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः ॥ ४५ ॥

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शरभः शरभो धनुः।
अपां निधिरधिष्ठानविजयो जयकालवित् ॥ ४६ ॥

प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः।
विरोचनः सुरगणो विद्येशो विबुधाश्रयः ॥ ४७ ॥

बालरूपो बलोन्माथी विवर्तो गहनो गुरुः।
करणं कारणं कर्ता सर्वबन्धविमोचनः ॥ ४८ ॥

विद्वत्तमो वीतभयो विश्वभर्ता निशाकरः।
व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः ॥ ४९ ॥

दुन्दुभो ललितो विश्वो भवात्मात्मनि संस्थितः।
वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरहा वीरभृद्विराट्॥५०॥

वीरचूडामणिर्वेत्ता तीव्रनादो नदीधरः।
आज्ञाधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टः शिवालयः॥५१॥

वालखिल्यो महाचापस्तिग्मांशुर्निधिरव्ययः।
अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधापतिः॥५२॥

मधवान् कौशिको गोमान् विश्रामः सर्वशासनः।
ललटाक्षो विश्वदेहः सारः संसारचक्रभृत्॥५३॥

अमोघदण्डी मध्यस्थो हिरण्यो ब्रह्मवर्चसी।
परमार्थः परमयः शम्बरो व्याघ्रकोऽनलः॥५४॥

रुचिर्वररुचिर्वन्द्यो वाचस्पतिरहर्पतिः।
रविर्विरोचनः स्कन्धः शास्ता वैवस्वतोऽजनः॥५५॥

युक्तिरुन्नतकीर्तिश्च शान्तरागः पराजयः।
कैलासपतिकामारिः सविता रविलोचनः॥५६॥

विद्वत्तमो वीतभयो विश्वहर्ताॽनिवारितः।
नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥५७॥

दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःस्वप्नाशनः।
उत्तारको दुष्कृतिहा दुर्धर्षो दुःसहोऽभयः॥५८॥

अनादिर्भूमुवो लक्ष्मीः किरीटित्रिदशाधिपः।
विश्वगोपा विश्वभर्ता सुधीरो रुचिराङ्गदः॥५९॥

जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान् नीतिमान् नयः।
विशिष्टः काश्यपो भानुर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ ६० ॥

प्रणवः सप्तधाचारो महाकायो महाधनुः।
जन्माधिपो महादेवः सकलागमपारगः ॥ ६१ ॥

तत्त्वातत्त्वविवेकात्मा विभूष्णुभूतिभूषणः।
ऋषिर्ब्राह्मणविजिष्णुर्जन्ममृत्युजरातिगः ॥ ६२ ॥

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञान्तोऽमोघविक्रमः।
महेन्द्रो दुर्भरः सेनी यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ ६३ ॥

पञ्चब्रह्मसमुत्पत्तिर्विशेशो विमलोदयः।
आत्मयोनिरनाद्यन्तः षड्विंशत्सप्तलोकधृक् ॥ ६४ ॥

गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्वावासः प्रभाकरः।
शिशुर्गिरिरितः सम्राद्धुषेणः सुरशत्रुहा ॥ ६५ ॥

अमोघोऽरिष्टमथनो मुकुन्दो विगतज्वरः।
स्वयञ्च्योतिरनुज्योतिरात्मज्योतिरचञ्चलः ॥ ६६ ॥

पिङ्गलः कपिलश्मश्रुः शास्त्रनेत्रत्रयीतनुः।
ज्ञानस्कन्धो महाज्ञानी निरुत्पत्तिरूपपङ्गवः ॥ ६७ ॥

भगो विवस्वानादित्यो योगाचार्यो बृहस्पतिः।
उदारकीर्तिरुद्योगी सद्योगी सदसन्मयः ॥ ६८ ॥

नक्षत्रमाली राकेशः साधिष्ठानः षडाश्रयः।
पवित्रपाणिः पापारिर्मणिपूरो मनोगतिः ॥ ६९ ॥

हृत्युण्डरीकमासीनः शुक्रः शान्तो वृषाकपिः ।
विष्णुर्ग्रहपतिः कृष्णः समर्थोऽर्थनाशनः ॥ ७० ॥

अर्धमशत्रुरक्षयः पुरुहूतः पुरुष्टुतः ।
ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ॥ ७१ ॥

जगद्विषेषिसुगतः कुमारः कुशलागमः ।
हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान् नानाभूतधरो ध्वनिः ॥ ७२ ॥

अरोगो नियमाध्यक्षो विश्वामित्रो द्विजोत्तमः ।
बृहज्ज्योतिः सुधामा च महाज्योतिरनुत्तमः ॥ ७३ ॥

मातामहो मातरिश्वा नभस्वान् नागहारधृक् ।
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः ॥ ७४ ॥

निरावरणधर्मज्ञो विरिञ्चो विष्टरश्रवाः ।
आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिज्ञानमूर्तिर्महायशाः ॥ ७५ ॥

लोकचूडामणिर्वीरश्चण्डसत्यपराक्रमः ।
व्यालकल्पो महाकल्पो महावृक्षः कलाधरः ॥ ७६ ॥

अलङ्करिष्णुस्त्वचलो रोचिष्णुर्विक्रमोत्तमः ।
आशुशब्दपतिर्वेगी प्लवनः शिरिखसारथिः ॥ ७७ ॥

असंसृष्टोऽतिथिः शक्रः प्रमाथी पापनाशनः ।
वसुश्रवाः कव्यवाहः प्रतसो विश्वभोजनः ॥ ७८ ॥

जर्यो जराधिशमनो लोहितश्च तनूनपात् ।
पृष्ठदश्वो नभो योनिः सुप्रतीकस्तमिस्त्रहा ॥ ७९ ॥

निदाघस्तपनो मेघः पक्षः परपुरञ्जयः।
मुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः ॥ ८० ॥

वसन्तो माधवो ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहनः।
अङ्गिरा मुनिरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः ॥ ८१ ॥

पावनः पुरुजिच्छक्रस्त्रिविद्यो नरवाहनः।
मनोबुद्धिरहङ्कारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ॥ ८२ ॥

तेजोनिधिर्ज्ञाननिधिर्विपाको विघ्नकारकः।
अधरोऽनुत्तरो झेयो ज्येष्ठो निःश्रेयसालयः ॥ ८३ ॥

शैलो नगस्तनुर्दीहो दानवारिरिन्दमः।
चारुधीर्जनकश्चारुविशल्यो लोकशल्यकृत् ॥ ८४ ॥

चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः।
आम्नायोऽथ समाम्नायस्तीर्थदेवशिवालयः ॥ ८५ ॥

बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः।
न्यायनिर्वाहको न्यायो न्यायगम्यो निरञ्जनः ॥ ८६ ॥

सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सर्वशस्त्रप्रभञ्जनः।
मुण्डो विरूपो विकृतो दण्डी दान्तो गुणोत्तमः ॥ ८७ ॥

पिङ्गलाक्षोऽथ हर्यक्षो नीलग्रीवो निरामयः।
सहस्रबाहुः सर्वशः शरण्यः सर्वलोकभृत् ॥ ८८ ॥

पद्मासनः परञ्ज्योतिः परावरपरम्फलः।
पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः ॥ ८९ ॥

परावरज्ञो बीजेशः सुमुखः सुमहास्वनः ।
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः ॥ ९० ॥

देवासुरमहामात्रो देवासुरमहाश्रयः ।
देवादिदेवो देवर्षिदेवासुरवरप्रदः ॥ ९१ ॥

देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहेश्वरः ।
सर्वदेवमयोऽचिन्त्यो देवतात्माऽत्मसम्भवः ॥ ९२ ॥

ईङ्ग्योऽनीशः सुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः ।
विबुधाग्रवरश्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ॥ ९३ ॥

शिवज्ञानरतः श्रीमान् शिखिश्रीपर्वतप्रियः ।
जयस्तम्भो विशिष्टम्भो नरसिंहनिपातनः ॥ ९४ ॥

ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः ।
नन्दी नन्दीश्वरो नग्नो नग्नव्रतधरः शुचिः ॥ ९५ ॥

लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो युगाध्यक्षो युगावहः ।
स्ववशः सवशः स्वर्गस्वरः स्वरमयस्वनः ॥ ९६ ॥

बीजाध्यक्षो बीजकर्ता धनकृद् धर्मवर्धनः ।
दम्भोऽदम्भो महादम्भः सर्वभूतमहेश्वरः ॥ ९७ ॥

इमशाननिलयस्तिष्यः सेतुरप्रतिमाकृतिः ।
लोकोत्तरस्कुटालोकस्त्यम्बको नागभूषणः ॥ ९८ ॥

अन्धकारिमर्मखद्वेषी विष्णुकन्धरपातनः ।
वीतदोषोऽक्षयगुणो दक्षारिः पूषदन्तहृत् ॥ ९९ ॥

धूर्जटिः खण्डपरशुः सकलो निष्कलोऽनघः ।
आधारः सकलाधारः पाण्डुराभो मृडो नटः ॥ १०० ॥

पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः ।
सामग्रेयः प्रियकरः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ १०१ ॥

मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः ।
जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रियः ॥ १०२ ॥

सद्गतिः सत्कृतिः सक्तः कालकण्ठः कलाधरः ।
मानी मान्यो महाकालः सद्गूतिः सत्परायणः ॥ १०३ ॥

चन्द्रसञ्जीवनः शास्ता लोकगृहोऽमराधिपः ।
लोकबन्धुर्लोकनाथः कृतज्ञः कृतिभूषणः ॥ १०४ ॥

अनपाय्यक्षरः कान्तः सर्वशास्त्रभृतां वरः ।
तेजोमयो द्युतिघरो लोकमायोऽग्रणीरणुः ॥ १०५ ॥

शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
ज्योतिर्मयो निराकारो जगन्नाथो जलेश्वरः ॥ १०६ ॥

तुम्बवीणी महाकायो विशोकः शोकनाशनः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः शुद्धः शुद्धी रथाक्षजः ॥ १०७ ॥

अव्यक्तलक्षणोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो विशां पतिः ।
वरशीलो वरतुलो मानो मानधनो मयः ॥ १०८ ॥

ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्यमः ।
वेदा धाता विधाता च अत्ता हर्ता चतुर्मुखः ॥ १०९ ॥

कैलासशिखरावासी सर्वावासी सतां गतिः ।
हिरण्यगर्भो हरिणः पुरुषः पूर्वजः पिता ॥ ११० ॥

भूतालयो भूतपतिर्भूतिदो भुवनेश्वरः ।
संयोगी योगविद्वद्व्या ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रियः ॥ १११ ॥

देवप्रियो देवनाथो देवज्ञो देवचिन्तकः ।
विषमाक्षः कलाध्यक्षो वृषाङ्को वृषवर्धनः ॥ ११२ ॥

निर्मदो निरहङ्कारो निर्माहो निरुपद्रवः ।
दर्पहा दर्पितो दृप्तः सर्वतुपरिवर्तकः ॥ ११३ ॥

सप्तजिह्वः सहस्रार्चिः स्त्रिग्धः प्रकृतिदक्षिणः ।
भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भ्रान्तिनाशनः ॥ ११४ ॥

अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपणिडतः ।
निष्कण्टकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः ॥ ११५ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यकीर्तिस्तम्भकृतागमः ।
अकम्पितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत् ॥ ११६ ॥

सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणोऽनलः ।
स्कन्धः स्कन्धधरो धूर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ॥ ११७ ॥

अपराजितः सर्वसहो विद्ग्धः सर्ववाहनः ।
अधृतः स्वधृतः साध्यः पूर्तमूर्तिर्यशोधरः ॥ ११८ ॥

वराहश्वङ्गधृग् वायुर्बलवानेकनायकः ।
श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेकधृक् ॥ ११९ ॥

श्रीवल्लभशिवारम्भः शान्तभद्रः समञ्जसः ।
भूशयो भूतिकृद्भूतिर्भूषणो भूतवाहनः ॥ १२० ॥

अकायो भक्तकायस्थः कालज्ञानी कलावपुः ।
सत्यब्रतमहात्यागी निष्ठाशान्तिपरायणः ॥ १२१ ॥

परार्थवृत्तिर्वरदो विविक्तः श्रुतिसागरः ।
अनिर्विण्णो गुणग्राही कलङ्काङ्कः कलङ्कहा ॥ १२२ ॥

स्वभावरुद्धो मध्यस्थः शत्रुघ्नो मध्यनाशकः ।
शिखण्डी कवची शूली चण्डी मुण्डी च कुण्डली ॥ १२३ ॥

मेरखली कवची खड्डी मायी संसारसारथिः ।
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः ॥ १२४ ॥

असङ्घेयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान् कार्यकोविदः ।
वेद्यो वेदार्थविद्वासा सर्वाचारो मुनीश्वरः ॥ १२५ ॥

अनुत्तमो दुराघर्षो मधुरः प्रियदर्शनः ।
सुरेशः शरणं सर्वः शब्दब्रह्मसतां गतिः ॥ १२६ ॥

कालभक्षः कलङ्कारिः कङ्कणीकृतवासुकिः ।
महेष्वासो महीभर्ता निष्कलङ्को विश्वङ्गलः ॥ १२७ ॥

द्युमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ।
निवृत्तः संवृतः शिल्पो व्यूढोरस्को महाभुजः ॥ १२८ ॥

एकज्योतिर्निरातङ्को नरो नारायणप्रियः ।
निर्लेपो निष्पत्त्वात्मा निर्व्यग्रो व्यग्रनाशनः ॥ १२९ ॥

स्तव्यस्तवप्रियः स्तोता व्यासमूर्तिरनाकुलः ।
निरवद्यपदोपायो विद्याराशिरविक्रमः ॥ १३० ॥

प्रशान्तबुद्धिरक्षुद्रः क्षुद्रहा नित्यसुन्दरः ।
धैर्याग्र्यधुर्यो धात्रीशः शाकल्यः शर्वरीपतिः ॥ १३१ ॥

परमार्थगुरुर्दृष्टिर्गुरुराश्रितवत्सलः ।
रसो रसज्ञः सर्वज्ञः सर्वसत्त्वावलम्बनः ॥ १३२ ॥

॥ इति श्रीलिङ्गमहापुराणे पूर्वभागे अष्टनवतितमे अध्याये भगवता
विष्णुना प्रोक्तं श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

सूत उवाच

एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टव वृषभध्वजम् ॥ १५९ ॥

स्नापयामास च विभुः पूजयामास पङ्कजैः ।
परीक्षार्थं हरेः पूजाकमलेषु महेश्वरः ॥ १६० ॥

गोपयामास कमलं तदैकं भुवनेश्वरः ।
हृतपुष्पो हरिस्तत्र किमिदं त्वभ्यचिन्तयत् ॥ १६१ ॥

ज्ञात्वा स्वनेत्रमुद्भूत्य सर्वसत्त्वावलम्बनम् ।
पूजयामास भावेन नाम्ना तेन जगदुरुम् ॥ १६२ ॥

ततस्तत्र विभुर्द्वृष्ट्वा तथाभूतं हरो हरिम् ।
तस्मादवतताराशु मण्डलात् पावकस्य च ॥ १६३ ॥

कोटिभास्करसङ्काशं जटामुकुटमण्डितम् ।
ज्वालामालावृतं दिव्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं भयङ्करम् ॥ १६४ ॥

शूलटङ्गगदाचक्कुन्तपाशधरं हरम्।
वरदाभयहस्तं च द्वीपिचर्मोत्तरीयकम्॥ १६५॥

इत्थमूर्तं तदा दृष्ट्वा भवं भस्मविभूषितम्।
हृष्टो नमश्चकाराशु देवदेवं जनार्दनः॥ १६६॥

दुद्रवुस्तं परिक्रम्य सेन्द्रा देवास्त्रिलोचनम्।
चचाल ब्रह्मभुवनं चकम्पे च वसुन्धरा॥ १६७॥

ददाह तेजस्तच्छम्भोः प्रान्तं वै शतयोजनम्।
अधस्ताच्चोर्ध्वतश्चैव हाहेत्यकृत भूतले॥ १६८॥

तदा प्राह महादेवः प्रहसन्निव शङ्करः।
सम्प्रेक्ष्य प्रणयाद् विष्णुं कृताञ्जलिपुरुं स्थितम्॥ १६९॥

ज्ञातं मयेदमधुना देवकार्यं जनार्दनं।
सुदर्शनारब्धं चक्रं च ददामि तव शोभनम्॥ १७०॥

यद् रूपं भवता दृष्टं सर्वलोकभयङ्करम्।
हिताय तव यत्नेन तव भावाय सुव्रत॥ १७१॥

शान्तं रणाजिरे विष्णो देवानां दुःखसाधनम्।
शान्तस्य चास्त्रं शान्तं स्याच्छान्तेनास्त्रेण किं फलम्॥ १७२॥

शान्तस्य समरे चास्त्रं शान्तिरेव तपस्त्विनम्।
योद्धुः शान्त्या बलच्छेदः परस्य बलवृद्धिदः॥ १७३॥

देवैरशान्तैर्यद् रूपं मदीयं भावयाव्ययम्।
किमायुधेन कार्यं वै योद्धुं देवारिसूदन॥ १७४॥

क्षमा युधि न कार्या वै योद्धुं देवारिसूदन।
अनागते व्यतीते च दौर्बल्ये स्वजनोत्करे ॥ १७५ ॥

अकालिके त्वधर्मे च अनर्थे वाऽरिसूदन।
एवमुत्तवा ददौ चक्रं सूर्यायुतसमप्रभम् ॥ १७६ ॥

नेत्रं च नेता जगतां प्रभुर्वै पद्मसन्निभम्।
तदाप्रभृति तं प्राहुः पद्माक्षमिति सुब्रतम् ॥ १७७ ॥

दत्त्वैनं नयनं चक्रं विष्णवे नीललोहितः।
पस्पर्शं च कराभ्यां वै सुशुभाभ्यामुवाच ह ॥ १७८ ॥

वरदोऽहं वरश्रेष्ठ वरान् वरय चेप्सितान्।
भक्त्या वशीकृतो नूनं त्वयाऽहं पुरुषोत्तम् ॥ १७९ ॥

इत्युक्तो देवदेवेन देवदेवं प्रणम्य तम्।
त्वयि भक्तिर्महादेव प्रसीद वरमुत्तमम् ॥ १८० ॥

नान्यमिच्छामि भक्तानामार्तयो नास्ति यत् प्रभो।
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य दयावान् सुतरां भवः ॥ १८१ ॥

पस्पर्शं च ददौ तस्मै श्रद्धां शीतांशुभूषणः।
प्राह चैवं महादेवः परमात्मानमच्युतम् ॥ १८२ ॥

मयि भक्तश्च वन्द्यश्च पूज्यश्चैव सुरासुरैः।
भविष्यसि न सन्देहो मत्प्रसादात् सुरोत्तम् ॥ १८३ ॥

यदा सती दक्षपुत्री विनिन्द्यैव सुलोचना।
मातरं पितरं दक्षं भविष्यति सुरेश्वरी ॥ १८४ ॥

दिव्या हैमवती विष्णो तदा त्वमपि सुव्रत।
भगिनीं तव कल्याणीं देवीं हैमवतीमुमाम्॥ १८५॥

नियोगाद् ब्रह्मणः साध्वीं प्रदास्यसि ममैव ताम्।
मत्सम्बन्धी च लोकानां मध्ये पूज्यो भविष्यसि॥ १८६॥

मां दिव्येन च भावेन तदा प्रभृति शङ्करम्।
द्रक्ष्यसे च प्रसन्नेन मित्रभूतमिवात्मना॥ १८७॥

इत्युत्त्वाऽन्तर्दधे रुद्रो भगवान् नीललोहितः।
जनार्दनोऽपि भगवान् देवानामपि सन्निधौ॥ १८८॥

अयाचत महादेवं ब्रह्माणं मुनिभिः समम्।
मया प्रोक्तं स्तवं दिव्यं पद्मयोने सुशोभनम्॥ १८९॥

यः पठेच्छृणुयाद् वाऽपि श्रावयेद् वा द्विजोत्तमान्।
प्रतिनाम्नि हिरण्यस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात्॥ १९०॥

अश्वमेधसहस्रेण फलं भवति तस्य वै।
घृताद्यैः स्नापयेद् रुद्रं स्थाल्या वै कलशैः शुभैः॥ १९१॥

नामां सहस्रेणानेन श्रद्धया शिवमीश्वरम्।
सोऽपि यज्ञसहस्रस्य फलं लब्ध्वा सुरेश्वरैः॥ १९२॥

पूज्यो भवति रुद्रस्य प्रीतिर्भवति तस्य वै।
तथाऽस्त्विति तथा प्राह पद्मयोनिर्जनार्दनम्॥ १९३॥

जग्मतुः प्रणिपत्यैन देवदेवं जगदुरुम्।
तस्मान्नामां सहस्रेण पूजयेदनघो द्विजाः।
जपेन्नामां सहस्रं च स याति परमां गतिम्॥ १९४॥

॥ इति श्रीलिङ्गमहापुराणे पूर्वभागे सहस्रनामभिः पूजनाद्
विष्णुचक्रलाभो नामाष्टनवतितमोऽध्यायः ॥

दुःस्वप्नदुःशकुनदुर्गतिदौर्मनस्य
दुर्भिक्षदुर्ब्यसनदुःसहदुर्यशांसि ।
उत्पाततापविषभीतिम् असद्ग्रहार्ति
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥

॥ इति श्रीशिवसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ मातृभूतशतकम् ॥

श्रेयांसि यं सकृदनुस्मरतां जनाना-
माविर्भवन्ति सुमहान्त्यनपायवन्ति ।
तं त्वामनन्यशरणशरणं भजामि
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १ ॥

आनन्द सच्चिदमलात्मनि शङ्खरे त्वय्-
यन्तर्निषीदति भवन्तमहो विहाय ।
भ्राम्यामि मोहविवशो भवशोकखिन्नः
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ २ ॥

मदाससूनुरयमित्यनुकम्पनीये
मर्यम्भके समधिरोप्य वृथाऽपराधान् ।
युक्तं किमेवमधिगन्तुमुदासिकां ते
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३ ॥

सौशील्यघस्मरधनस्मयनष्टसंज्ञान्
 अज्ञो विषीदति यदेष वृथानुधावन्।
 तत्पश्यतस्तव दया न कथं दयालो
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४ ॥

भक्तिं त्वयि श्रितवतां वद कः प्रहीणः
 सा वा तवाहमिति किं न सकृत्प्रपत्तिः।
 किं तद्वतामनवितासि कुतोऽस्म्युपेक्ष्यः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ५ ॥

दासस्तवाहमिति यः सकृदप्युपैति
 रक्ष्यः स एष इति ते विधृतव्रतस्य।
 रक्षोऽहमस्यथ कियानफलो विलम्बः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ६ ॥

आज्ञापयेः कथमये तव गर्भवासं
 दुःखापवर्गिणि गिरीश समाश्रयेयम्।
 आस्तां सहस्रमपि नानुगुणं त्विदं ते
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ७ ॥

सर्वज्ञ शङ्करमहेशदयालु शब्दाः
 किं पारिभाषिकतयोपगता भवन्तम्।
 विज्ञापिते विलपितेऽपि किमित्युदास्से
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ८ ॥

हीनैः सदाधिकृतिकैरपि धृष्यमाणे
 सावज्ञमेवमपदे मयि दृश्यमाने।
 नेदं क्षणं क्षणमुपेक्षणमाश्रयेथाः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ९ ॥

आलस्यदुर्विषयसत्त्वपलापनिद्रा-
 पद्मामदाधिगदनीचसमागमादीन् ।
 विद्मान् धुनीहि घटय त्वयि मेऽभिलाषं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १० ॥

कासावनन्यसुलभा भवदीयता मे
 भूयिष्ठनिष्ठुर विपद्विषमा क्व वृत्तिः।
 एतन्न किं तव यशोभरभङ्गभीतं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ११ ॥

सम्फुल्लचम्पकलसन्नवमल्लिकादि-
 हृद्योपचार रुचिरं भवदर्चनं मे।
 पाण्योस्तरङ्गय निरन्तरमन्तरात्मन्
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १२ ॥

दारैः सुतैश्शुभतमैर्द्रविणैः प्रशान्तैः
 स्वर्गापवर्गफलसिद्धिभिरभ्युपेताः ।
 नन्दन्ति ते करुणया किमसाध्यमस्याः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १३ ॥

कालं कियन्तमधदन्तुरमन्तरङ्गं
 त्वच्चिन्तनं तनितुमक्षममीक्षसे त्वम्।
 त्वद्भक्तये स्पृहयतशिशव मे दयस्व
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १४ ॥

वित्तस्मयान्ध गृहकानन सम्प्रचार
 धौरैयभावमवधूय कदा मद्भ्वी।
 स्तां त्वत्प्रदक्षिणविधौ करुणावशात्ते
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १५ ॥

स्यात्त्वत्पदं विदलदम्बुजसौरभश्री-
 विश्रामसीमभिरुद्वितवाकप्रपञ्चैः ।
 स्तोत्रैर्विभो मम कदा नु सदानुबन्धि
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १६ ॥

पादौ प्रदक्षिणविधौ भवदर्चनेषु
 पाणी स्तवेषु फणितीरपि मेऽन्तरात्मन्।
 ध्याने मनश्च विनियुक्तं दयस्व मङ्गु
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १७ ॥

मूढोऽपटुर्भवदुपश्रयणक्रमेषु
 रूढोपतापविततिर्विपदां कदम्बैः।
 सीमा तृषामहमतोऽस्मि तवानुकम्यः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ १८ ॥

अम्बेयमप्रतिहतप्रतिपत्तिशक्तिः
 सर्वज्ञता च भवतो भुवने निरूढा।
 भूतिश्व वां निरवधिस्तनयस्तु सोऽहं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ १९॥

पुत्रादयो न सुखयन्ति हि भावभेदात्
 सोपाधिकप्रणयसम्ब्रमिभिः किमेतैः।
 माता पिता च निरुपाधिकृपानिधिस्त्वं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २०॥

उद्दद्दस्वनगलं गलदम्बुनेत्रं
 रोमाञ्चकञ्चुकितमञ्चितघर्मविन्दु ।
 त्वन्नामनि श्रवणगामिनि कल्पयाङ्गं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २१॥

दुर्लभ्यदुर्विपरिणत्यसुखानुबन्धि-
 विष्णावितेषु विषयेषु वृथा निपात्य।
 मां खेदयन्न कथमुद्धहसेऽनुकम्पां
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २२॥

कन्दर्पकोटिशतसुन्दरमिन्दुरेखा-
 चूडं दरस्मितपरिस्फुरदाननेन्दुम्।
 कान्तं नगेन्द्रसुतया कलये भवन्तं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २३॥

सृष्टौ स्थितावपि लयेऽस्ति तव प्रभुत्वं
दुःखे तु मे द्वितयगोचरमेव दृश्यम्।
व्यङ्गं तदन्तविषयं तव को विलम्बः
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २४॥

मन्दस्मितैर्दिशि दिशि स्फुरदिन्दुचूडैः
गौरीसखैः स्फटिकगौर मनोहराङ्गैः।
त्वद्विग्रहैः कबलयाविरतं मनो मे
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २५॥

प्रेमातिरेकशिशिरां त्वदपाङ्गधाराम्
आनन्दसिन्धुवलमानतरञ्जरेखाम् ।
सञ्चारयन्मयि सहाम्बिकया दयेथाः
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २६॥

भ्रूकिङ्गरास्तव विरिञ्चपुरन्दराद्याः
कस्त्वां विरोत्स्यति निरोत्स्यति किं ममैनः।
दैन्यं ततो न बलवत् किमु दीनबन्धो
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २७॥

अन्वेति शङ्कर न यं करुणाङ्गरस्ते
कस्तं विलोकयतु जल्पतु को धिनोतु।
केयं विभो विमुखता मयि किङ्गरेऽस्मिन्
श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ २८॥

भान्तं भवन्त्मनघं मणिभूषणौघैः
 भान्त्योमया विमलविद्वमपाटलाङ्गा।
 शृङ्गारिताङ्गमुपयामि शशाङ्गगौरं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ २९ ॥

मन्दस्मितैः करुणया शिशिरैः कटाक्षैः
 प्रेमातिरेकमधुरैरपि चाभिलापैः।
 आनन्दयिष्यसि कदा नु सहाम्बया त्वं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३० ॥

गोपायितेति कुलदैवतमित्यजस्म
 विस्वम्भतोऽर्पितभरं त्वयि दीनबन्धो।
 मामीक्षसे न कृपया यदि किं करोमि
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३१ ॥

एकं सकृद्यदलसो न पुराऽभजं त्वां
 नानादुरीशसतताश्रयदुर्विपाकः ।
 तस्यै न सोऽयमधुनाऽतिधुनाति चेतः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३२ ॥

एषा सुगन्धिचिकुरा जननी पिता त्वं
 का ते सुते मयि विभो करुणा प्रहाणिः।
 किञ्चापि सा न खलु सार्द्रहृदो जनन्याः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३३ ॥

त्वत्संविदा तरति शोकमिति श्रुतीनां
 भावो भवोन्नतिविधायि तवाभिधानम्।
 शोकापहं तदहमीश समाश्रयामि
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३४ ॥

त्वन्नामकीर्तनमधापहमाशयेन
 शंसन् पुराणनिकरो न किलार्थवादः।
 तत्संश्रयोऽहमकृपास्पदमस्मि किं ते
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३५ ॥

कर्मानुरोधि फलमित्यवगम्यमाने
 हेनोहृतौ शुभविधौ च पटीयसस्ते।
 कर्मेति कं प्रति तु वञ्चनचातुरीयं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३६ ॥

उत्सङ्गसीमनि सुगन्धिकचां निषण्णाम्
 उल्लासयन् कुचतटीनखरावमर्शैः।
 आभासि शङ्कर निरन्तरमन्तरङ्गे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३७ ॥

मन्देतरैरखिलमान्तरमन्धकारं
 माणिक्यभूषणमहोर्मिभिरंशुजालैः ।
 धुन्वन्वपुस्तव विभासय मानसे मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३८ ॥

अन्तर्वसद्भवदुदारपदारविन्द
 सन्दर्शनाय मम तत्प्रतिरोधकं द्राक्।
 अंहः कवाटपटलं विघटय्य देव
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ३९ ॥

चेतो मम त्वदनुचिन्तनबद्धतृष्णं
 मुष्णान्ति तच्च विषया मुहुरेधितार्थाः।
 विद्मान् जहि त्वयि विजृम्भय भक्तियोगं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४० ॥

द्वूषणितेन जगतः खलु सृष्टिरेषा
 तेनैव तेऽवनलयौ भुवने निरूढौ।
 तेनैव संहर ममाघततिं दयालो
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४१ ॥

अङ्गं शिरीषमृदुलं परुषैर्ममाश्म-
 प्रायैर्वचोभिरभिपीडितमीडनार्थे ।
 यत्तावकं तमपराधमिमं सहस्व
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४२ ॥

मन्दस्मितैर्भ्रुकुटिभिर्मधुरैः कटाक्षैः
 वामभ्रुवां नवनवैश्व वपुर्विलासैः।
 त्वां नोऽभजं तरलितस्तदिदं सहस्व
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४३ ॥

मन्दस्मितं मदनसुन्दरमिन्दुचूडम्
 उत्सङ्गविस्फुरदुमोरसिजस्पृशं त्वाम्।
 ध्यायन्वसानि दिवसानि नयन् कदा वा
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४४ ॥

पाटीरसारलहरीं तुहिनांशुधारां
 सौधाकरीमपि इरीमवमन्यमानः।
 त्वच्चिन्तनप्रभवनिर्वृतिभिः कदा स्यां
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४५ ॥

त्वामस्यसावजमुपासितुमक्षमोऽहं
 मोहान्ध्या बत धिया न यदेतदेनः।
 हार्या त्वयैव कृपया मम दुर्दशेयं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४६ ॥

वित्तार्जनस्य सकलः किमसावनेहा
 नेह स्थितेः फलमहो भवतो धनेहा।
 इत्थं दुरीश्वरगिरां पदमस्मि दीनः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४७ ॥

सांसारिकानवधिखेदपरम्परासू-
 न्मज्जन्मज्जदिव सीदति मानसं मे।
 आश्वासयाशु कृपया न किमीक्षसे त्वं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४८ ॥

लक्ष्मीपतिस्तव पदाभरणे स शेते
 भिक्षाटनेन वद कं प्रतिविप्रलम्भः।
 जानाम्यहं न किमशेषजगत्पतिं त्वां
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ४९ ॥

संसृत्युदन्वति वितन्वति दुःखमोह-
 ग्राहैर्व्यथामहह मे दृढमज्जनेन।
 त्वं क्रीडसीति सदृशं तव किं दयालो
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ५० ॥

मात्रा सुगन्धिकचया भवता च पित्रा
 युक्तः प्रसूजनकहीन इवावसीदन्।
 अस्मीति वां जगदधीश्वरयोरयुक्तं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ५१ ॥

मौङ्यादपाटवभरादपि पूजनं ते
 नाहं तनोमि तद्हं व्यथितो भवामि।
 विद्वानपास्य वितर त्वदुपासनां मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ५२ ॥

त्वद्वन्दनं ननु जगत्त्वयवन्द्यतायै
 त्वपूजनं तु भुवनत्रयपूज्यतायै।
 पुण्योच्चयेन तदिदं भवदीयता मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ५३ ॥

अल्पं महच्च सकलं फलमर्पणीयं
 देव त्वयैव खलु तत्किमपीहमानः।
 त्वामाश्रयाम्यगतिको वद किं तवागः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते ॥ ५४ ॥

कन्दर्पदर्पहरसुन्दररूपधेये
 मन्दस्मिते भुवनमङ्गलनामधेये।
 खेदापहे भवति खेलय मानसं मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥५५॥

सूर्योदये तिमिरजालमिवार्तिजालं
 धावन्न किं मम विभो यदि दृक्पथे स्याः।
 किं मे तथा न दयसेऽनुचितो विलम्बः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥५६॥

त्वं त्रायसे यदि निवारयितुं क्षमः को
 लभ्यं किमस्ति तव मय्यवसीदतीत्थम्।
 किं हीयते मदवने तव किं विलम्बैः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥५७॥

चन्द्रोपलामलभवत्कमनीयमूर्ति-
 सम्पूजनं सुदृढभक्त्यनघोपचारैः।
 इह सदा रचयितुं घटयाशु तन्मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥५८॥

संसारसिन्धुसमुदित्वरखेदमोद-
 वीचीपरिभ्रमपरिश्रमनोदनं मे।
 आकल्पय त्वदभिराधनहर्षभूतं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥५९॥

भक्तिस्पृशो भवति तस्य न शर्म तेन
 त्राणव्रताश्रुतिषु वा न सकृत् प्रपन्नः।
 कस्मात् करोषि करुणां न मयि प्रपन्ने
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६०॥

यन्मां न पालयसि तत्त्वदपाटवाद्वा
 यद्वा मदीयदुरिताद्वद् नाथ नायः।
 सर्वेश्वरो ननु भवानत एव नान्त्यः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६१॥

विश्वाधिनेतरि विपन्नजनावनस्थे
 नाथे सति त्वयि न यन्मम खेदभङ्गः।
 तत्ते यशोहरमतो विनिवेदयामि
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६२॥

अस्योदयतः समुपरोद्धुमनात्मनीनं
 सत्यं भवानघफलात्यर्णुभावनासु।
 नेशस्तु सोद्धुमियदस्म्यहमार्तवन्धौ
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६३॥

आमज्जतः प्रतिपदं विपदम्बुराशौ
 दृसं मम श्वसितुमप्यनधीश्वरस्य।
 किं पश्यतस्तव दया न कियान् विलम्बः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६४॥

स्वर्धेनवो न कति नो कति कल्पवृक्षाः
 श्रूवश्यतां न कति यन्त्यपरेऽप्युदाराः।
 भक्तिस्पृशां त्वयि भजे तमहं भवन्तं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६५॥

एनामुपपूवभरैर्जटिलामवस्थां
 प्राप्तं हि मां परिहसन्ति नितान्तमन्ये।
 त्वच्चेन्न पश्यसि दयार्द्रदशा गतिः का
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६६॥

श्रीशशारः कनकभूमिशारशशारासो
 वासस्तु रूप्यशिखरी धनदः सखा ते।
 त्वामाश्रितस्य मम किञ्च धुनोषि दैन्यं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६७॥

अत्यङ्कराणमुखखेदमहार्णवेऽस्मिन्
 मग्नस्य शङ्कर ममोत्तरणं प्रकल्प्य।
 त्वदपूजनं घटय सङ्कपितान्तरायं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६८॥

लोकेऽतिवर्तितुमलं तव शासनं कः
 पद्मासनो भवतु पद्मविलोचनो वा।
 तद्वर्णिपिं विधिकृतामपि मे विलुम्प
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥६९॥

निःसारतामपि विदन्विषयेष्वमीषु
 निःसीमसक्तिरहमेषु हि गाढमूढः।
 रक्ष्यस्त्वयैव करुणानिधिना प्रसह्य
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥७०॥

मन्त्रे तरङ्गितमणित्विषि पुष्पकलृप्ते
 मन्दस्मितं सह कदाऽम्बिकया भवन्तम्।
 पश्यामि पश्चिमतनूपहितोपबर्ह
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥७१॥

मथ्यात्मनीनविमुखे मलिनस्वभावे
 निर्वैदसागरनिमज्जनविप्लवेऽस्मिन् ।
 कस्माद् भवस्यकरुणः करुणानिधे त्वं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥७२॥

रुद्राक्षभृद्दसितभूषणधन्यमूर्तिः
 भावं वहन् प्रमुदितं भवदेकतानम्।
 कालं क्षिपेयमिति साधय कामनां मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥७३॥

त्वं चिद्धनोऽस्यहमसौ जडिमैकसीमा
 दुःखाकरः पुनरहं सुखशेवधिस्त्वम्।
 युक्ता न ते स्थितिरियं तव गर्भवासे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥७४॥

खेदं हरिष्यसि कदा शिशिरैः कटाक्षैः
 मोदं करिष्यसि कदा मृदुभिर्वचोभिः।
 इत्युत्सुकोऽस्मि करुणां कुरु किङ्करेऽस्मिन्
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ ७५॥

पाति प्रसह्य न किमर्भकमात्मनीनं
 संयोजकैर्गुरुजनः स्मर तं क्रमं त्वम्।
 भक्तिं बलाद्धवति कल्पय मे दयालो
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ ७६॥

सोऽहं न किञ्चिदपि साधु करोमि पापः
 तुङ्गं पदं त्वभिलषामि तदप्यलज्जः।
 त्वदातृतासदयतागरिमावमर्शी
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ ७७॥

शक्तो न कश्चिदपि शासनमन्तरा ते
 कः सेव्यतां त्वदितरः किमितः फलं वा।
 स्वामिन्नृपैमि शरणं करणौख्यभिस्त्वा
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ ७८॥

मृत्युञ्जयोऽसि कमलापतिवल्लभोऽसि
 तन्मृत्युदैन्यविपदोरपदं त्वदीयम्।
 त्वामाश्रितस्य मम किं सदृशी दशोयं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ ७९॥

किं जामिता न भवतो मम दुःखधारा-
 निर्मातुरस्मृतिपदं किमुपांशुयाजः।
 कस्मात्प्रभो किमपि शर्म न किं विघत्से
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ ८०॥

काहं क चोन्नतपदस्पृहयालुतेय-
 मात्मैव मामपहसत्यधुना तथाऽपि।
 त्वत्संश्रये सति किमस्ति दुरापमीश
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८१॥

कस्याग्रतः प्रकटयानिरदानकाण्डे
 कं हर्षयाणि नुतिभिः कमुपाश्रयाणि।
 मोघः श्रमेषु निपतेयमतो दयेथाः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८२॥

किं विद्यया किमु धनेन किमात्मजैर्वा
 किं जायया किमितरैस्त्वयि चेन्न चेतः।
 आनन्दशेवधिमतस्त्वयि देहि भक्तिं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८३॥

दासोऽस्मि दैन्यविवशस्त्वयि सर्वलोक-
 साम्राज्यसम्पदमकम्पितमश्ववाने ।
 यत्तन्न ते समुचितं विमृश प्रसीद
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८४॥

त्वामाश्रितस्त्वदितराश्रयदैन्यभङ्गम्
 अङ्गीकरोमि जगदीश कथं कथं वा।
 त्वां नायशः स्पृशतु तत्यज मयुपेक्षां
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८५॥

श्रान्तं वपुर्दुरधिपाश्रयधावनान्ते
 श्रान्तं वचो दुरधिपस्तुतिधोरणीभिः।
 क्रान्तं मनो दुरधिपाश्रयचिन्तयैव
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८६॥

हेमस्फुरत्तनुतरज्ञितकान्तिधारा-
 सम्भाव्यमानमणिभूषणदिव्यभासम्।
 मन्ये भवन्तमुमया मणिहेमपीठे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८७॥

स्वानन्दबिन्दुलव सम्लवमानसर्व-
 ब्रह्माण्डमण्डलमखण्डितवैभवं त्वाम्।
 कस्तोषयेत्तदपि तुष्य परिभ्रमैर्मे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८८॥

कारुण्यनिर्भरसुधारसशीतलाभिः
 काले कदा तव कटाक्षपरम्पराभिः।
 कष्टां दशामुपजहानि दृढोपगूढः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥८९॥

भक्ताभिभूत्यसहनो भवसि प्रतीतो
 भक्तोऽस्म्यहं त्वदभिधाग्रहणप्रसक्तः।
 तस्यास्य ते मयि कृपा न कथं विषणे
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९०॥

द्विक्लेयस्त्व वृपारसशीकराङ्गाः
 यास्तासु तत्तदवनप्रवणासु चेत् स्यात्।
 एका पुनर्मदवनप्रवणा क्षतिः का
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९१॥

श्रेयो रुणद्धि यदि पापगणस्तदा त्वां
 त्वन्नामकीर्तनमघक्षपणक्षमं मे।
 किन्नास्ति किं न दयसे मयि हन्त खिन्ने
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९२॥

तातप्रसूतनयदार सुहृद्दिरेवम्
 अर्थोपपत्तिविरहादहहावसीदन् ।
 नेतुं क्षणं न निपुणोऽस्मि ततः प्रसीद
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९३॥

श्रीशैलराजसुतया शिशिरैः कटाक्षैः
 मां वीक्ष्यमाणमसकृन्मधुरस्मितेन।
 सम्भावयन्मयि कदा नु दयिष्यसे त्वं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९४॥

पारे भवारव्यजलधेर्भगवन् वृपाकू-
 पारे भवत्यवतरिष्यति मे कदा वा।
 प्रेम्णा तृणीकृतपदं सकलं वितन्वन्
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९५॥

निर्धूतदुस्तिमिरमस्तसमस्ततत्तद्-
 दुर्वासनं हृदयमेतदये वितन्वन्।
 अस्मिन् भविष्यसि कदा नु सुखं निषण्णः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९६॥

मद्वर्णनैस्तव कदाऽस्तु मनः प्रसादो
 महूपथेऽस्तु च कदा तव दिव्यमूर्तिः।
 मत्कर्णं तव वचोऽस्तु कदेति साशं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९७॥

कालेऽर्कनन्दन लुलायकटुस्वनोद्य-
 त्कर्णज्वरापनयनैर्भवदुक्षजैर्मैं ।
 ध्वानामृतैः किमपि शर्म विनिर्मिमाणः
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९८॥

यं ते दया स्पृशति तन्नयनान्तदासाः
 ब्रह्मादयो जगति दीनजनास्पदा सा।
 दीनाग्रणीरहमतः पुनरुक्तिरेषा
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥९९॥

अन्यन्न मेऽभिमतमीश तदर्प्यतां वा
 मा वेष्पितं तु तदिदं भवताऽर्पणीयम्।
 यत्सर्वदा निभृतवृत्त्यभिधानमित्थं
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥१००॥

हे शङ्कर स्मरहर प्रमथाधिनाथ
 मन्नाथ साम्ब शशिचूड शिव त्रिशूलिन्।
 श्रीचित्सभेश करुणाकर फालनेत्र
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ १०१ ॥

एवं स्तवं प्रपठतां उपशृण्वताञ्चा-
 रोग्यायुरच्छशिवभक्ति धनर्द्धि विद्याः।
 दद्याः सुतानपि यशाश्च विमुक्तिमन्ते
 श्रीमातृभूत शिव पालय मां नमस्ते॥ १०२ ॥

श्रीमातृभूत शिव चन्दनसान्दलिसां
 सङ्कल्पस्तहेमतिलकां श्रितपुष्पमाल्याम्।
 अक्षणाऽमुना तव तनुं पिबतोऽक्ष्युदन्या
 स्यान्मे यथाशु फलिनीश तथा दयेथाः॥ १०३ ॥

मनो मे विक्रीतं तव चरणसेवां कलयितुं
 कृपामूल्यं लब्धं सुरभिचिकुरे सम्प्रति मया।
 न जाने तद्वृष्टं निवसति च वा धावति च वा
 कृतं भूयो भूयः करतलयुगास्फालनमुमे॥ १०४ ॥
 ॥ इति श्रीश्रीधरवेङ्कटेशार्यविरचितं मातृभूतशतकं सम्पूर्णम्।

॥ श्रीकाञ्चीकामकोटिपीठजगदुरुपरम्परास्तवः ॥

(पञ्चषष्ठितमैः पीठाधिपतिभिः
 श्रीमत्सुदर्शनमहादेवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतः)

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥ १ ॥

श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यान् अस्मद्दुरूप्न् सन्ततमानतोऽस्मि ॥ २ ॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥ ३ ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय सदाऽऽत्माद्वैतवेदिने।
श्रीमते शङ्कराचार्याय वेदान्तगुरवे नमः॥ ४ ॥

अविप्लुतब्रह्मचर्यान् अन्वितेन्द्रसरस्वतीन्।
आत्ममिथ्यावारपथान् अद्वैताचार्यसङ्कथान्॥ ५ ॥

आसेतुहिमवच्छैलं सदाचारप्रवर्तकान्।
जगदुरूप्न् स्तुमः काञ्चीशारदामठसंश्रयान्॥ ६ ॥

पवित्रितेतराद्वैतमठपीठीशिरोभुवे ।
श्रीकाञ्चीशारदापीठगुरवे भवभीरवे॥ ७ ॥

वार्तिकादिब्रह्मविद्याकर्ते ब्रह्मावतारिणे।
सुरेश्वराचार्यनाम्ने योगीन्द्राय नमो नमः॥ ८ ॥

अपोऽश्नन्नेव जैनान् य आप्राग्ज्योतिषमाच्छिनत्।
शिशुमाचार्यवाङ्वेणीरयरोधिमहोबलम् ॥ ९ ॥

सञ्ज्ञेपशारीरमुखप्रबन्धविवृताद्वयम् ।
ब्रह्मस्वरूपार्यभाष्यशान्त्याचार्यकपण्डितम्॥ १० ॥

सर्वज्ञाचन्द्रनाम्ना च सर्वतो भुवि विश्रुतम्।
सर्वज्ञासद्गुरुं वन्दे सर्वज्ञमिव भूगतम्॥ ११ ॥

मेधाविनं सत्यबोधं व्याधूतविमतोच्चयम्।
प्राच्यभाष्यत्रयव्याख्याप्रवीणं प्रभुमाश्रये॥ १२ ॥

ज्ञानानन्दमुनीन्द्रार्यं ज्ञानोत्तमपराभिधम्।
चन्द्रचूडपदासक्तं चन्द्रिकाकृतमाश्रये॥ १३ ॥

शुद्धानन्दमुनीन्द्राणां विद्धार्हतमत्विषाम्।
आनन्दज्ञानसेव्यानाम् आलम्बे चरणाम्बुजम्॥ १४ ॥

सर्वशाङ्करभाष्यौघभाष्यकर्तारमद्वयम्।
सर्ववार्तिकसद्वृत्तिकृतं श्रीशैलगं भजे॥ १५ ॥

कैवल्यानन्दयोगीन्द्रान् केवलं राजयोगिनः।
कैवल्यमात्रनिरतान् कलयेम जगद्गुरुन्॥ १६ ॥

श्रीकृपाशङ्करार्याणां मर्यादातीततेजसाम्।
षण्मताचार्यकजुषाम् अङ्गिद्वन्द्वमहं श्रये॥ १७ ॥

महिष्याय नमस्तस्मै महादेवाय योगिने।
सुरेश्वरापरारव्याय गुरवे दोषभीरवे॥ १८ ॥

स्तुमः सदा शिवानन्दचिद्धनेन्द्रसरस्वतीन्।
कामाक्षीचन्द्रमौल्यचर्चाकलनैकलसन्मतीन्॥ १९ ॥

सार्वभौमाभिधमहाब्रतचर्यापरायणान् ।
वन्दे जगदुरुंश्वन्दशेखरेन्द्रसरस्वतीन्॥ २० ॥

समाद्वात्रिंशदत्युग्रकाष्ठमौनसमाश्रयान् ।
जितमृत्यून् महालिङ्गभूतान् सच्चिद्धनान् नुमः॥ २१ ॥

महाभैरवदुस्तञ्चदुर्दान्तध्वान्तभास्करान् ।
विद्याधनान् नमस्यामि सर्वविद्याविचक्षणान्॥ २२ ॥

आचार्यपदपाथोजपरिचर्यापरायणम् ।
गङ्गाधरं नमस्यामः सदा गङ्गाधरार्चकम्॥ २३ ॥

जगज्जयिसुसौराष्ट्रजरदृष्टिमदापहान् ।
शकसिल्हकदर्पभान् ईडीमहि महायतीन्॥ २४ ॥

चतुस्समुद्रीक्रोडस्थवर्णाश्रमविचारकान् ।
श्रितविप्रवजस्कन्धसुवर्णान्दोलिकाचरान्॥ २५ ॥

प्रत्यहं ब्रह्मसाहस्रसन्तर्पणधृतब्रतान् ।
सदाशिवसमाहानान् स्मरामः सदुरुन् सदा॥ २६ ॥

मायालोकायतीभूतबृहस्पतिमदापहान् ।
वन्दे सुरेन्द्रवन्द्याङ्गीन् श्रीसुरेन्द्रसरस्वतीन्॥ २७ ॥

श्रीविद्याकरुणालब्धब्रह्मविद्याहृतामयान् ।
वन्दे वशंवदप्राणान् मुनीन् विद्याधनान् मुहुः॥ २८ ॥

विद्याधनकृपालब्धसर्ववेदान्तविस्तरम् ।
कौतस्कुतोत्पातकेतुं निशशङ्कं नौमि शङ्करम्॥ २९ ॥

चन्द्रचूडपदध्यानप्राप्तानन्दमहोदधीन् ।
यतीन्द्रांश्चन्द्रचूडेन्द्रान् स्मरामि मनसा सदा ॥ ३० ॥

नमामि परिपूर्णश्रीबोधान् ग्रावाभिलापकान्।
यदीक्षणात् पलायन्त प्राणिनामामयाधयः ॥ ३१ ॥

सच्चित्सुखान् प्रपद्येऽहं सुखम् आप्तगुहास्थितीन्।
चित्सुखाचार्यमीडेऽहं सत्सुखं कोङ्कणाश्रयम् ॥ ३२ ॥

भजे श्रीसच्चिदानन्दधनेन्द्रान् रससाधनात्।
लिङ्गात्मना परिणतान् प्रभासे योगसंश्रिते ॥ ३३ ॥

भगवत्पादपादाङ्गासक्तिनिर्णक्तमानसान्।
प्रज्ञाधनं चिद्विलासं महादेवं च मैथिलम् ॥ ३४ ॥

पूर्णबोधं च बोधं च भक्तियोगप्रवर्तकम्।
ब्रह्मानन्दधनेन्द्रं च नमामि नियतात्मनः ॥ ३५ ॥

चिदानन्दधनेन्द्राणां लम्बिकायोगसेविनाम्।
जीर्णपर्णाशिनां पादौ प्रपद्ये मनसा सदा ॥ ३६ ॥

सच्चिदानन्दनामानं शिवार्चनपरायणम्।
भाषापञ्चदशीप्राज्ञं भावयामि सदा मुदा ॥ ३७ ॥

भूप्रदक्षिणकर्मकसक्तं श्रीचन्द्रशेखरम्।
त्रातदावाग्निसन्दघकिशोरकमुपास्महे ॥ ३८ ॥

चित्सुखेन्द्रं सुखेनैव क्रान्तसद्यगुहागृहम्।
कामरूपचरं नानारूपवन्तमुपास्महे ॥ ३९ ॥

निर्देषसंयमधरान् चित्सुखानन्दतापसान्।
विद्याधनेन्द्रान् श्रीविद्यावशीकृतजनान् स्तुमः ॥ ४० ॥

शङ्करेन्द्रयतीन्द्राणां पादुके ब्रह्मसमृते।
नमामि शिरसा याभ्यां त्रीन् लोकान् व्यचरन्मुनिः ॥ ४१ ॥

सच्चिद्विलासयोगीन्द्रं महादेवेन्द्रमुज्ज्वलम्।
गङ्गाधरेन्द्रमप्येतान् नौमि वादिशिरोमणीन् ॥ ४२ ॥

ब्रह्मानन्दघनेन्द्राख्यांस्तथाऽऽनन्दघनान् अपि।
पूर्णबोधमहर्षीश्च ज्ञाननिष्ठानुपास्महे ॥ ४३ ॥

वृत्त्याऽऽजगर्या श्रीशैलगुहागृहकृतस्थितीन्।
श्रीमत्परशिवाभिर्ख्यान् सर्वातीतान् श्रये सदा ॥ ४४ ॥

अन्योन्यसदृशान्योन्यौ बोधश्रीचन्द्रशेखरौ।
प्रणवोपासनासक्तमानसौ मनसा श्रये ॥ ४५ ॥

मुक्तिलिङ्गार्चनानन्दविस्मृताशेषवृत्तये।
चिदम्बररहस्यन्तर्लीनिदेहाय योगिने ॥ ४६ ॥

अद्वैतानन्दसाम्राज्यविद्वताशेषपाप्मने।
अद्वैतानन्दबोधाय नमो ब्रह्म समीयुषे ॥ ४७ ॥

श्रये महादेवचन्द्रशेखरेन्द्रमहामुनी।
महाव्रतसमारब्यकोटिहोमान्तगामिनौ ॥ ४८ ॥

विद्यातीर्थसमाहानान् श्रीविद्यानाथयोगिनः।
विद्यया शङ्करप्रख्यान् विद्यारण्यगुरुन् भजे ॥ ४९ ॥

सच्चिद्धनेन्द्रान् अद्वैतब्रह्मानन्दमुनीनपि।
सान्द्रानन्दयतीन्द्रांश्च तथाप्यद्वैतशेवधीन्॥५०॥

महादेवशिवाद्वैतसुखानन्दयतीश्वरौ ।
मनसा भावये नित्यं महासंयमधारिणौ॥५१॥

वीक्षणात् सर्वभूतानां विषव्याधिनिर्बहृणम्।
शिवयोगीश्वरं साक्षाच्चिन्तयामि सदा मुदा॥५२॥

प्रत्यग्ज्योतिःप्रकाशेन्द्रान् प्रत्यग्ज्योतिरूपासिनः।
न्यकृताशेषदुस्तर्ककार्कश्यान् सततं स्तुमः॥५३॥

शङ्करानन्दयोगीन्द्रपदपङ्कजयोर्युगम्।
बुक्खभूपशिरोरत्नं स्मरामि सततं हृदा॥५४॥

श्रीपूर्णानन्दमौनीन्द्रं नेपालनृपदेशिकम्।
अव्याहतस्वसञ्चारं संश्रयामि जगद्गुरुम्॥५५॥

महादेवश्च तच्छिष्यश्वन्दशेखरयोग्यपि।
स्तां मे हृदि सदा धीरावद्वैतमतदेशिकौ॥५६॥

प्रवीरसेतुभूपालसेविताङ्गिसरोरुहान् ।
भजे सदाशिवेन्द्रश्रीबोधेश्वरगुरुन् सदा॥५७॥

सदाशिवश्रीब्रह्मेन्द्रधृतस्वपदपादुकान् ।
धीरान् परशिवेन्द्रार्यान् ध्यायामि सततं हृदि॥५८॥

आत्मबोधयतीन्द्राणाम् आशीताचलचारिणाम्।
अन्यश्रीशङ्कराचार्यधीकृतामङ्गिमाश्रये ॥५९॥

भगवन्नामसाम्राज्यलक्ष्मीसर्वस्वविग्रहान्।
श्रीमद्वोधेन्द्रयोगीन्द्रदेशिकेन्द्रानुपास्महे ॥ ६० ॥

अद्वैतात्मप्रकाशाय सर्वशास्त्रार्थवेदिने।
विघूतसर्वभेदाय नमो विश्वातिशायिने ॥ ६१ ॥

आ सतमाजीर्णपर्णजलवातारुणांशुभिः।
कृतस्वप्राणयात्राय महादेवाय सन्नतिः ॥ ६२ ॥

चोलकेरलचेरौडुपाणज्यकर्णाटकोङ्कणान्।
महाराष्ट्रान्धसौराष्ट्रमगधार्दीश्व भूमुजः ॥ ६३ ॥

शिष्यान् आसेतुशीताद्रि शासते पुण्यकर्मणे।
श्रीचन्द्रशेखरेन्द्राय जगतो गुरवे नमः ॥ ६४ ॥

निष्पापवृत्तये नित्यनिर्धूतभवकृसये।
महादेवाय सततं नमोऽस्तु नतरक्षिणे ॥ ६५ ॥

श्रीविद्योपासनादाढ्यवशीकृतचराचरान् ।
श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रार्यान् शङ्करप्रतिमान् नुमः ॥ ६६ ॥

श्रीकाश्चीशारदापीठसंस्थितानाम् इमां क्रमात्।
स्तुतिं जगदुरुणां यः पठेत् स सुखभाग् भवेत् ॥ ६७ ॥

॥ परिशिष्टम् - १ ॥

(अत्र १-४ पद्यानि पोलहग्रामाभिजनैः श्रीरामशास्त्रिभिः
प्रकाशितानि । ५ पद्यं नवषष्ठितमैः पीठाधिपतिभिः
श्रीमज्जयेन्द्रसरस्वतीश्रीपादैः रचितम् । ६-७ पद्ये
शिमिलिग्रामाभिजनैः राधाकृष्णशास्त्रिभिः विरचिते ।)

कलानन्दपरब्रह्मानन्दानुभवतुन्दिलान्।
महादेवेन्द्रयमिनः सततं संश्रये हृदा॥६८॥

प्रतिदिनविहितश्रीचन्द्रमौलीश्वरार्चा-
प्रसितसकलदेहः प्रौढपुण्यानुभावः।
मनसि सततमास्तां श्रीमहादेवनामा
मम गुरुरितकाश्चीशारदापीठसीमा॥६९॥

अतिबाल्यविधृतसंयमविमलमनःसेवितेशाचरणयुगान्।
श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रान् साम्रतमाचार्यशेखरान् प्रणुमः॥७०॥

लक्ष्मीनारायण इति पूर्वाश्रमनामभूषितं शान्तम्।
ऋग्वेदे सम्यग्धीतिनं महादेवमाश्रयामि गुरुम्॥७१॥

अपारकरुणासिन्धुं ज्ञानदं शान्तरूपिणम्।
श्रीचन्द्रशेखरगुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम्॥७२॥

परित्यज्य मौनं वटाधःस्थितिं च
ब्रजन् भारतस्य प्रदेशात् प्रदेशम्।
मधुस्यन्दिवाचा जनान् धर्ममार्गं
नयन् श्रीजयेन्द्रो गुरुर्भाति चित्ते॥७३॥

नमामः शङ्करान्वारव्यविजयेन्द्रसरस्वतीम्।
श्रीगुरुं शिष्टमार्गानुनेतारं सन्मतिप्रदम्॥७४॥

देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम्।
बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेन्द्रं नमाम्यहम्॥

नमामः शङ्करान्वारव्य-विजयेन्द्रसरस्वतीम्।
श्रीगुरुं शिष्टमार्गानुनेतारं सन्मतिप्रदम्॥

सत्यनारायणक्षेत्रात् सत्यब्रतमुपागतम्।
आश्रये कामकोटीशं सत्यश्रीचन्द्रशेखरम्॥



॥ सूर्यसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शतानीक उवाच

नाम्नां सहस्रं सवितुः श्रोतुमिच्छामि हे द्विज।
येन ते दर्शनं यातः साक्षादेवो दिवाकरः ॥ १ ॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ॥ २ ॥

न तदस्ति भयं किञ्चिद्यदनेन न नश्यति।
ज्वराद्यैर्मुच्यते राजन् स्तोत्रेऽस्मिन् पठिते नरः ॥ ३ ॥

अन्ये च रोगाः शाम्यन्ति पठतः शृण्वतस्तथा।
सम्पद्यन्ते यथा कामाः सर्व एव यथोप्सिताः ॥ ४ ॥

य एतदादितः श्रुत्वा सञ्चामं प्रविशेन्नरः।
स जित्वा समरे शत्रूनभ्येति गृहमक्षतः ॥ ५ ॥

वन्ध्यानां पुत्रजननं भीतानां भयनाशनम्।
भूतिकारि दरिद्राणां कुष्ठिनां परमौषधम् ॥ ६ ॥

बालानां चैव सर्वेषां ग्रहरक्षोनिवारणम्।
पठते संयतो राजन् स श्रेयः परमामृयात् ॥ ७ ॥

स सिद्धः सर्वसङ्गल्पः सुखमत्यन्तमश्चुते।
धर्मार्थभिर्धर्मलुब्धैः सुखाय च सुखार्थिभिः ॥ ८ ॥

राज्याय राज्यकामैश्च पठितव्यमिदं नरैः।
विद्यावहं तु विप्राणां क्षत्रियाणां जयावहम् ॥ ९ ॥

पश्चावहं तु वैश्यानां शूद्राणां धर्मवर्धनम्।
पठतां शृण्वतामेतद्भवतीति न संशयः ॥ १० ॥

तच्छृणुष्व नृपश्रेष्ठ प्रयतात्मा ब्रवीमि ते।
नामां सहस्रं विरक्ष्यातं देवदेवस्य धीमतः ॥ ११ ॥

॥ ध्यानम् ॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

ॐ विश्वविद्विश्वजित्कर्ता विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
विश्वेश्वरो विश्वयोनिर्नियतात्मा जितेन्द्रियः ॥ १ ॥

कालाश्रयः कालकर्ता कालहा कालनाशनः।
महायोगी महासिद्धिर्महात्मा सुमहाबलः ॥ २ ॥

प्रभुर्विभुर्भूतनाथो भूतात्मा भुवनेश्वरः।
भूतभव्यो भावितात्मा भूतान्तःकरणं शिवः ॥ ३ ॥

शरण्यः कमलानन्दो नन्दनो नन्दवर्धनः।
वरेण्यो वरदो योगी सुसंयुक्तः प्रकाशकः ॥ ४ ॥

प्राप्तयानः परप्राणः पूतात्मा प्रयतः प्रियः।
नयः सहस्रपात् साधुर्दिव्यकुण्डलमण्डितः ॥ ५ ॥

अव्यञ्जधारी धीरात्मा सविता वायुवाहनः।
समाहितमतिर्दाता विधाता कृतमञ्जलः॥६॥

कपर्दी कल्पपादुद्रः सुमना धर्मवत्सलः।
समायुक्तो विमुक्तात्मा कृतात्मा कृतिनां वरः॥७॥

अविचिन्त्यवपुः श्रेष्ठो महायोगी महेश्वरः।
कान्तः कामारिरादित्यो नियतात्मा निराकुलः॥८॥

कामः कारुणिकः कर्ता कमलाकरबोधनः।
सप्तसप्तरचिन्त्यात्मा महाकारुणिकोत्तमः॥९॥

सञ्जीवनो जीवनाथो जयो जीवो जगत्पतिः।
अयुक्तो विश्वनिलयः संविभागी वृषभ्वजः॥१०॥

वृषाकपिः कल्पकर्ता कल्पान्तकरणो रविः।
एकचक्ररथो मौनी सुरथो रथिनां वरः॥११॥

सक्रोधनो रश्ममाली तेजोराशिर्विभावसुः।
दिव्यकृद्दिनकृद्देवो देवदेवो दिवस्पतिः॥१२॥

दीननाथो हरो होता दिव्यबाहुर्दिवाकरः।
यज्ञो यज्ञपतिः पूषा स्वर्णरेताः परावरः॥१३॥

परापरज्ञस्तरणिरंशुमाली मनोहरः।
प्राज्ञः प्राज्ञपतिः सूर्यः सविता विष्णुरंशुमान्॥१४॥

सदागतिर्गन्धवहो विहितो विधिराशुगः।
पतञ्जः पतगः स्थाणुर्विहज्ञो विहगो वरः॥१५॥

हर्यश्वो हरिताश्वश्च हरिदश्वो जगत्प्रियः।
त्यम्बकः सर्वदमनो भावितात्मा भिषगवरः ॥ १६ ॥

आलोककृल्लोकनाथो लोकालोकनमस्कृतः।
कालः कल्पान्तको वहिस्तपनः सम्प्रतापनः ॥ १७ ॥

विरोचनो विरूपाक्षः सहस्राक्षः पुरन्दरः।
सहस्ररश्मिर्मिहिरो विविधाम्बरभूषणः ॥ १८ ॥

खगः प्रतर्दनो धन्यो हयगो वाग्वशारदः।
श्रीमानशिशिरो वाग्मी श्रीपतिः श्रीनिकेतनः ॥ १९ ॥

श्रीकण्ठः श्रीधरः श्रीमान् श्रीनिवासो वसुप्रदः।
कामचारी महामायो महोग्रोऽविदितामयः ॥ २० ॥

तीर्थक्रियावान् सुनयो विभक्तो भक्तवत्सलः।
कीर्तिः कीर्तिकरो नित्यः कुण्डली कवची रथी ॥ २१ ॥

हिरण्यरेताः सप्ताश्वः प्रयतात्मा परन्तपः।
बुद्धिमानमरश्रेष्ठो रोचिष्णुः पाकशासनः ॥ २२ ॥

समुद्रो धनदो धाता मान्धाता कश्मलापहः।
तमोग्नो ध्वान्तहा वहिर्हीताऽन्तःकरणो गुहः ॥ २३ ॥

पशुमान् प्रयतानन्दो भूतेशः श्रीमतां वरः।
नित्योऽदितो नित्यरथः सुरेशः सुरपूजितः ॥ २४ ॥

अजितो विजितो जेता जङ्गमस्थावरात्मकः।
जीवानन्दो नित्यगामी विजेता विजयप्रदः ॥ २५ ॥

पर्जन्योऽग्निः स्थितिः स्थेयः स्थविरोऽथ निरञ्जनः।
प्रद्योतनो रथारूढः सर्वलोकप्रकाशकः ॥ २६ ॥

ध्रुवो मेषी महावीर्यो हंसः संसारतारकः।
सृष्टिकर्ता क्रियाहेतुर्मार्तण्डो मरुतां पतिः ॥ २७ ॥

मरुत्वान् दहनस्त्वष्टा भगो भर्गोऽर्यमा कपिः।
वरुणेशो जगन्नाथः कृतकृत्यः सुलोचनः ॥ २८ ॥

विवस्वान् भानुमान् कार्यः कारणस्तेजसां निधिः।
असङ्गगामी तिगमांशुर्धर्माशुर्दीप्तदीधितिः ॥ २९ ॥

सहस्रदीधितिर्ब्रह्मः सहस्रांशुर्दिवाकरः।
गमस्तिमान् दीधितिमान् स्वगवी मणिकुलध्युतिः ॥ ३० ॥

भास्करः सुरकार्यज्ञः सर्वज्ञस्तीक्ष्णदीधितिः।
सुरज्येषः सुरपतिर्बहुज्ञो वचसां पतिः ॥ ३१ ॥

तेजोनिधिर्बृहत्तेजा बृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः।
अहिमानूर्जितो धीमानामुक्तः कीर्तिवर्धनः ॥ ३२ ॥

महावैद्यो गणपतिर्धनेशो गणनायकः।
तीव्रप्रतापनस्तापी तापनो विश्वतापनः ॥ ३३ ॥

कार्तस्वरो हृषीकेशः पद्मानन्दोऽतिनन्दितः।
पद्मानाभोऽमृताहारः स्थितिमान् केतुमान् नभः ॥ ३४ ॥

अनाद्यन्तोऽच्युतो विश्वो विश्वामित्रो घृणिर्विराट्।
आमुक्तकवचो वाग्मी कञ्चुकी विश्वभावनः ॥ ३५ ॥

अनिमित्तगतिः श्रेष्ठः शरण्यः सर्वतोमुखः ।
विगाही वेणुरसहः समायुक्तः समाकृतुः ॥ ३६ ॥

धर्मकेतुर्धर्मरतिः संहर्ता संयमो यमः ।
प्रणतार्तिहरो वायुः सिद्धकार्यो जनेश्वरः ॥ ३७ ॥

नभो विगाहनः सत्यः सवितात्मा मनोहरः ।
हारी हरिहरो वायुर्त्रृष्टुः कालानलद्युतिः ॥ ३८ ॥

सुखसेव्यो महातेजा जगतामेककारणम् ।
महेन्द्रो विष्टुतः स्तोत्रं स्तुतिहेतुः प्रभाकरः ॥ ३९ ॥

सहस्रकर आयुष्मान् अरोषः सुखदः सुखी ।
व्याधिहा सुखदः सौरव्यं कल्याणः कलतां वरः ॥ ४० ॥

आरोग्यकारणं सिद्धिर्त्रिद्विद्विर्द्विर्बृहस्पतिः ।
हिरण्यरेता आरोग्यं विद्वान् ब्रह्मो बुधो महान् ॥ ४१ ॥

प्राणवान् धृतिमान् घर्मो धर्मकर्ता रुचिप्रदः ।
सर्वप्रियः सर्वसहः सर्वशत्रुविनाशनः ॥ ४२ ॥

प्रांशुर्विद्योतनो द्योतः सहस्रकिरणः कृती ।
केयूरी भूषणोद्भासी भासितो भासनोऽनलः ॥ ४३ ॥

शरण्यार्तिहरो होता खद्योतः खगसत्तमः ।
सर्वद्योतो भवद्योतः सर्वद्युतिकरो मतः ॥ ४४ ॥

कल्याणः कल्याणकरः कल्यः कल्यकरः कविः ।
कल्याणकृत् कल्यवपुः सर्वकल्याणभाजनम् ॥ ४५ ॥

शान्तिप्रियः प्रसन्नात्मा प्रशान्तः प्रशमप्रियः।
उदारकर्मा सुनयः सुवर्चा वर्चसोज्ज्वलः ॥ ४६ ॥

वर्चस्वी वर्चसामीशाखैलोक्येशो वशानुगः।
तेजस्वी सुयशा वर्ष्मी वर्णाध्यक्षो बलिप्रियः ॥ ४७ ॥

यशस्वी तेजोनिलयस्तेजस्वी प्रकृतिस्थितः।
आकाशगः शीघ्रगतिराशुगो गतिमान् खगः ॥ ४८ ॥

गोपतिर्घर्हदेवेशो गोमानेकः प्रभञ्जनः।
जनिता प्रजनो जीवो दीपः सर्वप्रकाशकः ॥ ४९ ॥

सर्वसाक्षी योगनित्यो नभस्वानसुरान्तकः।
रक्षोद्भो विद्वशमनः किरीटी सुमनःप्रियः ॥ ५० ॥

मरीचिमाली सुमतिः कृताभिरुद्यविशेषकः।
शिष्टाचारः शुभाचारः स्वचाराचारतत्परः ॥ ५१ ॥

मन्दारो माठरो वेणुः क्षुधापः क्षमापतिर्गुरुः।
सुविशिष्टो विशिष्टात्मा विधेयो ज्ञानशोभनः ॥ ५२ ॥

महाश्वेतः प्रियो ज्ञेयः सामगो मोक्षदायकः।
सर्ववेदप्रगीतात्मा सर्ववेदलयो महान् ॥ ५३ ॥

वेदमूर्तिश्वतुर्वेदो वेदभृद्वेदपारगः।
क्रियावानसितो जिष्णुर्वरीयांशुर्वरप्रदः ॥ ५४ ॥

ब्रतचारी ब्रतधरो लोकबन्धुरलङ्घतः।
अलङ्घाराक्षरो वेद्यो विद्यावान् विदिताशयः ॥ ५५ ॥

आकारो भूषणो भूष्यो भूष्णुर्भुवनपूजितः।
चक्रपाणिर्ध्वंजधरः सुरेशो लोकवत्सलः ॥ ५६ ॥

वाग्मिपतिर्महाबाहुः प्रकृतिर्विकृतिर्गुणः।
अन्धकारापहः श्रेष्ठो युगावर्तो युगादिकृत् ॥ ५७ ॥

अप्रमेयः सदायोगी निरहङ्कार ईश्वरः।
शुभप्रदः शुभः शास्ता शुभकर्मा शुभप्रदः ॥ ५८ ॥

सत्यवान् श्रुतिमानुचैर्नकारो वृद्धिदोऽनलः।
बलभृद्धलदो बन्धुर्मतिमान् बलिनां वरः ॥ ५९ ॥

अनङ्गो नागराजेन्द्रः पद्मयोनिर्गणेश्वरः।
संवत्सर ऋतुर्नेता कालचक्रप्रवर्तकः ॥ ६० ॥

पद्मेक्षणः पद्मयोनिः प्रभावानमरः प्रभुः।
सुमूर्तिः सुमतिः सोमो गोविन्दो जगदादिजः ॥ ६१ ॥

पीतवासाः कृष्णवासा दिग्वासास्त्वन्दियातिगः।
अतीन्द्रियोऽनेकरूपः स्कन्दः परपुरञ्जयः ॥ ६२ ॥

शक्तिमाञ्जलधृग्भास्वान् मोक्षहेतुरयोनिजः।
सर्वदर्शी जितादर्शो दुःस्वप्नाशुभनाशनः ॥ ६३ ॥

माङ्गल्यकर्ता तरणिर्वेगवान् कश्मलापहः।
स्पष्टाक्षरो महामन्त्रो विशाखो यजनप्रियः ॥ ६४ ॥

विश्वकर्मा महाशक्तिर्द्युतिरीशो विहङ्गमः।
विचक्षणो दक्ष इन्द्रः प्रत्यूषः प्रियदर्शनः ॥ ६५ ॥

अखिन्नो वेदनिलयो वेदविद्विदिताशयः।
प्रभाकरो जितरिपुः सुजनोऽरुणसारथिः ॥ ६६ ॥

कुनाशी सुरतः स्कन्दो महितोऽभिमतो गुरुः।
ग्रहराजो ग्रहपतिर्यहनक्षत्रमण्डलः ॥ ६७ ॥

भास्करः सततानन्दो नन्दनो नरवाहनः।
मङ्गलोऽथ मङ्गलवान् माङ्गल्यो मङ्गलावहः ॥ ६८ ॥

मङ्गल्यचारुचरितः शीर्णः सर्वब्रतो ब्रती।
चतुर्मुखः पद्ममाली पूतात्मा प्रणतार्तिहा ॥ ६९ ॥

अकिञ्चनः सतामीशो निर्गुणो गुणवाज्ञुचिः।
सम्पूर्णः पुण्डरीकाक्षो विधेयो योगतत्परः ॥ ७० ॥

सहस्रांशुः क्रतुमतिः सर्वज्ञः सुमतिः सुवाक्।
सुवाहनो माल्यदामा कृताहारो हरिप्रियः ॥ ७१ ॥

ब्रह्मा प्रचेताः प्रथितः प्रयतात्मा स्थिरात्मकः।
शतविन्दुः शतमुखो गरीयाननलप्रभः ॥ ७२ ॥

धीरो महत्तरो विप्रः पुराणपुरुषोत्तमः।
विद्याराजाधिराजो हि विद्यावान् भूतिदः स्थितः ॥ ७३ ॥

अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् विपाप्मा बहुमङ्गलः।
स्वःस्थितः सुरथः स्वर्णो मोक्षदो बलिकेतनः ॥ ७४ ॥

निर्द्वन्द्वो द्वन्द्वहा सर्गः सर्वगः सम्प्रकाशकः।
दयालुः सूक्ष्मधीः क्षान्तिः क्षेमाक्षेमस्थितिप्रियः ॥ ७५ ॥

भूधरो भूपतिर्वक्ता पवित्रात्मा त्रिलोचनः।
महावराहः प्रियकृद्दाता भोक्ताऽभयप्रदः॥७६॥

चक्रवर्ती धृतिकरः सम्पूर्णोऽथ महेश्वरः।
चतुर्वेदधरोऽचिन्त्यो विनिन्द्यो विविधाशनः॥७७॥

विचित्ररथ एकाकी सप्तसप्तिः परात्परः।
सर्वोदाधिस्थितिकरः स्थितिस्थेयः स्थितिप्रियः॥७८॥

निष्कलः पुष्कलो विभुर्वसुमान् वासवप्रियः।
पशुमान् वासवस्वामी वसुधामा वसुप्रदः॥७९॥

बलवान् ज्ञानवांस्तत्त्वमोङ्कारस्त्रिषु संस्थितः।
सङ्कल्पयोनिर्दिनकृद्गवान् कारणापहः॥८०॥

नीलकण्ठो धनाध्यक्षश्चतुर्वेदप्रियंवदः।
वषङ्कारोद्गाता होता स्वाहाकारो हुताहुतिः॥८१॥

जनार्दनो जनानन्दो नरो नारायणोऽम्बुदः।
सन्देहनाशनो वायुर्धन्वी सुरनमस्कृतः॥८२॥

विग्रही विमलो विन्दुर्विशोको विमलद्युतिः।
द्युतिमान् द्योतनो विद्युद्विद्यावान् विदितो बली॥८३॥

घर्मदो हिमदो हासः कृष्णवर्त्मा सुताजितः।
सावित्रीभावितो राजा विश्वामित्रो घृणिर्विराट्॥८४॥

सप्तार्चिः सप्ततुरगः सप्तलोकनमस्कृतः।
सम्पूर्णोऽथ जगन्नाथः सुमनाः शोभनप्रियः॥८५॥

सर्वात्मा सर्वकृत् सृष्टिः सप्तिमान् सप्तमीप्रियः।
सुमेधा मेधिको मेध्यो मेधावी मधुसूदनः॥८६॥

अङ्गिरःपतिः कालज्ञो धूमकेतुः सुकेतनः।
सुखी सुखप्रदः सौख्यं कामी कान्तिप्रियो मुनिः॥८७॥

सन्तापनः सन्तपन आतपस्तपसां पतिः।
उमापतिः सहस्रांशुः प्रियकारी प्रियङ्करः॥८८॥

प्रीतिर्विमन्युरभ्योत्थः खञ्जनो जगतां पतिः।
जगत्पिता प्रीतमनाः सर्वः खर्वो गुहोऽचलः॥८९॥

सर्वगो जगदानन्दो जगन्नेता सुरारिहा।
श्रेयः श्रेयस्करो ज्यायान् महानुत्तम उद्दवः॥९०॥

उत्तमो मेरुमेयोऽथ धरणो धरणीधरः।
धराध्यक्षो धर्मराजो धर्माधर्मप्रवर्तकः॥९१॥

रथाध्यक्षो रथगतिस्तरुणस्तनितोऽनलः।
उत्तरोऽनुत्तरस्तापी अवाक्पतिरपां पतिः॥९२॥

पुण्यसङ्कीर्तनः पुण्यो हेतुलोकत्रयाश्रयः।
स्वर्भानुर्विंगतानन्दो विशिष्टोत्कृष्टकर्मकृत्॥९३॥

व्याधिप्रणाशनः क्षेमः शूरः सर्वजितां वरः।
एकरथो रथाधीशः पिता शनैश्चरस्य हि॥९४॥

वैवस्वतगुरुर्मृत्युर्धर्मनित्यो महाव्रतः।
प्रलम्बहारसञ्चारी प्रद्योतो द्योतितानलः॥९५॥

सन्तापहृत् परो मन्त्रो मन्त्रमूर्तिर्महाबलः।
श्रेष्ठात्मा सुप्रियः शम्भुर्मुर्तामीश्वरेश्वरः ॥१६॥

संसारगतिविच्छेत्ता संसारार्णवतारकः।
सप्तजिह्वः सहस्रार्ची रत्नगर्भोऽपराजितः ॥१७॥

धर्मकेतुरमेयात्मा धर्माधर्मवरप्रदः।
लोकसाक्षी लोकगुरुलोकेशश्वण्डवाहनः ॥१८॥

धर्मयूपो यूपवृक्षो धनुष्पाणिर्धनुर्धरः।
पिनाकधृञ्जहोत्साहो महामायो महाशनः ॥१९॥

वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
ज्ञानगम्यो दुराराध्यो लोहिताङ्गो विवर्धनः ॥२००॥

खगोऽन्यो धर्मदो नित्यो धर्मकृच्चित्रविक्रमः।
भगवानात्मवान् मन्त्रस्त्व्यक्षरो नीललोहितः ॥२०१॥

एकोऽनेकस्त्रयी कालः सविता समितिज्जयः।
शार्ङ्गधन्वाऽनलो भीमः सर्वप्रहरणायुधः ॥२०२॥

सुकर्मा परमेष्ठी च नाकपाली दिविस्थितः।
वदान्यो वासुकिर्वैद्य आत्रेयोऽथ पराक्रमः ॥२०३॥

द्वापरः परमोदारः परमो ब्रह्मचर्यवान्।
उदीच्यवेषो मुकुटी पद्महस्तो हिमांशुभृत् ॥२०४॥

सितः प्रसन्नवदनः पद्मोदरनिभाननः।
सायं दिवा दिव्यवपुरनिर्देश्यो महालयः ॥२०५॥

महारथो महानीशः शेषः सत्त्वरजस्तमः।
धृतातपत्रप्रतिमो विमर्शी निर्णयः स्थितः ॥ १०६ ॥

अहिंसकः शुद्धमतिरद्वितीयो विवर्धनः।
सर्वदो धनदो मोक्षो विहारी बहुदायकः ॥ १०७ ॥

चारुरात्रिहरो नाथो भगवान् सर्वगोऽव्ययः।
मनोहरवपुः शुभ्रः शोभनः सुप्रभावनः ॥ १०८ ॥

सुप्रभावः सुप्रतापः सुनेत्रो दिग्विदिक्पतिः।
राज्ञीप्रियः शब्दकरो ग्रहेशस्तमिरापहः ॥ १०९ ॥

सैहिकेयरिपुर्देवो वरदो वरनायकः।
चतुर्भुजो महायोगी योगीश्वरपतिस्तथा ॥ ११० ॥

अनादिरूपोऽदितिजो रत्नकान्तिः प्रभामयः।
जगत्प्रदीपो विस्तीर्णो महाविस्तीर्णमण्डलः ॥ १११ ॥

एकचक्ररथः स्वर्णरथः स्वर्णशरीरधृक्।
निरालम्बो गगनगो धर्मकर्मप्रभावकृत् ॥ ११२ ॥

धर्मात्मा कर्मणां साक्षी प्रत्यक्षः परमेश्वरः।
मेरुसेवी सुमेधावी मेरुरक्षाकरो महान् ॥ ११३ ॥

आधारभूतो रतिमांस्तथा च धनधान्यकृत्।
पापसन्तापहर्ता च मनोवाज्ञितदायकः ॥ ११४ ॥

रोगहर्ता राज्यदायी रमणीयगुणोऽनृणी।
कालत्रयानन्तरूपो मुनिवृन्दनमस्कृतः ॥ ११५ ॥

सन्ध्यारागकरः सिद्धः सन्ध्यावन्दनवन्दितः।
 साम्राज्यदाननिरतः समाराधनतोषवान्॥ ११६ ॥

भक्तदुःखक्षयकरो भवसागरतारकः।
 भयापहर्ता भगवानप्रमेयपराक्रमः।
 मनुस्वामी मनुपतिर्मान्यो मन्वन्तराधिपः॥ ११७ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

एतत्ते सर्वमारव्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
 नाम्नां सहस्रं सवितुः पाराशर्यो यदाह मे॥ १ ॥

धन्यं यशस्यमायुष्यं दुःखदुःस्वप्ननाशनम्।
 बन्धमोक्षकरं चैव भानोर्नामानुकीर्तनात्॥ २ ॥

यस्त्वदं शृणुयान्नित्यं पठेद्वा प्रयतो नरः।
 अक्षयं सुखमन्नाद्यं भवेत्स्योपसाधितम्॥ ३ ॥

नृपाग्नितस्करभयं व्याधितो न भयं भवेत्।
 विजयी च भवेन्नित्यमाश्रयं परमाप्न्यात्॥ ४ ॥

कीर्तिमान् सुभगो विद्वान् स सुखी प्रियदर्शनः।
 जीवेद्वर्षशतायुश्च सर्वव्याधिविवर्जितः॥ ५ ॥

नाम्नां सहस्रमिदमंशुमतः पठेद्यः
 प्रातः शुचिर्नियमवान् सुसमृद्धियुक्तः।
 दूरेण तं परिहरन्ति सदैव रोगाः
 भूताः सुपर्णमिव सर्वमहोरगेन्द्राः॥ ६ ॥

॥ इति श्री-भविष्यपुराणे सप्तमकल्पे श्रीभगवत्सूर्यस्य
 सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रीमच्चन्दनचर्चितोज्जलवपुः शुक्लाम्बरा मल्लिका-
मालालालित-कुन्तला प्रविलसन्मुक्तावलीशोभना।
सर्वज्ञाननिधानपुस्तकधरा रुद्राक्षमालाङ्गिता
वागदेवी वदनाम्बुजे वसतु मे त्रैलोक्यमाता शुभा ॥

श्री-नारद उवाच

भगवन् परमेशान सर्वलोकैकनायक।
कथं सरस्वती साक्षात्प्रसन्ना परमेष्ठिनः ॥ १ ॥

कथं देव्या महावाण्याः सतत्प्राप सुदुर्लभम्।
एतन्मे वद तत्त्वेन महायोगीश्वरप्रभो ॥ २ ॥

श्री-सनत्कुमार उवाच

साधु पृष्ठं त्वया ब्रह्मन् गुह्याद्गुह्यमनुत्तमम्।
भयानुगोपितं यत्तादिदानीं सत्प्रकाश्यते ॥ ३ ॥

पुरा पितामहं दृष्ट्वा जगत्स्थावरजङ्गमम्।
निर्विकारं निराभासं स्तम्भीभूतमचेतसम् ॥ ४ ॥

सृष्टा त्रैलोक्यमखिलं वागभावात्तथाविधम्।
आधिक्याभावतः स्वस्य परमेष्ठी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥

दिव्यवर्षायुतं तेन तपो दुष्करमुत्तमम्।
ततः कदाचित्सञ्चाता वाणी सर्वार्थशोभिता ॥ ६ ॥

अहमस्मि महाविद्या सर्ववाचामधीश्वरी।
मम नामां सहस्रं तु उपदेक्ष्याम्यनुत्तमम्॥७॥

अनेन संस्तुता नित्यं पत्नी तव भवाम्यहम्।
त्वया सृष्टं जगत्सर्वं वाणीयुक्तं भविष्यति॥८॥

इदं रहस्यं परमं मम नामसहस्रकम्।
सर्वपापौघशमनं महासारस्वतप्रदम्॥९॥

महाकवित्वदं लोके वाणीशत्वप्रदायकम्।
त्वं वा परः पुमान्यस्तु स्तवेनानेन तोषयेत्॥१०॥

तस्याहं किङ्करी साक्षाद्द्विष्यामि न संशयः।
इत्युत्त्वाऽन्तर्दधे वाणी तदारभ्य पितामहः॥११॥

स्तुत्वा स्तोत्रेण दिव्येन तत्पतित्वमवाप्तवान्।
वाणीयुक्तं जगत्सर्वं तदारभ्याभवन्मुने॥१२॥

तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन नारद।
सावधानमना भूत्वा क्षणं शुद्धो मुनीश्वरः॥१३॥

॥ स्तोत्रम् ॥

वाग्वाणी वरदा वन्द्या वरारोहा वरप्रदा।
वृत्तिर्वागीश्वरी वार्ता वरा वाणीशवल्लभा॥१॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वेशप्रियकारिणी।
वाग्वादिनी च वाग्देवी वृद्धिदा वृद्धिकारिणी॥२॥

वृद्धिवृद्धा विषम्बी च वृष्टिवृष्टिप्रदायिनी।
विश्वाराध्या विश्वमाता विश्वधात्री विनायका॥३॥

विश्वशक्तिर्विश्वसारा विश्वा विश्वविभावरी।
वेदान्तवेदिनी वेद्या वित्ता वेदत्रयात्मिका ॥ ४ ॥

वेदज्ञा वेदजननी विश्वा विश्वविभावरी।
वरेण्या वाञ्छ्यी वृद्धा विशिष्टप्रियकारिणी ॥ ५ ॥

विश्वतोवदना व्यासा व्यापिनी व्यापकात्मिका।
व्यालभ्नी व्यालभूषाङ्गी विरजा वेदनायिका ॥ ६ ॥

वेदवेदान्तसंवेद्या वेदान्तज्ञानरूपिणी।
विभावरी च विक्रान्ता विश्वामित्रा विधिप्रिया ॥ ७ ॥

वरिष्ठा विप्रकृष्टा च विप्रवर्यप्रपूजिता।
वेदरूपा वेदमयी वेदमूर्तिश्च वल्लभा ॥ ८ ॥

गौरी गुणवती गोप्या गन्धर्वनगरप्रिया।
गुणमाता गुहान्तस्था गुरुरूपा गुरुप्रिया ॥ ९ ॥

गिरिविद्या गानतुष्टा गायकप्रियकारिणी।
गायत्री गिरिशाराध्या गीर्गिरीशप्रियङ्करी ॥ १० ॥

गिरिज्ञा ज्ञानविद्या च गिरिरूपा गिरीश्वरी।
गीर्माता गणसंस्तुत्या गणनीयगुणान्विता ॥ ११ ॥

गूढरूपा गुहा गोप्या गोरूपा गौर्गुणात्मिका।
गुर्वी गुर्वम्बिका गुह्या गेयजा ग्रहनाशिनी ॥ १२ ॥

गृहिणी गृहदोषभ्नी गवम्नी गुरुवत्सला।
गृहात्मिका गृहाराध्या गृहबाधाविनाशिनी ॥ १३ ॥

गङ्गा गिरिसुता गम्या गजयाना गुहस्तुता।
गरुडासनसंसेव्या गोमती गुणशालिनी ॥ १४ ॥

शारदा शाश्वती शैवी शाङ्करी शाङ्करात्मिका।
श्रीः शर्वाणी शतघ्नी च शरच्चन्द्रनिभानना ॥ १५ ॥

शर्मिष्ठा शमनघ्नी च शतसाहस्ररूपिणी।
शिवा शम्भुप्रिया श्रद्धा श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया ॥ १६ ॥

शुचिष्मती शर्मकरी शुद्धिदा शुद्धिरूपिणी।
शिवा शिवङ्करी शुद्धा शिवाराध्या शिवात्मिका ॥ १७ ॥

श्रीमती श्रीमयी श्राव्या श्रुतिः श्रवणगोचरा।
शान्तिः शान्तिकरी शान्ता शान्ताचारप्रियङ्करी ॥ १८ ॥

शीललभ्या शीलवती श्रीमाता शुभकारिणी।
शुभवाणी शुद्धविद्या शुद्धचित्तप्रपूजिता ॥ १९ ॥

श्रीकरी श्रुतपापघ्नी शुभाक्षी शुचिवल्लभा।
शिवेतरघ्नी शबरी श्रवणीयगुणान्विता ॥ २० ॥

शारी शिरीषपुष्पाभा शमनिष्ठा शमात्मिका।
शमान्विता शमाराध्या शितिकण्ठप्रपूजिता ॥ २१ ॥

शुद्धिः शुद्धिकरी श्रेष्ठा श्रुतानन्ता शुभावहा।
सरस्वती च सर्वज्ञा सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ २२ ॥

सरस्वती च सावित्री सन्ध्या सर्वेषिस्तप्रदा।
सर्वार्तिघ्नी सर्वमयी सर्वविद्याप्रदायिनी ॥ २३ ॥

सर्वैश्वरी सर्वपुण्या सर्गस्थित्यन्तकारिणी।
सर्वाराध्या सर्वमाता सर्वदेवनिषेविता ॥ २४ ॥

सर्वैश्वर्यप्रदा सत्या सती सत्वगुणाश्रया।
स्वरक्रमपदाकारा सर्वदोषनिषूदिनी ॥ २५ ॥

सहस्राक्षी सहस्रास्या सहस्रपदसंयुता।
सहस्रहस्ता साहस्रगुणालङ्घतविग्रहा ॥ २६ ॥

सहस्रशीर्षा सद्गूपा स्वधा स्वाहा सुधामयी।
षड्निथभेदिनी सेव्या सर्वलोकैकपूजिता ॥ २७ ॥

स्तुत्या स्तुतिमयी साध्या सवितृप्रियकारिणी।
संशयच्छेदिनी साङ्ख्यवेद्या सञ्चाला सदीश्वरी ॥ २८ ॥

सिद्धिदा सिद्धसम्पूज्या सर्वसिद्धिप्रदायिनी।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वसम्पत्रदायिनी ॥ २९ ॥

सर्वाशुभम्भी सुखदा सुखा संवित्स्वरूपिणी।
सर्वसम्भीषणी सर्वजगत्सम्मोहिनी तथा ॥ ३० ॥

सर्वप्रियङ्करी सर्वशुभदा सर्वमङ्गला।
सर्वमन्त्रमयी सर्वतीर्थपुण्यफलप्रदा ॥ ३१ ॥

सर्वपुण्यमयी सर्वव्याधिभी सर्वकामदा।
सर्वविघ्नहरी सर्ववन्दिता सर्वमङ्गला ॥ ३२ ॥

सर्वमन्त्रकरी सर्वलक्ष्मीः सर्वगुणान्विता।
सर्वानन्दमयी सर्वज्ञानदा सत्यनायिका ॥ ३३ ॥

सर्वज्ञानमयी सर्वराज्यदा सर्वमुक्तिदा।
सुप्रभा सर्वदा सर्वा सर्वलोकवशङ्करी ॥ ३४ ॥

सुभगा सुन्दरी सिद्धा सिद्धाम्बा सिद्धमातृका।
सिद्धमाता सिद्धविद्या सिद्धेशी सिद्धरूपिणी ॥ ३५ ॥

सुरूपिणी सुखमयी सेवकप्रियकारिणी।
स्वामिनी सर्वदा सेव्या स्थूलसूक्ष्मापराम्बिका ॥ ३६ ॥

साररूपा सरोरूपा सत्यभूता समाश्रया।
सितासिता सरोजाक्षी सरोजासनवल्लभा ॥ ३७ ॥

सरोरुहाभा सर्वाङ्गी सुरेन्द्रादिप्रपूजिता।
महादेवी महेशानी महासारस्वतप्रदा ॥ ३८ ॥

महासरस्वती मुक्ता मुक्तिदा मलनाशिनी।
महेश्वरी महानन्दा महामन्त्रमयी मही ॥ ३९ ॥

महालक्ष्मीर्महाविद्या माता मन्दरवासिनी।
मन्त्रगम्या मन्त्रमाता महामन्त्रफलप्रदा ॥ ४० ॥

महामुक्तिर्महानित्या महासिद्धिप्रदायिनी।
महासिद्धा महामाता महदाकारसंयुता ॥ ४१ ॥

महा महेश्वरी मूर्तिर्माक्षदा मणिभूषणा।
मेनका मानिनी मान्या मृत्युग्नी मेरुरूपिणी ॥ ४२ ॥

मदिराक्षी मदावासा मखरूपा मखेश्वरी।
महामोहा महामाया मातृणां मूर्ध्निसंस्थिता ॥ ४३ ॥

महापुण्या मुदावासा महासम्पत्तदायिनी।
मणिपूरैकनिलया मधुरूपा महोत्कटा ॥ ४४ ॥

महासूक्ष्मा महाशान्ता महाशान्तिप्रदायिनी।
मुनिस्तुता मोहहन्त्री माधवी माधवप्रिया ॥ ४५ ॥

मा महादेवसंस्तुत्या महिषीगणपूजिता।
मृष्टान्नदा च माहेन्द्री महेन्द्रपददायिनी ॥ ४६ ॥

मतिर्मतिप्रदा मेधा मर्त्यलोकनिवासिनी।
मुख्या महानिवासा च महाभाग्यजनाश्रिता ॥ ४७ ॥

महिला महिमा मृत्युहारी मेधाप्रदायिनी।
मेध्या महावेगवती महामोक्षफलप्रदा ॥ ४८ ॥

महाप्रभाभा महती महादेवप्रियङ्करी।
महापोषा महर्द्धिश्च मुक्ताहारविभूषणा ॥ ४९ ॥

माणिक्यभूषणा मन्त्रा मुख्यचन्द्रार्घशोखरा।
मनोरूपा मनःशुद्धिर्मनःशुद्धिप्रदायिनी ॥ ५० ॥

महाकारुण्यसम्पूर्णा मनोनमनवन्दिता।
महापातकजालघ्नी मुक्तिदा मुक्तभूषणा ॥ ५१ ॥

मनोनमनी महास्थूला महाक्रतुफलप्रदा।
महापुण्यफलप्राप्या मायात्रिपुरनाशिनी ॥ ५२ ॥

महानसा महामेधा महामोदा महेश्वरी।
मालाधरी महोपाया महातीर्थफलप्रदा ॥ ५३ ॥

महामङ्गलसम्पूर्णा महादारिद्यनाशिनी।
महामखा महामेघा महाकाली महाप्रिया ॥ ५४ ॥

महाभूषा महादेहा महाराज्ञी मुदालया।
भूरिदा भाग्यदा भोग्यदा भोगदायिनी ॥ ५५ ॥

भवानी भूतिदा भूतिर्भूमिर्भूमिसुनायिका।
भूतधात्री भयहरी भक्तसारस्वतप्रदा ॥ ५६ ॥

भुक्तिर्भुक्तिप्रदा भेकी भक्तिर्भक्तिप्रदायिनी।
भक्तसायुज्यदा भक्तस्वर्गदा भक्तराज्यदा ॥ ५७ ॥

भागीरथी भवाराध्या भाग्यासज्जनपूजिता।
भवस्तुत्या भानुमती भवसागरतारणी ॥ ५८ ॥

भूतिर्भूषा च भूतेशी भाललोचनपूजिता।
भूता भव्या भविष्या च भवविद्या भवात्मिका ॥ ५९ ॥

बाधापहारिणी बन्धुरूपा भुवनपूजिता।
भवन्नी भक्तिलभ्या च भक्तरक्षणतत्परा ॥ ६० ॥

भक्तार्तिशमनी भाग्या भोगदानकृतोद्यमा।
भुजङ्गभूषणा भीमा भीमाक्षी भीमस्त्रपिणी ॥ ६१ ॥

भाविनी भ्रातृरूपा च भारती भवनायिका।
भाषा भाषावती भीष्मा भैरवी भैरवप्रिया ॥ ६२ ॥

भूतिर्भासितसर्वाङ्गी भूतिदा भूतिनायिका।
भास्वती भगमाला च भिक्षादानकृतोद्यमा ॥ ६३ ॥

भिक्षुरूपा भक्तिकरी भक्तलक्ष्मीप्रदायिनी।
भ्रान्तिद्वा भ्रान्तिरूपा च भूतिदा भूतिकारिणी ॥ ६४ ॥

भिक्षणीया भिक्षुमाता भाग्यवद्विष्टिगोचरा।
भोगवती भोगरूपा भोगमोक्षफलप्रदा ॥ ६५ ॥

भोगश्रान्ता भाग्यवती भक्ताघौघविनाशिनी।
ब्रह्मी ब्रह्मस्वरूपा च बृहती ब्रह्मवल्लभा ॥ ६६ ॥

ब्रह्मदा ब्रह्ममाता च ब्रह्माणी ब्रह्मदायिनी।
ब्रह्मेशी ब्रह्मसंस्तुत्या ब्रह्मवेद्या बुधप्रिया ॥ ६७ ॥

बालेन्दुशेखरा बाला बलिपूजाकरप्रिया।
बलदा विन्दुरूपा च बालसूर्यसमप्रभा ॥ ६८ ॥

ब्रह्मरूपा ब्रह्ममयी ब्रह्मण्डलमध्यगा।
ब्रह्माणी बुद्धिदा बुद्धिर्बुद्धिरूपा बुधेश्वरी ॥ ६९ ॥

बन्धक्षयकरी बाधनाशनी बन्धुरूपिणी।
विन्द्वालया विन्दुभूषा विन्दुनादसमन्विता ॥ ७० ॥

बीजरूपा बीजमाता ब्रह्मण्या ब्रह्मकारिणी।
बहुरूपा बलवती ब्रह्मजा ब्रह्मचारिणी ॥ ७१ ॥

ब्रह्मस्तुत्या ब्रह्मविद्या ब्रह्माण्डाधिपवल्लभा।
ब्रह्मेशविष्णुरूपा च ब्रह्मविष्णवीशसंस्थिता ॥ ७२ ॥

बुद्धिरूपा बुधेशानी बन्धी बन्धविमोचनी।
अक्षमालाऽक्षराकाराऽक्षराऽक्षरफलप्रदा ॥ ७३ ॥

अनन्ताऽनन्दसुखदाऽनन्तचन्द्रनिभानना।
अनन्तमाहिमाऽघोराऽनन्तगम्भीरसम्मिता ॥ ७४ ॥

अदृष्टाऽदृष्टदाऽनन्ताऽदृष्टभाग्यफलप्रदा।
अरुन्धत्यव्ययीनाथाऽनेकसद्गुणसंयुता ॥ ७५ ॥

अनेकभूषणाऽदृश्याऽनेकलेखनिषेविता ।
अनन्ताऽनन्तसुखदाऽघोराऽघोरस्वरूपिणी ॥ ७६ ॥

अशेषदेवतारूपाऽमृतरूपाऽमृतेश्वरी ।
अनवद्याऽनेकहस्ताऽनेकमाणिक्यभूषणा ॥ ७७ ॥

अनेकविघ्नसंहर्त्री ह्यनेकाभरणान्विता।
अविद्याऽज्ञानसंहर्त्री ह्यविद्याजालनाशिनी ॥ ७८ ॥

अभिरूपाऽनवद्याङ्गी ह्यप्रतकर्यगतिप्रदा।
अकलङ्घारूपिणी च ह्यनुग्रहपरायणा ॥ ७९ ॥

अम्बरस्थाऽम्बरमयाऽम्बरमालाऽम्बुजेक्षणा ।
अम्बिकाऽज्ञकराऽजस्थांशुमत्यंशुशतान्विता ॥ ८० ॥

अम्बुजाऽनवराऽखण्डाऽम्बुजासनमहाप्रिया।
अजरामरसंसेव्याऽजरसेवितपद्मुगा ॥ ८१ ॥

अतुलार्थप्रदाऽर्थैक्याऽत्युदारा त्वभयान्विता।
अनाथवत्सलाऽनन्तप्रियाऽनन्तेपिसतप्रदा ॥ ८२ ॥

अम्बुजाक्ष्यम्बुरूपाऽम्बुजातोद्भवमहाप्रिया।
अखण्डा त्वमरस्तुत्याऽमरनायकपूजिता ॥ ८३ ॥

अजेया त्वजसङ्काशाऽज्ञाननाशिन्यभीष्टदा।
अक्ताऽधनेना चास्त्रेशी ह्यलक्ष्मीनाशिनी तथा ॥ ८४ ॥

अनन्तसाराऽनन्तश्रीरनन्तविधिपूजिता ।
अभीष्टाऽमर्त्यसम्पूज्या ह्यस्तोदयविवर्जिता ॥ ८५ ॥

आस्तिकस्वान्तनिलयाऽस्त्ररूपाऽस्त्रवती तथा।
अस्वलत्यस्वलदूपाऽस्वलद्विद्याप्रदायिनी ॥ ८६ ॥

अस्वलत्सिद्धिदाऽनन्दाऽम्बुजाताऽमरनायिका।
अमेयाऽशेषपापद्व्यक्षयसारस्वतप्रदा ॥ ८७ ॥

जया जयन्ती जयदा जन्मकर्मविवर्जिता।
जगत्त्रिया जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥ ८८ ॥

जातिर्जया जितामित्रा जप्या जपनकारिणी।
जीवनी जीवनिलया जीवाख्या जीवधारिणी ॥ ८९ ॥

जाह्वी ज्या जपवती जातिरूपा जयप्रदा।
जनार्दनप्रियकरी जोषनीया जगत्स्थिता ॥ ९० ॥

जगज्ज्येष्ठा जगन्माया जीवनत्राणकारिणी।
जीवातुलतिका जीवजन्मी जन्मनिर्बर्हणी ॥ ९१ ॥

जाङ्गविध्वंसनकरी जगद्योनिर्जयात्मिका।
जगदानन्दजननी जम्बूश्च जलजेक्षणा ॥ ९२ ॥

जयन्ती जङ्गपूगाद्वी जनितज्ञानविग्रहा।
जटा जटावती जप्या जपकर्तृप्रियङ्करी ॥ ९३ ॥

जपकृत्यापसंहर्त्री जपकृतफलदायिनी।
जपापुष्पसमप्रव्या जपाकुसुमधारिणी ॥ ९४ ॥

जननी जन्मरहिता ज्योतिर्वृत्यभिदायिनी।
जटाजूटनचन्द्रार्धा जगत्सृष्टिकरी तथा ॥ ९५ ॥

जगत्त्वाणकरी जाड्यध्वंसकर्त्री जयेश्वरी।
जगद्वीजा जयावासा जन्मभूर्जन्मनाशिनी ॥ ९६ ॥

जन्मान्त्यरहिता जैत्री जगद्योनिर्जपात्मिका।
जयलक्षणसम्पूर्णा जयदानकृतोद्यमा ॥ ९७ ॥

जम्भराद्यादिसंस्तुत्या जम्भारिफलदायिनी।
जगत्त्वयहिता ज्येष्ठा जगत्त्वयवशङ्करी ॥ ९८ ॥

जगत्त्वयाम्बा जगती ज्वाला ज्वालितलोचना।
ज्वालिनी ज्वलनाभासा ज्वलन्ती ज्वलनात्मिका ॥ ९९ ॥

जितारातिसुरस्तुत्या जितक्रोधा जितेन्द्रिया।
जरामरणशून्या च जनित्री जन्मनाशिनी ॥ १०० ॥

जलजाभा जलमयी जलजासनवल्लभा।
जलजस्था जपाराध्या जन्मझलकारिणी ॥ १०१ ॥

कामिनी कामरूपा च काम्या कामप्रदायिनी।
कमाली कामदा कर्त्री क्रतुकर्मफलप्रदा ॥ १०२ ॥

कृतमध्नी क्रियारूपा कार्यकारणरूपिणी।
कञ्जाक्षी करुणारूपा केवलामरसेविता ॥ १०३ ॥

कल्याणकारिणी कान्ता कान्तिदा कान्तिरूपिणी।
कमला कमलावासा कमलोत्पलमालिनी॥ १०४॥

कुमुद्वती च कल्याणी कान्तिः कामेशवलभा।
कामेश्वरी कमलिनी कामदा कामबन्धिनी॥ १०५॥

कामधेनुः काञ्चनाक्षी काञ्चनाभा कलानिधिः।
क्रिया कीर्तिकरी कीर्तिः क्रतुश्रेष्ठा कृतेश्वरी॥ १०६॥

क्रतुसर्वक्रियास्तुत्या क्रतुकृत्प्रियकारिणी।
क्लेशनाशकरी कर्त्री कर्मदा कर्मबन्धिनी॥ १०७॥

कर्मबन्धहरी कृष्टा क्लमघ्नी कञ्जलोचना।
कन्दर्पजननी कान्ता करुणा करुणावती॥ १०८॥

क्ळीङ्कारिणी कृपाकारा कृपासिन्धुः कृपावती।
करुणाद्र्दा कीर्तिकरी कल्मषघ्नी क्रियाकरी॥ १०९॥

क्रियाशक्तिः कामरूपा कमलोत्पलगन्धिनी।
कला कलावती कूर्मी कूटस्था कञ्जसंस्थिता॥ ११०॥

कालिका कल्मषघ्नी च कमनीयजटान्विता।
करपद्मा कराभीष्टप्रदा क्रतुफलप्रदा॥ १११॥

कौशिकी कोशादा काव्या कर्त्री कोशेश्वरी कृशा।
कूर्मयाना कल्पलता कालकूटविनाशिनी॥ ११२॥

कल्पोद्यानवती कल्पवनस्था कल्पकारिणी।
कदम्बकुसुमाभासा कदम्बकुसुमप्रिया॥ ११३॥

कदम्बोद्यानमध्यस्था कीर्तिदा कीर्तिभूषणा।
कुलमाता कुलावासा कुलाचारप्रियङ्करी ॥ ११४ ॥

कुलानाथा कामकला कलानाथा कलेश्वरी।
कुन्दमन्दारपुष्पाभा कपर्दस्थितचन्द्रिका ॥ ११५ ॥

कवित्वदा काव्यमाता कविमाता कलाप्रदा।
तरुणी तरुणीताता ताराधिपसमानना ॥ ११६ ॥

तृप्तिस्तृप्तिप्रदा तर्क्या तपनी तापिनी तथा।
तर्पणी तीर्थरूपा च त्रिदशा त्रिदशेश्वरी ॥ ११७ ॥

त्रिदिवेशी त्रिजननी त्रिमाता त्र्यम्बकेश्वरी।
त्रिपुरा त्रिपुरेशानी त्र्यम्बका त्रिपुराम्बिका ॥ ११८ ॥

त्रिपुरश्रीस्त्रीरूपा त्रयीवेद्या त्रयीश्वरी।
त्रयन्तवेदिनी ताम्रा तापत्रितयहारिणी ॥ ११९ ॥

तमालसदृशी त्राता तरुणादित्यसन्निभा।
त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्ता तृप्तिकृत्तत्त्वरूपिणी ॥ १२० ॥

तुर्या त्रैलोक्यसंस्तुत्या त्रिगुणा त्रिगुणेश्वरी।
त्रिपुरग्नी त्रिमाता च त्र्यम्बका त्रिगुणान्विता ॥ १२१ ॥

तृष्णाच्छेदकरी तृप्ता तीक्ष्णा तीक्ष्णस्वरूपिणी।
तुला तुलादिरहिता तत्तद्वत्स्वरूपिणी ॥ १२२ ॥

त्राणकर्त्री त्रिपाप्नी त्रिपदा त्रिदशान्विता।
तथा त्रिशक्तिस्थिपदा तुर्या त्रैलोक्यसुन्दरी ॥ १२३ ॥

तेजस्करी त्रिमूर्त्याद्या तेजोरूपा त्रिधामता।
त्रिचक्रकर्त्रीं त्रिभगा तुर्यातीतफलप्रदा ॥ १२४ ॥

तेजस्विनी तापहारी तापोपपूवनाशिनी।
तेजोगर्भा तपःसारा त्रिपुरारिप्रियङ्करी ॥ १२५ ॥

तन्वी तापससन्तुष्टा तपताङ्गजभीतिनुत्।
त्रिलोचना त्रिमार्गा च तृतीया त्रिदशस्तुता ॥ १२६ ॥

त्रिसुन्दरी त्रिपथगा तुरीयपददायिनी।
शुभा शुभावती शान्ता शान्तिदा शुभदायिनी ॥ १२७ ॥

शीतला शूलिनी शीता श्रीमती च शुभान्विता।
योगसिद्धिप्रदा योग्या यज्ञेनपरिपूरिता ॥ १२८ ॥

यज्या यज्ञमयी यक्षी यक्षिणी यक्षिवल्लभा।
यज्ञप्रिया यज्ञपूज्या यज्ञतुष्टा यमस्तुता ॥ १२९ ॥

यामिनीयप्रभा याम्या यजनीया यशस्करी।
यज्ञकर्त्रीं यज्ञरूपा यशोदा यज्ञसंस्तुता ॥ १३० ॥

यज्ञेशी यज्ञफलदा योगयोनिर्यजुस्तुता।
यमिसेव्या यमाराध्या यमिपूज्या यमीश्वरी ॥ १३१ ॥

योगिनी योगरूपा च योगकर्तृप्रियङ्करी।
योगयुक्ता योगमयी योगयोगीश्वराम्बिका ॥ १३२ ॥

योगज्ञानमयी योनिर्यमाद्यष्टाङ्गयोगता।
यन्त्रिताघौघसंहारा यमलोकनिवारिणी ॥ १३३ ॥

यष्टिव्यष्टीशसंस्तुत्या यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक्।
योगीश्वरी योगमाता योगसिद्धा च योगदा ॥ १३४ ॥

योगारूढा योगमयी योगरूपा यवीयसी।
यन्त्ररूपा च यन्त्रस्था यन्त्रपूज्या च यन्त्रिता ॥ १३५ ॥

युगकर्त्री युगमयी युगर्धमविवर्जिता।
यमुना यमिनी याम्या यमुनाजलमध्यगा ॥ १३६ ॥

यातायातप्रशमनी यातनानान्निकृन्तनी।
योगावासा योगिवन्द्या यत्तच्छब्दस्वरूपिणी ॥ १३७ ॥

योगक्षेममयी यन्त्रा यावदक्षरमातृका।
यावत्पदमयी यावच्छब्दरूपा यथेश्वरी ॥ १३८ ॥

यत्तदीया यक्षवन्द्या यद्विद्या यतिसंस्तुता।
यावद्विद्यामयी यावद्विद्याबृन्दसुवन्दिता ॥ १३९ ॥

योगिहृत्पद्मनिलया योगिवर्यप्रियङ्करी।
योगिवन्द्या योगिमाता योगीशफलदायिनी ॥ १४० ॥

यक्षवन्द्या यक्षपूज्या यक्षराजसुपूजिता।
यज्ञरूपा यज्ञतुष्टा यायजूकस्वरूपिणी ॥ १४१ ॥

यन्त्राराध्या यन्त्रमध्या यन्त्रकर्तृप्रियङ्करी।
यन्त्रारूढा यन्त्रपूज्या योगिध्यानपरायणा ॥ १४२ ॥

यजनीया यमस्तुत्या योगयुक्ता यशस्करी।
योगबद्धा यतिस्तुत्या योगज्ञा योगनायकी ॥ १४३ ॥

योगिज्ञानप्रदा यक्षी यमबाधाविनाशिनी।
योगिकाम्यप्रदात्री च योगिमोक्षप्रदायिनी ॥ १४४ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इति नामां सरस्वत्याः सहस्रं समुदीरितम्।
मन्त्रात्मकं महागोप्यं महासारस्वतप्रदम् ॥ १ ॥
यः पठेच्छृणुयाऽद्भृत्या त्रिकालं साधकः पुमान्।
सर्वविद्यानिधिः साक्षात् स एव भवति ध्रुवम् ॥ २ ॥

लभते सम्पदः सर्वाः पुत्रपौत्रादिसंयुताः।
मूकोऽपि सर्वविद्यासु चतुर्मुख इवापरः ॥ ३ ॥

भूत्वा प्राप्नोति सान्निध्यम् अन्ते धातुर्मुनीश्वर।
सर्वमन्त्रमयं सर्वविद्यामानफलप्रदम् ॥ ४ ॥

महाकवित्वदं पुंसां महासिद्धिप्रदायकम्।
कस्मैचिन्न प्रदातव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ ५ ॥

महारहस्यं सततं वाणीनामसहस्रकम्।
सुसिद्धमस्मदादीनां स्तोत्रं ते समुदीरितम् ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीस्कान्दपुराणान्तर्गत-सनत्कुमार-संहितायां
नारद-सनत्कुमार-संवादे सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ ललितात्रिशतीस्तोत्रम् ॥

॥ न्यासः ॥

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमहामत्रस्य। भगवान् हयग्रीव ऋषिः।

अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललितात्रिपुरसुन्दरी देवता।

ऐं बीजम्। क्लीं शक्तिः। सौः कीलकम्।

सकल-चिन्तितफलावास्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ ध्यानम् ॥

अतिमधुरचापहस्ताम् अपरिमितामोदबाण-सौभाग्याम्।

अरुणाम् अतिशयकरुणाम् अभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे॥

॥ स्तोत्रम् ॥

हयग्रीव उवाच

ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशालिनी।

कल्याणशैलनिलया कमनीया कलावती ॥ १ ॥

कमलाक्षी कल्मषझी करुणामृतसागरा।

कदम्बकाननावासा कदम्बकुसुमप्रिया ॥ २ ॥

कन्दर्पविद्या कन्दर्प-जनकापाङ्ग-वीक्षणा।

कर्पूरवीटि-सौरभ्य-कल्पोलित-ककुसटा ॥ ३ ॥

कलिदोषहरा कञ्जलोचना कम्रविग्रहा।

कर्मादिसाक्षिणी कारयित्री कर्मफलप्रदा ॥ ४ ॥

एकाररूपा चैकाक्षर्येकानेकाक्षराकृतिः।

एतत्तदित्यनिर्देश्या चैकानन्द-चिदाकृतिः ॥ ५ ॥

एवमित्यागमाबोध्या चैकभक्ति-मर्दन्ता।
 एकाग्रचित्त-निर्धार्ता चैषणा-रहिताद्वता ॥ ६ ॥
 एलासुगन्धिचिकुरा चैनःकूटविनाशिनी।
 एकभोगा चैकरसा चैकैश्वर्य-प्रदायिनी ॥ ७ ॥
 एकातपत्र-साम्राज्य-प्रदा चैकान्तपूजिता।
 एधमानप्रभा चैजदनेकजगदीश्वरी ॥ ८ ॥
 एकवीरादि-संसेव्या चैकप्राभव-शालिनी।
 ईकाररूपा चेशित्री चेप्सितार्थ-प्रदायिनी ॥ ९ ॥
 ईद्विगित्य-विनिर्देश्या चेश्वरत्व-विधायिनी।
 ईशानादि-ब्रह्ममयी चेशित्वाद्यष्टसिद्धिदा ॥ १० ॥
 ईक्षित्रीक्षण-सृष्टाण्ड-कोटिरीश्वर-वल्लभा।
 ईडिता चेश्वरार्धाङ्ग-शरीरेशाधि-देवता ॥ ११ ॥
 ईश्वर-प्रेरणकरी चेशताण्डव-साक्षिणी।
 ईश्वरोत्सङ्घ-निलया चेतिबाधा-विनाशिनी ॥ १२ ॥
 ईहाविरहिता चेशशक्ति-रीषत्-स्मितानना।
 लकाररूपा ललिता लक्ष्मी-वाणी-निषेविता ॥ १३ ॥
 लाकिनी ललनारूपा लसदाडिम-पाटला।
 ललन्तिकालसत्काला ललाट-नयनार्चिता ॥ १४ ॥
 लक्षणोज्ज्वल-दिव्याङ्गी लक्षकोट्यण्ड-नायिका।
 लक्ष्यार्था लक्षणागम्या लव्यकामा लतातनुः ॥ १५ ॥
 ललामराजदलिका लम्बिमुक्तालताश्चिता।
 लम्बोदर-प्रसूर्लभ्या लज्जाद्या लयवर्जिता ॥ १६ ॥

हीङ्काररूपा हीङ्कारनिलया हीम्पदप्रिया।
हीङ्कारबीजा हीङ्कारमन्त्रा हीङ्कारलक्षणा ॥ १७ ॥

हीङ्कारजपसुप्रीता हीम्ती हींविभूषणा।
हींशीला हीम्पदाराध्या हीङ्गर्भा हीम्पदाभिधा ॥ १८ ॥

हीङ्कारवाच्या हीङ्कारपूज्या हीङ्कारपीठिका।
हीङ्कारवेद्या हीङ्कारचिन्त्या हीं हीं-शरीरिणी ॥ १९ ॥

हकाररूपा हलधृक्पूजिता हरिणेक्षणा।
हरप्रिया हराराध्या हरिब्रह्मेन्द्रवन्दिता ॥ २० ॥

हयारूढा-सेविताह्निर्हयमेघ-समर्चिता।
हर्यक्षवाहना हंसवाहना हतदानवा ॥ २१ ॥

हत्यादिपापशमनी हरिदशादि-सेविता।
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचा हस्तिकृत्ति-प्रियाङ्गना ॥ २२ ॥

हरिद्राकुङ्कमादिग्धा हर्यश्वाद्यमरार्चिता।
हरिकेशसर्वी हादिविद्या हालामदालसा ॥ २३ ॥

सकाररूपा सर्वज्ञा सर्वशी सर्वमङ्गला।
सर्वकर्त्री सर्वभर्त्री सर्वहन्त्री सनातना ॥ २४ ॥

सर्वानवद्या सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वसाक्षिणी।
सर्वात्मिका सर्वसौख्यदात्री सर्वविमोहिनी ॥ २५ ॥

सर्वाधारा सर्वगता सर्वावगुणवर्जिता।
सर्वारुणा सर्वमाता सर्वभूषण-भूषिता ॥ २६ ॥

ककारार्था कालहन्त्री कामेशी कामितार्थदा।
कामसञ्जीवनी कल्या कठिनस्तन-मण्डला ॥ २७ ॥

करभोरुः कलानाथ-मुखी कचजिताम्बुदा।
कटाक्षस्यन्दि-करुणा कपालि-प्राणनायिका ॥ २८ ॥

कारुण्य-विघ्रहा कान्ता कान्तिधूत-जपावलिः।
कलालापा कम्बुकण्ठी करनिर्जित-पल्लवा ॥ २९ ॥

कल्पवल्ली-समभुजा कस्तूरी-तिलकाश्चिता।
हकारार्था हंसगतिर्हाटकाभरणोज्जवला ॥ ३० ॥

हारहारि-कुचाभोगा हाकिनी हल्यवर्जिता।
हरितपति-समाराध्या हठात्कार-हतासुरा ॥ ३१ ॥

हर्षप्रदा हविर्भेक्ती हर्दसन्तमसापहा।
हल्लीसलास्य-सन्तुष्टा हंसमन्त्रार्थ-रूपिणी ॥ ३२ ॥

हानोपादान-निर्मुक्ता हर्षिणी हरिसोदरी।
हाहाहृष्ट-मुख-स्तुत्या हानि-वृद्धि-विवर्जिता ॥ ३३ ॥

हय्यङ्गवीन-हृदया हरिगोपारुणांशुका।
लकारारव्या लतापूज्या लयस्थित्युद्धवेश्वरी ॥ ३४ ॥

लास्य-दर्शन-सन्तुष्टा लाभालाभ-विवर्जिता।
लघ्नेतराङ्गा लावण्य-शालिनी लघु-सिद्धिदा ॥ ३५ ॥

लक्ष्मारस-सवर्णाभा लक्ष्मणाग्रज-पूजिता।
लभ्येतरा लब्धभक्ति-सुलभा लाङ्गलायुधा ॥ ३६ ॥

लग्न-चामर-हस्त-श्री-शारदा-परिवीजिता।
लज्जापद-समाराध्या लम्पटा लकुलेश्वरी ॥ ३७ ॥

लब्धमाना लब्धरसा लब्धसम्पत्समुन्नतिः।
हीङ्कारिणी हीङ्काराद्या हीमध्या हींशिखामणिः ॥ ३८ ॥

हीङ्कार-कुण्डाग्नि-शिखा हीङ्कार-शशिचन्द्रिका।
हीङ्कार-भास्कररुचिर्हीङ्काराम्बोद-चञ्चला ॥ ३९ ॥

हीङ्कार-कन्दाङ्कुरिका हीङ्कारैक-परायणा।
हीङ्कार-दीर्घिकाहंसी हीङ्कारोद्यान-केकिनी ॥ ४० ॥

हीङ्कारारण्य-हरिणी हीङ्कारावाल-वल्लरी।
हीङ्कार-पञ्चरशुकी हीङ्काराङ्गण-दीपिका ॥ ४१ ॥

हीङ्कार-कन्दरा-सिंही हीङ्काराम्बोज-भृङ्गिका।
हीङ्कार-सुमनो-माध्वी हीङ्कार-तरुमञ्जरी ॥ ४२ ॥

सकारारव्या समरसा सकलागम-संस्तुता।
सर्ववेदान्त-तात्पर्यभूमिः सदसदाश्रया ॥ ४३ ॥

सकला सच्चिदानन्दा साध्या सद्गतिदायिनी।
सनकादिमुनिध्येया सदाशिव-कुटुम्बिनी ॥ ४४ ॥

सकलाधिष्ठान-रूपा सत्यरूपा समाकृतिः।
सर्वप्रपञ्च-निर्मात्री समानाधिक-वर्जिता ॥ ४५ ॥

सर्वोन्तुज्ञा सञ्जहीना सगुणा सकलेष्टदा।
ककारिणी काव्यलोला कामेश्वरमनोहरा ॥ ४६ ॥

कामेश्वर-प्राणनाडी कामेशोत्सङ्घवासिनी।
कामेश्वरालिङ्गिताङ्गी कामेश्वर-सुखप्रदा ॥ ४७ ॥

कामेश्वर-प्रणयिनी कामेश्वर-विलासिनी।
कामेश्वर-तपःसिद्धिः कामेश्वर-मनःप्रिया ॥ ४८ ॥

कामेश्वर-प्राणनाथा कामेश्वर-विमोहिनी।
कामेश्वर-ब्रह्मविद्या कामेश्वर-गृहेश्वरी ॥ ४९ ॥

कामेश्वराह्लादकरी कामेश्वर-महेश्वरी।
कामेश्वरी कामकोटिनिलया काङ्क्षितार्थदा ॥ ५० ॥

लकारिणी लब्धरूपा लब्धधीर्लब्ध-वाज्ञिता।
लब्धपाप-मनोदूरा लब्धाहङ्कार-दुर्गमा ॥ ५१ ॥

लब्धशक्तिर्लब्धदेहा लब्धैश्वर्यसमुन्नतिः।
लब्धवृद्धिर्लब्धलीला लब्धयौवनशालिनी ॥ ५२ ॥

लब्धातिशय-सर्वाङ्ग-सौन्दर्या लब्धविभ्रमा।
लब्धरागा लब्धपतिर्लब्ध-नानागमरिथतिः ॥ ५३ ॥

लब्धभोगा लब्धसुखा लब्धहर्षाभिपूरिता।
हीङ्कार-मूर्तिर्हीङ्कार-सौधशृङ्खकपोतिका ॥ ५४ ॥

हीङ्कार-दुग्धाब्धि-सुधा हीङ्कार-कमलेन्द्रिरा।
हीङ्कार-मणिदीपार्चिर्हीङ्कार-तरुशारिका ॥ ५५ ॥

हीङ्कार-पेटक-मणिर्हीङ्कारादर्श-विम्बिता ।
हीङ्कार-कोशासिलता हीङ्कारास्थान-नर्तकी ॥ ५६ ॥

ह्रीङ्कार-शुक्तिका-मुक्तामणिर्हीङ्कार-बोधिता।
ह्रीङ्कारमय-सौवर्णस्तम्भ-विद्वम्-पुत्रिका ॥ ५७ ॥

ह्रीङ्कार-वेदोपनिषद्ग्रीङ्काराध्वर-दक्षिणा।
ह्रीङ्कार-नन्दनाराम-नवकल्पक-वल्लरी ॥ ५८ ॥

ह्रीङ्कार-हिमवद्गङ्गा ह्रीङ्कारार्णव-कौस्तुभा।
ह्रीङ्कार-मन्त्र-सर्वस्वा ह्रीङ्कार-परसौख्यदा ॥ ५९ ॥

॥ इति श्री-ब्रह्माण्डपुराणे उत्तराखण्डे श्री-हयग्रीवागस्त्यसंवादे
श्री-ललितात्रिशती स्तोत्रकथनं सम्पूर्णम् ॥



॥ सौन्दर्यलहरी ॥

॥ आनन्दलहरी ॥

शिवः शक्तया युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
 न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
 अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरच्छादिभिरपि
 प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ॥ १ ॥

तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्क्षेरुहभवं
 विरिञ्चिः सञ्चिन्वन् विरचयति लोकानविकलम्।
 वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां
 हरः सङ्घृयैनं भजति भसितोऽद्भूलनविधिम् ॥ २ ॥

अविद्यानामन्तस्तिमिर-मिहिरद्वीपनगरी
 जडानां चैतन्य-स्तबक-मकरन्द-सुतिझरी।
 दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
 निमग्नानां दंष्ट्र मुररिपु-वराहस्य भवती ॥ ३ ॥

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
 त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया।
 भयात् त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
 शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥ ४ ॥

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
 पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत्।
 स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
 मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥ ५ ॥

धनुः पौष्णं मौर्वीं मधुकरमयी पञ्च विशिखाः
 वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।
 तथाऽप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपाम्
 अपाङ्गाते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते ॥ ६ ॥
 कणत्काश्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
 परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना।
 धनुर्बाणान् पाशं सृष्टिमपि दधाना करतलैः
 पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ॥ ७ ॥
 सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
 मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे।
 शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
 भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ॥ ८ ॥
 महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
 स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि।
 मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं
 सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे ॥ ९ ॥
 सुधाधारासारैश्वरणयुगलान्तर्विगलितैः
 प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसास्नायमहसः।
 अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
 स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि ॥ १० ॥
 चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
 प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
 चतुश्वत्वारिशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय
 त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः ॥ ११ ॥

त्वदीयं सौन्दर्यं तु हिनगिरिकन्ये तुलयितुं
 कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः ।
 यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
 तपोभिर्दुष्ट्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् ॥ १२ ॥
 नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं
 तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः ।
 गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्तस्तसिचया
 हठात् त्रुट्यत्काञ्छो विगलितदुकूला युवतयः ॥ १३ ॥
 क्षितौ षष्ठ्याशाद्-द्विसमधिकपञ्चाशादुदके
 हुताशे द्वाषष्ठिश्चतुरधिकपञ्चाशादनिले ।
 दिवि द्विष्ट्रिशन्मनसि च चतुष्षष्टिरिति ये
 मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम् ॥ १४ ॥
 शरज्योत्साशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटां
 वरत्रासत्राणस्फटिकघुटिकापुस्तककराम् ।
 सकृन्त त्वा नत्वा कथमिव सतां सन्निदधते
 मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः कणितयः ॥ १५ ॥
 कवीन्द्राणां चेतः कमलवनबालातपरुचिं
 भजन्ते ये सन्तः कतिच्चिदरुणामेव भवतीम् ।
 विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरश्छारलहरी
 गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ॥ १६ ॥
 सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभिः
 वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि सञ्चिन्तयति यः ।
 स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गरुचिभिः
 वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ॥ १७ ॥

तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीसरणिभिः
 दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्रां स्मरति यः।
 भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः
 सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः ॥ १८ ॥
 मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
 हरार्धं ध्यायेद्योहरमहिषि ते मन्मथकलाम्।
 स सद्यः सङ्घोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
 त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम् ॥ १९ ॥
 किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसं
 हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः।
 स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
 ज्वरपुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाऽऽधारसिरया ॥ २० ॥
 तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं
 निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम्।
 महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा
 महान्तः पश्यन्तो दर्घति परमाह्नादलहरीम् ॥ २१ ॥
 भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणाम्
 इति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
 तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
 मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ॥ २२ ॥
 त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा
 शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत्।
 यदेतत्त्वदूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं
 कुचाभ्यामानश्रं कुटिलशशिचूडालमुकुटम् ॥ २३ ॥

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते
 तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति।
 सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिवः
 तवाऽऽज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलितिकयोः ॥ २४ ॥

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे
 भवेत् पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता।
 तथा हि त्वप्यादोद्धृनमणिपीठस्य निकटे
 स्थिता ह्येते शश्वन् मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ॥ २५ ॥

विरिञ्चिः पञ्चत्वं ब्रजति हरिरामोति विरतिं
 विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम्।
 वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि सम्मीलित-दृशां
 महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ ॥ २६ ॥

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
 गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः।
 प्रणामः संवेशः सुखमर्खिलमात्मार्पणदृशा
 सपर्यापर्यायस्त्व भवतु यन्मे विलसितम् ॥ २७ ॥

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं
 विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः।
 करालं यत्क्वेलं कबलितवतः कालकलना
 न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ॥ २८ ॥

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभमिदः
 कठोरे कोटीरे सखलसि जहि जम्भारिमकुटम्।
 प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं
 भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ॥ २९ ॥

स्वदेहोऽद्भुताभिर्घृणिभिरणिमाऽद्याभिरभितो
 निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः।
 किमाश्र्वर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतो
 महासंवर्ताभिर्विरचयति नीराजनविधिम्॥ ३० ॥

चतुष्प्रष्ठा तत्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं
 स्थितस्तत् तत् सिद्धिप्रसवपरतत्रैः पशुपतिः।
 पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थकघटना
 स्वतत्रं ते तत्रं क्षितितलमवातीतरदिदम्॥ ३१ ॥

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
 स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः।
 अमी हृलेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
 भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम्॥ ३२ ॥

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनोः
 निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
 भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
 शिवाऽग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराऽहुतिशतैः॥ ३३ ॥

शरीरं त्वं शम्भोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
 तवाऽत्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनधम्।
 अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
 स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः॥ ३४ ॥

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
 त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम्।
 त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
 चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन विभृषे॥ ३५ ॥

तवाऽऽज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिघरं
 परं शम्भुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता।
 यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
 निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोकभवने॥ ३६ ॥
 विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं
 शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम्।
 ययोः कान्त्या यान्त्या शशिकिरणसारूप्यसरणिं
 विधूतान्तर्धान्ता विलसति चकोरीव जगती॥ ३७ ॥
 समुन्मीलत् संवित् कमलमकरन्दैकरसिकं
 भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम्।
 यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणिः
 यदादत्ते दोषाद्-गुणमखिलमञ्चः पय इव॥ ३८ ॥
 तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
 तमीडे संवर्तं जननि महतीं तां च समयाम्।
 यदालोके लोकान् दहति महति क्रोधकलिते
 दयाद्र्दा यद्यष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति॥ ३९ ॥
 तटित्त्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
 स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्वेन्द्रधनुषम्।
 तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं
 निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतसं त्रिभुवनम्॥ ४० ॥
 तवाऽऽधारे मूले सह समयया लास्यपरया
 नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम्।
 उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
 सनाथाभ्यां जड्जे जनकजननीमज्जगदिदम्॥ ४१ ॥

॥ सौन्दर्यलहरी ॥

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
 किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः।
 स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
 धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम्॥ ४२ ॥

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्द्रीवरवनं
 घनस्त्रिग्धश्लक्षणं चिकुरनिकुरम्बं तव शिवे।
 यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो
 वसन्त्यस्मिन् मन्ये वलमथनवाटीविटपिनाम्॥ ४३ ॥

तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी
 परीवाहस्रोतःसरणिरिव सीमन्तसरणिः।
 वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर
 द्विषां बृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम्॥ ४४ ॥

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
 परीतं ते वक्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम्।
 दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
 सुगन्ध्यौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः॥ ४५ ॥

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्
 द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम्।
 विपर्यासन्यासादुभयमपि सम्भूय च मिथः
 सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः॥ ४६ ॥

भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्गुवनभयभङ्ग्यसनिनि
 त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम्।
 धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
 प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगृढान्तरमुमे ॥ ४७ ॥

अहः सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
 त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया।
 तृतीया ते दृष्टिरदलितहेमाम्बुजरुचिः
 समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ॥ ४८ ॥

विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
 कृपाधाराधारा किमपि मधुरा भोगवतिका।
 अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
 ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ॥ ४९ ॥

कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं
 कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम्।
 अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरलौ
 असूयासंसर्गादलिकनयनं किञ्चिदरुणम् ॥ ५० ॥

शिवे शृङ्खाराद्र्दा तदितरजने कुत्सनपरा
 सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती।
 हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजननी
 सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिः सकरुणा ॥ ५१ ॥

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्षमाणि दधती
 पुरां भेत्तुश्चित्प्रशमरसाविद्रावणफले।
 इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
 तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ॥ ५२ ॥

विभक्तत्रैवर्ण्य व्यतिकरितलीलाञ्जनतया
 विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते।
 पुनः स्थाप्तं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
 रजः सत्त्वं विभ्रत् तम इति गुणानां त्रयमिव ॥ ५३ ॥

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
 दयामित्रैनैत्रैररुणधवलश्यामसुचिभिः ।
 नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
 त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्बेदमनघम् ॥ ५४ ॥

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
 तवेत्याहुः सन्तो धरणिधरराजन्यतनये।
 त्वदुन्मेषाज्ञातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
 परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्त्व दृशः ॥ ५५ ॥

तवापर्णे कर्णजपनयनपैशुन्यचकिता
 निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाः शफरिकाः।
 इयं च श्रीबर्द्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं
 जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति ॥ ५६ ॥

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
 दवीयांसं दीनं स्वपय कृपया मामपि शिवे।
 अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
 वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥ ५७ ॥
 अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये
 न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम्।
 तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ विलसन्
 अपाङ्गव्यासज्ञो दिशति शरसन्ध्यानधिषणाम् ॥ ५८ ॥
 स्फुरदण्डभोगप्रतिफलितताटङ्कयुगलं
 चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम्।
 यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथम् अर्केन्दुचरणं
 महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते ॥ ५९ ॥
 सरस्वत्याः सूक्तीरमृतलहरीकौशलहरीः
 पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम्।
 चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
 झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ॥ ६० ॥
 असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशाध्वजपटि
 त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम्।
 वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिश्वासगलितं
 समृद्ध्या यस्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः ॥ ६१ ॥
 प्रकृत्याऽरक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
 प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्वमलता।
 न बिम्बं त्वद्विम्बप्रतिफलनरागादरुणितं
 तुलामध्यारोहुं कथमिव विलज्जेत कलया ॥ ६२ ॥

स्मितज्योत्साजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
 चकोराणामासीदीतिरसतया चञ्चुजडिमा।
 अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमामूरुचयः
 पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया ॥ ६३ ॥
 अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाऽऽम्रेडनजपा
 जपापुष्टच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
 यदग्रासीनायाः स्फटिकदृष्टदच्छच्छविमयी
 सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा ॥ ६४ ॥
 रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभिः
 निवृत्तैश्वण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः ।
 विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकला
 विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः ॥ ६५ ॥
 विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपतेः
 त्वयाऽरब्धे वकुं चलितशिरसा साधुवचने।
 तदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां
 निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् ॥ ६६ ॥
 कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
 गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया।
 करग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
 कथङ्कारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम् ॥ ६७ ॥
 भुजाश्लेषान् नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
 तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम्।
 स्वतः श्वेता कालागरुबहुलजम्बालमलिना
 मृणालीलालित्यम् वहति यदधो हारलतिका ॥ ६८ ॥

गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
 विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसञ्चाप्रतिभुवः ।
 विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
 त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते ॥ ६९ ॥
 मृणालीमृद्घीनां तव भुजलतानां चतसृणां
 चतुर्भिः सौन्दर्य सरसिजभवः स्तौति वदनैः ।
 नखेभ्यः सन्त्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः
 चतुर्णा शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया ॥ ७० ॥
 नखानामुद्घोतैर्नवनलिनरागं विहसतां
 कराणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे ।
 कयाच्छ्रिवा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
 यदि क्रीडलक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम् ॥ ७१ ॥
 समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं
 तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्तुतमुखम् ।
 यदालोक्याशङ्काॽकुलितहृदयो हासजनकः
 स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति ॥ ७२ ॥
 अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
 न सन्देहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः ।
 पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसञ्जरसिकौ
 कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ ॥ ७३ ॥
 वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
 समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम् ।
 कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तः शबलितां
 प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते ॥ ७४ ॥

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
 पयःपारावारः परिवहति सारस्वतमिव।
 दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्
 कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता ॥ ७५ ॥
 हरक्रोधज्वालाऽवलिभिरवलीढेन वपुषा
 गर्भीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गे मनसिजः।
 समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
 जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ॥ ७६ ॥
 यदेतत् कालिन्दीतनुतरतरङ्गाकृति शिवे
 कृशो मध्ये किञ्चिज्जननि तव तद्वाति सुधियाम्।
 विमर्दादन्योऽन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
 तनूभूतं व्योम प्रविशादिव नामिं कुहरिणीम् ॥ ७७ ॥
 स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता
 निजावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतमुजः।
 रतेलीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
 बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ॥ ७८ ॥
 निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
 नमन्मूर्तेर्नारीतिलक शनकैस्त्रुट्यत इव।
 चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
 समावस्थास्थेन्नो भवतु कुशलं शैलतनये ॥ ७९ ॥
 कुचौ सद्यःस्विद्यतटघटितकूर्पासभिदुरौ
 कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता।
 तव त्रातुं भङ्गादलमिति वलग्नं तनुभुवा
 त्रिधा नद्वं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ॥ ८० ॥

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजात्
 नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे।
 अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं
 नितम्बप्राग्भारः स्थगयति लघुत्वं नयति च ॥ ८१ ॥

करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीम्
 उभाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति।
 सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
 विधिङ्गे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि ॥ ८२ ॥

पराजेतुं रुदं द्विगुणशरगभौ गिरिसुते
 निषज्जौ जड्जे ते विषमविशिखो बाढमकृत।
 यदग्रे दृश्यन्ते दश शरफलाः पादयुगली
 नखाग्रच्छद्मानः सुरमकुटशाणैकनिशिताः ॥ ८३ ॥

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
 ममाष्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ।
 ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
 ययोर्लाक्षालक्ष्मीरसुणहरिचूडामणिरुचिः ॥ ८४ ॥

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयोः
 तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते।
 असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
 पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ॥ ८५ ॥

मृषा कृत्वा गोत्रस्वलनमथ वैलक्ष्यनमितं
 ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते।
 चिरादन्तःशल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
 तुलाकोटिक्राणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा ॥ ८६ ॥
 हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
 निशायां निद्राणां निशि चरमभागे च विशदौ।
 वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां
 सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम् ॥ ८७ ॥
 पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां
 कथं नीतं सद्धिः कठिनकमठीकपरतुलाम्।
 कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुराभिदा
 यदादाय न्यस्तं दृष्टि दयमानेन मनसा ॥ ८८ ॥
 नर्वैर्नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः
 तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्ड चरणौ।
 फलानि स्वःस्थेभ्यः किसलयकरायेण ददतां
 दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमहाय ददतौ ॥ ८९ ॥
 ददाने दीनेभ्यः श्रियमनिशमाशानुसदशीम्
 अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति।
 तवास्मिन् मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
 निमज्जन् मज्जीवः करणचरणः षड्वरणताम् ॥ ९० ॥
 पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः
 स्वलन्तरस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति।
 अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-
 च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते ॥ ९१ ॥

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
 शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः।
 त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया
 शरीरी शृङ्खारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्॥९२॥
 अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
 शिरीषाभा चित्ते दृष्टुपलशोभा कुचतटे।
 भृशं तन्वी मध्ये पृथुरुरसिजारोहविषये
 जगत्त्वातुं शम्भोर्जयति करुणा काचिदरुणा॥९३॥
 कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
 कलाभिः कपूर्मरकतकरणं निविडितम्।
 अतस्त्वद्वोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
 विधिर्भूयो भूयो निविडयति नूनं तव कृते॥९४॥
 पुरारातेरन्तःपुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
 सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा।
 तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां
 तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः॥९५॥
 कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
 श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः।
 महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
 कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः॥९६॥
 गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
 हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।
 तुरीया काऽपि त्वं दुरधिगमनिःसीममहिमा
 महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि॥९७॥

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
 पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णजनजलम्।
 प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
 कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम्॥९८॥

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपलो विहरते
 रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
 चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
 परानन्दाभिरव्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्॥९९॥

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः
 सुधासूतेश्वन्द्रोपलजललवैरध्यरचना ।
 स्वकीयैरभोग्यिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं
 त्वदीयाभिर्वाग्भिरस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम्॥१००॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरित्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 सौन्दर्यलहरी सम्पूर्णा॥



समानीतः पदभ्यां मणिमुकुरतामम्बरमणिः
 भयादास्यादन्तःस्तिमितकिरणश्रेणिमसृणः।
 दधाति त्वद्वक्त्रप्रतिफलनमश्रान्तविकचं
 निरातङ्कं चन्द्रान्निजहृदयपङ्करुहमिव॥

समुद्भूतस्थूलस्तनभरमुरश्वारु हसितं
 कटाक्षे कन्दपः कतिचन कदम्बद्युति वपुः।
 हरस्य त्वञ्ज्ञानिं मनसि जनयन्तः समयिनो
 भवत्या ये भक्ताः परिणतिरमीषामियमुमे॥

निधे नित्यस्मेरे निरवधिगुणे नीतिनिपुणे
 निराघाटज्ञाने नियमपरचित्तैकनिलये।
 नियत्या निर्मुक्ते निखिलनिगमान्तस्तुतपदे
 निरातङ्के नित्ये निगमय ममापि स्तुतिमिमाम्॥



